আয়ুৰ্হেদ বিজ্ঞানণ

শুরুক, স্থাক্র, আত্রেব-সংহিতা, হারীক, বাগ্ডট, রসেন্দ্রচিন্তামণি, রসর্ত্বাকর
ভ ভাবপ্রকাশাদি বিবিধ আয়ুর্ফেদির গ্রন্থহুইতে সন্ধলিত
সংস্কৃত মূল ও ভাষার বালালা অমুবাদ সহিত
শ্রীবিনেশিদ লাল সেন গুপ্তা কবিরশ্বন

কর্তৃক প্রকাশিক।

তৃতীয় খণ্ড।

দ্ৰব্যস্থান /

AYURVEDA VIJNANA

OH

HINDU SYSTEM OF MEDICINE

COMPHED AND TRANSLITED FROM

SANSKRIT TREATISES ON MEDICINE SURGERY, CHEMISTRY &C.

WITH THE ORIGINAL TEXTS

RY

KAVIRAJ BINOD LAL SEN.

Vol III

কলিকাতা।

১৭৬ নং লোষার চিৎপুর রোভ ফৌজদারীব লাধানা।

আয়ুৰ্বেদ যন্ত্ৰে

শীমিহিরচন্দ্র রার দ্বারা মুদ্রিত। শকাকা ৮০০।

All rights reserved

বিজ্ঞাপন।

আহুর্কেদ বিজ্ঞানের জব্যবস্থান নংকৃত মূল ও আহর রাজালা অসুবাদ লাইছে
ক্রিত ও প্রচারিত হটল। চরক, স্থান্ত, ভাবপ্রকাশ ও ধরস্তরি নির্বাদ্ধী
প্রভৃতি বিবিধ আলুর্কেদীর প্রস্তুত ইহা সংগৃহীত হইরাছে এডদ্বাভীত
হাতে আর কবেকটি জব্যের ৩৭৬ সন্মিবিট্ট ক্রা ঘইরাছে। ইহাছে জব্য
শন্দারের প্র্যাস, গুণ, মাত্র ও কাহ্রে কোন অংশ ব্যবহার্য ইত্যাদি বিষয় বিশেষ
রূপে বির্ত হইরাছে।

ক'লকাত[
ভায়ুৰ্ব্বেদাক ঔষ্ণালয়

আ্যাড় ১৮৮০ শক

श्रीविद्यान नान दमन खंखा

সূচীপত্রম্।

১ অস্থা ।		^f त्रम्	পৃষ্ঠা
त्रुष)र ^{न्} र ।		ठळू ने रे क म्	٠
दिष पः	બુ ક	5 ⁴व⁵6सी	۵.
क्की रक्ष ७८के	3	ভল্লাভক্ষ	۵
्यम स्हंत्राम		क्षं जे हैं।	۵
কাকোল ক্ষাবকাকোলো		मुन्त को कन्त्र भ	3.0
শ্বি বৃদ্ধ'		লভ বরী মহাশাও লগ্নী	2,
জ্ম ট্রগ্র	•	क् श्रद्भ¹ क	7
द न भन्दी	•	কাকম চী	4
ম হপণী	د	ન જા ભૂજા	*
जो नखी	٠	ব্রান্দ	71
যটাম্ব	ų	म ५ कश वर्षे	75
क्री ररीय प्रद	•	স্ভিন্তা	48
ক'পৰ গ্ৰহ	8		
ম'শ্সরে ছিণ	h	े छा न्।	
বল1৬ হৃঊয়ণ	P	ব'ভয়ু≉ণঃ।	
কাপ।যী	n	ध'ना कर्म	. 2
বারাহ ১৭০	٩	च उमे	٠.
বিদ্রা	4	' প'টৰা	2 3
অংশগড়া	•	, শ ীতসীম্ম	y
কোকিলাক	•	्र क्षार् य	7.8
শা রিবছেয় ম্	ን	। सर्वत्रह्मो	28
जुस। यूकी	٩	গন্ধ প্ৰসারণী	84
ख्यद्रश्ली		1	
পাতালগরুড়ী	•	। ৪ "ম্বাসঃ ।	
7. ************************************			
২ আব্যেশ্যঃ।		िलश्चनर्थ ।	
द्रमाय्सदगः।		वाजिनानी देनवामक	2.4
चारनको	٣	क जिल्ल सुर्थे।	2 a
७ळ णू ऱ्य	٠	स्या कम्	36

			·
विषयः	ઝુ કા	रि वग्रः	পূ
भन्भ है।	> a	क्रिकारः	20
বেড্দঃ	3,	ष्टेका डी	₹ 6
जन द र र र	ود	व्यक्तिष्टेः	૨ (
Engol:	3.5	फ ्युवम्	۶,
रोमपूर्यः।	ن د .	কর্তৃণম্	₹
শতদূর্বা) & દ	মুণ্ডিভিকা .	3
गण्पृकी	١ \$	च्चल 'म।र्जाः	ર
१ ९म भ षी	21	রক্তাপামার্গঃ .	ર
ভূমিস্থঃ	ا ود	ছেতপুনর্ম (۹ -
শটো লপ এব্	39	র শুপুস্পাপুনমবা	٦,
रूक् भाषा वर	39	राम् र1	- 1
*		व्यम् ५ सः।	31
	ł	पू ^र 5का	31
व्यभाग ।		- आ नपु क्षी	3
The state of th	•	আ'ৰিত্য'ষ ক	२
ক ক গুৰু ন		বদা/কেকেটেকী	
ায়া	٦٤	ভূলসী-শুক্র। কুম্ফ চ	5
ः कुश ो	۵	गर्यं दे	•
परिकर्	٦٢	ড্ ৰূপৰঃ	٠
વર્જી	2≻	ं एक	٠
ମ ମେମ ମ ପୁରମ୍	۶~ (ভি নিশঃ	હ
७ ७)भ	22	কাক্ত হা	٠
ख _् क्वदे क वर^	`	প্রস্থাব	
र'म् अवसी	२०	नी प्र तृष्क	૭
वि त्रः	`•	म्यू अंटक्त-	3
इ. ५ क्री	•		
প টলা	3.5	. 	
অ প্রমন্তঃ	ş	৬ স্বাদ্	
কে)মাকঃ	3	दम्यान्य वर्षः ।	
बृ ष्ट পঞ्यूनम्	₹₹,	म इस क्ल म्	9
म'नभगे	٠ ٦	ष्पर्वपुर्व स्	æ
পৃশ্বিপণী	•	चल्यम,	9
दृश्खी .	۶ ۶	मूच्यां नः	5
क्लेकाही	२७	ভা (জ্বাত্ত)	•
त्याकृत .	₹8	नवनूच्यो	૭
मधूर्णक्ष्मम् .	8	ः टब्रमाभी	૭
इण्डूमम्	२ ३	क्ट्रेंबुकी	•
শোভাভন:	t 2,	काकनोत्रः	9:

विषय:	পৃঠা	विवयः		পৃষ্ঠা
५ काश्राक्षः ।		মক্ত ক্লাৰ্	••	. 80
		পলাৰ্থ নিৰ্যাসঃ	• •	8 8
विद्वहनीय वर्षाः।		મશુ ભર્વદ	••	88
इंडोडकी	*79	'বলুপেশী	••	8 8
শ্ৰপ'ত্ৰকা	90	केळ बनम्	• •	8 8
আরুগ্রধঃ · ·	• 0	• ভা ন্ত ীজন্		8 8
যবাসশর্করা	94	र्थ (पत	• •	8 ¢
इक्कराङ्गवी	૭૭	শেভধবিরঃ	•••	80
ण)।यतीस्य •	৩৬	व ्द्रियण्ड		80
কটুৱে'ছিণী	• 1	লোধঃ	••	8
क्रोनिनो	199	প্রিয়ন্ গ্রাক প্রিয়ন	•	8
भ <u>ो</u> ड्यूमो	99	कुछेजः	• •	8
सङ्गद्रकारकी	99	লা ঠা	••	8,
নেহ ও ঃ	91	चा कार्ण रही	••	8
मो ६ ज	৩৯	, মংস)কৌ		8
শ্বেডাত্রি বৃৎ	90	্ ভ্ৰনপিপনী	**	p
শ/মাত্রির্থ •	۵۲	बोद्र खद्र		9
मधूपछी	తిప	ময়ুর শিশা		8
नु रुम ळी	٠, ٥	পদাব জন্	••	8
नो लो	8	› সটঃ	• •	8
শরপুঞ্জাঃ	8 0	21761	•	8
यदारमा पूर्व मृष्ठा ह	ಕ 0	: तनत्वः		a
क्षाडी ••	87	ৰকাল নিগাল:	• •	9
ভাষ্মাণা · ·	8 2	क्रिविसे	•	8
ज् षीर ल्लो · ·	8,	जुनी ,	•	8
कू हे ने। ज्य ल	9 2	(म [†] हड़ ग ३	• •	4
कद्रीक्षः "	> >	ল লোপু-	• •	a
-		-		
৮ ञ शुस्ति ।		۶ ر	ष्यश्रीयः।	
সংগ্ৰাহি বৰ্গঃ।		(ब्रह्म	পগ হর্মঃ।	
ৰহিফেন · ·	8 २	, प्रकृषिका	• •	6
ধার্থস •	8 2	द्रमा श्रम्	••	•
ধাধসৱী অশ্ •	8.5	चर्कगृत्र द्वु क्	••	4
ধান্তকী	8.9	মঙ্কপণী	• •	•
जिम् क्यम्	8 2			
মাচিকা • •	8 5	1		

		•	10		
रिवग्रः	<u>Ladding-av.</u> w <u>ww.uquan.com</u> er-romar-re h	त्रु के।	विषयः		সূঠা
۶.	অধ্যারঃ।		, ર	জাধ্যায়ঃ।	
लि द्योवि	(द्राव्योग्र वर्गः ।		মূত সং	এছণীয় বৰ্গঃ:	
ছিলনী		۵2 ا	উজ্বর		¢ ·
ক্ল'ৰ:	• •	۵ ک	কাকোজ্সরঃ		81
ও াফসম্		د ب	भ दः	***	œ·
নহ'কেব'		٠, ٢	কোষাতৃকী কস্		19
খ ানিনী কল ণ্	••	۵ ۲	,		
	man terskirt is		> *	০ অধ্যাহ.।	
` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` `) व्यक्षात्रिकः।		, অ 'র্ন্ত	ৰপ্ৰবৈত্তিক বৰ্ণঃ।	
, मुक्र वि	রেচনীয় বর্ণঃ।		; সহাসারঃ		a.
হ লপ দাম্	***	đ٦	ু হেণুকা -	• •	a,
भोषांगर छ प्रकः	•••	ď٦	माञ्जी	•	as as
সুর্থিয়ম্		41	छ ऋ नः	••	g,
कुणंबयम्	•••	@ ₹	शो दही		4
কাশঃ	•	מי	শ্রাবিকা		٠.
च्य र्थः	•••	ور ي	व्यक्तिः		n;
7 % :	••	c o	!		
বীরবম্	•••	43	İ		
ढ नो द्रम्	••	18	,	s काशाहाः।	
কু ভোগুমু সূত্য্	•••	. 8	আর্ত	বস্থাছি বর্ণঃ।	
গোক্ষুরবীজ্ঞ শ্	• •	^ %	' অংশ'কঃ		c)
বংশমূলমূ		6 8	ল(ছ)		4
उ ल् कम्		6.8	ध्यम् क्र क		5
লামজ্ঞকম্	***	c a	কৃষুভ	••	ų,
नश्	• •	@ 4	সকলেণা	•••	*
€.	***	q 1	রকোৎপলমূলন্	• •	ષ્ટ
To Fa	***	€ ¢	ভঙুসীয় মৃলম্		, 9
শাৰ্ষকশং	•••	. 44	পীডচন্দন্য্		3
मागम्यनी *	•••	4.	इक हम्पनम्		હ
পর্যস্ত্	•••	49	পত্তম্	4. ec	3
জ্ঞানসার:	•••	c 5	नात्थाडे		4
বন্ধং	• •	6.5	कुकुम्बङ		4
বটপত্রী	••	6.6	হ্মবা জিস্ভা'চ		3
শিচিছ্ণা	***	64	অশ্বঃ	••	4
			मची दुष्णः	***	8

विषय:			शृ के।	विग्रयः		পুঠা
বিশল)করণী	•••		45	>9	অধ্যায়ঃ।	
শাল্ যলীপুস্পা ন্	• •		6.0			
कक्षेत्र		• •	60	গ	জ্ঞবর্গঃ।	
				कस्त्री		46
>	त जानागिः।		-	७ श्रृ इम्	***	44
ર્ષ	প্রপা চনবর্গ ঃ ।			চীনকপুঁর ক্যুম্	• •	۹.
अधिक .			(4.9	5.44.√A 1.251	• •	9.
আন্তৰণ গ্ৰন্থপিকী	• •		,,	ভা ট কু	••	
শজাংকং চিত্রকঃ	***		18	ভু: জীবাদঃ	••	9:
रम [्] नी	•		5 8	भू <i>रे</i> अन्।		1:
व्यक्रसम्।			4.4	मृ <i>े</i> ऋग्भ।		9 3
পারসীক ধর্মানী			58	জুক্প এম্		47
नडभूक्या विद्या	ъ		5 M	बु क		91
feg.	••		50	ভাতীফসম ্		. 41
स्तुषाष्ट्रम्	•••		٠.۵	ज रक्य	***	9 :
ভেমবভা	• •		5 0 ft	क्रष्ठे!मा९ मी		9.
বালম্			3 '	बुडामा ∿नो		4 '
হেলুপ্ৰী			৬৬	ক চচ ্র		4
वःचंशको	•		ષ્ઠ	প্ৰাশীশ্ম		9.
ह !८ऋत्री			ኔ ን	<u>ক্লাভীপত্রী</u>		9
<i>द</i> ्वाहवी	• •		5 5	ক্ষোলম্		9
				। গ্রুকোলিকাগ্রুষা	व हिष	9
				পত্ৰসম্	***	٩
	১৬ হা ধ্য, ^স ঃ।			লভাকঁষ্ট্রক।		•
_	।মুক্তেজনীয় বর্গঃ।			্ খট।শী		4
	। बूट ल अ भाग्न चंगः ।			नक्षकोनियामः		•
কুপিলু	•••		' እ	(प्रमाद्ध		1
43 1	•••		15 9	जु ष रह		•
नश्चिमाय अही	•••		હ	नथम्		•
र्युक् _य	• •		59	मुक्का मागद्रमुखकश	•	•
বোলৰ্	٠.,		55	<i>(म'न + तमस्मशिक</i> ।		•
শ ∤বিষ্ লঃ	• -		٠,	श्रुक्कोद्र क्षकोद्र,	हानामामी	٩
ধুনরাজ	• •		&F	निकार ,	•••	•
ন্নেজ্কলম্	***		5₹	टेनंदनप्रकृत्	•••	9
কুটুবীরা	***		63	महरू:		4
				নাগকেপর '		9

10/0

विषयः		96	विषय:		পূঠা
શ્રદ્ધો ભર્વય્		95-	#4K!##!		۲۱
(ऋ'स्मग्रक्ष्		92	कूछेभ्	••	b 9
कि डवः		۹ ۵	পুক্রমূ শমূ	• •	51
পপ্প টা		92	न्यायनवी		64
म किया		93	ভা লীশ ম্	••	۲۶
প্রপোত্রীকৃষ্	• •	۴۰			
ম্পা কা		4.	i I	২০ অধ্যায়ঃ।	
			1	কণ,পুষর্গঃ।	
>	৮ সাধা[সঃ।		ठ ळण्यम्ब	••	b b
	অব্যুপ্র ।		মহামসং		b .~
मिद्रः	•		মঝি হা	*15	۲۵.
শৈষ্ণ শিক্সান্তভিকঃ	•	F •	ब िक्रमा	••	b-~*
62 p	• •	6.7	্বনহরিও:আর	ग कि हिस ह	۲۶
অ'ডবিষা	•	₩ 3	পঢ়াকম্	•	72
রো হি ডক	***	۲,	গোরোচনা	• •	40
(चंडनुक्ता नीमनुक	۰۰ Nimaro kifesasi*e	ક− ર ા-	এলব জুকম্	• •	۵٠
সিন্ধুবার	ii aaiii a ai, b		कृषेब्रहेम्	•	20
गर्वाङकः।	•	١ ٦	क् केरेन डी	•	70
इ.सम्भक	•••	t o	্ অগদঃ	•	2,
ग হা ভি ফে∤	••	•	र गण्डा क ख हा।	••	9.7
12		ه 🖈 ه	খেত রক্করবীর		*>
			্কাঞ্চনার কোরি। কোঞ্চনার কোরি।	तावः .	۴٦
37	অন্যাস-।		भिहोसः (को) (का	• •	۳٦
	শিল্প বৰ্গঃ।		শিরীষিকা	••	ે ર
বন্ধী ডকঃ		1	र्ण'न:	••	9,
	•••	١.5	ভ্ৰমালঃ	•••	λZ
পৈপ্সনী ংশরোচনা	• •	▶ 9	স র্ক্তকঃ 	♥'	9,
। रल्पाडमा क्कॅडिमुकी		F B	শল্লকী (শংশপঃ	• •	, 5
इंक् नः	***	ьe	भागनः भागनः	***	*,
। इ.स.	• •	b e	चगनः दे णुकी	• •	e6 e4
ाग। निकः	• •	re !	44,41	***	
। गर्कः घषणुष्ठी	•••	76			ı
	***	> 5	*	১ আধ্যায়ঃ।	- 1
मानकी मी	***	. .		জিশিল্পবর্গঃ :	f
	••	64			
हां ।इमोक वहां	•••	**	বিক্ষা	***	- 33
(प्रणाक वर्ष)	•••	₽ 1 ;	পারিভরষ্	• •	86

		le	/•	•
विषयः		পৃষ্ঠা	विषय:	7b1
গোৰৱাজী	• •	84	वार्षिकी	3.03
कांगिल	••	24	শ্লিকা	3.3
দৰ্শাহ্দী	***	2 0	म'धनी	2.3
অর্কপুঞ্জী	•••	24	কেডক সুবৰ্কেডকী	202
মুস াকণী		26	কিছিয়াতঃ	3.3
् भेजाचं	***	à ¢	कर्विकांबः	۶۰۵
			च्यारेयः .	5• 2
			कुम्पः	7•;
;	২২ অধারিঃ।		बृहकूम्पः	30 3
			डिन् कः	304
;	मकानीय वर्गः।		वक्र्यः	3.4
धनु दुष्णः	•••	9 %	অগম্ভি	۶۵ ۲
बर्ज्यून	• •	۵ ۹	'जम्मृती	١ ه (
অভিসংহারক	***	あり	李章 本≥	3 • !
g t er		49	टेनदरप्रक (शिक्टी) कथ्रम्	3 • !
2	্হ জ্বাধ্যার:।		২৫ সাধ্যায়িঃ।	
	ক ভত্মবর্গঃ।			
			म्हलन परि ।	
ম্বে ভৈরও:		۵۹	1	5.
শেভৈরও:		৯৭	अव 1का?	
		ລ 9	আনঃ আনাবর্ত	200
	 ২৬ অ ধ্যায়ং।	29	জ্বান্তঃ জানাবর্ত্ত নবপল্লবঃ •	2•:
		29	আয়ঃ আয়াবর্ত নবপল্লবঃ রাঞ্চামু	2. 2 7.
	 ২৬ আহধ্যায়ঃ।		আয়ঃ আয়াবর্ত নবপল্লবঃ রাজ'্য প্রশাহ	2• 2• 2•(
পদ্যম্	 ২৬ আহধ্যায়ঃ।	21	জ্বান্তঃ আনাবর্ত্ত নবপলবঃ বাজাম প্রাত্তি ত	30 30 20 30
প ভা ষ প'জুন [়]	 ২৪ আংধ্যায়ঃ। পুজপ্রগাঁঃ। 	39 25	আয়ঃ আয়াবর্ত্ত ন্যপল্লবঃ রাজাম প্রভাঃ কাকুচঃ ক্রালাম্ব	3e 3e 3e
পদাম্ প'ল্মিন পাল্মসানবগ্রাবি	 ২৪ আংধ্যায়ঃ। পুজপ্রগাঁঃ। 	39 35 36	আয়াবর্ত আয়াবর্ত নবপলেবঃ রাজ'ম প্রভাঃ ক্রুচঃ ক্রিচাম্	3 e 3 e 3 e 3 e 3 e
পদ্ম পশ্চিন পদ্মসানবগ্ৰাদি কুষুদম্	 ২৪ আংধ্যায়ঃ। পুজপ্রগাঁঃ। 	39 37 38 38	আয়াবর্ত্ত আয়াবর্ত্ত নবপলবঃ বাজাম প্রাক্তঃ ক্রেলাম্ কোলাম্ অর্কঃ	2.0 2.0 2.0 2.0 2.0 2.0 2.0 2.0
পৱাম্ প'ছান [ি] পছামানবগ্ঞাৰি কুষুৰম্ কুষুৰিনী	 ২৪ আংধ্যারঃ। পুজ্পাবর্গঃ। 	29 27 28 22 22	আয়াবর্ত আয়াবর্ত নগপাবহ রাজ'ম প্রালাহ লকুচঃ ' কোপাম্য কালিক্ম ধ্রেক্সম্	3e* 3e* 3e* 3e* 3e* 3e*
পদ্মন পদ্মন পদ্মন্তনবগ্ৰা'ৰ কুমুৰন্ কুমুৰিনী দেবভী		39 37 38 33 34	আয়াবর্ত আয়াবর্ত নবপরেবঃ রাজ'ম পালাঃ লকুচঃ ' কোশামা কালিক্ম অধুসম্ অধুসম্	201 201 201 201 201 201 201 201 201 201
পদ্মম্ প'ল্মিন' পল্মস্যনবৰ্ণত্ৰা'ৰি কুমুৰম্ কুমুৰিনী দেবভী বাসভী	২৬ আধ্যায়ঃ। পুজ্পবর্গঃ। 	39 34 34 34 34 43	আয়াবর্ত আয়াবর্ত নগপাবেঃ রাজ'ম প্রালঃ ক্রালাম্ কোলাম্ কালিন্ম্ বর্ত্তম্ ক্রাকঃ	3e- 3e- 3e- 3e- 3e- 3e- 3e- 3e- 3e- 3e-
পদ্মন্ পদ্মন পদ্মনানবণত্ৰাৰি কুমুৰম্ কুমুৰিনা দেবভী বাসন্তী স্বৰ্ণজাভী	২ও আহ্বারঃ। পুজ্পবর্গঃ। 	29 24 22 22 22 23 24 22	আয়াবর্ত্ত আয়াবর্ত্ত নবপলেবঃ রাজ্যম পানার কালিক কালিক ব্যাম্য বির্ত্তিক ধ্যাক ভালঃ	2 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
পদ্মন্ পদ্মন্ত্রী পদ্মন্ত্রকুদ্ধন্ কুদ্ধন্ দেবভী বাসভী ভাতী স্বৰ্ণজাতী কুশ্বিকা স্বৰ্ণগুধিব	২ও আহ্বারঃ। পুজ্পবর্গঃ। 	29 27 28 22 22 23 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24	আয়াবর্ত্ত আয়াবর্ত্ত নগপান্তব্য কালাম্ব কালিক্ষম্ অপুসম্ কিভিটম্ ধ্বাক্ত ভালঃ ভালাকভোয়ন্ কালিক্য	201 201 201 201 201 201 201 201 201 201
পদ্মন্ পদ্মন্ত্রী পদ্মন্ত্রকারি কুমুন্ন্ নেবভী বাসভী ভাঙী স্বৰ্ণভাঙী কুবিকা স্বৰ্ণুধিব চঞাকঃ	২ও আহ্বারঃ। পুজ্পবর্গঃ। 	39 34 33 34 33 43	আয়াবর্ত্ত নবপল্লবঃ নবপল্লবঃ বাজ'ম প্রালঃ লকুচঃ কোলাম্ বর্ফান্ কালিন্দ্ বর্ফান্ ক্রিটেন্ ব্রাকঃ ভালহ	3e ¹ 3e ² 3e ² 3e ³
পদ্মন্ পদ্মনা পদ্মনানবগ্ৰাদি কুমুদম্ কুমুদিনী দেবতী বাস্থ্যী আতী স্বৰ্ণকাতী কুবিকা স্বৰ্ণক্ষিব		29 27 28 22 22 23 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24 24	আয়াবর্ত্ত আয়াবর্ত্ত নগপান্তব্য কালাম্ব কালিক্ষম্ অপুসম্ কিভিটম্ ধ্বাক্ত ভালঃ ভালাকভোয়ন্ কালিক্য	50: 50: 50: 50: 50: 50: 50: 50: 50: 50:

11-

বিষয়:	ı	পৃষ্ঠা	विषय		পূঠ
বশর্বিশেষাণাৎ লম্ব	ार्ग न स र्ग क	104	পত্ৰ	শাকা'ন	-
वस्त्रायध्यायाया २ गर शक्त ी	/·	70%	বাস্তক স্থান্	•••	229
क् द्रम्प्तः क		د. د	শেভকী		33
শিয়ালম্		3.0	म दिस	***	>>
राजाणम् द्राजापमः	,,,	303	ভ ু লীয়		>>
(₹₹ ₩%2	•••	22.	পলক)1	***	3 2
पश्च कर	···	٥٠,٥	নাজিকশ্	••	3:1
'रूर' नद्भकम्	•••	35.	পটশাকঃ		27
ूं		3.50	ক্সম্বী	•	2 1
र् शिक्षियः	,	77,	त्नानी दुरह्मानी	•••	2 21
वस् वाद्रः			চুক্তিকা	•	238
क् डकः		222	চিঞা		>>
দত্ব- দুদ্রখন্দ্রী, পিওখণ	न द्वी ८ को को दो। 	:2;	हिन्दमा 6 को		2.2
दूर्ज्ययम्बर् _{गाः} । ११७५ : दूरम्यानी		225	শৈভিষারঃ	•	33
पूरवान:गः प्राक्ता		३५२	মূল কপত্ৰ মৃ	••	22
		7.5	দ্রে'নপুজ্পীপত্রম্	• •	27:
অমূহকলম্ সেবন	••	3.9	यहानी भ तम्	•	338
: मृदम् अही यां ग्रमका	•••	779	ठ ज्ञामक्		۶. و
প্রচীনামলক্ষ্	•••	و. <u>د</u>	সেহগ	•	75
বাডা দ ঃ কিন্তু	••	3.9	শপ্টঃ		۶۶.
পিল্≀	•	22.0	গোভিছা	••	33
ब्र<i>्</i>क 1छेश 	••	228	नट ए'नन क्य्		33
વિષ્ (ત્ર-૧) (ત્ર-૧)	• +		প্রজ্চীপত্রম্	•	320
बिक्षे निष्	••	778	কাসমৰ্দ্য		ડર (
বী স্বপুরঃ 	• •	>>8	চনকপঞ্	••	32
।धूककं हिंक।	• •	7:9	কলায়পত্ৰমূ	••	3 ()
मधोत्रधग्रम्	• •	2,4	1	••	
ক্ষেম্	• •	220	সৰ্যপ পত্ৰম্	•••	7. 2
म्ब्र ा ७७३ :	• •	37 0	পুক্স	ণাকানি।	
জুৱাল পঞ্চালয়েলে	∓ ণম্	274	অগডিপুষ্পান্	• •	2:2
'ভাৰতী	• •	2 2 %	कमनीयुष्णम्	• •	333
ক্ ৰ্যার সম্	•••	> > ?	শোভাগুনপুত্পৰ্	•••	252
			1	।কীনি।	
-			कुत्राउम्	••	२ २३
૱ છ	অধ্যার:।		कृषाकी	••	 ટ રર
,,			পীঙকুয়াঙ্গ্		५ २२
, 4	াকবর্গঃ।		व्यक्षांदुः		755
4144		210	Total Taxe	•	255

विषय:	পৃঠা	विषयः		ગુંધા
ৰৰ্কাকঃ	ડરર	২৭ অ	ধ্যারঃ।	-
តែខែ:	750			
ক।রবেল্ল । কারবেল্লী চ	750	ধান)	বর্গঃ।	
बहादकाबाखको	१२७			
हाजदकावाङकी	>२७	ধান)ম্	***	300
न्होनः	<i>; ३७</i>	ना'नधानाम्	• •	3/9
वर्षो	3 28	রুক্তশালিঃ ভীক্তিশালক	•••	305
र्मिची इग्रम्	258	ত্ৰী হৈ ধান্যস্	• •	201
কোলশিখিঃ	>28	वक्छिक्थानाम्	••	205
শোভাগ্ধনকলম্	7 8	क् अर्थ न)म्	••	203
तार्डा कृष्ट	√ ₹ €	本 変:	•••	3.0 9
ভিডিশঃ): a	होबरः 	•	3.0
পিঙীয়ষ্	250	न्। गाकः	•••	394
करकां हिंका	3 < 4	्क। अ दः		3.84
ভোভিকা	210	61次本:	•••	200
रु•ेठकांद्रीकनम्	2. 2	व ्य को अस्	• •	2 34
		अ र्	धानाम् ।	
" নাল্শীকৃষ্।		चवः	••	206
দৰ্শনালম্ '	३ २७	় গোগুৰঃ		7,3
•		1	धान)म् ।	
कन्त्रनीकानि ।		यू ण्गः	• •	3 30
म् त्रनः	150	मावः •	• •	3.00
वाजूकम्	२ २७	त्रांक्षमां वश	••	2.00
वानुको	254	নিষ্পাবঃ	••	2.95
व्यवः	५२ १	वकुछ के	•••	34:
শলংযুঃ	52.4	यमृ वः	• •	2 34
बुनक्ष्	754	व्याङ्की	• •	2.04
গ।জরশ্	۶ ۲	इनकः	• 1	3· 0 :
क्षनोक्षः	254	কলায়ঃ	••	3.01
सम्बद्धः	754	विश्वष्ठेः	•••	704
त्रंदाहोकमः	214	कृत्रचः	. •	301
हिंक्नी	>>	कृत्रुक्त रोज म्	• •	349
(क्यूक्ष्	382	भटरधुक। .		201
करमञ्जूषप्रम्	3,5	हिनः	••	3.4)
भन्ना _{निकणः}	35.9	चडनी		3.01
म्^रवण्यम्	50.	गर्भः	٠٠,	201
	•	রাজিকা	***	343
-		वृष्टम পুরাতদ ধান্যানা	S ###12	30

11%

विषयः		পৃষ্ঠা	वि यम्	পৃষ্ঠা
मी शांबः		۾ د ر	বিকেশয়াঃ ৷	
প্রমানঃ	• •	2.22	 અ ન ે	384
जा क र		ودر	मेन)रुः	78 €
চিপিটকঃ	•••	78•	প্ৰিচনাৎ নামান	
			,	
			ड नाम्ह ।	
:	২৮ অধ্যায়ঃ।		া বর্ত্তকঃ	78.7
	मा भवर्गः।		म् राष्ट्र	285
and a state of		280	् वर्जिं हे कि क	784
মাংসম্	••	260	तृष्ठ′उ′त्र'द	782
क्ष्मिण्डः क्रान्स्टर्सर	•••	240	গৌরভি'ভরি	784
লানু ণাঃ	. •	2,4	∙ । व्यवस्था	789
'क्स क्याह	• •	3-3	कुक वे कमकुक (वें)	284
रिटलमात्राः सम्मानस्यो		262	ष्यञ्ज्ञमाः	>89
अ र्चन्याः अर्चन्याः	• •	2,5	প'ভ্	384
পৰ্বসূগাঃ বেকি: ১০	•••	٠٠ ٠ ١٠ ٠	ধবসপাঞ্	389
রিক্টিরা:	"	2 / K	गहुरः	184
अ ष्ट्रमाः		264	পাছাহতঃ	75₽
श्चनहाः	***	26°	প্'ক্ষ্য'ডঃ	* 380
317) 8	• •	282		c
कृटक हराइ करन	• •	ر بر د برد	والمرافع معمالة م	eltar i
科司8	••		গ্রাম্যানাৎ লক্ষ ণানি ও	71 °D 1
কোৰ্ম্ছাঃ	•) - s	ড়াবাঃ	788
পা'দনঃ	••		নেত্র	7.41-
भ्•म)ः	• •	708		48%
	Company Company Company		ं तकोरकः	285
max fi	খন দীশাৎ নামানি		যে'টকঃ	د،د
7	હેવ!*દ !		1	
#fanka		.83	কুলে চরব র্ণঃ ।	
€ દ્વિલં∶ હાલ્ ક	•••	. 126	ম†হিষ:	787
	• •	283	মঙ্কঃ	3r•
कु द्व ष ह	••	* C 5	ক্সছ্পঃ	160
र्म् च / इ को साम्रः	••	3 d Q2	সংদা'হতদামাংসম্	76.
পৃষ্টঃ হাস:	•	3 · C	ऋग्र मृखना मारशम्	34.
新 (32) 新(34)	•••	. 4 6	ু হুদ্ধবালমাৎসম্	500
ज्ञांबद्रम् _क्रोकोदः	··	383	forms forms and and	>0.
267 - 4		384	त्रशासम्बन्धः सार्थम् सार्थमा (खरेर सिक्छेबुक्षः	
्र _{की}		300	· diminima / inthoda	\$45

विषय:	পৃষ্	विषयः	পৃধ
মৎসাবর্গা ।		ष्यां के निष्म् भ	303
		अञ्चीपूर्ण्यम् .	549
রে:হিডঃ	24,	ब ऋसे पूर्ण धम्	309
निनोक् <u>य</u> .	١ ٢	स ब्रोट्रज्यम .	304
७ क _ु दः	202	ध''डोक पि पृथ्वध ्यः .	200
মাচিকা .	3¢	পে মুদ্র কিলাট ক্ষীরশাক, ভক্রণিও-	
শাঠীনং .	:63	মোরটনাং লক্ষণানি গুণ শচ	3 4 9
गृ को	745	সঙ্নিকা	2 @1
हे _{सि} र्ण १	>	च धान सुक्त सुक्त सार्वः	3 0 1
ণকূ ল ী	31	এভ গ্ৰিষ্কৰ পুন্ধন	24.
ার্গরঃ	٠ ٦	मूलाग्यन समग्रीतानायन धन्म क	31
⊁ বিকা ⊸-	74,	म शहमा, मूगभम खनाः	. 4:
ামিনংস∌		पूर्णभदयान छवा।	31
१७ घ२म] °		ि 'मन्डपूक्षभ	. ۵
1 4 25 1	20		
हान् क्री	٠. د		
1 इ.च्री	2 9	০ সাধা মঃ।	
म्	7 . 2	पश्चित्रीः ।	
न्भोषमस्माः *	٠ :	, परि	^
ाक्त्री ∙ .	200	ि कर्रहर्मा	3 %
क्रुप्तमश्त्र)।	q	মন্দাদ না' জক্ষন'নি গুৰ্বন	ود
० प′७जू अमर्ग)।∘	× ,	्गान ^भ रास्थ ^० .	20
(2月) 佐津	3 *	, म"इसम्धित्तन् °	، ر
क्रम् २ न) र	٥e	क्रिश प्रथ	٠.
अगर म)।इ	6.5	ભાકભૂત પૃથ	3,
প্ৰাদি মংস্য প্ৰা'	243	निश्मत्र जुक्त पणि	و د
्र्वाम् ४ २२०० । इ वित्नारसं म श्मार्गदरनमः	2 B	श भिष्ठ म स	34
XI de 18 d daily de 1 de	. .,	; শ্रद्धिम ्ड पृथि .	3 %
		त्र'र क्रेम 'सर'ङ' क्रम निटब्स्ट	35
२२ जानी। हेर ।		श्रकुरिटनेटम तिरिधित्यटमी	35
		অবিধিনা দ্ধিলেবনে দোষমাছ	3 %
मूच्यवर्गः।		मदम् खु	
्थम्	202		
भ पूर्वस्य	202	০১ জন্যার ।	
िं स्वोहू ग् रम्	3~>	७ जन्मात्र । उक्त र्याः	
^१ भी मू अम्	248	 इ.स.म	3 %
[भी: पूर्वश्य	313	७ [*] ७.ज्ञटमरान्दिधः	3 9 4
मधोपूर्वम् .	568	Om 0444 4 40	

विष्यः	পৃষ্ঠা	रिवद्र:		शृक्ष
্তহভাধ্নার: ।		ক†ডেক্	•••	_7PP
		সূপীৰত বৈপাল্য দীৰ্ঘপত		
मचभी खर्गः।		মীলপোরকার্না ওরাঃ	••	24.h
मरबीडम्	398	मरनः छन्छ।	•••	791
মাছিৰ ন্বনীত্ৰ	7 = 8	বালযুবা ৃদ্ধেস্থানাঃ		743
পায়সোমবনীতম্	\$68	चक्रक्राह्म ।		249
সংখ্যাসমুক্ত নংনীতৰ্	2⊕8	দঙ্গীভিডেকু রসসাধণাঃ	• •	202
ьिब्रह्मनवनीयम्	294	যন্ত্রনিষ্পীভিতেকুরসসা প্র	eti	368
		প্ৰু)ৰিতেকুর্দস্য ওবা	•••	2 ~ 9
		প্রক্রে)জরস্স (প্রব	•1-	269
. ৩৩ অধ্যাসঃ।		ইকুরসন্য বিকারাণাৎ প্র	91	≈و 2
় যুত্তবর্গঃ।		কাৰিতঃ		39.
•	350	गरमाधी	••	310
মৃত্ ন্ ∙ প্রাক্তম	> 9 G	6.4 :		34=
পৰ)সূত্ৰ কাৰিসকল	394	পুরাতনপ্রক:	•	590
ৰ∤কিবযুত ন্ —াকীলসম	366	नवीनश्रुषः		340
ছাগীয়ৃত্য্ ইংকলম	ે પ્	चे उम्		399
উট্টায়তম্	355	নিত1		3 9
च्चः ′वकद्युष्य • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	১৬৬	निकादयभ्	•	۵۹;
নারীযুত্ য্ ——Դ−≂=	366	मधू नर्कत्रा	•	39
चमीशृष्ठम्	3 66			
पूछ ण्डम्	, ,55	.00 577	67.77 B 1	
ছ, ভনদ্ধিজয়তম্	369	৩৫ জাং		
नुकानगुरुष् · ·	369	মধুবর্গ	[: t	
মুদ্তনগৃত্তৰ,বিৰ্মাঃ ১৯৯		मध्	•••	243
चृड क्षरयाशम्। विषयाः	7.69	सश्रुटच माः	•••	213
		मः च्यिक्य		313
· ৩৪ অ ধ্যারঃ।	l	ज 'मद्रम्	• •	31
	•	ंक अभ्	•••	24.
ই ন্বর্গ্ন ।		পৌৰিক্ষ্	• •	21
विकृ ः	, 544	E a A	•••	24
च्यूटबरा व	799	ৰাহ্য স্	•••	39
পৌগুক ছীয়কক ∙	299	डेमा नक्ष्	· · ·	>9:
८क में कांचः	3.9 ⊱	व नग्	•••	2,
₩ '&!₹\$	24 P	নবপুর [†] ব মধু রব াঃ	•••	34
ছ'লপোর বংশকণ্ড	364	वधूमः जी उम. श्वाधिका		
শতপোৰ:	४७ ৮	बुक्कडाग्रानिट्यवः	••	39
ভাগপেক্	. 365	मधुनिक् स्टेम्		39;

विषयः	পৃষ্ঠা	वि ष् षः	পূথ
৩৬ জাধ্য†ষঃ।		৩৭ আধ্যারঃ।	
वोडिवर्गः ।		ছৈলবর্গঃ।	
अन म्	>98	देखनम्	220
था ब का ग्	396	किन देवनम्	2 kg
शांचनांबुक्त कनम्	310	गर्वन टेडनम्	2 × 8
व्य र्ग सम्	295	जूनके देखनम्	220
ক্রকাঞ্ল ম্	395	অভদী তৈলম্	ን ሎ ቁ
ভে'ৰার জন্ম	295	কুসুদ্ধ তৈপশ্	>>4
হৈ যজ্ঞ ক্	399	খাখনবীয়া ভৈলম্) b a
ভেন্মলম	599	बाइण टेडमम्	22.
क्ष्मानाद्यव नाद्यगानीना ९		द्रान टेडमम्	وخاد .
मक्र वामिखव'=5	7 91	শীভাংল ভৈদ্	35-5
छे छि पक्रमम्	396	यक्रक टेडलम्	220
टेमर्या इस्काम्	310	वाडाव टेडनम्	2>0
माद्रमञ्जूष	394	माद्रिदकन देखनम्	300
ভাড়াগলস্	212	कर्ण टेडनम्	341
বাপ)জন্ম	292	भाष्ट्रभी टेडनम्) > 1
किं. भेजनम् °	496	अविकारकर्म	359
চৌভ্যক্ষন্	513	नगन रेडनम्	34.6
পাল্লজন্	36.	জুাচ তৈলম্ .	3344
বিকির্ভন্	76.	मोभाक देख म्	366
रेक मात्र अनम्	36.	मिवि टेडनम्	ططد
दृश्चिजनम्	260	कोइक टेडनम्	210
হেন্তাশিকাল বিশেষে বিভিত	•	मृगानकनीक रेडनम्	166
जनविद्यांचः	56.	निकृष्ठ रेडनम्	366
স্ত্ৰতাৰ কালঃ	363	नर्यादेश छन्।ः	31-1-
जनगः भागिवधिः	363		• • •
শীতন্ত্রপান্দ্রম্	26.2	_	
শীভন্তলকা পাননিবেধঃ	363		
অপোত্তনান্য বিষয়াঃ	343	৩৮ ভাগ্যায়ঃ।	
স্থলপাম বা) বৈশ্যকতা	36,	मूख दर्गः।	
धनंड\ बनर्	3 ►2		
নিশি ত জ লমূ	358	त्याद्वय्	2+3
पुरुवनदा निर्दावीकाद्रश्थापः	31-3	(नवपूजम्	دط د
भूक्षणका निर्माणकारा नामा भीषमा सम्मा भाक्षामा	210	ছ। शब्दा	اخاد
আধুনিক অলপরিক্ষায়করণ প্রধালী	2 2 2	र्वा'दरदूबम्	, sp:
ार्डा पर जनातात्रकाष्ट्र पत्रम् समाग ा	30 3	र्वास्त्रम्	, 164
		विके मूजन्	330

wine Andrews assessing to the substitute and demonstrate response			9	
विषय:		পৃষ্	विषयः	पृ के।
অশ্ব হুত্ত ন্	• •	5.40	D. Market	
शर्क स् रम्		• 6 ¢	৪১ জাধাব	11
म त्रम् अ म्		**	श्वां ३।	
			विक्ना	. 79
ু এ	11रा: ।		4 ক ট কম্	. 129
			ত্রিভাতক চাতুত্তভিকে	
লবণকার	। तर्गुर ।		চ কুক্ষণ্	١ ه ډ
टेनक्रवय	•	› ۵ •	় পঞ্কে'লম্	. 326
সৌবজ্ঞ শ্	• •	. v ⊕	ষড়ুষণশ্	. 524
বিজ্ঞ্ -		121	क्रोतनीग्र गनः) » •
म। यु प्रमान वस्		727	की दत्र क्रशंकत्रक्रमः योजिक् या	নি প্রণাশ্চ ১৯৮
ব্রে'শক্ষ্	• •	7",	काश्वन। पर	. 300
े हिन म्		2 % 2	का भ के किश	٠. ١ ١ ٢ ٢
कांत्रनरवम्	••	٠ ۵ ٠	অক দিঃ	4 6 4
পঞ্জৰণম্	•	٠ - ۲	আমসক্য,দিঃ	نم
চণকাম শ্		१७४	আংবগু׆"#;	ة د د
नद्रगादः		2~3	खे॰ भन्। पिः	, ?••
बरक्र'तः	• •	ゝねぇ	উ ग का 'प?	. 2
স্ক্রিকাকারঃ	•••	ל ה ל	একা দিঃ	. , ,
উভযোনামানি এণ'শ্চ	••	220	ক্'কোল 'শিঃ	. २००
कार्यत, कार्यतक	•	>>>	क्षंच हा दिश	. 30
ক্ষার ফিক্য্		7.5	ত্রপুর্ণ দিং	>.2
		1	ক্রিকটুকণ্	, ,
৪০ আধ্য	1721		ক্রিকলা .	. 303
			ত্রিসূতা দি:	, २०১
সন্ধানবং	र्व ।	1	न्।'दर्धार्था पिः	. २०১
(म)भ्	• •	:>8	लक्ष्यका चि .	. २०३
গৌড়ী	• •	728	भरषे ना पिः	. २०२
पाश्यो	••	728	পর্যক'দিঃ	
পেন্টী		523	लिक्समाषिः .	२०५
कामध्री	• •	7 % 8	श्चियकोषिः .	. २ • ५
াধুকী	• •	>28	मुक्तका'मः	ુ ર• ગ
मदब्रो	••	226	युष्ठकाणिः .	. ২•৩
गरक्षकार भूद्रावीर कामीना	छ नाः	296	द्वाश्रीविः .	২০৩
रीष्ट्र	•••	>>+	न्नांकां किः	. 2•8
शंकिनम्	•••	120	यहारिः	. 208
(नि)ज्ञिम्	••	299	रहानीपिः .	. २•8
7	_ ¢	İ	त्यमात्रीशकाषिः .	. ર•ૄ8

वि <u>च</u> ग्रः		পৃঠা	विषयः		পৃষ্
वीत्रक्कांदिः		> ● 8	আর্ত্তর	শ৲প্রাহি বর্গঃ।	
বৃহত া পিঃ		२००	আজক:		a
न्या या दिः	••	२•৫	রাজযাসঃ		-
माद्रियामिः		₹•0			-
जान ाद्रोपिः	•••	ર•α	7	इ वर्गः।	
जु द्ग । विश	• •	ર • @	বাকুচীতে খঃ	• •	¢
ছবিজাপিঃ	••	र• ०	গৰূপত্ৰমূ	•	Œ
_			भगन कः	•••	e
_			আকাপদা৲সী	• •	æ
পরি	শিষ্টম_৷		3	ছুবর্গঃ ।	
রস	ায়ন্বগঃ। *		ঘণ্টাকর্ণঃ	••	. (
সোমসভা		3	মূৰ্বহ।	***	39
বৃদ্ধাত্তকঃ	••	, د	ধারাকদ্মঃ	••	8
•	ভিন্নবর্গ।		পুতি করপ্তঃ	••	145
পারীয		3	শেকালিকা		4,
•••		-	সুদর্শনা		•
•			ক	मञ्जदबः।	
• [*	পর্যাবর্গঃ			•	•
হিন্তালঃ •		3	' দভোৎপলম্	•	•
আস্যশাংখ টঃ	••	ર	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	९,श्रुवर्ग ः।	
অ াবর্শুকী		ર	काकामनी		4
ক ক্তিন্দুকঃ		۹.	চিরবিস্থ ঃ	•	•
•	ক্ষেত্ৰসৰ্গঃ।		ন হাকর গ্রঃ		•
	स्पञ्चपत्6)		টোলসমৃত্রিকা		9
मा ग पुष्शी	••	3		ভেমুবগ'।	
দ্বেকাড়ঃ		2	1	:⊍ञ्चापणण	
হস্তিস্বঙী	•••	2	फ अन्त्रह्मो	••	۲
<i>বৃশ্চিকালী</i>	• •	,	পী ভৰা	••	•
অসবণা		5	্ সিভন াগঃ	•••	۲
अप्रकी	••	,	•	ক্ষাবর্গঃ।	
fe	रदब्र ह मेरियन शर्र ।				
দ্ধেছা দ্বিকা		,5	मक्रवरू:	••	۲
শতপত্ৰী		9	'	म्बर्गः।	
बूक्क कार्	••	•	গওগাত্তম্		۳
পটোলযুগয়		8		 विदर्भाः	•
ब बरि	रद्रहमीब्रुवर्गः ।		धीसभूत्रकः	الر ١٠٠٠	۲
वश्रमुंड		8			ь
``•	f+•		क्षाम् च•	*	,

>					
विषय:		পৃষ্ঠা	विषप्र:	and the title of the control of the	পৃঠা
মাণ সহগ:।			রচ্ছাপরজুবর্গর।		
শা^সরসঃ		*	मृक ।	***	3•
ain va	मधूरर्गः ।		श रानः	• •	3•
পত্মধু	• • কারস্বধ্বগঃ	۵	विदय	াপবিষ্বগৃথি।	
চূৰ্ণশৃ		۵	নেপানশৃঙী	•••	٥
শঙ্খাদিভন্ম	•••	6			
আ রমৃত্তিক।	•	>			
	ŧ	ইতি স্টপত	রং সমাপুম্।		
. ,					

অকারাদিক্রমে বাঙ্গালা

সূচীপত্র।

विष ग्र	পূঠা	া বিষয়		નું 9
·		অবা।		•
অওক (কৃষ)	43	অাকনাদি	•	8 9
ৰৱন্ন (পীড)	@ 2	আকন্দ (খেড ও স	াল)	91
व्यक्षनादिश्व	324	আকন্দ যুগ		9)
चनदर्ग	9	আক্রেট	•••	33.0
चडायम	৩১	আক্ৰাবলী (অসৰ	লেড া)	89
অপ্রাজিভা (২ প্রকার)	b- 4	অনাচ		숙, 8
व्यवक्रावितान .	٠, ٢	च '७ इंड	• •	₩3
অমুবেডস	3	অ ণভা		۳, ۲
चन्ना ।	3-3	আনুপ যাংগ		>8;
चाउँद्व	20'	्राभागार (इक्ट छ स्थ	ভ)	₹ ¶
च्यक्तिं चित्रन	222	অংগর কী	•••	4, ∢
च्यक्त्य वृष्ट	22	व्यामकाश		F.9
चनवर्ग	۰ ۴, ۶	আমলক)৷ দিগৰ		: 22
অলমুখা .	₹ ₽	আৰসত্ত্ব	••	>•∉
	2 7	আনু		2.5
व्यक्ष	⊕ ₹	আন (লভা)		2.4
	,	আত্রের নবপল্লব		300
चर्षम्हाः	373	व्य'रमञ्जू रीव्य	• •	88
क्षपंगारम	330	অব্যক্ত	•••	95
चर्यपूर्ण	3.5	व्यायमकी	•••	۲
चरीधृष्ठ		আয়াপানা (বিশ্ব)	कड़नी)	७२
অউবৰ্গ	6 6	चाद्रग्यशीव व	•••	586
चनन (नियानीन)	81	আলকুৰী		8
चरित्रम	84	আল্ডা		5.
• প, পরিশিক্টের পূর্ব	11	व्याज्		53.0

			ŋ) o		,
विषय		श् के1	বিষয়		সৃষ্
আলুবোখারা		4,9		* 1	
আর্হ্য সমূ	414 ,	> = =	a. 6		4
আহ্ব প্রথম ইক বর্গ		er-	এ'ক	• •	,
व्यक्तिमा आही वर्ग	41.	¢»	গ্ ৰভক	•••	758
আম ক		9.9	<u> ৯ ৰ) মূণ</u>	• •	,,,
कास्त्रभागः	•	200			
আন নেওড়া	•••	ભ, ર		न्त्र ।	
-			একাঙ্গী	••	40
	रु		ত্ত্	• •	788
इ.क.मी		ود	এলাইচ, ছোট		د ا
্ৰসুদ। : ইন্দুৱকাণি পানা		21	এश्≢ीं, रङ्		13.
देशाय देशाय		98	ঞ্ ল দিগৰ	• •	₹0•
देखा <u>ण</u> मध्या	•••	ડ વર	अन'श्रृका		20
ইশব ওল		: 3	এরও (> প্রাক'র জ	ग्रंदद्रम्स)	7^
्डे क ू	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	3 79 9	এরও ভৈস	•	> €
`ইকুবগ	•	34.9			
देशूद्ध अ क्षित्यदम्		3.2			
द शूद्रग		, , , ,		9 1	
-2.			ওল	•••	3.4
•			ওল্টকম্প		4.0
	ञ ि				
ই প্ৰাস্থা		سوا ٥		<u>₹</u>	
-			উদালক মধু	•••	248
	12 1		देखिन क्रम	•••	394
>- .) 2 2	0.07	, .	
উচ্ছ। ্উংশ্লাদিগণ		143			
•.	•	4.4		क ।	
gal gal	• •) > •			
் ததிர்க	• •	120	ক্ৰিমংস!	•	245
<u>केक्</u> रोश्ड	••) n q	कश्रूषामः)	64.5	ડ્ર
<u>क्रक</u> ्रोद्रक	···	241	কচ্ছপথাৎ স	-+-	>4•
			क हैं की	• •	-39
	े छ		क है कन	••	₽€
खेबकाविशन ६		: ••	কটভী	•	90
चित्रकाषण ६ .	• •		কউক পঞ্চসূল	••	र∙१
			কণ্টকারী	• •	**

विवस		পৃষ্ঠা	विषय	পূথ
কণ্ট কারীকল		250	কাক্ষ (খেড ও সাল)	, કર
क् ष्ट्रं प्रवर्ष		+>	कैं डें।कटडेंद्र यूज	. ა•
कर्ष		7	ক্টালটের শাক	. 574
কলপাক		५ १८	ক। ঠ: জ	, 300
ককল্প বৰ্গ		ساد	কংতেকু	24₽
ক্ৰলাগুড়ি		7. 1	ক্তিল্যিৎসা .	348
কমল¹লেবু		8 2 4	कामभन्ने भुवा	844
क रग्र ड रन		2.6	कार्यः	. 3 1
করকচ লবণ	,	222	कावाविधिम	. હર
করক'জল		298	কামরাজা	3 3 2
করন্ত ভৈল	• •	354	काशाम .	• '@
চরবীর (খেত ও চ †ল)	١	2.3	কালকাগুন্দা	7 , 2
চর্ম চা		;•à	क'लंदिरगंदि ४९म)'डक्सव विधि	269
চরলা উচ্ছা		22.40	ক'লংম্য	b 9
করীর (উট্ক⁺টর }		HR	কালাকপুর	역, 8
ছবিকার পুষ্পা		2.00	कोमानाना	ত
শ্ র		৬৯	কালিয়াকড়া	* 1, 1
পুর চিনিয়া		% ₩	कामञ्जदर्ग	ъз
हमयोणाक .		3.15	किम िम	ુ ડ્રેસ્
দলার এটে		۳۰ ۲	কুচুৱৰোকা .	. 55
न्य स र्थे	•	54	कुका छे. तसकूक् 🗗	. 584
াঁ কেলা		9.8	कुष्ठ (ज्ञाल (भारू / °	. ৯١
ोक कर ने		• •	76 平町	a :
हा क हेर ी	••	199	कृष्टिया	. 21
চাকভাশ দী	-··•	F@ .	নুজ	. 6
- হাক্ মাচি		30	कृष्की	. 83
চাকরোল	. •	۵, د	कुम्प्यून्य	
াকাভোদালা		ų. p	कृष्ण्द्रतथाजी	. 90
াক্ড		۴۰۲	कृष्ट्रको	.) ? ?
) হাকু ষশা ক		કરર	কুজৰ _	, 3 a :
ा टकामी		ર	কুমড়া (বিলাভি)	. 33 4
চাকোল্যাদি গণ	•	2	কুষভা (সাচি)	, કરા
াথছা লেবু		224	কুমড়া (গোলসাচি)	, >2:
ाञ्चभूष्ठे रेडन		3 ~8	ታ ባሟባ	. •
हो को		225	कुद्रण .	
। इका (कका		₽.3	কুল (কয়েক প্ৰকাৰ)	ه د المن
নিচড়া (খেড)		89	কুলখকলাই •	, p.5.6
•				

विषय -	ઝુ હા	विषय .		পৃষ্ঠা
কুলেখাড়া			খ।	•
कृटमध्य	283	42	•••	2.49
কুশ	42	थढा एवुक पूछ	•••	544
कूस विक् र	34 F	খদির ৩ প্রকার	***	8 0
कृत्यवी या	5:51	चंग्रजा मध्या	•••	203
<i>कु मु</i> मक्का	& a	चंद्रग म		280
कृतृय वीरकात रेडम	384	ধরমুজ	•••	٥٠
কুপাদিজাত মংস্য	248	খড়্র ৩ প্রকার		353
क्षिश्च वर्ग्ड	8 4	খাটাসী		1
रू वरे कू	3.u b -	খুরাদানী বচ		b '
क्षाडेकृत्रपूत्र	4 8	খ্রাসামী যমাণী		৬
रणपद्भाहरा कृष्णकीता	99		Approximation .	
क्रचणीय	, > २ a		গ।	
কেঁ উ যুগ	456	গঞ্চশিপ্পদী	•••	185
ক্ষেত্র ফল	3.9	ทศสท์	•••	مدد
কেওটমুভা		গ হ দু পর।		2
(क्य'स्ट्र		গৰিয়ারি		٦.
. इक्नोक्स्य	. পুঙ	र्गे म	•••	8 2
কেন্ত্র হথকার	२२৯	গছপৰাশী		9
কেশে	n 5	গৰূপিড়িৎ		` b
रिक्षांत्र क्रम	34.0	গভবৰ্গ		35
কোকক ছাতা .	3.7•	গন্ধবিরজা	••	œ
क्वांदर्शनः	300	গন্ধবোল	•••	હ
কোষস্থ	24.9	গভভাদুলা		اد
caletan	598	গন্ধবাত্রা		• 1
ক্তন্ত্র বর্গ	×9	গবেৰুকা	•••	:91
भा द्र ৮ প্রকার	۰۵۵	গব/ঘৃত		3.4
শারমূৰিকা	۳, »	গৰ'সৰ ধ	•••	3.60
miras erata com	 و ه ذ	গৰ)দুগ্দ	•••	500
कारप्रदेश व्यवस्थित । स्रोहे भरेने	۶۶۶ ،	ব্য		201
कोइकारमामी	3	গরত্নী মংস্য	• •	30
	370	গৰ্কন ভৈল	A 184	31-1
m)>-1m	284	शर्फ च्यू ब		33
मोहर्षे	ع.ب ع.ب	গাসজন	•••	390
マロス 香油料可	ડ કર	পাস্তর	••	> 21
कुल्लार कुल्लमध्याः	76.3	গাঁজা	••	150
ক্ষেত্ৰণ পৰা ^হ ৈ	36124.	न । वस्क		84
त्कोळवर्	540	বাভারী		3.2

वर्ष		र्जश	विषय	ŵ	পৃষ্ঠা
গৰাশাক	•	4, b		.	
४ ग् ७ न्	• •	>		5 1	
3 4		310	_		
ধ্ৰড় (পুৱান্তম)	••	240	₽ .	•••	>>
ধকু চ্যা হিপৰ		ર • ●	ठ ण् र भक्षी	•	780
ধকত্ণ	•••	ea l	४० क न्य	• •	125
କ୍ର ଅନ୍ୟ		► 3	इड्ड	••	374
রুদ্ধর পাড়া	•	25.	চতুর্বৰ	• •	721
ह्यां णं य		282	हम्मन ्थिङ	• •	40
গেটেলা		16	ъ1	•	**
গো ডু রী	·	₹8	চাকৃন্দ1		P.P.
ণাসুল। গোসুরাবীজ		* 48	চ'কুন্দাপত্ৰ	•	. 750
গোকুসা থাজ গোজিয়া শাক	• •	73.0	চাকুলে	••	રહ
	••	254	চাতুৰ্জ্বাভক		2>1
গোড়ালের	•••	2- * '	চাঁপা (স্বর্ধ)	• •	₽ 317 00
গোৰুত্ত গোৰুত্ত	 ******		চামারক্ষা	• •	1
গোরকচাকুল্যা (না 	ग ंग्या)		চারদানা		١
গোরোচনা	• •	۵۰	চালযুগরা	•	2
গোলাপপূষ্প ,	•••	위, 3	' চালযুগরার তৈল	•••	36
গোলাপজন	•••	3.01	চিলিডী মৎস্য		20:
গৌড়িশ্বয়	***	3 a n	চিচিখা	• •	25
গ্রাম)মা^ল	• •	249	डिक्श णांक	***	>2
			তি জা	* *	28
			চিতা		•
	च ।		চিনি		3.4
ঘণঘ শিশ্বা		₹*	চিনাধান্য		200
ঘলহসিয়া শাক		223	চিনার উদ্ধূ		251
घृड	•	350	চিরান্ডা	••	b
মৃতকুৰ:রী		8 2	চিহ্বাক		ર
মূ ভবর্গ	•••	350	ু চুকাপালস		221
घूटछड़ विषय		369	চুবড়ীআগু		> >
त्वेष्ट्र		4 , 5	ह ब		4 , :
ঘৌত্য চ	- →	4 8	(६व्यवस्य)	•	>e
খোড়ানিশ		**	(इ'इक्।इकी	***	5
चि'हेकी हुख	•••	>e>	চৌড)জন		31
ছোল		>50	েচাক		•
যোৰাৰক্স	•••	42		-	

বিষয়	•	स्	विष ग्न		পৃ
	≅ ≀		জীরা (শুক্ল ও কলো	(बो)	9
			জীৱার তৈল		21-1
ভাগ		297	জুই,ও ধণ জুই	• •	3 .
ছাগঘূভ	• •	2.6.6	्र व्यवस्थातर्ग		>
क। गपूथा		319			
ছাগমাৎস	•••	7 b P			
ছাগমুখ	. ,	2.49	1	না ।	
ह ं छिम	•	8.4	! ্ব;বিঃ শ'ল		۵
ভা জযপূ		3 93	স্বাটি (রক্ষ)		**
(क्वांडेटमामाम		5 · €	্নাটি পুস্প গঞ্জাকার	•	3•
ছোলা		.৩১	्रिकाः		ાર ૦ જે
(इ माउन:क		१२३	। বিজেবিটিয়ের তৈল । বিজেবিটিয়ের তৈল		36
			,-		
	437 (हे ।	
ভালাল যাৎস		53 • 13 + 5	: ⊹ ট¦বা লে বু		3 7 8
क्रमाश शा ∖ग कार्डे भा• भी	• •	49	টাক্পিন ভৈল		9 :
জাগাপুল্প (শ্বেত ও চ	गुन्भ	, i %	টেকরামথস্য		50%
जगुरा (१६७७) जगुर्भान		go	টেপারি		30
जन्म का जन्म की		न, [;] ः			
জন্মতা জন্মপালের তৈল	•••	36 B	_		
क्रान्तिको स्राह्मको	• ••	98	•	ए ।	
W.M.		35 a	@# ? # ? #		4 , 9
জলপানের বিষয়	• •	. 7₽-a 21.1	खानकृ मी		প, ৭
জলপরিজার করণ	•	7 P. a	पूर् व	. •	4 4
জালসায়েক্টের করণ জালবৈভাল (বড়বেভা)	•	7.9	ভোতিকা ভোতিকা	••	23.6
कणस्यक्षम् (यक्षस्यकः) क्रमणितीलः	.	33 33			
खा <i>प्र</i> क्रम		92			
काग्रक्तात्र दिन		22-9		७ ।	
জার্থকের তেল জাতীপু লা		**	(इँ द्रोदु क्		85
জাতামুণ জাম		۶۰۶	চের। বুক চেইরোস		49,324
जान जिन्नोनो	***	62	ভেলেস্যু'জকা	· ·	 स, १
(जनान। जिन्नजु ष	••	82	্ ১৮।শাণাপু আপ	- •	•, •
ভিন্নগর্ক ভিন্নাপতি	• •	ره			
भीदरू		3		ত ৷	
का प्र क्षीयनी ग्रुभन	••	81724	ভক্ত	• •	3,5
कायनात्र गण स्रोव को			ভক্তবৰ্ম		3 6 8

विवय	পৃষ্ঠা	विषय	•	નૃ કા
ভগরপাদৃকা	28		4	
53	42			
তৰাল	ઢર	र्षुटमञ्ज	•••	٩٢,
ভরমুক্ত	100	পুনকু জ		. કર
ভাতাগলল	345			
elfe	3.1			
ভ'মাক	4.5		म ।	
ভাল	3.1			
ज्ञान ज्ञानम्भो	15	एथंग९म)	•••	348
ভালীশপত্র .	b b	मृ वि	• • •	318
Farmuit	<i>'</i> গ্ ড , ১২২	म (धरर्ग	***	762
ভিভির পক্ষ	39,322	प्रिविदिध शक्ती	,,	, ,,,
তিনিশ	৩০	प शिद्रवीख	•••	7.65
ভিশ	3 75	म् थित्रमञ्ज		7**
্ডল . ভিলক .		मन 1		어, e
 डिन डिन	30.	मखी .		40
	\$ 8	म ा पुरु	•••	₹ 8 *
তুত্ত))•	माज्य	• •	3 3 3
জুদ	۶ ۶	দাৰধানি চাউল	• •	202
कुपुक्र (७ घून) जूनमी (२ श्वर्कांद्र)	۹۶ د م	माम्य प्रत	••	*,
	: • ₹	খার-চিনি	•	42
ভূণপঞ্মুল ভেউড়া (খাতে ও সো'ল) .		দ'রচিনিরজৈ	• •	724
		্দাকুহরি <u>খা</u> •		4 •
ভেৰহা .		. ए। म मधु		718
তেমপত্র		দীপনপাচনবৰ্গঃ	•••	ტე ე
ভেন্ধবল .	. %1	मोर्गाश केक	• •	220
ভে তুল ্	. 33%	पृथ		34 %
বৈজ	. 3F3	ু দুগ্ৰপ'ষাৰ	••	72
्टेडनरर्ग	. 14.3	मूक कर घुड	•	3.6.6
टिडमगार्कत्र सन्	344	पूर्णंत्र शकांत्रसम	•••	3 4 5
ভোপচিনি	>	🍦 দুগোৎপন্ন নবনীত		728
ভৌষার জল	٠ > ه	। पूत्रा		28>
4 -	۶ ۶	' পুরাসভা		8 •
ত্রিকট্ট	ر به وهر	ুদুৰ্বা (খেত নীল)	• •	34
ৰি ৰা তক	کم	ছেভাড়া	***	4 , ર
ভিফল া	3241.03	(स्वश्रुष्ट		90
ত্ৰি তৃতাৰিপৰ	২ /১	(व्दवानी		⊕ ₹
			, (4)	
•	-	-		

বিৰয়	পৃষ্ঠা	विषय		<i>ৰ্ম্</i> হ
4 1		না লিভালাক		241772
ধনিয়া	ეფ	নাশপাতি		310
বংশর। ধুরুজিয়া	¢ a	নিশিওছণ		3 ₩₹
थ्याकरा	 25	নিম		b •
	8.9	নিক্র জল	• •	244
शहिक्त	4.9	निर्माही	***	222
था दम ं	3.50	बिनोपन		75,
थाना	3 2 •	নি শাশা	•••	৮২
ধান্যবর্গ	J 20 1	নিস্পাব (শীৰবীজ্ঞ)		205
योगाञ्च	3 ~1	নীবার ধান)		۵۰۵
'ধামিন বৃক্ষ) 9 (- নী ল		80
ধারজন	39°	নুতন ও পুরীভন ধানে)	র	
शंदरांच पूर्य		હિન		32%
पुरुष	350	<i>নো</i> খ্যা ড়		202
ধুতুরা	39	ন)ভোধাদিগণ		२०५
	89	! · नाष्ट्र		3Se
धूमाइरेडन	<i>ን</i> ዶ-ନ			
न ।		1	প। ৄ	
मधी	95	পক্ষীভিয়		784
मार्ड चाक	224	পক্ষী		280
मच्चीतृष्क	હર	পচাপাত		ન , ૯
मरमोड	3.58	পঞ্কৌল) 2 p
मनमोखदर्ग .	১৬৪	প্ <i>ক্ৰক্</i> ল		१•२
मर्ग्याह्मका	ه د	भक्षद्वन (तृष्ट्)		ર
মল	œœ	পঞ্চল (লঘু)	•	₹8
ম্লিকা	- م و	नका म		274
नाकुनो	26	भट छे। न	• •	. 753
নাগকেশর .	96	পটোলাবিগৰ		२⊛२
नागपना	q @	পটোলপত্ৰ	.,	311320
न'शशूक्री	૧. ૨	পটোলমূল	£ '+4	4 , 8
নাগরমূভা	915	পত্রশংক		272
नारवय जन	396	পল		۵۹
माश्रदकम रेडम	269	পদ্যকাঠ		دخ
मात्रीशृष्ठ ,.	7 <i>0.</i> 2	পর্রগঞ		প, ৯
मात्रोपृथा	361	अपूर्णवः[प	,,,	34
		1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		۰ د پ

11/-

বিৰ্ম		পূঠা	विवय		পূঠা
পদ্মবীজ		8 6	পুনৰ্নবা (শ্বেভ ও র	· *)	29
পত্মশ্ৰু		প, ৯	পুৰেয়া	• •	302
- ২ - ১ পদ্মাবন্ডী		45	পুরাতন ওড়	•••	39.
ণকুৰকাদিগ ণ	,,,	302	পুরাতন ঘৃত	•••	>94
পৰ্যমূপ	•••	383	পুরাতন ধান)	• •	702
' ' ' 건 ' ' 역위 의		> 0	পুকরমূল	***	b 9
প্লাশ্বৰ্ণীদ	. •	88	পুষ্পাবর্গ	•••	24
পা <i>কু</i> জ	***	8 %	পুজ্পশাক	•	262
া ক'ব পাকাল্যণ		۲% ۲	পৃঠাদিবসীয় দ'ধ্য	ভিযুভ	ろかい
ণাউ শা ক		334	পৃৰত	•••	784
বাড়-চক পাঙ্ পক্ষী		389	পেঁয়াজ	• •	211
শাভ্রকুচী		a 5	পেযুষাদি		* 349
ণাভা লপ সূজী		b	टेनकी यहा		728
ণা'ভবেরু পা'ভবেরু		223	পোশ্বদানা		8 9
न। ७८ न द्व नामो		789	পোস্তার তৈল	••	720
	••	٦.	পৌত্তিক মধু	•••	24.0
পান পান	•••		श्रदुष	,.	3 6 5
পানা পানিজ্ঞাৰলা •	•••	ەد د	প্রবাস		4 , 3•
	•••	781-	প্রসহ		285
পায়রা 	• •	भ , ऽ	थियूष		* .49
পারিশ	••	२ ३	প্ৰিয়স্ দিগৰ		₹• 9
পারু ল	• •	334	क्षर		283
어(취익하) 제 	••	28	ė L		
পালিধামাদার	• •	 > ► •			
শাল্পজন	• •	લ ર		क्।	
পাৰাণভেদ	•		क्रमनर्ग "	•••	3.0
পিওখর্জ্য র -	• •	>>2	邓时间本	***	٠ ١ ٦ ૨
লণ্ডার	••	3 ?	ফল্ম ৷		33~
পিভসুধৰ্ম	••	24	ফল্যার ছাল		a 5
পিপুৰ	•••	₩ 8	्क वी		31.
পপুৰম্ল	• •	**	- •	- -	•
প্ৰপ্ৰা দিগৰ		200	-		
পথাল ্	-	*•¢		ব ।	
পলু (আক্রোট)	***	272		1 1	
र्वेशनाक	••	224	বংশক ইঞ্	24.9	355
र् ट ्रिय ्न ा	• •	762	ব ংশপত্ৰ ী		4.30
ভিবৈশ্ব।	••	۰	द ्भदोस	A SÉ	3/99
र्विना		9.5	বংশলোচন "	,	₽8

11	J	0
----	---	---

বিষয় বঁইচি বকপুল্প বক্ষকাঠ বকুল বচ (তিন প্রকার) বচাদ্যাল বড্ডলারুই বট বনমেধী বনপৌ্যাল বন্যমানী বজুক্থুল্প বজ্যাক্রোট্রবী বমনোপ্যবর্গ বরুবটি (র!জমাস) বরুবাদ্যাল বর্জন	761 . 550 . 501525 . 500 . 500 . 500 . 500 . 500 . 500 . 600	বিষয় বীশ বীশের শিক্জ বাক্ষ বিক্রমল বিভিন্ন বিভাটি বিজ্ঞ বিউল্ব		커 8 48 + 5 5 8 5 9 9
বকপুষ্পা বক্ষাকান্ত বক্ষাকান্ত বক্ষাকান্ত বচ (তিন প্রকার) বচাদিগল বড়কানুই বট বনমেথী বনপোঁযাক্স বনযমানী বজুকপুষ্পা বজ্ঞাক্সকোটকী বমনোলগবর্গ বর্ষনিপোবর্গ বর্ষনিপোগণ বর্জন	. 89 . 208 . 500 . 500	বাঁশের শিক্ত বাক্স বিক্রিজ্ঞ বিভাটী বিভ্স বিউল্বেণ বিদ্যারিগভাদ্গণ		48 6-6 9-6 9-7-7
বক্ষকাঠ বকুল বচ (তিন প্রকার) বচাদিগ বড়ফারুই বউ বনমেধী বনপৌযাজ বনমানী বজুকপুস্প বস্থাকবলাটকী বমনোপগবর্গ বহুবটি (র!জমাস) বক্ষণাদিগন বর্তক	. 208	বাকস বিকিয়জন বিভাগি বিভাগ বিউস বিউস্বৰ বিদায়িগভাদ্গৰ		৮७ १ ५ १,७
বকুপ বচ (তিন প্রকার) বচাদ্পণ বড়াদ্পন বড়াদ্রই বট বনমেধী বনপৌ্যাদ্র বনমানী বজুকপুস্প বজ্যাককোটকী বমনোপ্যবর্গ বর্গবিত্র জমাস্ বিষ্ণাপ্যবর্গ বর্গবিত্র জমাস্ বিষ্ণাপ্যবর্গ	. 500 . 508 . 508 . 50	বিকিয় সল বিছাটা বিজ্ঞ বিউসবণ বিদারিগভাদিগণ		১৮ ০ প, ৩
বচ (তিন প্রকার) বচাদিগণ বড়কারুই বট বনমেথী বনপৌ্যাজ বনযমানী বজুকপুক্ষা বস্থাক কোটকী বমনোপগবর্গ বর্ষবিটি (র!জমাস) বর্ষণাদিগণ বর্জক	. \$48 . 208 . 30 . 25 . 31	বিভাগি বিজ্ঞ বিউলবণ বিদারিগভাদিগণ		প, ৩
বচাদিগণ বড়কারুই বট বন্দেশী বন্দেশী বন্দেশী বন্দেশী বন্দ্রাজ বন্দ্রাক্রেলাটিকী ব্যন্দেশপাবর্গ বর্ষা প্রবাদিগণ বস্তুক	. 208 . 20 2b	বিজ্ঞ বিউল্বৰ বিদারিগন্ধাদিগ্ৰ		
বড়ক্ষীকৃষী বল্পেথী বল্পেথাজ্ঞা বল্পেথাজ্ঞা বল্থাজ্ঞা বল্থাজ্ঞা বল্ধানী বন্ধ্যাজ্ঞা বক্ষ্যাক্লোটকী বমনোপগ্ৰহণ বক্ষাক্লোটকা ব্যাল্যাক্লোটকা বিয়াল্যাক্লোটকা	. 27 . 26	दि ष्टेन्द न् विषादिशकाषिशन		
বট বন্দেশী বন্দেশী বন্দ্ৰী	. 8 b	्रि मा द्रिशक्काम्भिन		5 6
বন্দেশী বন্দেশী বন্দ্ৰীয় বন্দ্ৰীয় বন্দ্ৰীয় বন্দ্ৰীয় বন্দ্ৰীয় বন্দ্ৰীয় বন্দ্ৰীয় বন্দ্ৰীয বন্দ্ৰ		1		7>7
বনপৌ্যাজ বন্যমান বজুকপুক্ষ বজ্যাককোটকী বমনোপ্যবৰ্গ বঙ্গটি (র!জমাস) বজুণ বজুণ	••	1		२ - 8
বন্যমান) বজুকপুস্পা বস্থাককোটকী বমনোপগবৰ্গ বঙ্গবটি (র!সমাস) বক্ষণ বক্ষণাধিক		বিদ্ধান্তক		প, ১
বজ্কপুস্প বজ্ঞাককোটকী বমনোপগবর্গ বর্বটি (রংজমাস) বরুণ বরুণাদিগণ বরুণ		'বরেচনীয় বর্গ	. ,	·3.3
বদ্ধা কলেটকী বমনোপগবৰ্গ বঙ্গবটি (র!জমাস) বরুণ বরুণ দিগণ বরুক	. 18	বিশাভিক্যভা		322
বদ্ধা কলেটকী বমনোপগবৰ্গ বঙ্গবটি (র!জমাস) বরুণ বরুণ দিগণ বরুক		'द ्भगंग		2:2125@
বর্বটি (র!জমাস) বরুণ বরুণি দিগণ বরুক		िफ त		785
ৰক্ষণ বক্ষণা দিগৰ বৰ্ত্তক	٠. ۶۵	বিভিন্ন।	•	: 3
বয়দণা দিগ ণ বৰ্ত্তক	5:6	বীরতঞ্চ		p~
বর্ত্তক	ay	বীপভাষা দিগাণ	• •	₹•8
		বুচকিদানা		প, a
यशीव्येक (व्याप्टेंड)	১৫%	ু বুকি		,, -
	. 351	ं ृस्यः° म	•	382
বলাডুগুর .	د ،	বু ফি ছ ঙ্গ	·.	31 e
रह्मो भे क पूज	· •	হু ষ)বগ		3
रखद'द	٠.٠ ١٠٠	दृष्ट्रशक्षप्रम		• • •
रत्यम् .	. ৮৩	ু হু বু		2.0
र'গण्डदरम्रा		রুছভ)!দিগণ		₹ • /
বাভন্নবৰ্গ	3.9	বেজেলা দ প্রকার	··•	
বাভাগিলেরু	118	া বেভ		•
বাঁদ্রা (পরগাছা)		হৈতুয়া শ'ক	• • •	35
বাদ'ম	>3>	् रहे । दिन छ ! म्		ر ع ر
বাদাদের তৈল	* 5 %	বেল্ফুল	•••	٥٠
হান্মংস)	5.3	ংবদন্ত	***	8
বাপ) স্বল	১५৯	(र'न्या घरमा	• •	
ষাব ন্ধা	%	বোহাল মহস্য	• •	20: 20:
হারু ইতুলমী		় ব্যাণান্ত্ৰ	. • ••	6. 3e.
া যুনহ;টী	৮৫	্ ক্যাণাড়ৰ ক্যাণায় মুন্স	•••	
বারাছীকন্দ	ejs:`>	ব্যাপার ধূপ ব্যক্ষীপাক	• •	¢;
হা দ্বিবৰ্গ		' ব্রীক্ধান্য	•••	٥.
ষাতাক		41.41.17		১৩
र'न। -				

ı

٠

1	1	e	0

1188						
বিৰয়		পৃষ্ঠা	रिषम्		পৃষ্ঠা	
7	y 1		্ ময়ুৱ	•••	389	
`	o ,		্ স্যুর শিখা		87	
ভটে উর		96	• ম'রচ		24	
ভীমর!জ		٥ د	্মরুবক		어, ৮	
ভূঁইআমলা		b 5	ু মলিক।	••	707	
७, र ङ्गक।		ů.	্মসিনা		2-012-2p.	
ভূঁইখখসা	•, •	87	ম সনংর তৈল		71 a	
ভূঁইসহা		2.4	্ মসূরি	• •	2,28	
ভুতরা জ		د ه	, মহাকরগ্র		4 , 9	
ভূৰ্জপৰ		٠.	' মহাদা	••	۵24.	
্ৰেক		300	` ম্ভামেদ		, 3	
(语句)		4	म डिस	•••	782	
ভৌময়ল		\$. 4	্ মা৲স	•••	280	
জামর মধু		245	মাণ লবৰ্ণ	•••	280	
•			মাংস, বিহাদি মৃত		:40	
-			ग िमधूष	***	۹, ۵.	
	म् ।		मा" मः मदन्। इड	••	300	
	• '		, ক্ষড়গাৰ		₽ †, →	
मनेखेक (कृष्णगुर्ग)		: 29	্মাজিল মধু		: १२	
মঞ্চিঠা		ا بر ا	মাধ্য		و ۾، ز	
ম টর		>34	মাতিকা		8.2	
মটরশাক	•••	357	म । मुख्य		8 9	
म ९ ग }		2 4 8	मामाव		:09	
मध्म) जिन्न		218	[:] মাধ্বী ল তা		3.5	
स रम) ऋो		29	याधुकी सम्।		េងខ	
मधिउपूरकत छन		315	माभ्यीमणे)		3-8	
মদ্ধর ৭৭শ)		243	ম 'ন্কচু		3. F	
यक्र		2৯≺	মাষ্ঠ লাই		200	
मर्पाद मोधादन सन		3,20,3	্ম; হাব		٠,	
মধু		393	ম!ছিষগৃত		224	
मधुरर्भ	•••	24.2	মাহিষদ'ধ		5.0	
यशुद्र विषय		8 / 6	ম হিষদুধ্		305	
मधु भंकिहा		>95	মাৰিষ্যুৱ		342	
मनक।		233	শিশ্বরি		\$1 •	
মনগাসী জ		३१७	विके'तिस		প, ১০	
ষ্মুৰা মূত		3 & 0	শিস্মিভিত।	***	b 3	
यत्ना छ श्राहे ज्		254	बु व देशों	🐠	4 , 8	
मग्रन!कल	••	62	पू का	•	প, ১০	

			No .		
		चेश	বিষয়		न् के1
विषय		3:94		য ৷	
দুগ	•••	P, 9	*************		63
মুপরা (মূর্মরা)	•••	,,	যজ্ঞভূথুর যব	• •	101
মূ গা' ি	. •	3/2	যব ক্ষা র	• •	225
यु ह <i>क</i> स्प	••	۵ ء			8
y w	•••	387	ঘটিমধু	• •	22
দু ভীমূপ	••	ર ક ¦	যুইপুল্প	•	45 8
মুভুৱী	• •	ا وابه	যোয়ান	. •	حاط د
মৃতা	•	와, ৮	বোয়ানের ভৈল	••	۵٬۵
मुखान का		פיף	যোয়ানের শাক		
মুরামাৎসী	·•	₹.9	•		
যুক্তক ি গণ	•••	G.F.		র ।	•
মুস করে	• •	202	রুক্তচন্দ্র	***	ر ي. د
যুন্তক দি	• •	742	রকোৎপণসূত্র	•••	50
মুত্র ধর্ণ	• •	r ર	ুরুলাগুন বর্গ		ь
मुक्त निदत्रह्वी ग्र वर्ग	•	381	রসুন	•••	7 s f
মুত্র বিষয়ক	••	رم. دم.	রুগোত	••	a a
मूळन९धंहनीयूनर्ग	••	251.	রাইসরিমা		2 2
মূলা	• ,		वाधानणणा		3 2 4
যুসারশাক		379	র াজি ব		28
মূগনা'ড	• •	\$5	ু রাতিতে দ্ধিভোজ	न निष्य	7,
मृशीपू क	ė	214	वै। पूर्व		5
<u>মেধী</u>	•••	9.59			2
মেশ)	রামকপুর		2
মেষ ২ প্রকার		788	হামা		a
মেৰযুত		>9°	রিটা	,.	,ι.
(मचपूर्ध		242	কুমিমস্ভকী	•••	4
মেষমূত্র	•••	2.9	েই উ চিনি	•••	
যেষশূলী	• •	• 64	্রেগুক	• •	2.
रेमदब्रकी सम्रा	• •	3**			
ষোচর শ	***	C •	1 -	(* T)	26
শেচা		257	;		•
মোম	•••	390	J		
মৌরি	• •	90	1	ल्य ।	
মৌরির তৈল		3-6	ं लक्षापुर		
মৌশ	••	224	जक्रमा (स्थाउकर	টेंकाडी)	
٧,			ল্কান্ত্রিচ	***	,
1 .			লক্ষাবতী	•••	

'तबग्र	सृ	বি ষ য়		পূঠা
দ ভাক ন্ত রী	94	শাতদা	***	د ه
লভ≀ফট্কী ঁ		Mim	•••	'n₹
न रक	٠٠ ٩٦	শালপানি	•••	₹ 3
লবভের তৈল	۹ ۰۰ا د	म्याम्बरमा	••	>62
প্ৰথক্ষাৱবৰ্গ	>>>	णे। जिक्षाणी क		↔ , ⊬
প্ৰণ বিষয়ক	دهد	শা লিখান্য	• •	340
n1®		'শম	• •	328
न। च नः च ित्रन	9	नियुन तुष्क	••	7.6
ল:জাবেগণ ল:টাকরগ্র	et iu	লিযু লফ্ল		5 5
	48	শিদ্ধান্য		7 98
সাম্ভক্ত নাম	38%	শিরীষ		a 1
গাঁব চাক্তাক		শিরোবিরেচনীয় বর্গ	• •	n 43
চা লখা লু 	• 35	[लंग।इम		11
লালকচু - : = :	54"	(नवम्ह्री	•	٥•٠
গাৰা কেন্দ্ৰ		निस	•••	<u>ه</u> د
লেবু		સ રે	•••	>4
लार कारोलाङ		বজ্ফা		* 6
লোনীশাক	22×	स्यमीनाक	•••	229
	_	सुक्रमध्म)		208
		मृक्धान)		20
* † 1		मृ कोय श्रम)		34:
		লেফা'লকা		4 ,4
ণছর মৎস্য	748	শেয়ালকাটার ভৈল		36-6
ৰঞাদি ভ দ্ম	শ, ৯	েবছালা		30
र्ग हो	95	रेमनम		•
প ণস্পী		म्।।४३।		& .
গভণোরক উল্লু	১৯৮	ল) মসাড়াইজু) ·b·
ণভ সুকী	35	শ্যমাদিগণ		٤.
नं व		শী;াম'লভা		4
नंत्र पूर्श	8•	শ্যাম ঘাদ বীক		3,5,
ने ब वो व	২৬			
पं द्रवो ञ	3.9.9			
শ্বাক	340			
न ह्मकी	, ,		₹ 1	
শাইবাবলা	৮৯			
ৰ াক	১৯৬	वस्थन	• •	زهد
শ কেবগ	33%		_	
লাঞ্ লাক	٠. ٩, ه			

<i>V</i> 10 €					
दिवन्न	Company of the Compan	পৃষ্ঠা	विषय	The second least a second a second least sec	পৃঠা
	भ ।		जुबि गुष्भ	# r*	22
			সুপারি		309
সংগ্রাহিবর্গ		8 2	সুরুগাদিগণ	•••	र∘৫
সংঘেদৰ (কেঁ)ড়কঃ	লাভ:)	50.	भूटनगानी		225
म हमज र व	•••	220	সুক্ষাজ ট'হাংসী	••	4 ,0
স্থিনা	••	≎ c	(मध, भिव		22.0
সন্মিনার ভাটা		2.8	দেউভি		ఎఫ
স্ফিনার ফ্স		7,7	সেগুন	•••	ړو.
সঞ্চানবর্গ		3 *8	ভে দোপগ বগ		G o
সঞ্চানীয়বৰ্গ	,	2,	रेमस्य व्यव		> ~ 0
र्गटयः यो		প৮	। সে'দাল		.
्मग्रुटल असीदावर्ग		, t y	সে দাল সোমা	•••	۳ ۲۶
ग्राप्टरकम		, ,	्यानः : त्यानागृक्षी	•	્ર
ग र		3 n b	্ গোন্য বুলা গোনরাজ	*	۵. ^۲
मद्रमक के		96	, গোন্ধ।জ সোমসভা	•••	
मद्रम श्रुँ <mark>हि</mark>	•••	202	সোহাগা সোহাগা		ማ , ነ «»
मंत्रिया, काळ्या		2 5₽	সোহার। সোহারা	r •	
সরিষার ভঁটো		321	্ শ্ৰপদা শ্ৰপদা	•	,77
महिषात टिन		, t+ N	्याजाचा स्थितिग्रक		4 5
সরিষার শাক	***	3 ? >	सु⊲ को क्रांके		91-
সূর্পাঞ্চী		(*		•	38
সসা		وەز	ষ্পেপঞ্সুল	• •	२०२
শাচি ই জু		وير	্ ভাবিক।	•••	۵ ۵
সাচিকার		e 6 č	_		
লাবর		286			
मायुष्टकम		3 . a		হ।	
সাদ্ভঃ রল বণ	• •	2*2			
	•••	312	इ ९मश्मी		29
সারসঙ্গ সারিবাদিগণ	••	২ ∘°¢	ब् टूब	, •	40
मः प्रवाः नगमः मोनमा	• •	9	হরণ		288
শাল্য। সাল্যায়াদ্গিব		' ૨૦ ৫	হরিজাও বন হরিড	a†	۲3
नाजनामात् गर नाजगमि ष्ट् ति	••	9	ছরিজাদিগণ		₹•4
माग्यामकात्र मिक्कतृष्ट	•••	৩৮	बड़ी डकी	•	99
- শজর্ক সিক্রী	***	200	र अयू व		343
निक्ष	•••	3 5 0	इकिनो पृ ध	• •	549
'লিক। 'লিক।	••	ر ود د	হাকভালা	65	৯৬
	••	95	হাভিন্ত কা		ન - જ ર
्रे भूदश र्मन	•••	ં	হাপরশালী		4 , 6
Makers	•• •	- •	1. 15 11 11	- •	",

ı

		ળર	/•		
বিষয়	r No Magazin Mills - v Almadoudrisandri SVA -	পৃষ্ঠা	विषय	The state of the s	পূ4
হারীভ	••	>89	दोसन	••	29
হালিম	•••	b	एउए उ	• •	२ ३
fes.		50	ংইচুটী	••	æ:
হিখাশাক	•••	. , , , , ,	टेश्यम	•••	391
दिशं न	••	প, ১	হোগলা	•••	¢ 6
		স্চ}পত্ৰ	সমাপ্ত।		
		-			

আয়ুৰ্বেদ বিজ্ঞানম।

দুব্যস্থানম্।

व्यथस्म (२ स्। १३)

व्यावर्गः ।

कीतकर्यभाको ।

জীবকর্ষভাকে। জেনেই 'ইমাজি লিখনোন্তনে)।
রসেনিক ক্ষরতালকৈ । এই বেল সুক্ষরপত্রকৈ ॥
জাবল কুলক কৈয়ে কলভো চুহল এবছ।
জাবলে কুলকে কিলা চুলাকি টুলাল কলা
ক্ষরতাল, ইন্তেই নিজা বিবারণা প্রাক্ষ ইউলি।
ভাষক্ষ ভকো হলে, লাভো ভাকক্ষপ্রতালী ॥
মধুরো পিও দ্বাস্থ কালি বাতক্যাপ্রেই ॥

ভীবক ও ঋণভক।

জাবক ও ঝ্যুডক এই তুই প্রকার
উন্ভিদ্ হিন্দের পর্সাতের শৃঙ্গে উৎপন্ন
হয়।ইহরা দার হন, ইহানের কন্দ রগুনের ন্যার, পত্র স্থা। জীবক বুক্লের
আকার ক্র্ডকের ন্যার, ঝ্যুডকের আকৃ তি
র্যুশ্লের ন্যায়। জীবক, মধুর, শৃন্দ,
হুসান্দ ও ক্র্ডনীয় কি এই গুলি জীবকের
ন্ম এবং গ্রুড ধ্রীর, বিষ্যুণ ও আক্ষ
এই গুলি ঝ্যুডের প্র্যার। জীবক ও
ঝ্যুডক এই উভরেই বলকারক, শীকল,
ভক্রজনক, ক্যুবন্ধিক ও মধুর।ইহারা
পিত্র, দাহ রক্তদোষ, কৃশ্ভা, বাসু ও ক্ষ্
রোগ নত্ত করে।

टममा मर्गाटमा ।

महारमहाक्थिः करणां स्थातकारहो श्रेष्ठाग्रस्थः ।
महारमहारसो समा माहित्यकः मूनीपरेतः॥
सक्राज्ञकिनिष्णः करणां जलाकालः मूनील्यः ।
महारमहाक्रिस्थं स्क्रिया समानक्ष्मं मूहारक ॥
स्कान्नरम्या मथरक्रुरहा। स्यरम्थातु निम्हारस्थः ।
यः मस्यरम्खि विस्कृत्या सिक्यामा छ०न्यदेत्रक्रियः ॥
स्वारम्या वर्गकिक्षा सम्यास्यक्षाक्षां स्वतः ।
स्कारम्या वर्गकिक्षा विष्की स्वरक्षां मिनः ॥
स्वार्शि सङ्ग् सामू वृत्याक्षां कस्यवहन् ।
वृत्वक मोल्ये सङ्ग् सामू वृत्याक्षां स्वतः ॥

(स्म। १९ सहारसमा।

মহামেদা নামক কল মোবল প্রভৃতি ছানে জন্মে। যেথানে মহামেদা উৎপন্ন.
হল মেদাও দেই ছানে জন্মিরা থাকে।
মহামেদা দেখিতে খেতবর্ণ আদার ন্যার,
লতা জাত কল বিশেষ, সুলর পাতৃবর্ণ।
মেদা শুরুবর্ণ কল, নথ দ্বারা ছেদন করা
লার, ছেদন করিলে মেদের ন্যার আটা
নির্গত হইরা থাকে। স্বল্পপণী, মণিছিলা, মেদা, মেদোভবা ও ধরা এই গুলি
মেদার পর্যায়; মহামেদা, বস্ছিদ্রা, ত্রিদন্তী,দেবতা, মণি এই গুলি মহামেদার নাম।
মেদা ও মহামেদা গুলু, শুলু, শুক্তজনক,
ন্তন্যবর্দ্ধ ক, ককজনক, পৃষ্টিকারক, শীক্তল,
রক্তপিত নাশক ও বাতজ্বর শান্তিকর।

কাকোলী স্মীরকাকোলো।

আয়তে জীরকাকোলী মহামেবে।দৃশ্বর হলে।

যব স্যাৎ ক্ষীরকাকোলী কাকোলী ভবজারতে ।

পীবরীসদৃশ্য কল্য জীর-ফ্রবতি গদ্ধবান্।

ল প্রোক্তা জীরকাকোলী কাকোলা লিলুমুচাতে ।
বর্ধা স্যাৎ জীরকাকোলী কাকোলালি ভবা ভবেং।

এবা কিঞ্চিল্ডবেং কুজা ভেষােহয়মুভয়োরপি ।
কাকোলী বায়নোলা চ বীরা কায়ফিকা ভবা।
সা স্ক্রা জীরকাকোলী বয়হা জীরবল্লিকা ।
কাকোলী স্থালাং লীভং স্ক্রলা প্রান্থির ।
কাকোলী স্থালাং লীভং স্ক্রলা প্রান্থির ।

কাকোলী প্রস্তীবকালেলা ।

रगर्शात्म महारमह करना, कारकामी अ भौतकारकाली ७ भिट्ट थारन इ किया। क्वीत्रकारकाली कन्न थाटक । দেখিতে শত্মূলীর কলের নাায় ও একপ্রকার বিশেষ গবাযুক্ত, উহ। হইতে আঠা নিৰ্গত হয়। কাকোলী কিঞ্চিৎ কফ্লবর্ণ, উভয়ের এই মাত্র ভেদ। ক!-কোলা, বায়দোলা, বীরা ও ভায়স্থিকা এই তলি কাকোলীর পর্যায়। ক্ষীরকাকোলী ভক্লবর্ণ, ক্ষীরকাকোলীর অন্যান্য নাম এই বয়স্থা, भीतरक्षिका, भीतिनी, धाता, ম্বীরশুক্লা ও পয়স্বিনী, দুই প্রকার কাকোলীই শীতল, শুক্রজনক, মধ্র, গুরু, পু ষ্টিকারক ও বায়নাশক। দাহ, রক্তপিত্ত, শোষ ও জর রোগে উপকারক i

ঝজিবুদ্ধী।

ক্ষিত্ দ্বিক্ষ কন্দে ছো ভবতঃ কোণ্যামলে। খেতলোমাহিতঃ কন্দো লভাজাতঃ সরজুকঃ ॥ স এব শ্বন্ধিত্ ভিক্ষ ভেদ্যপোত্তয়োক্ষ বৈ। তুলগ্রহিবমা শ্বন্ধিবানাবর্ত্ত কলা চ সা ॥ বৃদ্ধিত মুক্তিবাবিক্ত কলা থোকা মুক্তিভিঃ। য়ৃতির্বোগ্ সিদ্ধিলকো) বৃক্ষেরণ)ভারা ইনে ।
য়্রাজিবলা বিবোষমী শুক্ষা স্বাধান ।
আবৈশ্বাকরী মুক্ষা রক্তপিত বিনাশিনী ॥
বৃদ্ধিপতিপ্রালা শীভা বৃৎহণী মধ্যা নাতা ।
বৃষ্যা পিভালেশনী ভতকাস ক্যাপহা ॥
রাজ্ঞানপাইবর্গত হভোহয়সভিপুর্লভঃ।
তক্ষারস্য প্রতিনিধি গুক্ষাভদ্ধণ ভিষক ॥

ঝাছ ও বৃদ্ধি।

ঋদ্ধি ও বৃদ্ধি ইহাবা লতা জাত কল বিশেষ, কোশ্যামল পাদেশে উৎপন্ন হয়. এ কলের গাত্রে খেভবর্ণ লেংমের ন্যায় उँ२ शम रहेगा थातक, भटना भटना कि प्र থাকে, ঝদ্ধি ও বুদ্ধি উভয়ের ভেদ এই---अकि जुनात श्राप्तित नात जा कृष्टि शिनिष्ठे, **रमभन मट्या जातूल (८**८) शाहक উহাতেও বাম্দিকে গেইছণ আবৰ্ত থাকে। যোগা সিদ্ধি ও লক্ষ্মী এই গুলি পর্যায় জানিবে। ঋদ্ধি বলকারক, তিদোষ নাশক, শুক্তজনক, মধুর, গুরু, আয়ুর্বদ্ধক ঐশ্বর্গাপ্তম মৃচ্চ্য নাশক ও পিত্ৰাশক। বুলি গৰ্ভপ্ৰদ, শীতল, পুষ্টি-কারক, মধুর, শুক্রজনক, রক্তপিত নাশক, काककाम ७ कहरतारत डेशकातक।

এই অষ্টবর্গ রাজাদিগেরও অতি
দুর্লুভ অতএব অষ্টবর্গের পরিবর্গে ইহার
সদৃশ গুণ জবা বাবহাব করিবে যাহা
আায়ুর্কোদ বিজ্ঞানের প্রথম থণ্ডের ২৩
পৃষ্ঠার জবা প্রভিনিধিতে লেখা হইরাছে।

এই অন্তবর্গেক জব্য সকলের মধ্যে ক্রীরক্তেলী অপ্রাপ্য নহে। বঙ্গদেশীর চিকিৎসকগণ পীবরী শব্দের পলাওু অর্থ করিয়া ওৎসদৃশ কল বিশেষকে ক্রীর-ক্রীক্ষা বলেন। অনেকে কাঁকলাকে কা-কোলী বলিয়া থাকেন, কিছ বাস্তবিক

তাছা নহে। কাকলার সংস্কৃত নাম করোল উহা গন্ধদ্রব্য, কল বিশেষ। কাকোলী ক্ষীরকাকোলীর ন্যায় এক প্রকার কল।

खद्रेतर्गः।

লীবকর্তকো মেদে কাকোলো) ধ্দিব্দিকে । অক্টবর্গোছকাভিজ বৈয়ং কথিতক্যরকাদিভিং ॥ অক্টবর্গো হিমং যাদু ব্^ছবং বাজলো ওকং। ভগ্নদদানকুৎ কাম বলাস বলবর্দ্ধনং ॥ বাভশিবাজ তৃত্দাহ জরমেহ ক্ষমপ্রবৃৎ ॥ তাইবর্গ ।

উল্লিখিত জীবক, ঋষভক, মেদা, মহা-মেদা, কাকোলী, জীবকাকোলী, ঋদ্ধি ও বৃদ্ধি এই অন্ত দ্রব্যকে অন্তবর্গ করে। অন্ত-বর্গ দীতল, স্বাদ্ধ, পৃষ্টিকারক, শুক্রজনক, গ্রহ্ম, ভগ্ন স্থানের সংযোজক, কামবর্দ্ধক, কফজনক ও বলকারক এবং বারু জন্য রক্তশিত্ব, ভৃষ্ণা, দাহ, অব, মেহ ও ক্ষর-রোগে উপকাবক,

युम् जारारी ।

যুদ্গণণী কাকপণী সূৰপণী পিলকা সহ। ।
কাকমুদ্গা চ সা পোকা তথাযাক্ষাইগছিক। ॥
মুদ্পণী হিলা ক্লছা ডিক্তা স্বাপুশ্চ শুক্রনা।
চকুষ্যা ক্লডশোধল্লী গ্রাহণী অরহাহমুৎ ॥
হোষ্য্রগুহনী স্থা গ্রহণাশোহভিদারক্লিৎ।
বাতরক্ত১ক্লা১ কাস১ন।শারভাবিকশোভং ॥
অন্য মাতা ৪ মাষকাং।

মুগানি (বনমাষা)।

প্র্যার। অনুদ্রপণী, কাকণণী, স্র্যাপণী অল্লিকা, সহা, কাকমুদ্রা ও মাজ্ঞারগন্ধিকা।

ত্রণ। শীতদ, রুক্ষ, ভিক্ত, স্বাহু-শুক্রমনক চক্ষের হিডকারক, প্রাহী, দঘূ প্র ব্রেদোব নাপক। প্ররোগ। ক্ষত শোথ, জ্বর, দাই, প্রহণী, অর্দঃ, অভিনার, কাস, বাডরস্ক ও ক্ষর প্রভৃতি রোগে ব্যবস্থের । এই লভার সমস্ত তাংশ গ্রহণীর। মাতা ৪ মাষা।

ম। ধপণী ।

মাষপনী স্থাপনী কাৰোক্ষী হয়পুঞ্জিকা।
পাতৃ লোমপণী চি কৃষ্ণবৃত্তা মহাসহা ॥
মাষপণী হিমা ডিকা ক্ষণা প্রক্ষনাগাকৃছ।
মধুরাগ্রাহিনী পোলবাডপিলক্ষরাক্ষ্যিত।
মাজা ঃ মাষকাঃ।

भ! य! (वनभाष)।

প্রায়ে। মাষপ্রী, স্থান্নী, কা-যোজী, হয়পুদ্ধিকা, পাণ্লোমশ্প্নী, কৃষ্ণবুজ্ঞা ও মহাসহা।

ত্ব। শীতল, তিক্ত, রক্ষ, শুক্রজনক. কফকারক, মধুর ও গ্রাহী।

প্ররোগ। শোথ, বাতপিত হার ও রক্ষ দোবে বাবছেগ। এই লভারে সমস্ত তাংশ গ্রহণীয়। মাট্রাও মাষা।

জীবজী।

জীবঙী জীবনী জীবা জীবনীয়া মধুস্তবা।

মললা নামধেয়া চ শাক্ষেঙা প্রস্থিনী ॥
জীবঙী শীতলা বালুং থিকা লোমক্রমপ্রা।
রসায়নী বলকরী চকুষ্যা গ্রাহিনী লঘুঃ ॥
রক্তপিতং ক্রংহাঙি দাহত্তং স্বলোধিনী॥
মাক্রা ২ মাধকে।

জীবন্তী।

জীবন্তী, জীবনী, জীবা, জীবনীয়া, মধুজ্ঞবা, শাকন্তেষ্ঠা ও পরস্থিনী এইগুলি এবং মঙ্গল বাচক শব্দ সমস্ত ইহার পর্য্যায়। ইহা শীতন্ত্র, স্বাহু, স্বিগ্ধ, ত্রিদোষ নাশক, রসারনী, বশকারক, চক্ষুর হিতজনক, আহী ও লঘু। এবং রক্তপিত্ত, ক্ষর, দাহ ও স্বদোষ নিবারক। ইহার সমস্তই গ্রাহ্য। মাত্রা। তেলো।

যষ্টামধু।

যতীমধু তথা যতীমধুক ক্লীতক তথা।
আনাংক্লীডনকজন্ত ভবতুপ মধুলিকা ॥
যতী হিমা প্ৰক্লংৰাছী চকুষা। বলবৰ্ণকৃৎ।
' সুম্মিকা অজ্ঞান কেলা। ব্যাপিতানিলাম্ৰজিৎ।
বলশাধ বিষচ্ছন্দি তৃষ্ণা প্লানিকয়াপহা।
লৌষদাহাক চিন্নী চ কাসানাত বিনাশয়েং॥
মাবা ২ মাষকে।

যতীমধু।

যষ্টীমধ্, ঘটীমপুক, ক্লীৰক, ক্লীৰনক, উপমধ্লকা এই গুলি যি ষ্টিমধুর পর্য ।।
তেণ । ঘটীমধু, শীতল, তক্তে, মিট, চক্ষুর হিতকারক, বলকারক, বর্ণের উৎকর্ম সন্তান্দক, হলিকা, শুক্রজনক, কেশের পক্ষে হিতকারক ও পরের উৎক্ষিতা সন্পাদক।
ঘটিমধু সেবনে ত্রণ, শোখ, বিষদোধ, বমি, তৃহ্ণা, গ্লানি, ক্ষরব্রোগ, বাতপিত, শোধ, দাহ, অক্রচি ও কাস্ব্রোগ নত্ত হয়।
মাত্রাং নাধা।

कीवनीत्रगर।

অ্টরগুল্চ প্রিন্টো জীব্ধী মধুক্রথা। জীব্নীয়গ্রঃ প্রোক্তো জীব্নক পুনত্তবা।

উল্লিখিত অষ্টবর্গ, মুদ্রপণী, মাবপণী, জীবনী ও যতীমধু ইহাদিগকে জীবনীর গণ কহে। এই দ্বাদশ অব্যের মধ্য হইতে ক্ষত্তি ও বৃদ্ধি পরিত্যাগ করিয়া অবশিষ্ট দশ জব্যকে জীবনীর দশক বলাযায়। ইহারাও জীবনীরগণ বলিয়া পরি গণিত।

কপিকচ্চ;।

কপিকচছু রাজ্যপ্তথা বৃষ্যা প্রোক্তা চ সর্কটি।
আজরা কথু রা ব্যক্তা দুংস্পর্লা প্রাব্যারণী ।
লাকলী শৃকশিখী চ দৈব প্রোক্তা মহর্শিভঃ।
কপিকচছু ভূশি বৃষ্যা মধুরা বৃৎহণী গুরুং।
তিকা বাতহরীবল্যা কফ্পিপ্রাক্তনাশিনী।
তথাস্থপ্রশাসনা শাসকাসাপনোদিনী।
তথ্যিজা বাতশ্যনা স্মৃত ব্যান্ত্রিকরং পর্যু।

আলকুশা। হিন্দী কেওরাচ।

প্রাাষ । কপিকছে, আত্মগুরুগ, রুষ্যা, মকটা, অজরা; করুরা, ব্যাপা, তুঃস্পর্যা, মার্বি, প্রারুষ্যানী, লাখনা দ শুক্শিধা। তারাজ ানে মার্ব, প্রিকারক, তুর, ভি ৫০, ব হ্রানক, বলকর, কফনাবার রক্তপিও শান্তিব ব, তারদোম প্রশ্ম ত প্রায়ক্ষা লাভাতে ব জাকর বাজাকর বৈদ্ধেষ্
মাত্রা ৬ বছি । মুলেব মাত্রা রাথজনা লাভ ছোৱা।

का गड़धाइकी।

মাংসরোহিন্যতিক্তা বৃদ্য চক্ষকরী কথা। প্রছারবল্লী বিক্শী; বীরবত্যপি কথাতে ॥ স্যাশ্মাংসরোহিনী বৃষ্যা সরা দোষএয়/প্তা। মাত্রা ১ মাষকঃ।

চামারক্ষা।

পর্য্যার। মাংসবোহিণী, অভিক্রহা, বৃত্তা, চর্ম্মকরী, কৃশা, প্রহারবল্লী, বিকশং ও বীরবর্তী।

গুণ। র্ষা, সর ও বিলোধ নাশক। মাত্রা > মাষা।

বলাচতুষ্টরম্।

বলা বাট্যালিকা বাট্যা সৈব বাট্যালকাহণি চ। মহাফলা পীডপুষ্পা সহদেবী চ না অভোঃ ভতেহিন্যভিবলা ধব্যপ্রাকা কছতিকা চ লা।
গালেককী নাগবলা হোলা ছুলা গবেধুকা ।
বলা চতুইয়া পতিং নধুরা বলকান্তিক্থ।
স্থিত প্রাহি সমীরাক্র পিরাক্র কত নাশনন্।
বলামূল ডুচ শচুর্ণ পতিং সক্ষার্থকরন্।
মুকাতি সারাহরতি দুই মেউল সংশয়ঃ॥
হরেদাহাবলা ক্চছ ু ভবেছাভানুলোমনী।
হন্যাহতিবলা বেহাং পর্যা সিত্রা সমন্॥
মাক্রা ৪ বাখা।

ह। विश्व शिकाय (वर्ड नि ।

বলা, বাটা।লিকা, বাটালকা এই তিন্টী খেতবলার পর্যায় বাদ্যলা খেতবেড়েলা হিলা বাট্যা। মহাবলা, পীতপুশা ও সহ-দেবা এই তিন্টী পীতবলা পর্যায় বাং, জোকা বেড়েলা ইই ব পুপে পীতবর্গ হয়। হিলা সহদেবী। অভিনতী বন্ধিবলার নাম হিলা কক্ছিয়া। গাড়েক্টী, নাগবলা, হুসা ও গবেদ্কা এই কম্প্রী নাগবলার প্যায়

ওল। বলাচভুতীর শীতল, মধুর, বলকাবেক কান্তি প্রাদ, রিয়ে ও গ্রাহী।

প্ররোগ। বেড়েলার মূলের ছক্সক্ষ চ্র্ন করিয়া চুল্প ও চিনির নহিত দেবন করিলে মৃত্রাতীদার রোগ দূর হয়। মহাবলা মৃত্রক্চেরোগ নিবারণ করে ও বাস্ব জনুলোম হয় অর্থাৎ বায়ুকে অর্থানিকে নিন্দারিত করে। চুল্প ও চিনির শহিত অভিবলা দেবন করিলে মেহুবোগ নির্ভ হয়। ইহার মূল, অভাবে সমস্ত অংশই গ্রহনীয়। মাত্রা ও মাধা।

কাৰ্প!সী। কাৰ্পাদী তুগুকেরী চ দৰ্ভাৱে। কাৰ্পাদকী দুখু কোন্ধা মধুৱা বাত্যাশিমী। তৃভাদাবারতি আবি আবি মুক্ত্র প্রাণাপিনী। তৎপলাশং সমীরস্ত্রং রক্তকুস্কুত্র বর্তমন্থ। তৎকর্ণ পীক্ষামান পুরাজাব বিমাশমন্থ। তথ্যসং ভদ্যমং বৃহাং স্থিত কক্ষরং ওলে। মানা ২ মানা ২ মানা ২ মানা ২ মানা

কার্পাস।

পর্যাষ। কার্পাসী, তুণ্ডিকেরী ও সমুদ্বান্তা এই সকল শব্দ ইহার পর্যার।
কার্পাস লঘু, ঈ্বচ্ঞ, মধ্র ও বাত্ত
নাশক। ইহা পেবন করিলে তৃষ্ণা, দাহ,
চিত্ত বৈকলা, প্রান্তি, ভ্রম ও মৃচ্চুর্বা নিবারণ হয়। ইহার পত্র বায়ুনাশক, রক্ত
জনক, ইহা ব্যবহারে কর্ণের ত্রণ, কর্ণনাদ
ও কর্ণ হইতে পূয় নির্মান নিবারণ হয়।
কার্পাস বীজ ভানে তুর্বোৎপাদক, রুষা,
ন্মির্ম, প্রেম্ম জনক ও গুরু। ইহার ব্রীজের
মাত্রা ২ মাষা।

वादाशीकमः।

বারাহীকল এবাইনাক্ষকারালুকো বছঃ।
ভানুপে সভবেদ্দেশে বরাহ ইব লোমবান্ ।
বিদারী ঝালুকলা চ লা তু ক্রোক্রী সিতা লাভা।
ইকুগভা ভারবারী জীরতাক্লা প্রথিনী ।
বারাহবদনা গৃতির্কারেতাশি কর্ব,তে।
বিদারী মধুরা লিখ্য বৃৎহণী জনাত্তকাণা ।
ভাতা খার্যা সুকলা চ জীবনী বলবর্শনা।
গুরুঃ শিকান্ত প্রনা দাহান্ হতি রলায়নী ।
মানা ৪ মাহকাঃ।

বারাহাকলকে কেছ কেছ চশ্বকারালুক কংহন। নিম ভূমিকে জন্ম ইহার গাত্তে বরাহের ন্যার লোম উৎপন্ন হয়। এই নিমিত ইহার শাম বারাহীকল।

हेरात शर्यात । विनाती, चाङ्गका छक्र विनातीटक ट्याड्डी, हेक्नुगका, कीत-वत्री, कीत्रछक्रा, शत्रविनी, वत्राद्यमना, गृष्टि ७ वनता कट्ट । গুৰ। ইহা মন্ত্র, স্লিক্ক, পৃষ্টিকারক, স্থানে কুরোদংপাদক, গুক্তকারক, জীবনীশক্তি সম্পাদক, বলকারক, রসারন, বর্ণপ্রদ ওগুরু। ইহা রক্তপিত্ত, বাবু ও দাহ নাশ করে। মাত্র; ৪ মাবা।

বারাহীকন্দ ও ভূমিকুরাও একজাভীয় কন্দ । এতদেশে বারাহীকন্দের পরিবর্ত্তে ভূমিকুরাও ব্যবজ্ত হইয়া থাকে।

विषात्री।

ভীরতক্ষেত্রক। চ জোক্রী স্কলা পৃণ।লিক। ।

গৃহাকলা বাদুকলা বিদারী চ বিদারিক। ।

ভূকুলাকী বাদুলতা গজেক। বারিবল্লত। ।

বৃহাবল্লী বিভালী চ সা লিখা ববুরা হিবা ॥

একী বলাল জননী পুঞ্জিণ বীহাবর্ত্তিনী ।

রক্তপিত জনজাতি তৃতা বৃদ্ধিপনোদিনী ।

বাতপিত প্রশাননী বস্যা বৃহা। রলায়নী ॥

বারা ৪ নাবকাঃ।

ভূমিকুমাণ ।

ক্ষীরভক্ষা, ইক্ষুপন্ধা, ক্রোষ্ট্রী, শুক্লা শৃগালিকা, র্ধাকন্ধা, স্বাদুকন্ধা, বিদারী, বিদারিকা, ভূকুমাণ্ডী, স্বাদুল তা, গজেষ্টা, বারিবল্লভা, র্ধাবল্লী ও বিড়ালী এই শুলি ভূমিকুমাণ্ডের দংস্কৃত নাম। ইহা লিগ্ধ, মধুর, শীতল, গুরু, কফক্ষনক, পুষ্টি-কর, বীর্যবন্ধক বার্পিত নাশক, র্ধা ও রলারন এবং রক্ষপিত, ভ্রম শ্রাভি, ভৃষ্ণা ও মুদ্ধিনিবারক। এই কন্দের মাত্রা ৪ মাধা।

अवंगका।

গৰাৰা বাজি নানা দিরখণকা বরাজনা। বরারকণা বরদা বসদা সুঠ গৰিনী । অপানতা নিল সোম বিত্তবোধা করাশদাণী ৰক্ষা রসারবী ।তিকা ক্যায়োক্ষাভিন্তক্রদ। । আমরতে প্রবং কান্ খামঞ্চান্ত ব্যংশাহতি। মাত্রা ২ বাধকৌ।

পর্যার। বরাহকনী, বরদা, বলদা, কুঠগন্ধিনী, অখ-বাচক-শব্দান্ত গন্ধাদি শব্দ সমস্ত ইহার পর্যার।

ওাণ। অর্থগন্ধ। বলকারক, রসারন, তিক্ত, ক্যার উষ্ণ ও অতিশার শুক্তক্ষনক ইহার দ্বারা বারু, শ্লেঘা, স্থিত্র (ধ্বলরোগ) শোথ, ক্ষরবোগ, আম্বাত, ত্রন, কাস ও শ্বাসবোগ নম্ভ হর। ইহার মূল, অভাবে সমস্ত অংশই গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাধা।

কে৷কিলাকঃ ৷

কোকিলাক্ষ কাকেফু বিজ্যুত্ত চেইকং ক্ষুত্ত।
ভিক্ষুং কাতেকুরপুত্ত ইকুগডেকু বালিকা ॥
ক্ষুকং শীতলো বৃষ্যং বাছন্তং পিবলভগা।
ভিজ্যে বাভাযশোধাখা ভূজা রুচ্যনিলাফ্রান্তং ॥
মাত্রা ও মাবকাং।

কুলেখাড়া। হিন্দী-ভাল মাথানা।

পৰ্য।র। কোকিলাক, কাকেকু, ইকুর, কুরক, কুর, ডিকু কাওেকু, ইকুগৰাও ইকুবালিকা।

তা। শীতল, বলকারক, স্বাদ্, আর, পিরজনক ও ডিক্ত। ইহার দারা আম-শোপ, আশারী; তৃষ্ণা. অরুচি ও বাতরক রোগ নিবারিত হর। নীরক্তাবস্থার ইহার শাক আহারার্থ ব্যবদ্বের। ইহার বীজ অথবা সমস্ত অংশ গ্রেণীর। নমাত্রাও মাধা

भातिवादत्रम् ।

কৃষ্ণ শারিবা। হিন্দী করিয়াবাৎসা। ইয়ৎ স্বযুক্ত বং পরা সুগদ্ধা কলক্ষিকা। কৃষ্ণাভূ শারিকা শ্যাবা গোলী গোলবধুক্ত সা॥ শুক্লশারিবা। হিন্দী খোয়ারিয়া সাও।
ইয়নপি স্বযুক্ষৎ পত্রা দুখগর্ডা প্রওতি র্ডব'ও।
ধ্বলা শারিবা গোপী খোপকন্যা কুশোদ্ধী ॥
ক্লোটা শ্যানা গোপবন্নী সভাক্ষোভা চ চন্দন।।

শ্যামাপদেন কৃষ্ণা খেডাপি শারিবা কথাতে সাখেতেন সারিবা পদস্য প্রযুক্তভাত্।

इत्त्राखनाः।

সারিবা যুগল খাদু বিজ্ঞ শুক্রকর ওক।
আরিবাদ্যা ক্রচিখান কাসাববিধনাশন্ম ।
দোৰত্রয়াত্র প্রদার অবঃভীসার নাশন্ম ।
ধেশন মৃত্ত্ব করা পর ব্যাৎ রসারন্ম ।
উপদ্শিক রোগন্ধ স্ক্রিফবিকার্মুহ ।
আমবাভ বাভরক্ত সূত্রোগাংশ্চ নাশ্যেৎ ॥
মাত্র ৪ মাবকাঃ।

শ্যামালভা ও অন্তুমুগ।

সারিবা দই, প্রকাব ক্ষণ্ড ও খেত।
এই উভরবিধ শারিবার সাধারণ নাম
খ্যামা এবং তন্মধ্যে ক্ষণ শারিবার পত্র
ভামপত্রের ন্যায় ইহা সুসন্ধি ইহার
পর্যায় এই 'কেশ্ব'টকা, গোপাঁ ও
ও গোপ বধু।

খেত শাবিবার পত্রপ্ত জামপানের ন্যায় এই লাতার অভ্যন্তরে তুম্পের ন্যায় পদার্থ বিশেষ থাকে। ইহার পর্য্যার ধবল., গোপী, গোপকন্যা, কুশোদ্দী, ক্লোটা গোপবল্লী, লাতাক্ষেত্রা প্ত চল্লনা।

ত্তণ। শাবিবাছর স্বাদু, সূত্র ভক্ত জনক, তারু, বিষয়, ত্রিদোষ নাশক, ঘর্ম কারক, মৃত্রকর, বলবর্দ্ধক, বৃষ্য ও রসায়ন।

প্রাের । অগ্নিমান্দ্য, অরুচি, বাস, কাস, আম্ভরে।প, বিষ্দ্রোষ, রক্ত প্রদার, জ্বাতীসার, উপদংশিক বিষ্জাত বিবিধ বিকার, সকল প্রকার চন্দ্রবাগ, আম্বাত বাতরক ও অবিধি পারদ্দেশন জাজ রোগ সমস্ত ইহার হারা প্রশমিত হয়। ইহার মূল অভাবে সমস্ত অংশই গ্রহণীর। মাত্রা ৪ মাধা।

इशम् नी।

সুধান্ত্যমূডোখা চ বীরকন্দোহজিরাৎ বড়ঃ
বীরকন্দোহগ্রিজননঃ প্রজ্ঞাতো বলবর্জনঃ ৪
রক্তব্যেহরো হবে গ্রা বস্থাবাদীপনস্চ সঃ।
রসায়নঃ পর্ব হুয়া আরুষ্যঃ পুঞ্জিয়া ক্রেঃ ॥
মাত্র; এ মায়কাঃ ;

তুর্।মূলী, অনুভোগা ও বীরকক এই
সকল শক্ষ পালুমমিছরির সংস্কৃত নাম।
ইহা অথিবর্দ্ধক, শুক্তজনক, বলকর, রক্তদোষ নিবাবক, জ্দা, কামোদ্দীপক, রসায়ন;
রুষা, আযুব্য ও পৃষ্টিকারক। শুক্তর্দ্ধর
জনা ইহার চূর্ন।। তোলা। তপোয়া দুর্
ও কিঞ্চিৎ চিনির সহিত পাক করির।
সেবনীর। ইহার কুলও স্ক্রিনা ব্যবস্থা
করাসায়। মান্তা ৪ মাধা।

অমরবলী।

कोर्डिजायवरलो ह वृष्णवली मुझामिनी। वृष्णवली वनकत्रो भद्गः वृष्णा व्याप्तनी ॥ वृत्रकृष (सम्स्रमनी भूष्णिमा कार्णावादिनी। सम्बद्धा (सम्स्रम् ॥ इक्टर्स्स (स्टब्स्यम् ॥ सार्वा ॥ सार्वा ॥ सार्वा ॥ सार्वा ॥ सार्वा ॥ सार्वा ॥

অমরবর্রা, রুষ্যবরী ও স্থালিণী এই গুলি দালদার সংকৃত নাম। ইছা বল কারক, রুষ্য, রদারন, মৃত্তকর, স্থেদ জনক, পৃত্তিকারক, কৃশভা নিবারক, রক্ত বিশোধক উপদংশ বিষ্পাভ বিবিধ পৌন বিকৃতি নিবারক। এই লভার মৃল ব্যবহার্থা। মালো ৪ মাখা।

পাতাল গুরুড়ী।

ছিলিছিন্টো মহামূল: পাডাল গরুড়াজয়:। ছিলিছিন্টঃ পর্থ বৃষ্যা কফল্প প্রমাপহ:॥ যাত্রা থ্যাহকো।

পর্যায়। ছিলিহিণ্ট, মহামূল ও পাতাল গরুড।

অংশ। বলকারক, বায়্নশেক ওকেফন্ন। এই লতার সমস্ত তাংশ গ্রহণীয়। মাত্র! ২ মাষ্য

িদ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

রসার নবর্গঃ।
আমলকী।

নিভাস্তকমাখ্যাত থাক্রী তিয়াফলাম্তা;
হরতিকী সমভাক্রীফলৎ কিন্দু বিশেষতঃ ॥
রক্তপির প্রমেহছ্ম পরং বৃহাৎ রসায়নন্।
হঙ্কি বাতং তহলভ্রাহ পিনং মাধুর্যা শৈত্যতঃ ॥
কফং ক্লক কহায়ত্বাহ তলং ধাক্রাক্রিলোযজিহ।
মক্তাস্য হরতি আভিং তৃহাৎ দাহৎ বিশং অমন্ ॥
যস্য যস্য ফলসে।ই বীর্যাৎ ভবতি যামূলম্।
তস্য তবৈয়ব বীর্যাণ মক্তানম্পি নিক্টিশেং ॥
নাক্রাহ মাহকাঃ।

অ¦মল কী।

আনলকী, আমলক, ধাত্রী, কিষাফলা ও অম্ভা এই গুলি আমলকার নাম। আমলকী হবীতকার নায়ে গুণ বিশিষ্ট, বিশেষভঃ ইহা রক্তপিত্ত ও প্রমেহ নাশক ও বলকারক। অম্লুরস থাকাতে বায়ু নাশক, মিষ্ট ও শীতল বালরা পিত্তনাশক রুক্ত ও ক্যার বলিয়া ক্ষুনন্ত করে। অভএম আমলকা ত্রিদোধ নাশক। আম-আমলকীর মজ্জা শ্রাম, তৃষ্ণা, দাহ, বমি ও শ্রমরোগ নিবারণ করে। অধিকত্ত যে ফলের থে গুণ নির্দেশ কর। যাইবে তাহার মজ্জারও দেই গুণ জানিবে। আমলকীর মাত্রা ৪ মাধা।

ठऋण्वम् ।

চজ্জিকাচর্ম্মছন্ত্রী চ পশুমেছন কারিকা।
নন্দিনী কারবী ভক্তা বাসপুষ্পা সুবাসর। ॥
চক্তমশূরং ছিডং ছিকা বাতপ্লেরাতিসারিনাম্।
অসুগ্রাত গদছেষি বসপুষ্টি বিবর্দ্ধনম্॥
অসুগ্রাত গদছেষি বসপুষ্টি বিবর্দ্ধনম্॥
অসুগ্রাত গদছেষি বসপুষ্টি বিবর্দ্ধনম্॥

श्लिम।

চক্রিকা, চর্মাই থ্রী, পশুমেহনকারিকা, নন্দিনী, কারবী, শদ্ধা, আসপুষ্পা, ও স্কুণ্-সরা এই ওলি চক্রশুরের পর্যনায়। চল্মূর হিকা, বাতপ্লোম, আক্ষানা ও ব ভ-রক্ত রোগে উন্চা, ক এবং ফলকার ও পৃষ্ঠিজনক। এই বৈচের মন্ত্র নামান

চতুৰীজমু।

মেথিকা চক্রশুরশ্চ কালাভাভী থবানিকা।
এডচ্চতুইয়ং যুক্তং চতুনথীজ নিতিফাতৃত্য।
ভচ্চত্থ ভক্তিঙং নিতাং নিহন্ত প্রনাময়ন।
অজীনং শূলমায়ানং পাশ্লশুলং কটিবাধান্।
নাতাং মাধকৌ।

চারদানা।

মেথি, চল্রশ্ব ক্ষেজীরা ও স্মানী এই চারি জব্য একত্র সংযুক্ত করিলে চতুকবী জ বা চারদানা কন্ধ যায়। প্রকাহ চতুকবী জ চূর্ণ সেবন করিলে বাহুরোধি অজীর্ণ, শূল, আধান (পেট্নাপা), পার্শ শূল ও কটির ব্যথা দূর হয়। মাত্রা ২ মাধা।



চোৰচিনী ৷

मीशास्त्र यहां किकिसिटकांचा यक्षिशिक्तः। विवस्तामाममुक्ति मक्ष्म मुक्तिरशास्ति ॥ याख्यास्थिनेकांत्रमुकांकि खनूरवस्तास्। याद्याहिक विद्यादक कित्रमायस्नामिने ॥ यादा ३ सायकः।

তোপচিনি।

এই জব্য দ্বীপে জন্মিরা থাকে ইয়া
এক প্রকার বচ। এই জব্য কিঞ্চিৎ তিন্তৃ
উষ্ণ, অগ্নিদীপ্রিকারক ও নাল্যা
শোধক ইহা মলবন্ধ, আগ্নান (পেটালাপা)
শূল, বাতব্যাধি, অপস্মার [ম্নী] জিল্প
ও গাত্রবেদনা দূর করে, বিশেষতঃ ক্রিক বোরে [উপদংশ বিশেষ] বিশেষ ক্রিক। ইহার মাত্রা ২ মারা।

ভল্ল क्रम्।

ভলাতক\ কিবুপোক মরুকোংরকরে হিরিকঃ
তবৈবাগ্রিমুখী ভলাবারবৃক্ষণচ শোফকৃথ গ
ভলাতকক্ষণ পক\ যাপুপাক রস\ পদু ।
ক্ষায়\ পাচন\ মিঞ্জ\ তীক্ষোক্ত\ ছে বিভেদন্য র
মেধ্য\ বহ্দিকর\ ছতি কক্ষ্যাতরনোদ্দম্ ।
ক্তাশোগ্রহনী গুলুশোফাদাহ অর ক্রিমীন্ ॥
ত্যাভ্যা মধুরো ব্যো ব্\হনোবাহপিত্য ।
ব্র মারুকর\ যাবু পিরের\ কেশ্যনাগ্রহ ।
ব্র মারুকর\ যাবু পিরের\ কেশ্যনাগ্রহ ।
ব্র মারুকর\ বাবু পিরের\ কেশ্যনাগ্রহ ।
বাতরোক্রানার কৃতিশো গ্রহনা মধুরে। এল্যা
হতিগ্রহ্মানার কৃতিশো গ্রহনার বিদ্যালয় ।
হতিগ্রহ্মানার বিদ্যালয় কিনির্নান ।
মানা ও বিক্রান।

ভেলা:

ভন্নাত্তক, অরুক, অরুকর, অগ্নিক, অগ্নিমুর্বা, ভন্নী, বীরবৃক্ষ ও শোকরুং এই গুলি ভেলার নাম এপকভন্নাতক কল পাকে স্থানু রস, লঘু, কখার, পাচক, শ্বিশ্ধ ভেদক

6股10頁1

वस्य ५६४ । तुर्भा ७ अ.जे.सु (क्यो**िन ४३** सूत्र 🗈 িং বলক৲ুগ্রীলে ম'হব**াক পলস্বা**ু∎ . का भए भी जा कम पुर शंभ **हेरालि।** भागकार अस्ति। इसि हाई स्वार अस्ति। अस्ति। দু ঘাল্লৰ বা নাভি সংখ্যাক **ই'উ আ্ত**া 图如"图"的"知"。(例:"图》(《题)(《题)《题》的"题"。 कर पर व्यापान्य गान्य गान्य १८४ (मानिका मिनिस्र) विक्तनप्रकार १४८८ वर भागामा **प्राथमिक ।** া, মাল্লীকেল প্ৰক্ৰোৰণে (ইছানুক্ছ) (াম স্বৰ পাত্ৰত ভাষ্ট্ৰ, টেক্টাৰ্য্য কৰে 🗋 পাৰ্ব্বেই 👔 জ ১৮০০ ২ ব্যক্তীত মত ইফ্লিয়েমাক্তিয় প্রকাশক শিক্ষার জিলাজা সাংখ্যাক্র শিক্ষার সর্ভা अपन्य वा नाम । बार क्ष्यांक समाप्रीया (१८२) (१९) ज का का १५० : क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र স্ত্ৰিত বিশ্ব কোজাৰ প্ৰস্থান কিন্তু (জ্বাইছ) ស (១២៦ ខ.មន្តសារ ក្នុសាខន្ធាល**់មន្ត្រា** (७.५%) ५ ५०%) १८६२ अध्यानु **भक्तीभाष का ॥** ন্দ্ৰে দুৰ্ভান ভুষ্ট পান্তৰ সূৰ্বি নৰ্থানান বিচাৰত কাজনত সংখ্যালয় পাঞ্চাল আগোপায় এ मुख्यमः १ वर्षम् । इस्ता कर भूषा विभावा निक्रियः । खरका नुर्द (३४०) खद ना क ब्याह्य देनीकर ॥ पुतान मुद्ध (१८ व्यास अम्यान् क्योंच) वार्षिकः। হলে ভাক্সভানিক গালায়ে প্রস্কারণ্র र मा 🔍 इस्ति प्रशास्त्र हो है। स्वार्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर আয়তে প্রপাদিশা সক্ষতার এ এগাইন সভাপিতা ভ শী হাস্ত্ৰী শোশক্ষত গৈ এইওই এন্ট্ৰু ইন্ট্ৰুইডি

হেনাত শ্বহিন্ত তুল্যবলুর সংপল্পর গোপন তুলাত কুল্ল পুনুতি বিধনাগ্রাহ্যা পরীক্ষা ভতঃ।
বহ্নাক্তরিভ কালে বিলয় প্রান্তি
ক্লিয়াভিক্যেক সলিলে পারসং সমানাং।
গ্রাহ্যাঃ ক্রভাং পরিহরেচ্চির কাল জাতাললার বর্ণসম পুরবিগত্তবর্ণান্।
গ্রহস্য নির্ব্যানো গ্রাহ্যং, মাত্রা ২ মায়কৌ।
গুণুগুলু।

रधन् खल्, दमवध्न, कहे त. दको भिक, পুর, কুন্ডোলু, ধলক, মহিধাক ও প্রব-क्य और छलि देशात नाम । छन् छल् পাঁচ জাতীয় মথা মহিয়াক, মহানীল, কুমুদ, পদা ৩৫ হিরণা। মহিষকা ওগ-श्रानुत वर्ग खगव १० कच्छा त्या व ना। य মহানীল গুগ্তলু অতিশ্য নীশাবৰ্ণ, क्यूमाथा ए ग् एल्व दर्ग क्यूरमय नाइ, পল তগ্তসু মানিকোর ন্যাব ও হির-ণ্যাক্ষ গুণ পুত্ৰ পুৰু সদৃশ। মহিধাক্ষ ও মহানীশ তগ্তলু হতিগণের পকে হিতকারক, কুমুদ ও পদা নামক গুগ্তসু **খোটক দি**ৰেে বাৰে ব্যবহাত হয়, समूराज्ञात्रां भारक वर्ष खन् छन् व वाद-হায় ইহার আভাবে মহিষাক তগ্গুলু ব্যবহার করা মায়। গুগ্গুলু বিশদ **ভिक्त, डेक्श**बीर्थ, शिव कन्ह, **ক**ধাৰ, কটু, পাকে কটু, রক্ষ, লঘু, ভগ্ন च्रात्नत्र नश्दशायक, वनकात्रक, चद्रित छे९कर्य जनक, त्रमात्रन, जिम्हीशक ও পিচ্ছিল, ইহা কফ, বারু, ত্রা, অণ্চী, स्मरकादबान, स्मर, जानारी, वानु, भरीदवब **ट्रिय, कुडे, आम**राज, शिक्का, श्राष्ट्रीरतात्र, (भाष, व्यर्णः, गडमाला 😉 क्रिम नाल क्दम। देवा माधूर्या दश्कू वायू, कवाज ৰ্শিরা পিত ও ডিক্ত ব্লিক্স। কফ নষ্ট करत वाक भारत के जान के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के ন্তন ধন্তলু পুটিকারক ও বলবছ ক প্রাতন গুণ্গুলু অভিশার লেখন। ন্তন গুণ্গুলুর চিক্ত এই বিশ্ব, ফর্ণ দদ্দ উচ্ছুল, পক্ অব্ ফলের ন্যার ও পিছিল। প্রাতন গুণ্গুলু ভঙ্ক, দুর্গক, স্বাভাবিক বর্ণাদি রহিত ও বীর্ষ্য হান। গুণ্গুলু দেবন কালে আর, তীক্ষ জ্বা, অভীন ভোজন, মৈগুন, পরিশ্রম, রৌজ্পেরা, মদ্য ও জ্বোর প্রিত্যাগ করা উচিত।

গুগ্গুলু রুক সকল মরুদেশে উং-পিল হয়, গ্রীম ঋড়ুতে স্থাসভাপে সভা-পিত ও শিশির ঋতুতে হিমার্ত হইণা উহ'র৷ গুগুলুলামে নির্ঘাদ বহির্গত করে। স্বর্গ, মহিধের চক্ষুঃ, পদ্মবাগ্যনি, जमत ७ क्यून भूक्य वहे भाउति भन. ८ थर्त ন্যাষ বাষ্ক পাচ প্রকার গৃগ্লু দৃষ্ট হয়। যে পুগ্গুলু অগ্নিতে নিকিব হইলে জ্বলিয়। উঠে, স্থ্য,সন্তাপে জ্বীভূত र्य ७ উक्षकल निकिथ रहेल गलिया জলের না।র হইরা যাব। তাহাই উৎ কৃষ্ট ও প্রাহ্য। যাহ। পুরাতন ও যাহার ব জিলার সদৃশ ও গক পুষের ন্যাৰ তাহা অপক্ষ। এই রণ গুগ্গুলু खेषधार्य वायदाय कत्र। कर्छे । नरहा গুগ্গুল্ব মংত্রা ২ মাশা

मूनली कम्यू ।

ভাগমূলী তু বিশ্বতি মু'ললী প'রকীর্তিত।
সা দ্বিধা কীর্তিতা প্রাক্তিং শেতা চাপরস\জিতা।
খেতা কপেওবা প্রোক্তা ভূপরা চরসায়নী।
মূললী মধুরা ব্যা বীর্য্যোক্তা ব্ংহনী গুরুং ।
ভিক্তা রসায়নী হতি ওক্তান্যানিক কথা।
ক্ষায় মূল্যানা হতি ওক্তান্যানিক কথা।
ক্ষায় মূল্যানায়ন, বাব্য সাধকঃ।

ভালমূলী।

তালমূলীকে মুশলীকল বলে। ইহা খেত ও কয়জেলে গৃই প্রকার। তথ্যব্যে খেতমুশলী স্বল্প গুণোপেত, কৃষ্ণমুশলী উংকৃষ্ট গুণ বিশিষ্ট ও রসাধন।

প্তা। মধুর, বলকাবক, উষ্ণবীর্ষা, পৃষ্টিকর, গুরু, ভিক্তু, বদাসন, বায়,নাশক ও আর্শ: প্রশমক। ইহাব মূল ন্যবহার্যা, মাত্রা ২ মাধা।

भटावती महाभटावती।

শতাবরী বছসুতা ভাকুরিকাবরী বরী।
মারাঘণী শতপদী শতবীর্ঘ্যা চ পবিরী।
মহাশতাবরী চ ন্যা শতরুলার্ক কঠিকা।
সহস্র বীর্ঘ্যা মহতী গুষাত্মাকা মহাদেরী।
শতাবরী গুরুং শীতা তিকা যাদ্বী রুলায়নী।
মেষারা পুরীদা মিঞা নেত্র্যা গুলাতিলারকিং।
মহাশতাবরী মেষ্যা হ্রদ্যা বুষ্যা রুলায়নী।
মহাশতাবরী মেষ্যা হ্রদ্যা বুষ্যা রুলায়নী।
শতিবীর্ঘ্যা নিহত্তাশোগ্রহণীময়নাম্মানা।
শন্যা মূল্যগ্রাহাৎ, মাত্রা ৪ মারকাঃ।

শতাবরী ও মহাশতাবরী। পর্যার। শতাবরী, বহুস্থা, ভারু, ইন্দীবরা, বরী, নারাষণী, শতপদী, শত-বীর্যা, ও পীবরী।

মহাশতাবরীর পর্যাবা মহাশতা-বরী, শতমূলী, অর্ক্তিকা সহস্ত্রবিয়া, মহতী, শুণাপ্রোক্তা ও মহোদরী।

তা। শতাবরী গুল্প, শীতল, তিক্ত, খালু, রসাবন, মেগাংগ্রিক, অগ্নিকারক, প্রিকর, স্নিগ্র, চলুর বিভবারক, শুক্র-জনক, অনে রুজোৎপাছক, বলকারক ও বার্নাধক। ইহার মূল প্রাহ্য, মাত্রা ৪ মাষা। ইহা ছারা ওকা, অভীনার, রক্তপিত ও মেহরোগ উপশ্যিত হয়।

মহাশভাবরী স্বরণখন্তি বছ ক, জ্বা, বলকারক, রলারন ও দীতল বীর্যা। ইহা হাবা অর্ণা, গ্রহণী ও নেত্রবোগ উপ-শমিত হব।

ভূপরাজঃ। -

ভূপরাজো ভূপরজো যাক্রেবাভূপ এব চ।
আলারক কেপরাজো ভূপারং কেপরঙ্গাঃ ছূ
ভূপার কটুকপ্তীজ্যে রুজ্মোজঃ ক্ষরাভ্যুত্।
কেপান্ত্যুচ্যঃ ক্রিমিখাল কালগোলীমপাত মুত্র
সংগ্রেলারমো বলাঃ কুঠনেরলিরোর্ভিন্ত।
মাত্রা সাবকৌ।

ভীমবাজ হিন্দী ভঙ্গরা।

পর্যনার। ভূসবাল, ভূসরজ, মার্ক্র, ভূস, অসারক, কেশরাজ, ভূসার ও কেশ-রঞ্জন।

গুণ। কটু, তীক্ষ, রুক্ষ, উষ্ণ, বাত-শ্লেমনাশক, কেশ, ত্বক্ ও দত্তের হিত-কারক, রুকায়ন ও বলকারক।

প্ররোগ। ক্রিমি, খাস, কাস, শেংথ, আমক্ষরোগ, পাণ্ডু, কুষ্ঠ, নেত্ররোগ ও শিরংশীড়ার প্ররোজ্য। ইহার সর্ববাংশ ও স্থারস্ গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাষা।

কেশরাল অর্থাৎ কেন্ডরির। ভূমরাজ জাতীর ক্লুপ বিলেষ। ভীমরাজ অপেকা ইহা ক্লুজ হইরা থাকে। উভ্নের গুণ প্রার একপ্রকার, কোন কোন হলে ভীম-রাজ অপ্রকান কেনিরো দ্বারা অধিক উপকার পাওরা দার। ঘাহা হউক কর্ম-ভূলেই ইহাদের একটীর পরিবর্জে অপ্রকী ব্যবহার কুরা ঘাইতে পারে।

পর্যায়। শাল্মলী, মোচা, পিচ্ছিলা পুরণী, বক্তপুঞা, ছিয়ায়ুঃ, কণ্টকাচা। ও তুলিনী।

শুণ্। শীতল, আস্বাদে ও পাকে স্বাত্ন, রসারন, কফবর্জ ক, পিচ্ছিল, ধারক বলকর, লখুপাক ও শুক্রবর্জক। ইহা পিত্র, বাতরক্ত ও বক্তপিত্ত বে'ল উপাশম কবে। ইহাব পুল্প ঘৃত ও সৈলবেব মহিত পাক করিবা খাইলে প্রদর বোগ নিবাবণ হয়। শাল্মণীর মূল ও জ্গাদি গ্রহণীয়া মাত্রা স্মাধা।

তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ।

বাতলবর্গঃ।

পান্যকং।

ধানাকং ধানকং ধানাং ধানা ধানেযকং তথা।
কুনটা ধেনিকা ছতা কৃষ্ণুকু বিত্যকন্।
ধানাকং তৃবরং বিক্রমন্ত্রাং সুত্রকং কার।
তিকংকটুজ বির্যাঞ ছীপানং পাচনং সাত্র্যা
জরমুং রোচকং গ্রাহি মুদুপ কী ত্রিণোবণং।
তৃজ্ঞানাহ বিষয়াস কাস কাশ্য তিম্প্রপূর্ণ মার্মু বিশেষাং পিতনা পিতং॥
আন্তর্গুণ্ণ মানুহ বাবাং পিতনা পিতং॥
অস্য ক্লং গ্রাহু ব্যাবাং শিতনা পিতং॥

পুনিগ্।

ধানাক, ধানক, ধানা, ধানেবক, কুনটী, ধেনিকা, ছত্রা, কুগুছুরু ও বিত্রাক এইগুলি ধনিবার নাম। ধনিরা ক্যার রস, লিগ্ধ, বলনাশক, মৃত্রকারক, লগুভিক্ত, কটু, উষ্ণবীর্ঘা, অগ্নিদীপক, পাচক ক্ষরন্ধ, বোচক, গ্রাহক, পাকে মিষ্টরদ ও বিদ্যার নাশক। ধনিরা ক্ষা, দাহ, বনি, খাদ, কাদ, কুণতা ও ক্রিমিনষ্ট করে ব আন্ত (কাঁচা) ধনিরাও এই

গুণ, বিশেষক: উহা পিতনাশক ও স্বান্তু। ইহাৰ ফল বাৰহাৰ্য্য, মাত্ৰা ২ মাৰা।

অত্যী।

অতসা নালপুন্সী চ পাৰ্বতী স্যাৰুষ: কুষা।
অতসা যধুরা তিকা বিধা পাকে কটু গুকুঃ ।
উচ্চা দৃক্ অক্রতাত্মী কম্পন্তি বিদাশিনী।
কাসাতিসারহরণী ত্রণসংশোধনী মতা।
অস্যা বীল্পঞ্জাহ্য দাত্রা ২ মাধকৌ।

ভিসি, মদিনা।

গত্নী, নীলপুষ্পী, পার্থ্যকী, উমা ও
কুমা এই বালি বিসার সংস্কৃত নাম। তিনী
মর্র, বিজ, রিশ্ধ, পাকে কটু, গুরু, উষ্ণ
দৃষ্টিশক্তির হাদকারক, শুক্ত কারকর,
বায়নিত কফনাশক, কাদ নিবারক, অভিনার প্রশাসক ও রেগশোসক। তাশ শোধন
মার্থ পুল টিশ রূপে ব্যবজনত হইরা থাকে।
ইচার বীল গ্রহণাস, মান্তা ২ মাধা।

পাটলা।

পাটলা পিজিলো প্রোকাসা বিভা কাস বারিণী। শিশ্মযোন্যোহরেলাহৎ ত্রণহাহ নিবারণী।। অস্যাবীলৎ গ্রাহাণ মাত্রা ২ মাহকৌ।

বিভিদানা।

বিভিদ্যনার সংস্কৃত নাম পাইলা ও পিছিলা। ইহা লিখা, কাসন্ম নেচুও সোনির দাহ বিবারক। ক্ষত হানের জালা নিবারণার্থ ইহার স্থানিক প্রয়োগ করা যার। এই বীক্ষের মাত্রা ২ মাবা, প্রায় জলে মর্জিত বা শিক্ষ করিয়া প্রয়োগ করা রার।

भीकरीकम् ।

শীন্তবীন্ত্ৰং বৈশিরীকং শৈত্যবীন্ত্ৰক পৰ্যতে।
বুন্ধকং পতিবীন্ত্ৰং স্থাকুক্ষবান্ত নিবারপন্।
বান্তিসংগোধনং প্রোক্তং প্রক্রমন্থ নিবারপন্।
আন্নানাপহরকাস্য বোজ্যঃ দীতকবায়কঃ ।
সাত্রাং বাবকৌ।

हेमण्ग्म ।

শীতবীজ, শৈশিরীক ও শৈত্যবীজ এইগুলি উপপ্গুলের সংস্কৃত নাম। ইহা মৃত্রকারক, উষ্ণবাত নিবারক, বস্তিদোষ সংশোধক, শুক্রমেহ প্রশমক ও আগ্নান নিবারক।

এই বীজের মাত্রা ২ মাবা। শীত কৰার রূপে অর্থাৎ রাত্তিতে ডিডাইযা রাধির। প্রাতে দেই জল সেবনার্থ ব্যবস্থা করা যায়। ক্যাগাদিও অপ্রবোজ্য নহে।

তগর।

কালানুসার্য্য তগর ক্টিলং লয় সংমতন্।
অপরং পিওতগরং বতহতী চ বহিন্দ্ ।
তগর হর বুজং স্যাৎ বাদু রিজো লযুসাত্ম।
বিবাপকার খুলাকি রোগদোব তয়াপহন্ ।
বোহ্যা তগরকাভাবে শীতনী তন্তবা বুবৈং।
অনরোর্জং গ্রাহ্য হাত্রা ২ বাবকৌ।

ভগরপাচুকা।

কালানুসার্য্য, তগর, কৃটিল, লবু,
সংনত এইপুলি তগরপাছকার পর্য্যার।
অপর এক প্রকার তগর আছে তাহার
নাম পিওতগর, হওহতী ও বহিবি। উতর
প্রকার তগরই উঞ্চ, স্বান্ত, স্বিশ্ব ও পদু।
কুধরপাছকা সেবনে বিব্যোধ, অধুস্মার
কুল, নেত্রযোগ ও বাতাদি বোৰ ত্রের

নষ্ট হয়। এই উভরবিধ তপরের মূল গ্রাহ্য, মাত্রা ২ মারা। তগর পাতৃকার ভাভাবে শীক্ষী অর্থাৎ শিউলীছোপ প্রযুক্ত হইকে পারে। উহারও থাণ ও ১ মাত্রা তগরের ন্যায়।

স্বর্ণবল্লী।

বর্ণবল্লী রক্ষসা কাকামুং কাকবল্লরী। বর্ণবল্লী বিরংপীড়াৎ ত্রিবোবান্ হতিদুখন। । অস্যাং সর্কাৎশো গ্লাহ্য বাতা ২ নাবকে।।

कर्शकोत्रहे।

পর্য্যাব । স্কর্ণবন্ধী, রক্তফলা, কাকারু ও কাকবল্পরী ।

গুণ। ত্রিদোষ নাশক ও স্তনে তৃগ্ধ জনক। প্ররোগ। শিরঃণীড়া বোগে প্রবোজ্য। ইছার সমস্ত অংশই গ্রহণীয়, মাত্রা ২ মারা।

नक्ष्यमावशी।

প্রসারণী রাজবলা ভদ্রপণী প্রতাপনী।
সরণী সারণী ভদ্রা বলাচাপি কটভরা ।
প্রসারণী গৃরুদূরি। বলসভান কৃৎসরা।
বীর্যোভা বাডছৎ ডিকা বাডরকককাপহা।
এডসাঃ সর্বাংশো আহাঃ। বারাং বাহকৌ।
গক্ষাদুল্যা।

পর্যায় । প্রসারণী, রাজ্বলা, ভদ্র-পণী, প্রভাগনী, স্বণী, সারণী, ভদ্রা, বলা ও কটছরা।

ওগ। গৃহ্ণ গুক্রজনক, বলকারক, লন্ধারক, লর, উফ্লবীর্য্য, বারুনাশক, ভিক্ত ও কফ নাশক, ইহার দ্বারা বাতরক্ত রোগ উপশ্নিত হর। এই লভার সমস্ত অংশই গ্রহনীর, মাত্রা ২ মারা।

চতর্থোঽধ্যায়ঃ।

পিত্রহর্গঃ।

वाजिनने रेनवानक।

বারিপর) কুভিকাস্যাইচ্ছবালং লৈবলঞ্জৎ। বারিপরী ছিবান্তিজ্ঞালছী যাথী সরা কটুঃ। বোষত্রয়হরী ক্লডা শৌনিত জর শৌরহং। শৈবালং তুবরং তিজং মধুরং শীতলং লঘু। মিঞ্চং বাহ তুবা পিত রক্তজ্য হরংপরন্। জনয়োবাত্র ২ বাহকৌ।

পানা ও পেহালা।

शिकी खनकुछी, त्मवात्र ।

পর্যার। পানার সংস্কৃত নাম বারি-প্রাণিও কুন্তিকা। শেহালার সংস্কৃতনাম শৈবাল ও শৈবল।

গৃণ। বারিপণী শীতল, তিক্তু, লঘু, স্বাচু, সর, কটু, ত্রিদোষ নাশক, রুক্ষ, রক্ত জরও শোধ নাশক। শৈবাল কষার, ভিক্ত, মধুর, শীতল, লঘু ও লিগ্ধ, ইহা দাহ তৃষ্ণা, পৈত্তিক ও রক্তগত জর নিবারণ করে। উভরের মাত্রা ২ মাধা।

किनम छर्री।

কলিছভাঠী ভিজা স্যাদ্ বলক্ষ্ বাহ্বিছিনী। অত্তীৰ্ণ নিধিলং হতি বালাভীসার নালিনী ॥ য়বজারমুভা বাত্তিং বার্জুগ্যান্চাপি সংহরেৎ ॥ অস্যা মূলং প্রাহ্যং বাত্তা > সাবকঃ।

ক্লিদশুঠী।

কলিকণ্ডী তিক্ত, বলকারক ও অধি বৰ্জক। অজীন ও বালক দিপের অতি-সার রোগে ইহা ছারা উপকার হয়। ষব-ক্ষারের শহিত লেবন করিলে বমন নিবা-রণ হয়। গর্ভাবস্থার বমন নিবারণার্থও ষৰক্ষানের সহিত প্রযুক্ত হইরা থাকে। এই শতার মূল প্রহণীর। মাত্রা ১ মাধা।

नाष्ट्रिकम्।

নাজিক বাললাক আছণাক কালক ।
কাললাক সরংক্রা বাতকু ককণোগছ ।
বলা কৈ কিয় শেষ্য রক্তি কর বিষয় ।
অপিচ। নাড়ীচশাক বিষয় ডিক মুধুরসেবচ।

রকাশিষ্ট্র ডিক্রু কিনিশ্ন । মধুর পিচ্ছিল পড়ি বিউচ্চি ক্ষরভিত্ । অস্পর্থ এহণীয়া মারা ২ মাধ্রে।

না[লত।

নাড়িক, কালশাক, প্রান্ধশাক, কালক ও নাড়ীচ ইত্যাদি শব্দ নালিতার সংখ্ ত নাম। নালিতা অন্ধ ভেদক, ফুচ্য, বার্জনক, শ্রেমশোথ নাশক, বলকারক, ফুচিজনক, মেধাবর্দ্ধক এবং রক্তলিত্ত, কমি ও কুট প্রশমক। মধুর নাড়ীচ অর্থাৎ পাটশাক পিছিল, শীতল, বিইন্তী, কফজনক ও বার্বর্দ্ধক। নালিতার পত্র ব্যবহার্ঘ্য, মাত্রা ২ মাবা।

পপপট।

পণ্পটো বরভিজন্ত ক্তঃ পর্টক্ত স।
কবিতং পাংল পর্যায় ববা কবচ বাদকঃ ।
পর্টোহার পিভাজ ক্ষম তুজা কক্ষয়ান্।
সংগ্রাহা শাতসভিজ্যে হাহমুহ বাভলোলযুঃ ঃ
এতন্য সর্বাংশা গ্রাহা, গাব্য ২ বাবকো।

क्ष्मिण्या। शिमी प्राम् शानका

প্র্যায়। পর্যাট, বর্মভিক্ত, পর্যাটক, পাংত পর্যায় ও করচ। গুণ। সংগ্রাহী শীতল, জিব্রু, দাহ নাশক, বাগুজনক ও লঘু।

প্রবোগ। রক্তপিত, ভ্রমরোগ, তৃষ্ণা ও কফভরে প্রয়োচ্য। এই ক্ষ্পের সমস্ত অংশ গ্রহণীর, মাজা ২ মাষা।

(457: I

বেডসো ন্যুকঃ প্রোকো বাণীরো বলু সভগা। অন্ত্রপুষ্পান বিদুলো রগংশীভশ্চ কী ভিডঃ। বেডসং শীতপো দাহ শোগার্শে যোনিক্লক্

ছিও বিদপ্কৃতভূত্র পিতাখার ক্যানিগান্। অস্য মুল্ শাখাগ্রঞ গ্রাচাংমানা ১ মাবকঃ।

(वत्त, त्रक ।

প্রয়াষ । বেত্স, ন্মুক, বানাম, ব্লুম, অনুপুজা, বিহুল ও শীত ।

ধুণ। বেতস শীৰল, ধান।ধক ও কফশ।ভিকৰ।

প্রদোগ। দাত, শেথ, হার্ম, বে'নি বোগ, বিস্পা, কঠিন বড়পিত ও অখনা রোগে ব্যক্তিয় । ইহার মূপ ও শাগ এ প্রহণীয় । মানা ১ ম গা।

रम्पद्रकाः ।

নিকুন্ধক পরিস্যাগো নাহেযো জলস্তেনঃ। জলজোগেত দং শীতঃ কুইল ছাতকে পন । জন্ম সক্ষা পো এ'ছাং, নায়া ১ মাহকঃ।

পর্যার। নিক্ঞক, পরিবাধ, নাদেয ও জলবেকন।

গুণ। ইহা শীকল, বাসুপ্রকোপক ও কুঠনাশক। ইহার সমস্ত জংস এহ-বীর। মাতা ১ মাবা।

रिकानः।

ইক্সলো হিক্সলভাপি নিচুসভাস অন্তর্ধা। জনবেতস বংহল্যা হিক্সলোহন্ত্রং বিহাপহং ॥ অন্য বীজং প্রাহ্যং যাত্রা ৬ রক্তিকাঃ।

হীজল হিন্দী সমুদ্দল । প্রাায় । ইজ্জল, হিজ্জল, নিচুল ও অস্থুজ।

গুণ। জলবেভদের ন্যাব অধিকস্ক ইহাবিষয়। ইহাব বীজ গ্রহণীয়। মাত্রা প্রতি।

नो गार्का।

নীলদুৰ্বা রহানতা ভাগনী শতপ্ৰিক।।
শত্পংসহত্ৰ নীম্যাত শতবলী চকাৰ্তি।।
নালদুৰ্বা হিমাতিকা মধুরা তুবর হারং।
ককপিতাত বাস্পত্তা দাহ সুখাস্য,ন্।
যাত্রা ১ মাযক।।

गोगलि।।

গঠিত। নীশল্মী, হৈং, জনভা, ভার্মী, শতাংমিকিং, শংলা, সংস্কৃতিকা ও শেশুলা।

গুণ। শাৰিল, ভিক্তি, মধ্ব ও চিম্ম। প্ৰথোগ। বফজ বফাগিব, বাসপা, কুফো, দুহ ও তুচেৰ পাড়াৰ প্ৰশোকা। মানা সম্মা ক্ৰাম মানা - কোনা ফুটা হ তুলা।

থেতন্র।।

দুৰ্ব্বাখ্যক। সু শেলোমী শতশীৰ্থনা চকপাতে। খেতাদুৰ্ববা কৰ'ঘায়াৎ ৰাদ্বী বলনা চাছীবনী । ডিকাহিমা বিদৰ্শাত্ৰ ভূট্ পিৱ কফদ্বিহুৎ । ৰাজ্য ২ মাৰ্কে।

त्यकपूर्वा।

नवार । अक्रमूकी, लाटनामी ও শত-

প্তা। কৰাষ, স্বাহু, বলকায়ক, জীবনী শক্তি সম্পন্ন, তিক্ত ও শীতল ।

প্ররোগ। বিদর্শ, রক্তদোষ, তৃষ্ণা, পিতৃত্বন্ধি, কফর্ন্ধি ও দাহ প্রভৃতিতে বাবছেব। ইহার মাত্রা ২ মাবা। স্বরদের মাত্রা ২ তোলা হইতে ২ তোলা পর্যন্ত ।

ग अपूर्वा ।

বঙদুৰ্বাতু গণালী বংস্যাকী পক্লাককঃ।
গঙদুৰ্বা হিনা লোহভাবিণী প্ৰাহিণী লছুঃ ।
ডিকা কহায়া নধুয়া বাতকৃৎকটুপাকিনী।
গাহতুকা বদাসাক্ত কুঠপিত অয়াপহা।।
এডস্যাঃ সুৰ্বাংশো প্ৰাহ্যঃ নাবা > নাবকঃ।

नणपूर्वा ।

পর্যার। গওদ্ধী, গঙালী, মং-স্যাক্ষীও, শকুলাক্ষক।

ত্ত্ব। শীতস, সৌহজাবক, গ্রাহী, লঘু, তিক্তে, ক্যার, মধুর, বারুজনক ও পাকে কটু।

প্রয়োগ। দাহ, তৃষ্ণা, কফ, রক্তদোষ,
কুঠ ও পিতৃত্বর নষ্ট করে। ই র নমস্ত
অংশ গ্রহণীর । মাত্রা > মাধা। স্তরাচ্ব
ইহার রসই পানার্থ ব্যবজ্ঞত হইরা জাকে।
ইহার মাত্রা > ভোলা হইতে ২ ভোলা।
পর্যান্ত ।

एश्माभी।

হ<সপাদী হ<সপদী কটিমাতা বিপাদিক। হ<সপাদী গুরুদ্ধিতা হতি রক্তবিষ্ঠিপান্ত বিদর্শ বাহাতিনার লুড়া ভূডাপ্লিরোহিনীঃ। অন্যা দুলং প্রায়াৎ নারা ৬ ম্বজিকাঃ ৪

পর্যার। হংসপদী, হংসপাদী, কীট-মাতা, ত্রিপাদিকা।

গুণ। গুরু, শীকল, রক্তদোৰ, বিষ ব্রণ, বিদর্প, দাহ, অভিসার, ল্ডা, ভূজ, ও অগ্নিরোহিণী রোগে প্রয়োজ্য। ইহার মূল ব্যবহার্য। মাত্রা ৬ রক্তি।

जूबीनदः ।

ভূমীসহোদারদার্করেদারঃ ধরসহন্য। ভূমীসহন্ত শশিরো রক্তশিক প্রসাদনঃ।। নাত্রা ৬ রঞ্জিকা।

विनी कृ देगदा।

পর্যার। ভূমিশহ, ছারদারু, বর-দারু প্রচ্ছদ।

গুণ। শীতল ও রক্তপিত শান্তিকর। ইহার এল গ্রাহ্য। মাত্রা ৬ রক্তি।

"পটোলপত্রম।

প্টোলপার পিরস্থা দীপান পাচন লয়। মিকাব্যা ডবোক্ত অরকাসজিনিপ্রপুৎ । নাতা ওনাবকৌ।

গটোলপত্র।

প্টোলপত্র পিতম, অমিনীপ্রিকন, পাচক, লঘু, রিয়া, র্যাও উকাবীর্যা। ইহা সেবন করিলে জ্বর, কালও জিনি নই হর। মাতা ২ মাবা।

ত্ৰপাৰাণ: *

দুৰপাৰাৰকঃ কীয়ী ধুৰানা কীয়সকৰঃ। দীবিকো কুৰপাৰানো দুৰী বস্তাক এবচ ॥ পুঞ্চণাথাৰকো ক্ষেত্ৰ্যে নাজুকো অরপিছম্বং। পুল্ছজোগপ্ৰদং কালাগ্নান বিনাপ্ৰং॥ দাবা ২ নাৰকৌ।

मद्मणायात । क्यो भित्रद्रशामा।

গুরুপাবাণক, ক্ষারী, গুরুপায়া, ক্ষার-সম্ভব, দীপ্তিক, গুরুপাবাণ, গুরু ও বজাও এই গুলি একার্থবাচক শব্দ। ইং ক্লা, অনতি উষ্ণবীর্য ও পিত্ত নাশক। জ্বর, শ্ল, হুজোগ, কাস ও আগ্নান রোগে প্রারোধ্য। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীব, মাজা হ মারা।

পঞ্চমোহধ্যায়: ।

क्यम वर्गः।

রাম্বা।

রামা যুক্তরসা রস্যা সুবহা রস্মা রসা।
এলাপণী চ সুরসা সুবছা ভারমী তথা ।
রামান পাচিনী ডিকা গুরুষা কক্বাডারিং।
পোথমান স্নীরাম্ল বাডাগুলোগুরাপরা ।
কান্সর বিখাপীতি বাডিকান্য লাশিনী ঃ
নাজাং ঘাবকো।

রাকা।

রালা, মুক্তরপা, রস্যা, স্বহা, রসনা, রসা, এলাপনী, স্বর্না, স্বর্গা ও ভ্রেরসী এই সম্বার রাজার গর্যার। রালা আম (অপক অন্তর্গ) পাচক্র, তিন্ত, ওরু ও উয়া। ইহা বারু কফ, পোথ, খাস, বাতরক্ত, বাতপুল, উদররোর, কাস, অর, বিষরোগ ও অশীতি প্রকার বাতব্যাধি দূর করে। রাজার সমস্ত অংশই উর্থার্থ ব্যবস্তুত হয়। মাঞা ২ সাবা

নাকুলী রাল্বাভেদঃ।

শাকুলীসরসা দাগসুগভা গভনাকুলী।
নকুলেকী কুছলাভী সূৰ্ব্যাছী বিষমালিনী।
নাকুলী তুবরা ডিজা কটুকোভ বিনাশরেৎ।
ভোগিল্ডা বৃশ্চিকাধ্বিখন্তর জিপি জণান্।
দাতা ২ মাবকৌ।

नाक्नी बाद्याविटमंत्र । हिः नारे ।

নাকুলী, সরসা, নাগস্থপদ্ধা, পদ্ধনাকুলী, নকুলেষ্টা ভুজদ্বাদ্ধী, স্থ্যাদ্ধী ও
বিষনাশিনী এই গুলি ইহার পর্যার।
নাকুলী কষার, তিক্ত, কটু ও উষ্ণ।
ইহা সর্প, লুতা (মাকড্সা) বৃশ্চিক,
ইন্মুর ইহাদের বিষ এবং জর, জিমি ও
ব্রণ নম্ভ করে। ইহারও সমন্ত অংশ
গ্রহণীর। মাত্রাহ মাষা।

यतिहम् ।

নরিচৎ বেল্লন্ধৎ কৃষ্ণ মূখণৎ ধর্মা প্রনন্ধ।
বরিচৎ কটুকং ডীক্ষাং দীপন্ধ কফবাডজিং।
উষ্ণং পিত্তকরং কৃষ্ণং শাস শূল জিনীন্ ব্রেং।
ভলাজ্যান মধুরং পাকে নাডুচ্ছাং কটুকংগ্রন্থ।
কিঞানীক্ষা প্রণং প্রেয়া প্রসেকি সাম্পিষ্ণমৃ।
নাজা চাবকঃ।

মরিচ।

মরিচ, বেরজ, কফ, উষণ, ও ধর্মপত্তন এই ওলি মরিচের পর্য্যার। মরিচ, কটু, তীক্ষ, দীপন, বারু ও প্লেমা নাশক, উফ, পিতু কারক ও রক্ষ। মরিচ ভক্ষণে খাস, শূল ও জিমি দূর হর। আজ মরিচ পাকে মধুর, নাড়াফ, কটু, ওক্স কিঞ্চিৎ তীক্ষ ওপাবিশিষ্ট ও প্লেমা নিঃসারক, ইহা পিত্তজনক নহে। এই বীজের মাত্রা > মাহা।

শুনী। প্ৰতী বিধা চ বিশ্বক লাগয়ৎ বিশ্বক্তমন্ত্ৰণ উবৰ্ণ কটুভত্তক প্ৰবেশ্বং ৰহৌধ্যৰ ।
ধানী ক্লচান্যভান্নী পাচনী কটুকান্যুঃ।
ছিণ্ডোত্তা বৰুৱা পাকে কত্যাত বিষত্তপুত ।
কুতা সৰ্বা) বৰিমান পূল কান ক্ৰান্যান্।
হতি দ্লীপৰ পোৱাৰ্শ আনাহোৰ্য নাক্লচান্।
আন্মেয় প্ৰকৃষ্টি কৈ তোৱাং পালানিপোৰি যথ।
সংগৃহ্যাতি নলং তলু গ্ৰাহি স্বঠিগ্ৰয়ো যধা।
বিষত ভেষ্নী যালু সা কৰং গ্ৰাহিৰী ভবেং।
পাকিবিব্ৰত ভেষ্ণে ন্যাৎ যভোষ মলপাভনে।
নাৱা ১ নাৰকঃ।

एही।

ভন্তী, বিশ্বা, বিশ্ব, নাগর, বিশ্বভেষজ, 🕏 वन, क हें खन्र, भुन्न त्वत्र 😕 भटशेवश अहे গুলি শুন্তীর পর্য্যার। শুন্তী রুচিকারক, আমবাত নাশক, পাচক, কটু, লঘু, স্নিগ্ধ, **डेक, পাকে मधूत्र, कक, वायू ७ विवक्त** (मलापित द्वार) नानक, रल कात्रक प्र সর (মলাদির প্রবর্তক) বমি, খাস, শূল, काम, क्रांखान, ब्रीनम (त्नाम) भाष, অশঃ, জাৰাহ (মুদা), উদর বোগ ও वाव मान करत्र। य गकन खवा अधिक পরিমাণে আপ্নের তাণ বিশিষ্ট ও অলাংশ শোষক তাহারা মলকে সংগ্র (জমা) করিয়া রাখে, যেমন শুষ্ঠী প্রভৃতি; কিন্ত ভন্তী বিবন্ধ অর্থাৎ বাবু প্রভৃতি দ্বারা মলবোধ নিবারণ করে, অতএব উহা কি রূপে গ্রাহক হইতে পারে ? ইহার উত্তর এই শুক্তীর বিবন্ধ ডেমে শক্তি আছে কিন্তু মল বিঃলারণের শক্তি नाहे। এই मुरनद्र गाळा > माचा।

निश्रनीमृनम् ।

প্রতিক' পিশ্পনীযুগ যুবর্ণ চটকাপিরঃ। দ্বীপন্দ পিশ্পনীযুগ্ধ ফটুডা পাচন্দগগুর কক্ষা পিতকরণ তেকি ক্ষরাতোদ্ধা প্রবৃ। ष्यांगांद श्रीय क्षेत्र क्ष्मां प्रश्नात्र क्ष्मां स्थानस्य ह सामा 3 संस्कृतः ।

পিপুসমূল।

গ্রন্থিক, পিপ্লাম্ল, উবৰ, চটকাৰির:
এই গুলি পিপ্লম্লের পর্যার। পিপ্ল
মূল অমিদাপ্তিকর, কটু, উষ্ণ, পাচক,
লঘু, রুক্ল, পিগুকর ও ভেদক। পিপ্ল
মল সেবনে কফ, বারু, উদর রোগ,
আনাহ (বুদা) প্লীহ, গুল্ম, জিমি, খাল
ও ক্ষর রোগ দূর হর। এই মূলের
মাত্রা ২ মাহা।

চব্যং।

ভবেচনাভ চৰিকা কৰিতা সা ডথোৰণা। কণাবুল ধৰ্ণ চল্যা বিল্যোখন ধৰ্মাণ্যন্ত্ৰ মাত্ৰা ২ মাৰকা।

हरे।

চব্য, চবিকা, উৰণা এই **ওলি চৰ্যের** পর্যাব। চব্য পিপ্ললী মৃলের ন্যার **ওণ** বিশিষ্ট বিশেষতঃ ইবা আর্শোনাশক। ইবার তুক্ ব্যবহার্য্য, মাত্রা ২ মাধা।

श्रुक्र वर्षे क्रिक्ट वर्षः।

থাক্ল এরক আন্ত শিচনো গভর্ষ ব্যক্ত।
পঞ্চালুলো বর্জনানো দ্বীগন্ধবের্জন্ম ।
বাডারি অকণ শ্চাশি কুরুক্ত নিগদ্যতে।
রজোহপরো কর্কঃ সা দুকুরুকো কর্জনা ।
বাজপুক্তণ বাডারি শুঞ্ কুভানপনকঃ।
এরচ দুবা । বরুরমুক্ত এক বিনাগরেছ ॥
শুল পৌন কর্মনান করে ক্লুকান সাক্লনার ।
বার্ খাস কর্মনান করে ক্লুকান সাক্লনার ।
ব্রক্ত ব্রঞ্চাণ শিক্ষক একোগনার ।

ককৰাত জিলীৰ হ'ত হ'তি সপ্ত বিধানপি ।

এরও কল বড়াক প্রায় শূলানিলাপবন্ ।
বকুৎ প্লীবোদরার্লোছ কটুক নীপন পরন্ ।
ভশ্মজা চ বিড়ভোগী বাতরতোদরাপবা ।
সাত্রা ২ মাবকৌ ।

শুকু এরও ও লোহিত এরও।

শুকু (সাদা) এরতের পর্যাষ। আমণ, চিত্র, গন্ধর্বহন্তক, পঞালুল, বর্দ্ধমান, দীর্ঘদণ্ড, ব্যভ্যক, বাতারি, তক্ষণ ও কুবুক।

লোহিত এরতের পর্যায়। রু বৃক, উরুবক,, রুবু, ব্যাদ্রপুচ্চ, বাতারি, চঞ্ ও উত্তানপত্রক।

তাপ। উভরবিধ এরওই মধুর উষণ ও থাকা।

এরওপত্ত বাছম, কফনাশক, ক্রিমি-নাশক ও রক্তপিত প্রকোপক।

এরওফল অতিশর উষ্ণ, বার্নাশক, কটু ও অতিশর অগ্নিদীপক।

প্ররোগ। এরও ছর খূল, শোধ, কটি ও শিরোবোগে, উদররোগে, জ্বর, ঝান, কফরুদ্ধি, আনাহ, কাস, কুঠ ও আনবাত রোগ নাশ করে।

এরও পত্র মৃত্তক্ষমূ রোণে ব্যব-স্থের; ইহার অগ্রপত্র গুল্ম, বন্ধি-খুল, কফ, বাভ, ক্রিমি ও সংগ্রবিধ বৃদ্ধি (কোম বৃদ্ধি) নিবারণ করে।

তল্ম, শূল, যক্তৎ, প্রীহা, উদর রোগ ও অর্শেরোনে ইহার ফল ব্যবস্থের।

ইহার মক্তা ভেদক, বাত প্রেয়া ও উদর রোগ নত করে। ইহার মূল ও তৈল সর্কাদা ব্যবহৃত হয়। মূলের মাত্রাং মাবা।

তামূল বলা।

ভাষ্কৰলী ভাষ্কী নাগিনী নাগবলরী।
ভাষ্কাং বিশ্বং কচা ভীক্ষোজং ভূবরং সরক্ ।
বশ্যং ভিক্তং কটুকারং রক্ত পিতকরং লঘুঃ।
বল্যং সোমান্য দেইজিয় মনবাভ প্রমাণ্ডম্ ॥
বারা ৪ মাবকাঃ।

थान ।

প্রধায়। দায়লবলী, ভাষ্লী, নাগনী ও নাগবল্লবা।

তা। বিশাস, রোচক, জীক্ষ, উঞ্চ, ক্ষাস, সর, বশা, ভিক্তন, কট্কার, রক্তপিওজনক, লঘু, বলকারক, শ্লেম নাশক, মুখের দূর্গন্ধ নিবারক, মলাপ-হারক, বাযু নিবারক ও শ্রমশান্তিকর। ইহার পত্র ও পত্রের রস ব্যবহার্য্য। মাত্রা ৪ মাধা।

विनुः।

বিষ্ণ শাণিকা শৌলুহো মালুর ঐকলাবণি।
ঐকল খবর ডিজো গ্রাহী রক্ষোহণ্টা পিডকুৎ ঃ
বাডরেম্ম হরো হলো লয়ুরজন্চ পাচনঃ।
খনা মূলভূগ্ গ্রাহা। সাত্রা ১ মাহকঃ।

विम् ।

পর্যাব। বিলু, শাণ্ডিল্য, শৈল্ব, মালুর ও শ্রীফল।

ত্ব। ক্যার, তিক্তা, গ্রাহী, রক্ষা, আমিবদ্ধক, পিতজনক, বাতপ্রেম নাশক, বলকারক, লঘু, উষ্ণ ও পাচক। ইহার ম্লের তৃক্ গুহণীব। মাত্রা ১ মাবা।

গান্তারী।

গভারী ভত্তপণী চ শ্রীপণী মরুপর্ণিকা। কাশারী কাশারী ছীরা কাশ্যয়ং পীতরোছিণী । কুক্তরুভা মধুরুদা মহা কুসুদিকাপি চ। কাৰ্ম্য কুৰয় ডিজা বাৰ্য্যেকা ব্ৰুৱা ধরুঃ ।
দীপনী পাচনী বেধ্যা ডেদিনী ব্ৰহশোৰ জিং।
দোৰ তৃত্যান শূলাপো বিৰদাহ ক্ষরাপহা :
ডংকলং কুংহণং কুলাং বিজ্ঞাং ক্ষায়নন্।
বাত পিত তৃবা রক্ত ক্ষয় মূত্র বিব্দন্ধ ।
বালু পাকে হিম স্থিং তুলরাক্ল বিশ্বজিকৃং।
হন্যাক্লাহ তৃবা বাত রক্তপিত ক্ষজন্মন্।
অস্যা মূলজুল্ গ্রাহ্যা। মাত্রা ১ মাব্যুঃ।

গান্তাহী।

পর্যাস। গান্তারী ভত্তপর্নী, প্রীপর্নী, মধুপর্নিকা, কাশ্মীর, কাশ্মরী, হীর। কাশ্মর্যা, পীতবোহিনী, রুফার্স্তা, মধ্রদা ও মহা-কুম্মিকা।

গুণ। ক্ষার, ভিক্তে, উফারীর্গ্য, মধুর, গুরু, অগ্নিদীপক, পাচক, ক্ষাণ শক্তি বর্দ্ধক, ভেদক, ভ্রম রোগ নিবারক, শোষনাশক।

আমরিক প্ররোগ। দোষজ তৃষ্ণা, আমশৃল, অর্লঃ, বিষ, দাহ ও জার রোগে ব্যবস্থের। ইহার মূলের তৃক্ পূহণীর। মাত্রা > মাধা।

গান্তারী ফল।

তথা। পৃষ্ঠিকারক, বলকর, ওরু, কেশের শৌষ্টবর্যজ্ঞক, ব্যাধিনাশক, শীতল স্থিম, কষার ও অন্ন এই উভর রদের বিশুদ্ধি কারক, পাকে স্বাচুও বাছপিত্ত নাশক।

আমরিক প্রয়োগ। **তৃষ্ণা, রক্তক্ষর,** দুত্রাখাত, দ**়ীহ**ুও র**ক্তণিতাদি রোগে** ব্যবস্থের।

नावेना ।

পাটলিং পাটলা মোঘা মধুদ্তী কলেছে।। কৃষ্টুৰা কুৰেয়াকী কাল্যালালিব**ল্ডা**। ভারপুন্দী হ কৰিছা পরান্যাৎ পাইলা দিছা।
বুক্তবো বোককো ঘন্টাপাইলিঃ কাঠপাইলা ঃ
পাইলা ভুবরা ভিচানুখা বোব বরাপহা।
আকৃত্তি খান পোৱাল ছার্দ্ধ বিভা ভুবাহরী ই
পুন্দাৎ কবারৎ নধুরৎ হিনং কবাৎ কবালমুৎ।
পিভাতিনার হুৎকঠাৎ কনং হিভালপিভছং ঃ
(কালিছালী ভাল কাচছালীভোকে।)
অন্যা বুলভুগ্ প্রাহ্যা। নাবা ১ নাবকং।

পারুল। হিন্দী পাওরী, কঠপাওরী।

পর্যার। পাটলি, পাটলা মোঘা,
মর্দ্তী, ফলেক্ছা ক্ষেত্তা, কুবেরাকী,
কালস্থালী, অলিবরতা ও তা্রপুলী এই
তাল এক প্রকার পাটলির পর্যার।
অপর এক প্রকার ওভবর্ণ পাটলি আছে
তাহার পর্যার এই মুক্ক, মোক্ষক,
বন্টাপাটলি ও কাঠপাটলা।

ত্থা। ক্যায়, তিব্দ, অমুফ ও ত্রিদোর, নাশক।

ব্যবহার ছল। অফ্রচি, খাল, শোধ, রক্তদোষ, বমন, হিক্কা ও তৃষ্ণা নিবারণ করে। ইহার গুলের তৃক গহণীর। মাত্রা ১ মাধা।

পাটলি পুলা।

তাণ। পাটলিপুষ্প কষার, মধুর, দীতল, হানা, কফনাশক ও রক্ত বিশোষক। প্ররোগত্বল। পিতাতিশার রোগে প্রয়োজ্য পুষ্পের মাত্রা > মাষা।

পাটলিবুক্ষের ফল হিকা ও রক্তপিন্ত নাশ করে।

व्यक्षिम् छः।

অগ্নিবছো জয়ঃ স স্যাৎ জীৰ্ণৰী গৰিকায়িকা। জন্মজন্ত্ৰী তৰ্কায়ী নাংস্থাইৰজন্তকা ঃ অপ্লিৰ্থ অনুধৃন্থিৰ্ব্যাক্ত ক্ষৰাভন্ত। পাঙ্গুৰ্ ক্ষুক্তিক অবলো বহুলোহসিবল । আন্য যুক্তুৰ্ প্ৰায়া। বাবা ১ বাৰকা।

श्रीकाति । दिन्नी व्यट्गर, श्रीकाती ।

পর্যার। অধিমন্ত, জর, এপনী, গণিকারিকা, জরা, জরন্তী, তর্কারী, নাদেরী, বৈজয়ন্তিকা।

তাণ। গণিরারি উষ্ণবীর্য্য, কটু, তিজ্ঞ, ক্যার, মধুর অধিবন্ধক, কফ নাশক ও বারু দাশক।

প্রাগন্ধ । শোধ ও পাও মোগে বাব-ছের। ইছার মূলের ত্ক গ্রাহণীব। মাজা » মাধা।

স্যোশক:।

স্যোনাকঃ পোষণক স্যাষ্ট কট্ব টুণ্ডকাঃ।
সণ্ডপর্ন পারোন শ্রকনাস কুটনটাঃ ॥
দীর্ঘ বুজো হরলু কাপি পূর্বিছঃ কটভরং।
স্যোনাকোদীশনঃ পাকে কট্টক ভ্রবরো হিষঃ ॥
প্রাহী ডিক্টোহনিল প্রেম্ম পিডকাস প্রধাননঃ।
টুণ্ডকাস কলং বালং ক্রছং বাভ ককাপবন্ ॥
হুণ্ডকাস করং বালং ক্রছং বাভ ককাপবন্ ॥
হুণ্ডকাস কর্মাং ব্যুক্ত রোচনং ল্যুন্থাপনং।
প্রস্থার্থ ক্রিয়াং প্রক্রমান্ত প্রকোপন্ ॥
সাস মুক্তুপ্ প্রাহ্যা। বাবা ২ বাহকঃ।

সোনা। হিন্দী সোনাপাটা।

পর্যার। শ্যোনাক, শোষণ, নট, কট্ম, টুণ্ট্ক, মগুকপর্ণ, পত্তোণ, শুক-নাশ, কুটম্বট, দীর্গর্ভ, অরলু, পৃথ্পিদ ও কটভর।

তাৰ। অধিদীপক, পাৰে কটু, আখাৰে কৰার, শীভদ, গুৰুী, তিজ, জিলোৰ নাশক। ব্যবহারত্ব । তাস রোগে প্ররোধ্য । ইহার খুলের স্বক্গুহণীয় । মাত্রা ১ মাধা ।

ল্যোশাক কল ।

ইহার কচি ফল রক্ষ, বাতপিও নাশক, হায়া, ক্বায়, রোচন, লয়ু ও অগ্নিদীপক। ইহার গুণ, আর্শ: ও ক্রিমি নষ্ট করে। পুকু ফল গুরু ও বায়ু প্রকোপক।

त्रर नकमृलम्।

ক্রিক্রা সর্বাতো ভরা পাইলা গণিকারিকা। ধোনাকঃ পঞ্জিটেক্টতঃ পঞ্চরুগৎ সহস্মতন্ । পঞ্চরুগৎ সহৎ ডিক্রৎ ক্যায়ৎ ক্ষরত নৃৎ। মধুরৎ খাল কালব্ল মুক্রৎ লঘুগিরু দীপনন্ ।

त्रर ११ मृत्र ।

বিলু, পান্তারী, পারুল, গনিষারি ও লাোনাক এইপঞ্ বুজের মূলকে বৃহৎপঞ্মূল কছে। বৃহৎপঞ্মূল ভিক্তে, ক্যার, বাভগ্রেম নাশক, মধুর, উষ্ণ, লঘু ও অগ্নিদীপক। ইহা খাল কাল রোগ নিবারণ করে।

माल गरी ।

শালপণী কিরা সৌব্যা ত্রিপণী পীবরীগ্রহা। বিবারিশকা দীর্যাদী দীর্ঘপতা শ্বনত্যপি । শালপণী বরক্ত্বী ক্রেখাসংডিলার্কিং। শোষ দোষ ত্ররহারী বুংবগ্যকা রলারনী । ভিজা বিবহরী বাসুং ক্ষতকাস ক্রিপ্রেণ্থ। ক্র্যাবৃদ্ধ প্রাহাৎ দাবা > শাবকং।

শালপানি। হিন্দী সরিবন। পর্যার। শালপর্ণী ছিরা সৌমাা, ত্রিপর্ণী, পীবরী, গুহা, দিছারীপন্ধা, দী-র্বাঙ্গী, দীর্ঘপত্রা ও অংশুমতী।

ওণ। পৃষ্টিকারক, রসায়ন, **ভিক্ত**, বিষয়, সাতু ও ত্রিলোষ নাশক।

আম্রিক প্ররোগ। ব্যন, জ্বর, খাস, অভিসার, শোষ, ক্ষতকাস ও ক্রিমি রোগে ব্যবস্থেয়।

ইহার মূল, অভাবে লমত অংশই গ্রহণীর। মাত্রা ১ মাৰা।

शृभुवर्षे ।

পূলিপেনী পূৰক্পনী চিৰপ্ৰাজ্ঞ প্ৰপি।
কোন্ট্ৰিলা লিংহপুক্ষী কল্পনী ধাবলিও হা ॥
পূলিপেনী বিহোৰত্নী বুহোকা ব্ৰুলাসরা। ।
হঙিদাহ কর্পাস রক্ষাভি সাম্ভুক্বনীঃ॥
অস্যান্ত্ৰং গাছাং মাবা ১ মাবকঃ।

চাকুলে। হিন্দী পিটবন।
পর্য্যায়। পূল্পানী, পৃথকুপনী, চিত্র-পনী, অহিপনী, ক্রেন্ট্রেরা, বিংহ-পুচ্টুা, কলসা, ধাবনী ও ওহা।

প্রশ । ত্রিদোদ নাশক, বলকারক উষ্ণ, মধুর ও শর ।

ř

আময়িক প্রয়োগ। দাত, জ্বর, খান, রক্তাতীসার, তৃষ্ণা ও বনী নিবারণ করে।

ইহার মূল, অভাবে সর্বাংশ গ্রহণীয়। মাত্রা > মাৰা।

বুহতী।

বার্ত্তাকী কুত্রকটাকী সহতী বৃহতী কুলী।
হিল্পুনী রাক্ট্রিকা সিংহী বহোক্তী দুংপ্রথবিশী।
বৃহত্তী আহিশী হত্যা পাচনী ককবাত হত।
কটুডিজাল্য বৈশ্বল্য নলারোচক নাশিনী।
উজা কুঠ অরখান পুল কানাগি, বাজ্যজিত।
অন্যা বৃল্প প্রাহ্যৎ নাবা ১ বাবকট।

त्ररणी, साक्ष्ण । दिनी वहरणा । गर्यात । वार्जाकी, क्ष्मकणीकी, मरणी, दरणी, क्नी, दिल्ली, बांह्ये ७ इः श्रद्धिकी ।

ওব। গ্রাহী, জন্য, পাচক, বাডপ্লেম নাশক, কটু, তিক্ত ও উষ্ণ।

প্ররোগছল। অরুচি, জর, খাদ, কুঠ, খূল, কাদ, অগ্নিমান্দ্য, মুখবৈরুল্য ও মলাদি নিবারণ করে। ইহার মূল, অভাবে দমস্ত গ্রহণীর। মাত্রা > মারা।

क•छेकात्री।

কণ্টকারী তু দুঃম্পার্শা কুলা ব্যাল্লী নিধিজিকা।
কণ্টালিকা কণ্টকিনী ধাবনী বুহভীতথা।
উভেচ বুহত্তো। যত আহ অঞ্চতঃ।
কুলারাৎ কুল কটোকা। বুহভীতি নিগান্যতে ।
প্রায়াৎ কুল কটোকা। বুহভীতি নিগান্যতে ।
পর্যায় কলা চল্লী চল্লপুলা প্রিয়ন্তরী।
কণ্টকারী সরা তিকা কটুলা হীপনী লঘুং।
কুলোভা পাচনী কান খান লাহ কল্মিলানু।
বিহুলী পীনসংখান পার্খ পীড়া ভ্রান্তরান্।
ভব্যাং কলং কটুরলে পাকে চ কটুর্ভভবং ।
ব্লাহ্ন ক্লান্তর্গা তিকাং পিভালি কুল্লু।
হন্যাৎ কুল বক্লং কত্ত্বা বিশেষাহ পর্যাহান্।
ভব্বং প্রোক্লা নিভা কুলা বিশেষাহ পর্যাহান্।
অস্যা যুলং প্রাহাৎ নাবা ২ বাবকঃ।

কণ্টকারী ৷

পর্যায়। কটকারী, দুংম্পাণা, কুন্তা, ব্যান্ত্রী, নিদিন্ধিকা, কটোপিকা, কটকিনী, ধাবনী ও বৃহতী।

বৃহতী ও কউকানী এই উভরের লাধারণ নাম বৃহতী বে হেডু স্থশত কহি-রাছেন। কুলা (কণ্টকারী) ও কুল্লভটাকী এই এই উভরের সাধারণ নাম বৃহতী।

বেতকণীকারীর পর্যার। চন্দ্রহাসা, লন্ধা, ক্ষেত্রদৃতিকা, গর্ডদা, চন্দ্রভা, চন্দ্রী, চন্দ্রপুশা ও প্রিরহরী।

গুণ। কটকারী সর, ভিজ্ঞ, কটু দীপন, লঘু, রূক, উঞ্চ ও পাচক।

জামরিক প্রয়োগ। কাল, খাস, জর কক্ষ, বারু, গীনস, খাস, পার্খণীড়া ও জন্মোগ প্রভৃতিকে নিবারণ করে।

এই উভরের ফল আখাদে ও পাকে
কটু, শুক্তেরেচক, ভেদক, তিক্তে, গিরজনক
অগ্নিবদ্ধ কি, লঘু ও কফ বার্নাশক। এই
ফল কণু, কাল, ক্রিমি ও জরাদি নিবারণ
করে।

খেতকণ্টকারী গর্ভসংস্থাপক। কণ্টকারী ও খেতকণ্টকারীর মূল, অভাবে সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্রা মাধা।

(भाष्ट्रप्रः।

খোজুয়: জুয়কোহপিন্যাৎ বিৰণ্টা

ৰাধুকটকঃ।
গোকটকো গোজ্যকো বনপ্লাট ইডালি।।
পল্পকাখৰ/কাঁ চ তথাস্যানিক্পদিকা।
লোজ্যলীতলং বাধুৰ্মলভূত্ বভিলোধনঃ।।
নধুরো দীপনোবৃষ্যঃ পুকিদ্শান্দারীহরঃ।
প্রক্টলাক্ষ্ ব্যাস্থানিক্স কোণো

चन)पूज् और) शको ३ मरिकः।

গোজুরী।—হিন্দী গোজুরশূল।
পর্যার। গোজুর, জুরক, ত্রিকটক,
স্থাতু কউক, গোকউক,গোজুরক, বনশৃষাট গুলকুবা, অধদংষ্ট্রা ও ইকুগছিকা।

विद्यांश्यम् ।

তা। শীকল, স্বাচ্, বলকারক, বন্ধি-শোধক, মধুর, দীপক, শুক্রজনক, বায়ুনাশক ও পৃষ্টিকর।

প্ররোগ। অক্সরী, প্রমেহ, খান, কান অর্শ: ও কঠিন জ্জোগে ব্যবস্থা কর। যার।

গোক্সপাক বৃষ্য, তিক ও জোচেচাবিশোধক।
ইহার মূল, অভাবে দর্কাংশ গ্রহণীর।
মাতা ১ মাবা।

ললু পঞ্যুল্য ।
লালপণী পৃথিপণী বার্তাকী কটকারিকা।
গোজ্যুংপঞ্জিকৈটক কনিও পঞ্যুলক্য ।।
পঞ্সুল লচ্বাদু বলাং শিলামিলাপহয়।
নালুকে বুংহণ আহি আর খাদাখারীপ্ত ।।
লুলু পঞ্যুল ।

শালপর্ণী, চাকুলে বৃহত্তী, কণ্টকারী ও গোকুর এই পাঁচটীর নাম লঘু পঞ্মূল। লঘুপঞ্চলের ৩৭। লঘু, খাদু, বল-কারক, বাডপিত মাশক, নাড়াক ও পৃষ্টিকর।

লঘু পঞ্চল জ্বর, কাল ও আশ্বরী রোগ নষ্ট করে।

वनमृत्रम् ।

উভাভ্যাৎ পঞ্চলাভ্যাৎ ধনবুল মুদাহতদ্। দলবুলৎ ত্রিদোহত্বং ছ ডক্রা পোর অরানাহ পার্য শিলা ফুটাহরেও।

प्रमम्म ।

লঘু পঞ্চমূল ও রহৎ পঞ্চমূল এই উভর একত্র হইলে দৃশমূল শব্দে কথিত হয়। দৃশমূল তিলোর নাশক। খাল, কাল, পোবারোগ, কলো, শোব, জর, আনাহ, পার্বপীড়া ও অরুচিতে দৃশমূল নাবচ্ছের।

শোভাঞ্চন:।

(শেভাঞ্নঃ শ্যামঃ শেভো রক্ষণ ।)

পোভাশ্ববং পিগ্ৰ ভীক্ষ যদ্ধকাৰীৰ মোচকাঃ।
ভদ্বীক্ষা খেতৰাৰিচং মধুপিগ্ৰং সংলাছিভঃ ॥
পিগ্ৰং কট্ৰং প্ট্ৰং পাকে ভীক্ষোভো মধুবোলয়ুঃ।
দীপনো রোচনো ক্লম্ম কার্ডিকো বিদাহক্ই ॥
সংগ্রাহী শুক্রাকা ছল্যং পিশুরক প্রকোপনঃ।
চক্ষ্যং কল্যভাল্লো বিশ্ববি শামুর্গু ক্রিমীন্ ॥
মেদোপটা বিশ্ব প্লীত প্রপূগ্ধ ক্রবান্ হরেই
খেতঃ প্রোক্তরণা জেয়ো বিশেষাক্ষাহক্দ্ভবেই।
প্রাহান বিশ্রাহি হত্তি রপন্নং পিশুরক্তহেই।
মধুপিগ্রং প্রোক্ত প্রবো বিশেষা ক্ষাপন্নং সরঃ।
পিগ্র বনক্ল প্রবাণ স্বরুষ্ণ পর্যাজিহং।
চক্ষ্য পিগ্রহাবি বিশ্বাক্ষা বিশ্বাক্ষান্ন্।
অনুষ্য ক্রবাভন্ন ভিন্নোনা প্রকাশ বিশ্বাক্ষান্ন ।
অনুষ্য বিশ্বাক্ষা ভালেন্য প্রিলাশ্বাক্ষান্ন ।
ব্রস্ত্রা বিশ্বাহিন্ই ॥
অনুষ্য বিশ্বাক্ষা বিশ্বাক্ষান্ন ।
ব্রস্ত্রা বাহাবি ।

मिकिना।

এই**. বৃক্ষ তিন জা**তীব, শ্যাম, খেচ প্ত লোহিত।

পর্যাষ। শোভাঞ্বন, শিগ্রু, ভীক্ষ-গল্পক, অন্ধীয় ও মোচক। ইছার বীজকে খেত মবিচ কহে। লোহিত বর্ণ সঞ্জিনা রুক্ষের নাম মধুশিগ্রু।

তা। কট্, পাকে কট্, তীক্ষ, উষ্ণ, মধ্ব, লঘু, দীপক, বোচক, ক্লা, কার তা বিশিষ্ট, ডিক্তা, বিদাহী, সংগ্রাহী, তক্ত জনক, জ্ল্যা, চক্ষুষ্য ও রক্তপিত প্রকো-পক।

আমরিক প্রান্থের বার, প্রেয়া, বিদ্রবি, শোধ, জ্রিম, মেদোরোগ, অপচী, বিধ, প্রীহা, গুলা, গুলালা ও এণ নস্টকরে।

খেতদজিন। উল্লিখিতরপ তাবিশিষ্ট, অনিকম্ভ ইহা বিশেষ বিদাহী, ইহা প্লীহা, বিজ্ঞাধি, এণ ও রক্তশিক্ত রোগে উপ- কারক। মধুশিপ্র ও পূর্ব্বোক্তরণ ওপ বিশিষ্ট, বিশেষতঃ ইছা দীণন ও নর। সজিনার ছাল ও পদ্তের শ্বরণ অনেক উপকারে লাগে। সজিনার বীজ তীক্ষ উষ্ণ, বিষয়, বসনাশক ও বাতশ্বেমনাশক, ইংার নদ্য শিরংণীড়ার উপশম করে।

শজিনার বীঞাদি গ্রহণীব। বীজের মাত্রা > মাশা। ত্বকের স্বর্গের মানা ২ মধা।

চিহলকঃ।

তিজাকো বাওনিহারী স্নেলপ্রো ধাউপুতিক্থ।
আপ্রেয়ে বিববদাস্য কল্প সংস্যা নিব্দনন্ ।
নাত্রা > বাবকঃ।

रिकी हिन्द।

চিহ্লক, বাভাপদারক, কফ নাশক, আধের ও ধাতুপৃষ্টিকারক। ইহার ফল বিদবৎ এই ফল হারা মংস্যুগণকে নষ্ট করা যায়। ইহাব সমস্ত অংশ গ্রহণীর। মাত্রা > মাষা।

उकाबी।

টভারী যাডজিভিকা জোলালী নীপনী স্থা। লোখেবির বাধা হজী হিডাপি চ বিদর্পিনান্। নাঞা হ-বাহকৌ।

टिशाबी ।

টকারী বাসুনাশক, তিক্তা, কফ্ম, অগ্নিদীপক ও লঘু। শোগ, উদ্বব্যথা ও বিব্যু রোগে প্রয়োজ্য। ইহার সম্ভ অংশ গ্রহনীর। মাত্রা ২ মাধা।

चरकाडेः ।

অভোটো দীর্ঘকীলাস্যাদভোলক নিকোচকঃ। অভোটকা কটুঙীক্ষা বিধোক ভ্রয়ো লফুঃ (রেচনা নিনিস্লাম শৌকগ্রহ বিধাপরঃ। বিদৰ্শ ক্ষণিভাজ বুৰকানি বিবাপনং। ভৎকলং শীৱনং বাবু প্লেয়ন্তং বৃংহণংগ্ৰন। বল্যংবিয়েচনং বাতগিৱলাইক্ষয়জনিং। অস্য বুলবুগ্ প্লাহ্য দাত্তা ২ দাবকৌ।

ধলআঁকোর। হিন্দী ডেরা: পর্যার। অব্যোট, দার্ঘকীল, অব্যোল ও নিকোচক।

তাৰ। ইহা কটু, তীক্ষ, প্লিপ্লে'ফ্ল, ক্ষার, শমু, বেচক ও বিষয়।

প্রারোগ। ক্রিমি, শুল, আম, শোগ,
গ্রহণীক্র, বিদপ্প ও কফল রক্ত বি
রোগে ব্যবছের। ইহা ছারা দপ্প ও
ম্যিকের বিষ নপ্ত হব। ইহার ফল শীচল
ভাত, প্রেমনাশক, পৃষ্টিকর, ওক্র, বলকর.
ও বিরেচক। এই ফল ব্যবহারে ব.ত
পৈত্তিক দাহ, জাররোগ ও রক্তদোষ
নিবারণ হয়। ইহার ম্লের ত্ক্ গ্রহণীয়।
মাত্রা ২ মাহা।

जुन्न् १ ।

सम् वीज्ञक कुठीकः भूगकः अनुमध्यम् । कुछ्नः कु करमह्या माणाञ्नक मिठाणि । कुछ्नः कर्षेकः विकाः वीद्याकः दाठमः नयू । दिगोदि मोणमः क्रक मरमयाः मृथरणाथमम् । कृत्वाः वस्तिष्केकं भिन्नकं अमृयनम् । माजाः । मायरको ।

भंदराव ।

পর্যার। শুহাবীক, ভূতীক, সুগন্ধ, জন্মকপ্রির, ছত্তা ও মালাড়াক।

ত্ব। কট্, ভিজ, তীকু উষ্ণ, রেচক, লবু, বিহাহী, অৱিহীপক, রক্ষ, চক্ষুর অনিষ্টকর, ব্যশোধক, বলবাশক ভেষক ও রক্ষণিত প্রকোপক। ইহার স্ক্ষাংশগ্রহণীর। মাত্রাং বার্যা।

क्कृतम् ।

কতৃণ রৌহিষ দেবলগ্য নৌগড়িক ভবা।
ভূতিক ব্যাবগৌরও প্যাবক ব্যাজিকর্ম।
রৌহাম ভূবর ডিক কটুপাক ব্যাগোছতি।
ভ্যক্ত ব্যাধি শিবাল পূল কাম কক্ষরান্।
ব্যাবা স্বাবারে।

রামকপ্র।

পর্য্যার। কর্জুণ, এেছিয়, দেবজন্ধ, সোগস্থিক, ভূতীক, ব্যামপোর, শ্যামক ও ধ্যগন্ধিক।

তা। ক্ষার, তিক্তা, পাকে কটু। প্রযোপ। হুজোপ, কঠরোগ, রক্তপিতা, শূল, কাস ও ক্ষত্তরে ব্যবস্থের। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাধা।

धूणिकिका।

মুণী ভিক্ষণেরিপ্রোক্তা প্রায়ণী চ তপুটারনা।
প্রবণান্ধা মুণ্ডিকা তথা প্রবণশিবিকা ঃ
নহাপ্রাবণকন্যান্তু সা ক্ষ্তা ভ্রুক্তিবিনা ঃ
ক্ষরপুশিকা চ স্যা দ্ব্যথাভিতপথিনা ঃ
মুণ্ডিডিকা কটুং পাকে বীবেয়ান্ধা সর্বা লঘুং।
নেখ্যা গণাপচী ক্ষ্তু ক্রিমিযোল্যন্তি পাতৃ মুব ঃ
স্লীহলাক্ষ্যপন্ধার প্রীহনেদো গ্রন্থার্ভিক্ষথ ।
নহামুণী চ ভঙ্গা গ্রেণ ক্রকা নহবিভিং ঃ
নাজা ১ নামকং।

म्जूबी, जूं रेकस्य।

পর্যার। মৃতী, ভিচ্কু, প্রাবণী, তপোধনা, প্রবণাহ্বা, মৃত্তিকা ও প্রবণশীর্ষক এই জাতীর আর একপ্রকার বৃক্ষ আছে ভাহার নাম মহাপ্রাবণিকা, ভৃক্ষদ্বিকা, কম্ব-পৃশ্পিকা, অব্যধা ও তপদ্বিনী।

ত্থ। পাকে কটু, উক্চবীৰ্ঘ্য, মধুর, লবু, সম্বৰ্ণক্তি বৰ্জক।

প্ররোগ। গলগণ, অপচী, মৃত্তকৃদ্ধু, ক্রিমি, যোনিরোগ, পাণু, শ্লীপদ, অক্লচি, অপদার, প্রীহা, মেদোরোগ ও গুহারোগ নিবারিত হয়।

सहास्त्रीत ७१ नामाना स्त्रीत नाम । नर्साः नश्रद्धाः नश्रद्धाः । साजा । साजा ।

অপামাগঃ ৷

অপানার্গন্ত পিথরী অধ্যন্তে। বসুরকা।
নর্কটি দুর্গতা চাপি কিনিছী থরদভরী।
অপানার্গ্য সর্কীজো দীপন ভিকক্ষ কটুঁছে।
পাচনী রোচনী স্কৃষ্টি কক্ষমেধাছনিলাপবং।
নিহতি ক্ষক্ষাধ্যার্শ্য কও স্বানার্গ্য পচীঃ।
নারা ১ বাবকং।

আশিং। হিন্দী চিরচিরি।

প্র্যাব। অপামার্গ, দিধরী, অধঃ-দাল্য, মৃশুরক, মৃশুটী, চুর্গহা, কিণিছী ও ধ্বমঞ্জী।

ত্তক। অপামার্গ সর, তীক্ষ, দীপক তিক্ত, কটু, পাচক ও রোচক। ইহার হারা বমন, কফ, মেদোরোন, বায়ু জ্ঞোন, আধান, অর্শঃ, কতু, শূল, উদর রোগ ও অপচী উপশ্মিত হয়। ইহার মূল, অভাবে সমস্ত গ্রহণীয়। মাত্রা > মাধা।

রক্তাপামার্গ ।

রজোহ ন্যোবসিরোর্ডকলো ধাবার্গনেহলি চ প্রচ্যকলনী কেশপণী করিতা কলিলিপালী । অলাবার্গোহরুনো বাত্তবিক্টকী কক্তৃথ হিনাঃ। কৃষ্ণ পূর্ব ধনৈ মুগ্রিং করিতো ধন বেহিছিঃ। অপবার্গ কল্ম বাধু রলে পাকে চ বুর্জ্ঞারন্। বিক্টির বাতলম কৃষ্ণ রক্ষণিত প্রানাধনন্য। বাব্যা ২ বাবক:।

লাল আপাং। হিন্দী রক্তচিরটির। পর্যার। বালির, বৃত্তকল, ধামার্গব প্রত।কণর্নী, কেশপর্নী ও কলিলিপ্লশী।

তা। লাল অপামার্গ বাছ বিইন্তী, কমণজ্জ, শীভল ও রক্ষ। ইহা পূর্বোক্ত অপামার্গের অপেকা অল্লখণ বিশিষ্ট অপামার্গের ফল আত্মানেও পাকে কটু, ইহা জীর্ণ হয় না, এই ফল বিইন্তী, বারু জনক, রক্ষ ও রক্তপিত প্রসাদন।
মাত্রা ১ মাবা।

শেতপুন্দ ব। ।
পুনন্বা খেত্রুলা পোল্যী দীর্থপ্রিকা।
কট্টা ক্ষায়ানু রসা পাঞ্ছী দীপ্নীপরা ৪
পোকানিল গরলেয়হরী বল্লোহর প্রপূৎ।
কাসহভাগে দুর্নাম প্লানিল নিক্তনী ॥
নাবা ২ যাবকো।

বেতপুনর্বা।

পর্যার। খেতম্লা, শোধদ্মী ও দীর্ঘ পত্রিকা।

গুণ। কটু, ঈষৎ কৰার, অভিশর ভাগ্নিকারক ও বাবুনাশক।

প্ররোধ । পাতৃ, শোণ, বার্বৃদ্ধি, খ্রোমাধিকা, ত্রপ্প, উদর রোগ, কাস, জন্মোগ, অর্শঃ ও শূল রোগে প্ররোজ্য। ইহার সর্কাংশ গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাধা।

রক্তপুস্পা পূর্বনবা া

পুনর্যাপরা রক্তা রক্তপুশা শিলাটিকা। শোধস্মং ক্ষরবাজ্যু বিকেজ্ঞ কশিলকঃ । পুনর্যা রূপা ভিজা কটুশাকা বিষাস্থা। বাতগা সাহিশী স্লেছ শিষ্মক বিদাশিনী। নাতা ২ বাবকৌ।

नान भूमर्नदा ।

পর্যার। রক্ত পুনর্মবা, রক্তপুশা, শিলাটিকা, শোধম, স্কুত্রববীভূ, ব্রহকেড় ও কপিয়ক।

দ্ৰব্যহানম্।

তা। ভিজ্ঞান, পাকেকটু, দীতল, লঘু. বারু অনক ও গ্রাহী। ইহা কফ ও রক্ত-পিত নিবারণ করে। ইহার সমস্ত অংশ গ্রাহণীর। মাতা ২ মাবা।

वन्त्रा ।

বলা বৃষ্ণাৰ্শী বৃষ্ণাছলা বৃষ্ণাছলাপি চ। বলাকং ন্যান্ধিৰ ভিক্তং ক্ৰায়ো মধুৱো হলে ॥ মালন্যং ক্ৰবাভাৱ্য রক্ষোত্তণ বিবাপহং। পিত্ৰাছ প্ৰমন্ত্ৰো বল্যো বৃ্ৰ্যো ৱলায়নং॥ মাত্ৰা ১ মাৰ্কং।

পারগাছা, বাঁদরা।

পর্যায়। বন্দা, বৃক্ষাদনী, বৃক্ষভক্ষা।
বৃক্ষক্রহা ও বন্দাক। ইহা শীভবার্যা,
ভিক্তে, ক্ষাস, মধুরাস্বাদ, ক্ষম, বিষপ্রশামক, পিত্তনাশক্ষ, দাহ নিবারক, শ্রম
হর, বল্কারক, বৃষা ও রসায়ন। বাছরক্ত ও ব্রারোগ প্রভৃতিতে প্রয়োজ্য। ইংগর
সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্র(১মাধা।

আলমুমা (লজ্জালুডের:)।
আগমুমা খরত্বক চ তথা বেলোগলাক্তা।
আগমুমা লম্ম বাবুং ফিৰিপিত কফাপহা।
মাত্রা ১ কাবকং।

ি পর্যার। অলমুমা, ধরত্বক্ ও মেদোগলা।

তাৰ। শৰ্, খাদু, কৈ মিল ও কফ পিত নাশক। ইহার সমত অংশ গ্ৰহণীয়। মালা ১ মাৰা।

इधिका ।

্ৰুডিকা '্ৰাৰূপনী সাৎ জীৱা বিজ্ঞীৱিনী ভৱা। দুখিকে জাওৱা ককা বাডৰা বৰ্ডৰাৱিনী ঃ সাৰু জীয়া কটুভিজা সৃষ্ট বুত মলা পটুং। মুদ্বিউভিনী বুবাা কককুঠ জিদিপ্ৰপূৎ ঃ যাত্ৰ: ১ বাহকং।

कीकृहे। हिन्ही कृती।

প্রধার। ভূমিকা, স্বাভ্ণনী, কার। ও বিলীরিনী।

গুণ। উষণ, গুরু, রক্ষ, বার্জনক, গর্ভদংছাপক, স্বাত্, তৃথ্ধবিশিষ্ট, কটু, তিক্ত মৃত্ লবণ রদ বিশিষ্ট, বিষ্টম্ভ ও বল কারক। ইহা দেবন করিলে মল মৃত্রাঞ্জিল; সৃত হব এবং কফ, কুষ্ঠ ও ক্রিমিরোগ নাই হব। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাতা ১ মাবা।

(मन्भून्भी।

ভোগা চ ভোগুজ্পী চ কলেপুজ্পা চ কাৰ্তিতা।
ভোগপুজ্পী গুলং ৰাষু কক্ষোজা বাতপিত কৃৎ ।
সভীক্ষ স্বণাৰাষু পাকা কট্টা, চ ভেলিনী।
কক্ষাৰ কামলা শোহা ভ্ৰমক্ষান জন্তবিং ।
নাতা ১ নাৰক:।

चलचित्रा हिन्दी श्रमा।

পর্যাব। দ্বোশা, জোপপুন্সী ও ফলেপুন্সা।

গুণ। গুরু, সাচু, রুক্স, উঞ্চ, বাত-পিত্তজনক, তীক্ষলবণ রস বিশিষ্ট, পাকে ফ'চু, কটু ও ভেদক। ইহার দারা কফ, আম, কামলা, শোপ, তমকশ্বাস ও কীটাদি বিনম্ভ হর। ইহার সমস্ত ব্যংশ গ্রহণীর। মাত্রা > মাধা।

আদিত্যভক্তা।

সুবর্জনা সুর্যাত জা বরবা ববরাপি চ। সুর্বাবর্তা হবিপ্রীভাহপরা ক্রমত সুদুরা র সুবঞ্চলা হিবারকা বাবু পাকা সরা প্রকং।
আপিত্তলা কটুং কারা বিউভ ককবাডাজিং ঃ
অন্যা ডিক্রা কবাড়োজা সরা রক্ষা গবুং কটুং।
নিহতি ককপিডাল্ল খাস কাসাক্ষভিজ্ঞান্।
বিস্ফোট কুঠ মেহাল্ল বোনিক্রক্ ক্রিপি পাও্ডাং।
অস্যাং প্রাহিক্ প্রাহ্যৎ নারা ১ বাছকং।

छत्र छटत । शिक्षी छव छव ।

পর্য্যার। স্থবর্চ্চলা, স্থব্যভকা, বরদা, বদরা স্থ্যাবস্তা ও রবিশ্রীতা এইগুলি এক জাতীর বৃক্ষের পর্য্যার। অপর জাতীব বৃক্ষকে ব্রহ্মস্থত্রপ্তা কহে।

তাণ। ইহা শীতল, ক্লং, পাকে
খাত্ সর, তাকু, কটু, আরতা বিশিষ্ট,
পিতজনক, নহে, ইহা ঘারা বিষ্টিন্ত, কফ
ও বাবু নষ্ট হয়। অপর জানীয় উদ্ভিদ্
(ব্রহ্ম হতুর্গভা) তিক্তুং, ক্ষান, উষ্ণ, সর,
ক্লে, লঘু ও কটু। ইহা কফ জ রক্তুণিত
খান, কান, অক্লচি, জর, বিক্লোট, কুঠ,
মেহ, রক্তদোষ, খোনিরোগ, ক্রিম ও
পাতুরোগ নিবারণ করে। ইহার পত্তাদি
গ্রহণীয়। মাত্রা ১ মাধা।

বন্ধ্যাককে টিকী।

বঙ্যাককে টিকা বেবা কন্যা খোগাখরীতি চ। নাগারি নজিগ্ননী বিষক্টীকিনী তথা ঃ বঙ্যাককে টিকা লঘু। কম্মুদ্ ত্রপুণোধিনা। নপ্রপ্রেরী ভীক্ষা বিদ্পা বিষ্থারিনী ঃ নাত্রা ২ শাবকো।

• हिन्ही वाङ्क्षा।

প্যায়। বন্ধ্যাকর্কোটকী, দেবী কন্যা, বোগীশন্তী, নাগারি, নক্রদ্মনী ও বিষক্টকিনী।

খণ ৷ লঘু, কফনাশক, ব্রণশোধক,

ভাক্স ও নর্পের ভেজোনাপক। ইছার ছারা বিদর্গরোগ ও বিষ নট হয়। ইরার দমত্ত অংশ গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাধা।

তুলসী শুক্লা কথা চ।
তুলসী সুরসা থান্যা সুলভা বছনগারী।
অপেতর।কনী পোরী ভুগল্লী দেবদুস্ভিঃ।
তুলসী কটুকা ডিকা ছলোড়া দাহপিতকুই।
দীপনী কুঠকুল্লান্ত পাশ্ব ইঞ্চলাভিতিও।
মাত্রা ২ মাবকৌ।

ভক্ল তুলনী ও রফ্তুলনী।
পর্যার। তুলনী, সুরনা, গ্রাম্যা,
সুলভা, বছ্মজনী, অপেডরাক্ষণী, গৌরী,
শূলরী ও দেবতৃশভী এইপালি তুলণীর
পর্যার।

তাণ। কটু, ডিজে, হাদা, উষ্ণা, দাহকর, পিরজনক ও দীপন। তুলসীর ঘারা
কুঠ, মৃত্র রুচ্ছু, রক্তদোধ,পার্মপীড়া, কফ ও
বায় নষ্ট হয়। উভয় তুলসীর তাণ এক
রূপ। ইহার পত্রের প্রস্থ ও মূলাদি
গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাঘা।

বৰ্মনী।
বৰ্মনী তুৰনী তুলী খনপুশালগভিকা।
পৰ্বাশ কৰ কুজেতু কচিম্ৰক কুঠেনকো।
ভব্ আক্লোংজকন প্ৰোক্লো বৰ্টপৰ কভোপনঃ।
বৰ্মনী বিভয়ৎ কুজং দীভং কটু বিহাহি চ।
ভীক্ষং কচিকনং কন্যং দীপনং কছু পাকি চ।
পিত্ৰসং ক্ৰমণাভাৱা কড়ু ক্ৰিনি বিহাপহন্।
বৰ্মনী বন্ধসংগৰাকান, দাবাং মাৰকো।
বিষ্টু ভূলনী।

প্রায়। বর্ষনী, তুরবী, তুরী, ধর-পুশা, অভ্নগজিকা ও প্রণাল ইংগ ক্ষেবর্ণ হইলে কঠিয়ক ও কুঠেরক করে, ভক্রবর্ণ হইলে অভ্যক্তি বলে, অন্য জাতীরকে বটপত্র বলে। মাত্রা ২ মারা। ত্ব । এই ছিন প্রকার বর্ষরী ক্লক, শী-তল কটু, বিদাহী, তীক্ষ্, ক্লচিকর, হাদ্য, দীপন লব্পাকী, পিত্তজনক, কফনাশক ও বিষয়, ইহার হার। বাতরক্ত, কত্ভ ক্রিমি নই হর। মাতা ২ মাধা।

ভূজ পিত্র:। ভূজপনঃ ক্তোভূজ দংগো বহুদবদ্দদঃ। ভূজো বদদরঃ রেয় কর্ণকেক্ পিতরক লিং ঃ

কৰায়ঃ কটুকুজক যেদো 'রুদ হর:পরঃ। 'অস্য জুগ্ঞাহ্যা দাতা। ১ বাৰকঃ।

পর্যার। ভৃজনপত্ত, ভৃজজু, চর্মী, ১৪ বছলবল্ফলী।

ত্রণ। ক্ষার কটু. উষ্ণ, বিষয়, বল কারক ও কফ শান্তিকর। ইহার ছারা কর্ণরোগ, রক্তশিত্ত ও মেদোরোগ নিবা-রিত হর। ইহার স্বক্ গ্রহণীয়। মারো ১ মাধা।

কটজী।

কটভী খাৰু পূজান্ধ নধুরেণ কটভরঃ।
কটভীজু প্রবেচার্লো নাজীরণ বিষদ্দিনীন্ ।
হন্তাভা কক কুঠছা কটু কুকাচ কীৰ্তিতা।
তৎকলৎ জুবরং জ্মেং বিলেখাৎ কক্ষাজ্জহ।
যাব্য ১ নাহকঃ।

অপরাজিকা বিশেষ।

শ্বার। কটভী, স্বাত্ত,পূম্প, মধুরেণু ও কটভর। ওগ। উষ্ণ, কট্ ও
ক্লক্ষ্, ইহা প্রমেহ, অর্ল্য, নাড়ীএণ, বিষ,
ক্রিমি, কফ ও কুট নাশীকরে। ইহার
ক্লক কথার, ক্ষর ও গুক্ত নাশক। ইহার
প্রমন্ত অংশ প্রহণীর। মান্তা ১ মাবা

তিনিখ:।

শ্বিমাণঃ সূসানো নেনী রথক বঙ্গুল করা। প্রতিনিধ শ্বেদ্ধ পিতার নেদঃ কুঠ বানের ভিৎ ॥ ডুবর: বিত্র বাহছো এব পাণ ুক্তিবিঞ্কুৎ। উচ্চো রক্তাতিশারছো বাতাবয় বিদালনঃ । অস্য ভুগ্ আহা। বাতা ২ বাহকঃ।

কিনিশ। হিন্দী ভিরিচ্ছ।

পর্যার। তিনিশ, স্যান্দন, নেমি, রথক্ত ও বঞ্জা।

গুণ। কৰার ও উষ্ণ ইছ। হৈছিল কর্জুপিত, মেদোরোগ, কুন্ঠ, প্রমেহ, বিত্র দাহ, ত্রণ, পাত্রু, ক্রিমি, রক্জোভিসার ও বাভব্যাধি নষ্ট করে। ইছার প্রক্ গ্রহণীর। মাতা ১ মাধা।

কাকজভয়া।

কাকখন্তা মহীকাতা কাকভিকা সুলোদশা। পারাবতপদী দাসী কাকা চাপি প্রকীর্তিতা। কাকজনা হিনা ভিকা ক্যায়া কম্পদিভ জিং। নিহতি অরপিতাক অর কগু বিবক্রিনীন্,। অস্যা সুসং প্রাহাৎ সাত্রা ৬ রক্তমঃ।

কাকজ্জা। হিন্দী মিদি।

পর্যায়। কাকজন্তা, নদীকান্তা, কাকভিক্তা, ভুলোমশা, পারাবভপদী, দাসী ও কাকা।

থাণ। শীতল, তিক্ত, কৰার, কফ পিত নাশক, ইহার দারা অর, রক্তপিত, অরকপূ, বিহুপ্ত ক্রিমি নষ্ট হয়। ইহার মুশগ্রাহ্য। মাত্রা ও রক্তি।

भूजकोवः।

পুৰজীবো গৰ্জকা বঙীপুলোহৰ বাৰক। পুৰজীবো গুলুহ্বা গৰ্জহ সেন্ধ বাৰক। সূত্ৰ বুৰুবলো কলো হিনংগাছুং পটুং কটুং। অন্য সুধু বাঁহা। । নাবা ১ থাকচ।

জীরাণত। হিন্দী পীডোজির।।

পৰ্যায়। পূত্ৰজীৰ, গৰ্ভদরী বচী-পূপ্প ও অৰ্থসায়ক।

ত্তপ। তারু, বলকারক, গর্ভসংজনক, বাতপ্রেরনাশক, রুক্ত, শীজল, খাতু, লবণ রস বিশিষ্ট, কটু ও মলমূত্র নিঃসারক। ইহার তৃক্ গ্রহণীর। মাত্রা ১ মাধা।

শাক রুক্ষ:।

পাকঃ ক্রকচপত্রং স্যাৎ ক্রিসাবো গৃহজ্ঞনং। ধরপত্রং ভোওকাঙং পরপত্রেহিজ্নোপনং । পাকস্কং সরং যাদু গাঁহপিওখ্রমাপরং। ক্রায়ং ক্রজ্জুকো বল্যো অরহরো মতং ॥ অস্য সুগ্ প্রাহা, মাত্রা ২ মার্কে।।

(मधन तुका।

শাক, ক্রক গেত্র, স্থিরদার, পৃহক্রম, ধরপত্র, শ্রেষ্ঠকান্ঠ, শরপত্র ও অজ্জর্না-পম এইগুলি দেখুশরুক্ষের সংস্কৃত নাম ইহা দারক, স্বাদ্ধ, দাহনাশক, পিতার, শ্রান্তিনাশক, ক্ষার, ক্ষম, ক্ষম, ব্লকর ও জরনাশক। স্বক্ গ্রহণীর মাত্রা ২ মাবা।

मब्बद्ध नः।

সমুত্রকেঃ কেণ্ড ভিতীরোঃভিক্করণ।
সমুত্রকেন ককুবো লেখনং শীতলক সং ।
কবারো বিবশিবল্প কর্ণরাক্ত্রন্ত্রণ।
নাত্রা ৬ য়ক্তর্যাধ

नव् चरकन ।

সমুদ্রকেন, কেন, ডি গীর, অন্ধিকফ এইগুলি সমুদ্র কেনের পর্য্যাব। সমুদ্রক্নে চক্ষুর হিতকারক, কুপতা কারক (শোংক) শীক্তল, ক্যার ও পত্। ইহার বিষ্নাশিকা শক্তি আছে। ইহা কর্ণের পীড়া ও ক্যানেই করে। ইহার মাত্রা ৬ রতি।

रार्कारकारतः १

वस्त्राण्य वर्गः।

मसन कलम्।

বৰসম্প্ৰদান পিউনট: পিনীতক জনা।
করংটি বল্লকং পাত্যকী বিষপুষ্ঠাকং ।
সহসো বধুর ডিজ বীৰ্যোজো লেখনোলযুং।
বাতিকৃত্ বিজয়ি হরং প্রতিশায় রবাধকং ।
কৃষ্ণ কুঠকথাবাত বোল গুলুরবাপতঃ।
যারা ২ যাবকৌ।

मगना कन

মদন, ছর্দ্ধন, পিণ্ড, নট, পিণ্ডীতক, করহাট, মত্রবক, শল্যক ও বিষপুপাক এইগুলি মদন ফলের প্র্যার: মদন ফল মধ্র, তিক্তন, উফ্লবীর্ঘা, লেখন, লগু, বমন কারক, প্রতিশায় (মুখনাসিকাদি হটতে জল্জাব) নিবারক, রক্ষ, কফ আনাহ (মুদো,) শোধ, গুলা কুট, রুণ ও বিদ্রধি রোগে উপকারক। বমনার্থ ইহার ফল ব্যবগাগা। মীত্রা ২ মাখা।

অৰ্মুশত্ব্।

বলা স্থাক্ষুস্স। বেদ্দী চ রনার্মী। বাবনী হত্যতীসার ত্রণক্তাদ্যার্ভাল্ । অসা সাত্রা বলসঞ্জনবাধ্যর্থ । ত্রনিকাঃ বহুনার্থ ২ মাধ্যে ।

আচলদ্লের তুক্ বলকাবক, জেদ জনক, রসারন ৩ বমনকাবক। ইহার ঘারা অভিসার, আচ, কুঠ ও ভামবাভ রোগ নট হর। মাত্রা বলকরণাদি জন্য হ রভি, বমনকরণার্থ মাধ্য।

वस्त्रम्

মলাভেহিত্যলঃ পুডিয়ঙপর্বন্ড লোম্পঃ।

বাদনঃ বেশুস্কানঃ কক্সিব্রপঞ্চী । অস্য প্রং প্রাহাৎ দারা বেশুনাদার্থৎ ২ ছব্লিকে, বাদনার্থৎ ১ নাবকঃ।

মলান্ত, পৃত্তি, অওপর্গ ও লোমণ এইতালি অন্তমলের পর্যায়। অন্তমল বমন
কারক, স্বেদজনক ও কফনিংসারক।
ইহার শুক্ত পত্ত গ্রহণীয়। মাত্রা স্বেদজনন ও কফনিংসারণ জন্য ২ রতি,
বমনকরণার্থ সাধা।

. प्रथमर्भनः ।

वायमः रष्ट्रमः स्थारका गीर्याचः जूनवर्णनः । चना पुनवतना श्रीषः छन्गजा र मायरके ।

স্থাদর্শন অর্থাৎ বড় কানডের মলের রস বমনকারক, স্বেদজনক ও উষ্ণবীর্গ্য। এই রসের মাত্রা ২ মাধা।

জ্যোতিমতী।

জ্যোতিয়াতী স্যাৎ কটতী জ্যোতিজা কল্পীতি চ। পারাবতপদী প্রথা সভা প্রোক্তা ক্রুন্সনী ॥ জ্যোতিয়াতী কটুভিকা সরা ক্রুন্সনীরজিৎ। জ্জুন্তা বাবনী ভীক্তা ব্লিগুলি ক্তিপ্রদা ॥ জ্বা বুল্ গ্রাছ মাত্রা ১ নাবকঃ।

ल डाक्ट्को रिनो गानका भूगे.

ক্যোভিমতী, কটভা, জ্যোভিমা, কলনী পারাব্তপদী, পাণা ও ককুন্দনা এইওলি ইহার পর্য্যার। ক্যোভিমাতী লতা কটু, ভিজ্ঞ, সর (বাযুও মলাদি সরল কবে) অভিশার উষ্ণ, বমন কারক, তীক্ষা, অস্থি কারক, বৃদ্ধিস্কৃতি প্রদাবক ও কফ বার্ নাশক। ইহার মূল, অভাবে সমস্ত প্রস্থীর। মাত্রা > মাবা।

भवजुन्ती ।

শ্বণুন্দী ক্ষা ঘটা শ্বণুন্দা সমাকৃতিঃ। শ্বণুন্দী কট্ডিকা বাহিমী ক্ষণিতাৰেৎ । অস্যাঃ ক্যাধিকং প্লাহাং বাবা ৬ বুক্তরঃ।

वानमन्हे। विका भनक्ती।

ইহার আরিকতি শণপুলোর নাায, ইহার অপর নাম ঘণ্টা।

প্তা। কট্, তিক্ত, বমন কারক ও কফ পিত্তনাশক। ইহার ফলাদি গ্রহণীয়। ফাত্রা ৬ রতি।

(क्रवमाली।

(ধৰসাবং কলব্ৰডভিঃ।)
দেবদালী তুবেৰী স্থাং কৰ্কটি চ গৱা গৱা।
দেবভাঙী বৃত্তকোষ ভালা জীমুড ইডাপি।
পাত'পৱা ধরস্পালা বিষ্মু গরমালিনা।
দেবদালী রসে ডিকা ক্কার্লং পোছ পাণ্ডভাং।
নালয়েং বামনা ডিকা ক্ম হিকা ক্রিমাক্রান্।
দেবদালা ক্সং ডিকেং ক্রিমি স্লেল্ল বিনালনম্।
স্রাংসমা প্রস্মু শুলুষ্ মর্গোছা বাডজিং পরম্।
ক্রাং ক্লাদ্কিং গ্রাছং মাত্রা ১ মাষ্কঃ।

हिन्ही (मारेनश)

পর্যাব। দেবদালী, বেণী কর্নী, গরা, গরী দেবতাতী, রুতকোষ ও জীগৃত। ইহাব আর একজাতীর রুক্ষ আছে ভাহাকে ধ্রস্পর্সা, বিষয়ী ও গরনাশিনী কহে। ইহাব ফল পোন্তার নাাষ।

গুণ। তিব্রু ও বমন কারক ইহার হারা সৈমিক আর্শা শোগ, পাণুতা, ক্ষর রেংগ ক্রিমি ও ত্রর নিবারিত হব। ইহার ফল ভিব্রু, ক্রিমিমু, ক্ষুনাশক, ত্রংসন ও অভিশার বাহুনাশক। ইহার হারা গুলা, শূল ও আর্শা উপশ্বিত হর। ইহার ক্লাদি গ্রহণীর। বাব্রা ১ মাবা।

क्रूज़िशे।

কটুকুৰী ডিজনীজা রাজপুলী দুপাঞ্চা। ছুবিনা কটুকালারুরিকারু কটুডিজিকা। ছুবিনা কটুকোজা চ বাভিক্ত ককথাজন্ত। কাসপোধারণখাস বিষপাগুকিনীন্ বরেত। দারা ২ বাখাকৌ।

ভিতলাউ।

কটু তুবী, তিক্তবাজা, রাজপুত্রী কটুকালাব্, ইক্ষাক ও কটুতিক্তিক। এইগুলি
ইহার সংখ্তে নাম। ইহা কটু, উষ্ণ,
বন্ধনারক, ক্ষব্, বার্দাপক ও বিষ্মু।
ইহার হারা কাল, শোধ, ত্রণ, খাল,
পাত্র ও ক্রিমিরোগনাই হয়। মাত্রা ২ম, যা

काकनाना ।

কাকনাসা জু কাকাকী কাক্সুক্তকা চ সা। কাকনাসা ক্যায়োভা কটুকা রসপাকয়োঃ ॥ কফ্মী রামনী ডিক্কা পোধার্শঃ বিত্রকুঠ ছং।। অস্যা বুলাক্ষিৎ প্রাহাৎ শাবা ১ শাবকঃ।

কাকঠুটী হিন্দী কেন্দ্র।ঠোঠা । পর্যায় । কাকনাসা, কাকাসী ও কাক-তুওফলা ।

তাণ। কাষাব, উঞ্চ, আমাদে ও পাকে কটু, কম্মু, ব্যনকারক, তিজা। ইহা দারা, পোখ, অর্লা:, বিত্র ও কুঠরোগ উপশ্যাত হয়। ইহার ব্লাদি প্রহণীর। মাজা ১ মাবা।

मख्यार्थात्र।

विद्युष्ठनीय वर्गः।

र्दीकरी।

মন্ত্ৰকাতনা পৰ্যা কালত। প্ৰনায়ত্ন। হৈব্যক্তভাৰ ভাবি চেতকী বেছলী শিক্ষ।

বৰুবা বিজ্ঞা চাপি জীবতী ভোবিবীত হ। विकार हादिनी देवन भूकता वाबुवाकशा । कोरको रुक्को दशकि शब्दोन्नाः मक्ष काक्सः। चनातूर्व विवस द्वा मा हास्ति स्वा **शृ**डमान्दियको **मृज्या कविका मा**रसमावृद्धा । गक्रक्षाच्या *ध्याका* क्षीरकी वर्नहर्निती **।** চেডকী চাসিড়া ভুজা সপ্তানাবিছসাকুডিং। विकास नर्वाहबादबंबू हवादिनी अनुदर्शदिनी है প্ৰলেপে পৃত্ৰা ৰোজ্যা পোংলাৰ্থেচ্ছুড়া বিভা। प्राप्त हो । यो को नहीं अवस्था नहीं नहीं है । हुर्नाहर्ष ८५७को भक्षा यसःमुक्ति आहाबहरू । महाबाविण काफीमां श्रदांन विकश मा पा 🛊 मुबबद्धांका मुलका नक्तत्रादवद्गनम्बद्धः। रही छन्ने शंकरमा नवना कृषश शरूप ह क्ररकाका योभवी स्वया चारूभाका त्रमायमी । क्क्न्याः जनूत्राञ्च्या द्**ष्य**ी कानुरवायिको ॥ चानकाम व्यवसार्वःकुष्ठे त्नीद्यांत्रम् विभीत्। रेबबर्व) अर्बो द्वाम विवक्त विवयसहाम् ॥ ওক্মাথ্নন রবক্ষি হিডা কত্রবাবয়ান্। कारणार जुलगामहर भोहामक यङ्खरा । ব্যায়ীৎ যুৱকৃচ্ছু ও যুৱাবাত্ত নাগয়েৎ। ৰাপুডিককৰ'য়ত্ত্বাৎ পিডছৎ কৰছৎ ভূ সা॥ কটুডিক কৰাম্ব্ৰাব্যব্যব্যব্যব্যব্য শিতক্ৎ কটুকালভাৱাভাতক্ম কল্পশিবা ৷ र्थान्य सम्बद्धि सामृद्ध सामानदम् राज्यस्थितः। वृष्ट किक कृष्टि कपू इश्विष्ट कुरदर्श ब्रमा ॥ मर्वा विश्वा धमानृत्व। श्रक्ती विश्वा ह हांक्रमि । मिनरकार भार्यनदा ह कविकाविद्यन्यम्। 🖁 भरा'प धर्ग यू क द्वार उदेश तम्र 'प्रक्षणा । बीवेलको। करन बच बर्ग करना के बेंबोर्ड व इन्तिक। वर्ष्तप्रक)श्चि (अधिक) मजदमीविमी । ক্ষিণা সংগ্ৰ হিৰী পৰ্যা ভূকা প্ৰোক্ষা বিদেশ্যমূহ।

चेत्राणियो दूजियल क्रयानाः विक्रितियो शिवकशामणामात्। विक्रितियो गुजनकृम् मणामाः देशको गावि ज्ञव क्षाक्षसम् ॥ व्यवस्थाम क्षान् (वायान् वार्शनिक क्ष्मह्याम्। व्यवस्थाम क्षान् (वायान् वार्शनिक क्ष्मह्याम्। व्यवस्थान क्षेत्रकात् क्ष्महरान्ति व्यक्तिकाः॥ व्यवस्थान क्षेत्रकः व्यक्तिकाः॥ মৃতেন বাজ্ঞান্ রোগান্ সর্বরোগান্ বজাখিতা ।
বিজ্ঞা পর্করা অঠা কণামধু প্রজ্যৈ ক্রমান ।
বর্ষাদ্যত্তমা প্রাণা্যা রনায়ন প্রশৈষণা ।
ব্যাদ্যতিবা সক্রম কর্বিভল্ট
ক্রমাং ক্রেণা সক্রম কর্বিভল্ট।
বিশ্বক্রকেক্তৃত্বয়া আব্দেং ।
ব্যাদ্যা তু চকুবাো বাতপিবহরো প্রক্রঃ।
হর্মান্তমান ক্রমা হিমাচলভা বা স্যাচেতক্টা পুত্না
বিভ্যাদ্যা বিজ্ঞা হিমাচলভা বা স্যাচেতক্টা পুত্না
বিভ্যাদ্যা ব্যাহ্বি তু বিজ্ঞা ভ্রাতা প্রাত্ত

চম্পায়া মৃতাভয়া চ ল'নতা দেশে সুরাফ্রীজয়ে জীবঙীতি হরীভকী নিগৰিতা সা সপ্তভেদা বুধৈঃ s

र्द्रीक्की, ज्ञा, श्रा, कावष्ट्रा, পুতনা, অমৃতা, হৈমবতী, অব্যথা, চেতকা, ভোরদী, শিবা, বরন্থা, বিজয়া, জীবন্তী ও রোহিণী এইগুলি হরীতকার নাম। एवं विकेश माजका को है, यथ। विकश्तं, दहा-হিণা, পুতনা, অমৃতা, অভরা, জাবজা, 😉 চেতকী। খাহা অলাবুর (লাউ) ন্যায় গোল অধাৎ ডিখাঞ্চি তাহার দাম বিজয়া, যাহা ঠিক লোলাকার ভাহার নাম রোহিনী, সুক্ষ আছি বিশিষ্ট হরী-তকীর নাম অমৃতা, মাংসল অর্থাৎ সাধিক শৃদ্য বিশিষ্ট হ্রীতকী অমৃতা, মাহাতে পাঁচটী রেধা আছে তাহার নাম অভয়া, कीवली इबीककीत वर्ष प्रदर्गत नाहत, टिककी क्यूख ७ इक्शवर्ग, (हेशदक জালীহরীতকী কছে।) বিজয়। সকল রোগে ব্যবদ্বের, রোহিণী হরীতকী ত্র-त्त्राण्य करत व्यर्थार उत्य खेल्लय फिल्ल উহা বদিয়া যায়। প্রদেশ কার্ষ্যে পুতনা হরীভকী প্রাহ্য, শোধন অর্থাৎ ভেদ্বাদি कार्सा अमृषा रत्नीकको अभेष, ठक् রোগে অভরং, জীবজী সমুদার রোগ নাশক, চূর্ণকার্যো চেডকী হরীতকী প্রশস্ত এই সমুদার বিবেচনা সুক্তিযুক্ত মতে বিশেষ বিশেষ হরাতকী ব্যবহা করিবে। উল্লিখিত সাভজাতীর হরী তকীর মধ্যে বিজরা প্রধান, কারণ উহা সুধ্সেবা, সুদ্রভ ও সকল রোগে হিত কর।

হ্রীতকী স্থর্দ বিশিষ্ট, তরুধ্যে नव तम विभिष्ठे हत्री करी (अ है। हती-करी तक, डेक. अधि मीशिकव, अवर শক্তি বর্দ্ধক, পাকে স্বাছরস, রসায়ন (ব্যাধি নাশক) চক্ষুর হিতকর, লঘু, আধ্বদ্ধক, বলকারক, অমুলোমক (মণা-দির অধ্যপ্রবর্ত্তক)। হরীতকী সেবনে দ্বাদ, কাদ, প্রমেহ, অর্লঃ, কুষ্ঠ, শোথ, স্ববেশ্য, গ্রহণী, डेमब्रद्यान, क्रि.म, निवक् (भनामित वक राष्ट्रता), विवम জ্বর, গুল্ম, আধান (পেটক্লা) তার, वमन, रिका, कपू, छाखाग, कामना, मूल, जानार, झोरा, शक्र, जमती, मृत-কৃচ্ছ ও মৃত্রাখাত রোগ নষ্টবর। হরাতকী ম্ব, তিক্ত 😉 ক্ষার রস বিশিষ্ট বলিরা পিত্ত ও কফ নাশ করে, কটু, ভিক্ত. ক্ষার ও অন্নরস থাকাতে বারু নাশক, কটু ও অমুর্দ থাকাতে পিত্তকারক কিন্তু কথনও বায়ুজনক নহে।

হরীভকীর সজ্জার মিষ্টরস, স্বারুতে অন্ন, বৃত্তে (বোটার) তিব্রু, তৃত্তে কটু ও অহিতে (আটিতে) কবার রস বিদ্যমান আছে। হুতন, স্থিম, কঠিন, গোলাকার, ওফ, অলে নিজেপ করিলে ভূবিরা বার, এইরূপ হরীভকী প্রশাস্ত ত

অভিশয় গুণকারক। আরু যে হরীক্দীর ভার কুটকর্ব কাহা শ্রেষ্ঠ। ठर्खन कवित्रा शहरण अधिवृक्ति त्यवन कतिहा चार्टि**ल यम भतिक्षक** दत. দিছ হনীভদী সংগ্ৰাহক (মলাদি সংগ্ৰহ कबिहा बार्य) एहे (खाका) इती करी जिएगाम नामक। ভোজনের সহিত হরীতকী দেবনে বুদ্ধি, বল ও ইন্দ্রির প্রধর হয়, পিতু, কফ ও বায় নিম্ম ল হর এবং মৃত্র পুরী দালি বিস্ক্তিতি হব। আহারাজে হরীত্রী ভোজন করিলে বাৰপিত্ত, কফ ৩ অৱপানজনা দোধ নিব।রিত হয়। তরীচকী লবণের দভিত ভোজন করিলে কম, চিনির সহিত ভোজনে পিত, ঘুকের সহিত সেধনে বার্কনা রোগ ও ওড়ের সহিত সেবন कदित्य भग्नाय द्वात महे इत ।

বর্ষ। বহুতে সৈত্বৰ লবণের স্থিত, শরৎকালে চিনির সহিত, তেমতে ভক্তীর সহিত, পীতকালে পিপুলের স্থিত, বসত্ত কালে মধুর স্থিত ও গ্রীম্বকালে গুড়ের স্থিত হরীহকী সেবন কবিলে শরীর নিরোগ থাকে। ইহাকেই ঋতু হরীভকী করে।

পথতান্ত, দুর্মল রক্ষ প্রকৃতি, কৃশ, উপবাদাদি হারা ক্ষীণ দেহ, পিতে প্রবল ধাড়ু, গর্ভবন্ধী স্ত্রা, ও সাহার রক্ত নিঃসৃত হইরাছে ইহাদের হরীতকী ভক্ষণ নিধিছা। ইহার মানে। তুলা না হইতে ১ তোলা।

হরীতকীর মক্ষা চক্ষুর হীতকর, বারু ও পিত নাশর্ক এবং গুরু। হরীতকীর ফল প্রহণীর। মাত্রা॥• ভোলা হইছে ১ ভোলা। বিদ্ধা পর্কতে বিজয়া, বিমালরে চেতকী ও পতনা, সিদ্ধারেশে বেটবী, প্রতিম্পান নামক প্রদেশে বিজ্ঞবা, চম্পা-প্রদেশে জায়তা ও জভয়া এবং সৌরাষ্ট্র দেশে জীবতী নামক হরীতকী উৎপদ্ধ হইবা থাকে। উল্লিখিত প্রদেশ সকল এই সাতপ্রকার হাতাবিক উৎপত্তি স্থান কিছ উহাদের প্রায় সকল জানীই ভারতবর্ষ ও তল্লিকটবর্তী দেশেব সর্কত্রই উৎপদ্ধ হইবা থাকে।

দর্শপত্তিকা।

কল্যানী বেষপত্তী চ বেচনী স্বৰ্ণত্তিকা। বিটসকং বহিৰাক্তাঞ্চ বকুম্বাল্যানতং তথা । প্ৰীবোলতং বহুপ্ত হজাৰ্থ বিষম্পত্তম্ব। কামলাং পাঞ্রোবঞ্চ কল্যানী ক্ষপত্তেদ্ধু বন্। মাত্রাং মাবকৌ।

(मानामुची ।

কলাণী, হেমপত্রী, রেচনী ও স্বর্ণপত্রিকা এইগুলি লোনাম্থীর সংস্কৃত নাম।
মলরে ব, অধিমান্দ্য, যক্তং, প্লীহা, বন্ধ
গুদ, অজীব, বিষমজ্ঞর, কামলা ও পাতু
রোগে মণ্টা > মাধা লোনাম্থী,
প্রয়েজ্য।

च्याद्रश्वभः ।

আরগ্বধাে র'জনৃক্ষঃ সন্সাকশত্রুজ্পাঃ।
আরবেরাে রা'বভাত: কৃতবালঃ সুবর্ণকা র
কর্মিকারে। দীর্ঘকলঃ বর্ণালঃ বর্ণভূষণাঃ।
আরগুবধাে ওকঃ বাদুং লীভবং অংসনাে ওকঃ ।
আর ক্রোেগ পিতাল বাভোবাবর্জপুলসুৎ।
ভংকলং অংসনাং লচাং ভূউপিভক্ষপিবন্ ।
আরে তু সভতং পথাং কোউবাভি করং পরন্।
আর্য কর্মিকাালেঃ এইবীয়াঃ। বারাে ৪ সাহকাঃ।

(मामान ।

আরগ্রণ, রাজবৃক্ষা, সম্পাদ্, চাতু-রত্বল, আরবেজ, ব্যাধিঘাত, কুত্মাল, सूर्वक, किनकाव मार्चक्रम, अभीत्र, १९ अर्व ভূষণ এই গুলি কো দেশের নাম। আবল বধ खक, भीएन ७ व्या खरमन। (त्र क्षेत्र यन।पिटक शिथिन करव)। হুলোগ, রক্তাপত, উর্গানায় ও শুল (ब्राह्म डेशकाही। আরগ্বধের ফল কোষ্ঠশ্বিত মলাদি শিথিল করে, ইহা क्रिकाबक, ठूछे, शिख ७ क्य नामक। আরগবধ জ্ঞারে বিশেষ উপকারী, ইহা षाता विलक्षणकरण कार्षक ইহার ফলের আঠা গ্রহণীর। মাতা।।• বিবিধ চক্ষ রোগে ইহার ভোলা। भट्डिय बाता डेवर्डमानि वावचा कता राव ।

यवानभक्ता।

ষবাস শব্দরা ভেয়া বুংছবী পিছ্যারিবী।
আরক্ষীপনী দীতা রেচনী সা পুরাতনী।
নার্যান্চাপম সভ্যায়া দুর্বালস্য তথা শিশো।
রেচনার্বং প্রয়োজ্যেরং জীবস্য ছবিরস্য চঃ
অস্যা যাতা ১ কর্ষ:।

नीवध्यः।

নীরবন্ত অর্থাৎ ম্যানাকে নংক্ত ভাষার যব।স শর্করা বল। যার। ইহা রংহণ, পিন্তনাশক, জরস, জুগাবন্ধক ও শীতবীর্মা। ইহা পুরাতন হইলে বিরেচনী শক্তিসম্পদ্ধ হয়। পর্তবন্তী নারী ভূর্মান, শিশু, শীশদেহ ও বৃদ্ধ ব্যক্তির পক্ষে ইহা উপযুক্ত বিরেচক। মাল্লা ২ তোলা।

हेल्लाकृती।

वैक्कोक्कराक्रमी क्रिको प्रयोक्षी व श्रवाहिमी। वाक्रमी क श्रक्षांश्राक्षा मा विश्वाला व्याक्ष्मा व (चंक्रमुण्या मृत्राको क मृदेवक्कांक्र मृत्रिक्मी। श्रवादिमी इत्तर किक्तर शादक कर्षे महरू श्रव्ह व वीर्व्याक्षर कामला शिक्ष कक्षश्रीद्वाहताश्रव्ह । चंग्रकामाश्रवर कूढे श्रम्भ अदि जन श्रद्ध व श्रद्ध वृक्ष गर्काम त्रवाहत विवाशवर्ष । चम्मा मृत्र क्रमक अवाहत् माजा व इक्तिकाः।

রাধালপদা। হিন্দী ইন্দ্রাকুণ, বড়ী ইন্দ্রকলা।

পর্যাব। ঐক্রী, ইক্রবারুণী, চিত্রা, গবাক্ষী ও পরাদনী। অপর এক প্রকার বারুণী আছে তাহার নাম বিশালা, মহাকলা, বেতপুস্পা ম্পাক্ষী, ম্বৈর্কারু ও মুগাদনী। এই উভরজাতীর ইক্রবারুণী তিক্র পাকে কটু, সর (কোর্ছহু শতাদি নিঃসারক,) লঘু ও উষ্ণু বীষা। ইহার ছারা কামলা, পিত্ত, কফ, প্রীহা, উদররোগ, খাস, কাস, কুঠ, ওঅ, গ্রন্থি এণ, প্রমেহ, মৃত্যুর্ভ, আম, গগুরোগ ও বিষ নত্ত হর। ইহার মূল ও ফলের শস্য গ্রহণীর। মাত্রা ব রঙি।

भागवीयम् ।

केकः नामभवीकक नामगीकः मृत्यक्कः । त्रक्रमः नामगीकः नात्कात्भागम् विभानसम् ॥ कत्र्वः भूतीयमत्मः । माहत्वं निश्चमां नत्त्रः । केशंतर्त्तं क्वायात्व तृत्यत्वकः अनुकारकः ॥ माजाः २ मागरको ।

कानाम्।ना ।

শ্যানশ্ৰীক, শান্তমনীক ও কুৰেচক এই তিনটী শক্ষ কালাধানার সংস্থৃত নাম। ইছা বিরেচক। শোঝা উত্তরী, জার, মলবোধা, ষত্রণাদারক শিল্পপীকা, উদাবর্জ ও আনাহ বোজে কালাদানা উপকারক। ইছার মাত্রা ২ মাখা।

क्ट्रेश'इनी।

কট্বী তু কটুকা ডিজা ক্ৰডেহা কটুডরা।
অংশাকা বংশ্যাশকলা চক্ৰালী প্ৰলাহনী ॥
বংশ্যাপিডা কাণকহা রোহিনী কটুরোহিনী।
কট্বী ডু কটুকা পাকে ডিজা ক্লডা হিয়া লগুঃ।
ডেহিনা দাপনা হ্রহা কক্পিড অর্গাহা।
এবেহ খাস কাসাল্ল হাহ কুঠ ক্লিবি প্রবৃৎ ॥
অস্যা মুলং প্রাছাং খারা ভাবকৌ।

कछेकी।

কটী, কটুকা, ভিক্তা, কৃষ্ণভেদা, কটু-ভরা, অশোকা, মংস্যালকলা, চক্তাপাঁ, লকুলালুনী, মংস্যাপিতা, কালফুহা রোহিনী, কটুরোহেনী এইগুলি কটুকার নাম। কট্কী ভিক্ত, পাকে কটু, রক্ষ লীতল, লঘু, ভেদক, অগ্নিলীপক ও হাদা। কটকী সেবন করিলে, কফ, পিড জর, প্রমেহ, খাস, কাস, রক্তদোষ, দাহ, কৃষ্ঠ ও ক্রিমি নই হয়। ইহার মূল গ্রহণীয়। মান্তা। তিলোগা।

क्ट्रेन्सी । हाक।

কুটুপৰী হৈদৰতী হেনজীয়ী হিমাৰতী। হেমাজা পীতদুখা চ তমুদ্য কোক্যুচ্যতে। হেমাজা রেচমী ভিজা ভেনিম্যুৎক্লেশ কারিনী। ক্লিনিকত বিবামাহ কম্পাদাল ক্ষ্ৰুৎ। মানা ২ মাধকঃ।

C5 4 1

ৰটুপৰ্নী, ইংৰবজী, বেৰক্ষীয়ি, বিনা-জী, বেৰাড়া ও শীভত্তা ইবাৰ কুক্ষে নীন, মূলকে চোক বলে। ইহা রেচক কিন্ত ও ভেদক, দেবন করিলে গা বিম্ বমি কবে, ক্রিমি, কণ্ড, বিষক্ষনা রোগ, আনাহ (মুদো), কফ, রক্তপিত ও কুই রোগ ধ্যন করে। ইহার সাত্রা ১ সাখা।

गीजग्नी।

গজিনী পীঙৰ্গী চ বল্যা সা মূলৱেচনী।
বঙাজীৰ্ ৰডীসারং ৰাজ্য'ল্য মৰোচকৰ্ ছ বিট্সদং শীক শিক্ষ দৃষ্ট্রণ বিরোহিণী।
অসা বৃল্পু প্রাহ্যং নাতা ১০ র্জিকাঃ।
সেউচিনি।

রেইচিনির সংস্কৃত নাম গান্ধানী ও
পীতন্দী। তেইচিনি বলকর ও চ্চ্
বিবেচক। অজীর্গ, অভিসাব, অর্থমান্দা,
অরুচি, মলবোধ ও শীতপিত রোগে
ব্যবচ্ছের। অজীর্গ ও অভিসার রোগে
যদি বিরেচন আবশ্যক হব, ওবে ইহার
ঘারা কর্ত্তব্য । তৃত্তি অতে ইহার চুর্গ লাগাইলে বিশেষ উপকার কর্মে। ইহার
মূল ব্যবহার্যা, মান্তা ১০ রভি।

एक बकारको।

অলকো গণ্ডণঃ স্যান্ত্ৰাবাৰ সৈত্ৰাইপি চ।
যেতপুসাং সদাপুসাং স্বালক প্ৰতাপসঃ ছ

রক্তোপরে হক্ষানা স্যাদকপৰো বিকীরণঃ।
রক্তপুসাং প্রক্রক ভবা ক্টোটা প্রকীউভঃ ছ

অক্দুমাং সরং বাত কৃঠ কণ্ বিষ প্রবাদ।
নিহার প্রীর গুল্নার্গঃ গ্লেভানর সম্প্রীক্ষান্ত ছ

অলক কৃসুমাং স্বাংশ কাস খাস বিবারণ্ড ছ

রজার্ক পুলাং নধুরং সভিজং কুঠ জিনিয়াং ককনাপন্ত। অর্ন্তো বিবাং বাভি চ প্রজাপিত্রাং সংগ্রার একে ব্যক্তবাং বিভাগেরং এ ভীরদর্কার ডিজোভং রিজং সলবর্থ লয়।

কুঠ প্রল্যোদর হরং স্লোঠ বেডদ্ বিরেচনন্ ।

অর্থপুলং ককোংসারি বেছদ্শ বাদনং ভর্মা।
থাসভাল প্রভীলারানভীলারং প্রবাহিকান্ ।
রজপিজং পাঁওপিজং প্রবাধিপাস্গৃহরন্ ।
নালরেৎ ক্তভান্ রোধান্ নিষং কীউসমূদ্ধনন্ ।
বুলজ্বল্যে ব্যবার্থাৎ বিশ্বং ।
বুলজ্বল্যে ব্যবার্থাৎ ব বাদ্বেরী বন্দবেশ্যেদ জননার্থাৎ হ প্রভিকে।

(चिष्ठ जाकम । अ मान जाकम।

শেতে আকেলের পর্যাব। অলক, গণধূপ, মন্দার, বস্ক, সে চপুস্প, সদাপৃস্প, বালাক ও প্রচাপস।

রক্তাহর্ত্তর পর্যার। অর্কপূর্ণ, বিকীরণ, রক্তাপুশ্প, শুক্লফল ও ক্ষোট।

তাপ। আমরিক প্ররোগ। অর্কছর সর, বারুনাশক, ইহা বাবহারে কুঠ, কণ্ডু, বিষ, ত্রপ, প্লীছা, তাক্ষ, আর্দ্য, প্লেয়, উদর রোগ ও প্রীষ ক্রিমি নষ্ট হয়।

খেত আকলের পূলা বলকারক, লখু,
আন্ধি দীপ্তীকারক ও পাচক, ইহা হারা
আক্ষচি, প্রশেক (মুখাদি হইতে জলপ্রাব),
আর্শ, কাস ও খাস নিবারণ হয়। লাল
আকলের পূলা মধুর, তিকে, কফনাশক
ও সংগ্রাহী, ইহা কৃষ্ঠ ক্রিনি বিষ, রক্ত পিড, ওল্ল ও পোও রোগে প্রগোজ্য।
আকলের জীর (আটা) তিকে, উষ্ণ,
স্বিধ, স্বধারস বিশিষ্ট ও প্রেট্ট বিরেচক
ইহা হারা কঠা, ওল্ম ও উদর রোগ নাশ
হয়।

আকদের ব্ব কদনিংশারক, খেদ অবক ও বনবকারক। ইহা সেবন ক্রিলে খাস, কাস, প্রতীশ্যার, অভিশার, প্রবাহিকা, রক্তপিত, প্রতিপত্ত, গ্রহণী, প্রদর ও কফজ ব্যাধিসমস্ত নিরাকৃত হর। ইহার প্রশেপছারা বৃশ্চিকাদির বিষ নষ্ট হর।

আকল্পের আঠার মাত্রা ১০ বিশু। গুলের ভবেদর থাত্রা ব্যনকরণার্থ ২ মাঘা, স্বেদজনন ও ব্যনের ব্যেকরণার্থ ২রতি।

সেহত:। লুহী।

সেছতঃ সিংছতুওঃ স্যাদ্বজু বজ্জনোহণি চ।
সুধাসৰভদুখাত অ ক্ জিয়াং সাংজ্ ছা প্রভা ই
সেছতো রেচন ভাজো দীপনঃ কটুকো প্রকঃ।
শূলনভাসিকাশ্লান কক প্রলোধরানিলান্ হ
উল্লাদ লোহ ক্ঠার্লঃ শোল নেছে:হল্ম পাত্ ভাঃ।
ব্রগণোধ অর প্লাহ বিষদ্ধীবিষংহরেং ই
উক্ত বার্থাৎ অই জারং লিগ্রু কটুকং ল্লু।
প্রস্থিনাং ক্টিনাঞাপি ভবৈবাদর রো:গণান্ হ
হিত্তবেভদ্বিরেকার্থে যে, চান্যে দীর্যাগিণঃ।
স্ল হ্যা মূলজুঞ্নির্গানো প্রাহ্যে নারাং মার্কো।

मिজदूका ।

ণ্যার। সেহও, সিংহত্ও, বজুী, বজুক্রম, স্থা, সমস্তহ্গ্গ, সুক্, সুহী ও ওড়া।

তা ও আমরিক প্ররোগ। রেচক তীক্ষ, অন্ধিদীপক, কটু ও ওরু। ইহা ব্যবহারে শূল, অন্তিলিকা, আগ্নান, কফ, ওল্ম, উদর রোগ, বারু, উন্মাদ, মুদ্রুন, কুঠ, অর্দা, শোগ, মেদোরোগ, আগরী, পাতুরোগ, ত্রণ, শোগ, জ্বরু, প্রীহা, বিষ ও দ্বী বিষ নষ্ট হর।

ইহার নির্ব্যাশ উষ্ণবীর্ব্য, লিঙ, কট্ ও লঘু। ইহা ওল, কুঠ ও উদ্বরোগ প্রস্তুত্ত ব্যক্তিদের পক্ষে হিতকর বিরেচক, ও জন্যান্য চিরবোরীর পক্ষেও উপ- কারক। ইহার দূলের স্কৃত নির্ধান গ্রহণীর। মাত্রা ২ বাবা।

(পাতলা সেহওজেম:।)

(সাতসা অনেনৈব নামা প্রসিদ্ধা ।)
খাতলা সপ্তলা নামা বিবলা বিবুলা চ বা ।
ভথা নিপাছত। ভূত্রিকেনা চর্মাকবেতালি ঃ
খাতলা কটুকা পাকে বাতলা শীতলা লম্বুঃ ।
তিন্ধা শোধ কডানাই পিডোয়াবর্জ রক্তরিৎ ॥
নামা ১ বাবকঃ ।

हिन्ही भारत। (निज वित्यव ।)

প্র্যাব। শাতনা, সপ্তলা, সারা, বিমলা, বিতুলা, ভূরিফেণা ও চত্মক্রবা।

ত্তণ ও প্রয়োগ ছল। পাকে কটু, বাব জনক, শীতল, লবুও তিজ, ইহা শোপ, কফ, আনাহ, পিন্ত, উদাবর্জ ও রক্তদোব নিবারণ করে। ইছার মূল ও নির্যাদ গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাধা।

(थठा बिद्रा

খেতা বিবৃৎ বিভণীস্যাৎ ত্রতাবৃতা বিপুটাপি চ। সর্ব্রানুষ্ঠ্'তং সরলা নিপোত্রা রেচনী তি চ ঃ খেতা বিবৃত্তেভিনী স্যাৎ খাদুরকা সমীরক্ষ্ৎ। রক্ষা পিত অরম্বেদ্ধ পিতপোধোবরাপ্য। ঃ অস্যা বৃল্বুক্ গ্রাহা। মাত্রা ২ মাবকৌ।

বেততেউড়া। হিন্দী বেত গনিশর।

প্র্যায়। খেত ত্রির্ং, ত্রিভাটী, ত্রির্ভা, ত্রিপুটা, সর্কান্তভূদ্ধি, সরলা, নিশোত্রা ও রেচনী।

তা। বেড তেউড়ী রেচক, স্বাচ্ উফ্চ, বারু নাশক ও রহম। ইবার ঘারা শিতক্রের হৃদ্ধ, গৈতিক শোধ ও উদর রোগ নিবারিত হয়। ইহার মূলের স্বক্ষ গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাধা।

শ্যামাত্রিরং।

বিবৃৎশাগার্ডকা চ পালিকী চ সুবেশিক।
নসূত্র বিবলা কোল কৈবিকা কালদেবিকা ঃ
শালা বিবৃৎজ্জোহাল্প্রণা তীয় বিয়েচনী।
মূল্যা বাহ সব্যাতি কঠে।
ক্ষান্ত্রণ প্রবিধা।
নাবা ১ সাহকঃ।

हिन्ही भाग श्रमनद्र।

পর্যার। অস্কচন্দ্রা, পালিন্দী, স্থ্যে-বিকা, মত্রবিদলা, কোলকৈ বকা ও কাল মেবিকা।

তা। এই তেউড়া পূর্ব্বোক্ত তেউড়ি আপোক্ষা অর তা বিশিষ্ট কিন্ত বিরেচন শক্তি অভিতীর, ইহা ব্যবহার করিলে মৃত্র্, নাহ, মন্তলা, ভ্রম ও কঠপোষ উপস্থিত হয়। ইহার স্পানর ক্ষা গ্রহণীয়। মাত্রা স্মাধা।

नवृत्रकी।

লমুখনী বিশল্প চ স্যাধু পুষরপর্ণ পি ।
উথৈরত কলা লীয়া লেগ্দযালী যুব প্রিয়া ।
বারাহালী চ কবিডা নিজুক্ত ষকুলকঃ।
কুলাদনী কলক স্যাধু ব্রুবং রবপাক্ষাে।
লীডলং সৃক বিন্ যুবং গরপোর কলাপ্যয় ।
লম্মুক্তা যুক্ত বীজক প্রায়াং নারা ৬ রক্তিকাঃ।

পর্যার। লঘুদন্তী, বিশল্যা, উত্তর-পর্ণী, এর-স্কলা, শীজা, প্যেম্বন্টা, ঘুণ-প্রেরা, বারাহায়ী, মিকুস্ক ও মকুশক।

मची।

ত্ব। কুত্তবন্তীর কল আখাদে ও পাকে বধুর, ুশীকল, বৃত্ত পুরীব রেচক,বিবল শোগন্ন ও ককন:শক। এই বৃক্ষের মূল ও ফল গ্রহণীয়। মাত্রাভ রচি।

दृष्ट्मण्डी।

(এর্ড পত্র বিটপা :)

দ্ৰবন্ধী সাধরী চিত্রা প্রভাকপণ্যবপণ্যপি।
চিত্রোপচিত্রান্যমোধীপ্রেড্য চ্ছেণ্যাধুকণ্যপি।
অন্ন পালে বন্ধী বীজা বিখ্যাভন্য ভিনীক্ষন্ ।
অন্নপালে। প্রক্লং বিজে বেচি পিত কন্যপন্থ।
অন্যাবীজা প্রাহ্যা যাত্রা। । রাজ্যিক।।

जरणान। हिन्दी जामानजाहा।

প্র্যাষ। অবস্তা, ব্রী, চিত্রা, প্রত্যক প্রণী, অক প্রণী, চিত্রা, উপচিত্রা, ন্যগ্রোধা, প্রেড,ত্রেণী ও আধুকর্নী।

ত্তণ। বৃহৎ দৃত্তীফলের বীজকেই জরপাল বলে। জরপাল গুরু রিশ্ধ, জাতি রেচক ও পিত্তপ্লেম নাশক। ইহার বীজ গ্রহণীর। মাত্রা। বৃতি।

ৰভীৰত্ব সর্থ পাকে রসে চ কটু দীপনৰ। গুদাছুরানপুলাফ কও কুঠ বিদাহনুও । ডাক্ষোক্য হঙি পিৰাফ ক্ষপোধে।দুর জিদীন্

কণ চুইপ্রকর দত্তীই বাতাদি নিঃসারক, পাকে ও এসে কটু, অগ্রিদীপ্রিকারক, তীক্ষ ওউফার

প্রবোগ। আর্শঃ, আমশুল, রক্তেদোর কণ্, কুষ্ঠ, দাহ, রক্তপিত, কফশোথ, উদববোগ ও ক্রিমিরোগে প্রযোজ্য।

नोनी।

मीनी जू नीनिमी जूनी कानरवाना व मीनिका। इचनी किसनी जूना आपीका महुग्रीनिका। ক্লীবজা কালকেশী চ বীলপুশা চ লা ক্তা। নীলিনী বেচনী ডিকা কেশ্যা বোহ ক্ৰমাশহা ঃ উলা হন্ত)দরপ্লীহ বাতরক্ত কন্দানিলান্। আনবাত ধুলাবর্ত্ত\ মদ্য চ বিষ্যুদ্ধতন্ ঃ নাত্রা ২ বাবকো।

नीम ।

প্র্যার। নীনী, নালিনী, তুলী, কাল দোলা, নীলিকা, রঞ্জনী, শ্রীফলী, তুল্কা, গ্রামিণা, মধ্পর্ণিকা, ক্লীডকা, ভালকেণী ও নালপুশা।

তা। ইহা রেচক, ডিজ, কেশের সৌলর্ঘ্য সাধক ও উষ্ণ। ইহার হারা মৃক্ত্য, ভ্রম, উদর্ব্বোগ, প্লাহা, বাতরজ্ব, বাতপ্রেম্বা, আমবাত, উদাবর্জ, মদ্বোগ ও বিব দোব নত্ত হর। ইহার মূল, অভাবে স্কাংশ গ্রহণার। মাত্রা ২ মাধা।

भंद्रभुद्धाः ।

পরপুত্র: প্রীহশক নীলীবৃত্বাবৃত্তিত সং।
পরপুত্রো যক্ৎ প্রীহ ওলা এব বিবাপহং।
তিক্তা ক্যায়া কাদাক্র সাদ কর হরো সহঃ।
যাত্রা ২ যাবকো।

भव्रभूरवः विन्ते भव्रकाकाः

পর্য্যার। শরপৃথ্য প্লীহশক্তা। এই ব্ৰক্ষের আকৃতি নীল ব্ৰক্ষের ব্যায়।

তা। তিন্তু, ক্ষার ও পরু, ইছার প্রেয়ালে সকুৎ প্লীহা, তাল্ম, এগ, বিষ, কাস, রক্তরোষ, খাস ও জন নই হয়। ইহার মাত্রা ২ মাধা।

যবালো ভ্ৰাণভাচ। বাহো ঘৰানো হু:ম্পালো ধৰ্বাস: কুনাৰ্বক:। বুয়ালভা সুৱালভা সম্ভ্ৰাণ্ডা চ হোহিনী । भोकांत्री कम्मू हानका क्यांत्रा यहनिश्याः । यात्रः वाष्ट्रः तत्र किक स्वयतः गोज्या तत्रः । क्य याद्या पर्वादि शिवात् व्यक्ते कात्र जिल् । ज्ञादित्रम् याक्षक यदि स्वत यहन्युज्यः । ययात्रत्रा धरेन स्वता दूरेयक्तका यूनावका । यात्रा > गायकः ।

যবাস ও তুরালভা। যবাসা, তুরালা। যবাসের পর্যায়। যাস, ঘ্বাস, তুম্পর্ম, ধন্যযাস ও তুনাশক।

তুরালভার পর্যায় এই তুরালভা, সমুদ্রাভা, রোদিনী, গান্ধারী, কচ্চুরা, অ-নভা, কহারা ও হরবিগ্রহা।

দ্বাদের ওব। ইহা স্বাত্, সর, তিক্ত, কধার, শীতল ও লঘু। ইহাব ধারা কফ, মেদোবোপ, মদ, ভ্রমবোপ, রক্ত-পিত, কুঠ, কাস, তৃষ্ণা, বিসর্প, বাতরক, বমি ও জর নিবারিত হব। ভ্রালভার ওব ঘবাদেরই ন্যাব। মাত্রা ১ মাবা।

क्याकी।

কুমারী গৃহকন্যা চ কন্যা ঘৃতকুমারিকা।
কুমারী ভেবিনী শীড়া ডিকা নেত্রা রসামনী ।
মধুরা বৃৎছণী বল্যা বৃষ্যা বাডবিবগুণ ।
গুলু দীহ যকৃৎ বৃদ্ধি কম্মরহরী হরেৎ ।
প্রমাধিক বিক্ষোট পিতরক ঘৃষ্ণময়াবৃ।
মন্যা নির্যালয় রাজ্য নাত্রা ২ বারা।

ছতকুরারী। বিশী বিউকুনারী। পর্যাব। কুনারী, গৃহকন্যা, কন্যা ও ছত কুনারিকা।

ওপ। ভ্রুত্মারী ভেদক, শীতস, ভিজ্ঞ, চজের উপকারক, রসাগ্রন, মধ্র, পৃষ্টিকর, বসকারক, জ্ঞাজনক, বিষয় ও বায়ুনাপক। প্ররোগ। গুল্ম, প্রীহা, যরুৎ, বৃদ্ধি (কোষরুদ্ধি), কফজন, এছি, অন্ধিদ্ধ, বিক্ষোট, নক্তশিত্ব ও তৃকের রোগে প্রবোগ করিলে উপকার হয়। ইহার নির্ধাস সেবলীয়। নাজা ২ নাবা।

जायमाना ।

বিশ্বজ্ঞা বায়মাণা বায়ঙী গিরিলামুকা। বায়ঙী তুবয়া ভিক্তা সরা পিত্তক্ষপথা। অর হয়েগে প্রস্নার্লো জমপুল বিষ্ঠাণুৎ। মারা ২ মাধকৌ।

वलाष्ट्रम्य ।

পর্যায়। বলভদ্রা, ত্রারমাণা, ত্রার**ন্তী** ও গিরিসামুকা।

তা। ক্ৰাৰ, জিক্ত, সর, পিত্তপ্লেম নাশক।

ইছাছারা জর, হৃট্রোগ, গুল্ম, আর্শঃ, লেমরোগ, শূল ও বিষক্ষ পীড়ানট হল। ইহাৰ মাজা ৪ মাধা।

कृमीवद्री।

ৰাক্ৰিকা ভূষিবলা মাক্তী মৃদ্রেচনী । মাক্তিকা কুঙ্হায়ী উদ্ধাৰকায় পোধিনী। বিষদুৰ্গদ্ধ কাসন্ত্ৰী প্ৰস্মোহর বিনাশিনী। বল্লী ভূমী প্ৰসূত্ৰণ দীলা। মানা ব নাৰকা:।

शिको जुरेथथमा।

প্রার। মার্কতিকা, ভূমিবলী, মার্কতী ও মৃত্রেচনী। ইবা ভূমিতে শতাইরা থাকে।

গুণ। বিরেচক, বমন কারক, বিষয় ও তুর্গন্ধ নাশক। ইবার বারা ফুঠ, কান, গুল্ম ৩ উদর রোগ উপশ্মিত হর। ইবার বাজা ৪ বাবা।

কৃটশাল্মলিঃ।

কুৎসিতঃ শাল্যলি: প্রোক্তো বোচনঃ কুট-শাল্যলিঃ।

কুটপালাগেক ভিকঃ কটুকঃ কমবাতনুৎ ॥ ভেদ্যাকঃ প্লীৰ কঠা যকুদ্ গুলা বিবাপৰং। ভূতানাৰ বিবদ্ধাল মেদঃ শূল কম্পাণহঃ॥ অস্যাবীসং গ্ৰাহং। মালা ১ মাৰকঃ।

कित्रल दुक्त।

পর্যার। কুৎসিত সাল্মলি, রোচন ৩ কুটশাল্মলি।

গুৰ। তিক্তা, কট্, বাতপ্ৰেয় নাশক, ভেদক, উষ্ণ ও ভুতাদি ওল নাশক।
ইহার হারা প্লাহা, ফঠর, যকুৎ, গুল্ম, বিষ-দোষ, আনাহ, বিবন্ধ, রক্তদোষ, মেদো-রোগ ও শুলরোগ উপশ্মিত হয়। ইহার বীক্ত গ্রহণার। মাত্রা ২ মাধা।

कब्रीतः ।

করীরঃ ক্রকরঃ পত্রী প্রছিলো মরুভুরুছঃ। করীরঃ ক্টুকিভিকঃ খেদ্যকো ডেম্নঃকাভঃ॥ মুম্মি ক্ষরাভাষ গরপোধ এব প্রবৃৎ। অস্যান্ধ্য গ্রাহ্য।। মাত্রা ২ মাবর্ণি।

शियों डेंड्काडाब ।

পর্যাষ। করাব, ক্রেকর, পত্রী, গ্রন্থিক ও মরুভুরুহ।

পর্য। কটু, জিফা, জেদজনক উষ্ণ ও ভেদক। ইহা লার্দি, কফা, বারু, আমা, বিষ্ণুশোথ ও রণ নষ্ট করে। ইহার ক্বক গ্রহণীর। মাত্র। মানা।

व्यर्धेत्यार्थात्र ।

সংগ্রাহি বর্গঃ। অহিফেন।

উক্ত৲ খগৰলকীর মাকৃত মহিবেদকৰ্ । আকৃত্ৎ লোধনৎ সাহি জেলছ্ৰৎ বাৰ্ডপিকলৰ্ ঃ আক্ষেপশমন নিজাজনন সক্ষারি চ। বেৰ্নাৎ বেৰ্নাছক যুৱাভাসায়ন্থ পর্ব । কাসখাসাভিসায়ল্থ পোণ্ডক তিবারণৰ । ভথা খস ফলোদ্ভূত বস্কস্থায় সিভাপি । মারা ।• পাদ্যক্তিকা।

ष्यश्रिकन ।

থদকলক্ষীর, আপুক ও অহিকেনক এইগুলি ইহার পর্যার। অহিকেন শো-ধক, গ্রাহী, কফনাশক, বায়ুবর্দ্ধক, পিত্ত জনক, আক্ষেপ নিবারক, নিদ্রাকারক, মাদক, স্বেদজনক ও বেদনা নাশক। ইহার দ্বার মুক্রাভিদার, কাদ, শ্বাস, অভি-দার ও রক্ত্রভাব নিধারণ হর। অধিকন্ত ইহার বল্কলের দে যে গুণ আছে ইহা-রপ্ত দেই দেই গুণ আছে। ইহার মাত্রা।

य| सम ।

ভিলভেদং খনভিলং থাখনশ্চাপি স আ্ডঃ।
স্যাৎ খাখন কলোদ্ভূতৎ বল্জলং শীভলং লয় ।
প্রাহি ভিক্রৎ কৰায়ক বাভক্ৎ কক্ষাস হছং।
ধাতুনাৎ শোধকৎ কল্পং মদক্দ্ বাগ্ বিবর্জনন্ ।
মুখনেছি কর্ৎ কচাৎ নেবনাই পুংকুনাশনন্।
মাতা ১০ রক্তিকাং।।

(उँदी तृष्ण।

ভিলভেদ, থসভিল ও থাবস এই থালি তেঁড়ীরক্ষের সংফ্ত নাম। ইহার ফলের ত্বক্ শীতল, লবু, ধারক, ভিজ্ক, কবার, বারুজনক, কফর, কাস নিবারক, ধাতুশোবক, রুক্ষা, মাদক, ব্রনশক্তিবর্দ্ধক মোহোৎপাদক, কুচা ও পুরুষত্ব নাশক। এই ব্যবদের মাত্রা ১০ রভি। ইহা কফর ও পোবক বলিরা বেদনা স্থানে ইহার ক্ষাথের স্থেদ অভ্যন্ত উপকারী।

থাথদবীজমু।

উচ্যতে ধসবীক্ষানি তে থাখসতিলা অপি। ধসবীক্ষানি বল্যামি বৃষ্যাৰি সুগুত্ৰৰি চ । শবহুতি কক্ষতানি ক্ষমত্তি স্বীর্ণষ্। মাত্রা > মাক্ষঃ।

পোন্তদানা।

খদবীজ ও ধাধদ জিল ইহার পর্যায়। খদবীজ বলকারক, শুক্রন, অভিশয় গুরু, কফল্প ও বাসুজনক। ইহার মাত্রা স্মাধা।

भावकी।

ধাতকী ধাতুপুল্পী চ ডামপুল্পী চ সঞ্জা সুডিক্ষা বছপুল্পী চ বক্ষিলাগা চ সাক্ষ্ডা । ধাতকী কটুকা শীতা সংক্তৃব্যা সন্থা। ভূলাতিমার শিতাক্র বিষ ক্রিমি বিসর্গ কিং। মাত্রা এমাক্ষঃ।

ধাইফুল।

ভিন্দক্ষপৃথ্।

ভিস্কস) কলং এছি কৰারং লঘু শীতসন্। বাতলং হুডাডীসারং পিরমেহ মস্গ্দুরন্ । উপসর্গিক মেহক ছোরেলগাংগ্রবাহিকান্। পাকস্ক তংকলং বাতরপত্নং গ্রেক দুর্জ্বন্ । বিশ্বং রেলকরং পির প্রমেহাক্র বিনাশনন্। আষাপর্যোগ্রভাং হতি ভংসারং ভির্যোগ লিং ।

भारकल ।

গাবদল গ্রাহী, ক্যাব, লঘু, শীতল, ও বার্জনক। ইহা অফিদাব, পিত্তমেহ, উপদর্গিক মেহ ও প্রবাহিকা নিবারণ করে। ইছাব প্রকলন বার্নাশক, এণ নিবারক, ওজ, তুম্পাচা, লিগ্ধ, ক্ষজনক, পিত্তমেহ নিবারক, রক্তভাব রোনক ও আমাশবের উগ্রাহা প্রশমক। গাবফলের দার চিররোগ নাশক। গাবের অপ্রক্

ম চিকা।

মাতিকা প্রশিক্ষণ কর্মত চাধালিকাধিকা।
মনুরবিদলা কেশী সমস্তা বালমূলিকা।
ম ডিকালা রসে পাকে কম রা শীতলা লক্ষ্ণ।
পকাতীসার পিতাপ্র ক্ষক্তীম্মাপ্রা।
মাত্রা ২ মাব্রেটা।

মাচিকা, প্রস্থিকা, অম্বর্তী, অম্বালিকা, অম্বিকা, মনুরবিদলা, কেলা, সহজ্ঞাও বালমূলিকা এই ওলা মাচিকার নাম। মাচিকা অমরদ বিশিষ্ট, পাকে ক্ষায়, লালল ও লঘু। মাচিকা ব্যবহারে প্রকাতিনার, রক্তপির, শ্লেমা ও কণ্ঠরোগ মন্ত্রীর। এই রুশা পশ্চিম প্রদেশে মইরাইনামে প্রদিশ্ধ। ইহার স্ক্রিংশ গ্রহণীর। মাত্রাহ মানা।

· 可能不可到 |

কীটাবালো সঞ্চলত গ্রাহি বলাৎ অরাপহন । লোনিভজ্পতিজ্বভিত্ত মুখনত গ্রহান গ্রাম । খেতপ্রস্তু স্পাৎলি যোসিকলৎ সুবারুণন্ । অভীসারৎ মহাযোজং প্রহণীৎ স্প্রবাহি সার্

माजुकन।

মাজুকলের সংস্কৃত নাম কীটাবাস ও মাজকল। মাজুকল গ্রাহী, বলকারক, জারম্ন ও রক্তত্রাবরোধক। মুখ ও দন্ত-গত রোগ, খেতপ্রদর, অর্শা, গোনিকল, জাতিসার, গ্রহণী ও প্রবাহিক। রোগে প্ররোজ্য। মাত্রা > মাধা।

প্লাশ নিৰ্ব্যাসঃ ।

প্ৰাশ্ভৰ নিৰ্যালো আছী স্কপ্ৰেষ্ ধুবুৰ্। অহণীং মুখজান্স্যাধীন্ কাসান্ ৰেছ।ভিনিৰ্গমণ্ । মাত্ৰা স্থাকৰ।

शमामगॅम।

পলাশগঁদ গ্রাহী। ইহা গ্রহণী, মুখ-রোগ, কাল ও ঘর্মাধিকা নিবারণার্থ প্রয়োজা। মাত্রা ২ মাবা।

मश्रुभर्गः ।

সঞ্চপর্বে। বিশাসভূক্ শারদী বিষয়জন: ।
মনিচ্চবে ওজপুলো বৃহত্ত্ বহুপর্কঃ ।
সঞ্চপর্ব জিলোবয়ে। বীব্যোজোহরিপ্রাহীপন:।
মগদ্ভির বি মরভিক্যক্রিমি বিনাশন: ।
কুঠা জীবজার শাসা ওলুক গ্রহনী ভবা।
প্রাহিকাণ সরক্ষাক বাত্তকা বিনাশরে ।

ছাতিম।

লপ্তপর্ণ, বিশালত্ত্ব, শারদী, বিষমক্ত্রদ, মণিক্ত্রন, ওচ্চপূপা, বৃহরক্ ও
বহুপর্ণ এই গুলি ছাতিমের সংস্কৃত নাম।
ইহা ত্রিলোবন্ন, উষ্ণবীর্ধা, অগ্নিনীপক,
মদপন্ধ বিশিষ্ট, ত্রণ নিবারক, ডিক্ত ও
ক্রিমিনাশক। ক্র্ত, জীর্ণজ্ঞর, খাস, গুলা,
ক্রাহনী, আমাশর, রক্তামাশর ও বাতরক্ত ক্রোব্যে প্রবোজ্য।

विन दुशनी।

दिनुर्राणी नचूर्वन्।। श्रीहिनी कक्सानिनी । श्रवाहिकामञ्जानात्रः स्निहमान् सहनीमनि ॥

विज् रशभी।

বিলুগেশী লঘু, বলকর, প্রাহক ও কফর। প্রবাহিকা, অভিনার ও গ্রহণী রোগে প্ররোজা। শুরু বিলুগেশী অর্থাৎ বেল্প্ট সর্বাদা ব্যবস্তুত হইরা থাকে।

हेत्सगढ ।

উক্ত কুট্ৰবীক্সভ্ত বনমিজ্ঞয়বং তথা।
কলিক ঞালি কালিকং তথা ভ্ৰতবং আ্তব্ ।
কলিক ঞালি কালিকং তথা ভ্ৰতবং আ্তব্ ।
কচিবিজ্ঞান নামৈৰ ভ্ৰেত্তৰতি ধায়কণ্ :
ইজ্ঞয়বং বিশোষসং সংগ্ৰাহি কটু লীতলৰ্ ।
ভিক্তং গাৰহৰং হভি বক্ষলিকং প্ৰবাহিকাৰ্ ।
জ্য়াতিসাৱ ব্ৰজাৰ্ল ক্ৰিবীসৰ্প কুঠনুৎ ।
দীপনং ওদকীলক্ষ বাভাক্ৰ প্ৰেৰ্ণুল বিং ।
নামা ১ নামকং ।

इस्माव ।

কুটজবীজ, যব, ইন্দ্রযব, কলিল,
কালিল ও ভদুষব এইগুলি ইন্দ্রযবের পর্যার। কথন কথন ইন্দ্রবাচক শক্ষপ ইছার পর্যার বলিরা
গৃহীত হর। ইন্দ্রযব ত্রিদোষ নাশক,
সংগ্রাহি কটু তিক্ত শীক্তল অল্লি দীপক
ও দাহনাশক। ইন্দ্র্যব সেবন করিলে
রক্তপিত, প্রবাহিকা, জ্বর, অভিসার, রক্তাদার্ভি, প্রবাহিকা, ক্রুব, অর্থেবিলী, বারু,
রক্ত দোষ, প্রেয়া ও শ্লুল রোগ নত্ত হর।
এই বীজের মাত্রা ১ মাষা।

व्याप्रदोक्य ।

चाळवेचः क्यांत्रः नाः व्यव्यक्तिमात् याणम् । । क्रेयर्प्रकः यद्भुतः चर्या क्रम्य चायम् ॥ यावा ३ वायकः ।

वाजनीय ।

আত্রবীক করার উবং আর ও মধুর ইহার দ্বারা অতীদার প্রভৃতিরোগ উপ-শমিত ও জ্বরের দাহ নিবারিত হর। আত্রবীকের বারো ১ থাবা।

थमित्रः ।

থদিরো রক্ত সার্গ্য গার্ডী দৃহধাবনঃ ।
কণ্টকী বালপত্রণ্ড বছলল্যান্ড বজিন ।
থদিরং লীডলো দৃষ্যং কতু কাসাক্ষতি প্রপৃথ ।
ডিক্তং ক্যাবো বেলাল্লং জিলি বেছ জন্ম এণান্ ।
থিত পোনান পিতাক্র পাতৃক্ত ক্যাবনান্।
বজিনান্য নতীসার্থ প্রদূর্গ বিমাণব্রেথ ।
থিব্রকাঠস্য নাত্রাবাহকো, বির্যাসন্যগর্জিকাঃ

समित्र ।

পর্যার। ধদির, রক্তদার, গারত্রী, দক্তধাবন, কণ্টকী, বালপত্র, বহুশল্য ও যজ্ঞির ধ

তণ। শীতল, তিক্ত ও দক্তের উপকারক। ইহা সেবনে কণ্ডু, কাস, অক্লচি, নেঘোরোগ, ক্রিণ্ম, মেছ, অর, ত্রণ, খিত্র, পোখ, আম, রক্তপিত্ত, পাতু, কুঠ, কফজরোগ সমস্ত, অলিমান্দ্য, অতীসার ও প্রদর প্রশমিক হয়। ইহার কাঠের মাত্রা ২ মাবা, ইহার সার অর্থাৎ, ধরেরের মাত্রা ৬ রতি।

८४७ थमितः।

থদিরং খেত সারে।২ন)ং ক্ষরং সোমবল্কসং। ক্ষরো বিশবো বর্থে। মুখরোগ ক্ষান্তানিৎ ॥ মারা ৬ রক্তিকাং।

পাপরী খবের। পর্বার। খেক শার, করম ও লোম-বল্কল। খণ। বিশাস, বর্ণ ক্ষরক। ইহা মুধরোগ, কফ ও রক্ত ছোব নিবালন করে। এই থদির উৎকৃষ্ট তাণস্কা। ইহার নাতা ৬ রক্তি।

উল্লিখিত ত্রিবির ধারিরই সংগ্রাহক ও রক্তরোধক এবং অভিনার, অর্থাঃ, রক্তশিত্ত, প্রদার ও ক্ষতাদি শান্তির নিবিত্ত ব্যবহাত হয়।

रेत्रियमः।

ইরিষেবে বিট্ খবিরঃ কালখনো ছবিষেক্ক:।
ইরিষেরঃ কবারোনো বুখবঙগবাজু জিও ॥
হঙিকণ্ড বিষয়ের জি'নসুঠ বিষয়বাম।
লোধাতিসারকাসাংক্ষ বিসর্গকাপাত্বব্রুব ॥
অস্য বক্ষসাধিকংগ্রাহাৎ বাজা ১ বাষক:।

कुर्गक पित्र।

পর্যার। ইরিখেদ, বিট্থদির, কালকল ও অরিদেদক,। ওপ। কবার ও
উফ। ইবা মুখরোগ, দত্তরোগ, কতু,
বিষ, শ্লেঘা ক্রিমি, কুন্ঠ, বিষত্রণ, পোধা,
অতিসার, কাস, বিসর্প ও প্রদর নিবারণ
করে। ইবার বন্ধলাদি গ্রহণীর। মাত্রা
১ মাবা।

द्याधः ।

লোধুজিরী টকশ্চৈব শাবরো মালবন্ধবা।
বিভীয়ংপণ্টিকালোব্যক্রমুক্ত দুলবন্ধকঃ ।
কীৰ্ণবা বৃহৎপত্তঃ পাষ্টীলাক্ষাপ্রসাদ্দঃ।
লোধোপ্রাহী সম্পাতি কক্ষ্যাংকদশিক্ষুৎ ।
ক্যায়ো রক্ষশিভাসুব্ অরাভীসার শোর্বন্ধৎ ।
অসংস্থৃপ্ প্রাহ্যা দাবা ১ মাহকঃ ।

লোধ (সাবর লোধ পাটিরা লোধ)

লোধু, ভিরীটক, দাবর, মান্ব এই খলি একপ্রকার লোধ্রের নাম, অগর এক প্রকার লোধু আছে, তাহার নাম
পাট্টকা লোধু, ক্রেম্ক, ছুল বচকল, জীর্ণপাত্র, রহৎপত্র, পাট্ট ও লাক্ষাপ্রসাদান। লোধ প্রাহী, লঘু, শীতল, চকুষা,
কফলিত নাশক ও কধার। রক্তপিত্ত,
রক্তগত জ্বর, অতীসার ও শোথ রোগে
ইহা হারা উপকার হর। অধিকত্ত ইহার
বিষয়তা তাত্য। ইহার ত্বক্
প্রহণীর। মাত্রা ২ মাষা।

थित्रम् गकिथित्रम् ।

প্রিয়ল্ ং কলিনী কাথালতা চ মহিলাজয়া।
থজা থজকলা লাগা বিশুক্দেনালনাথিয়া ॥
প্রিয়ল্ গৌতলা তিকা তুবরানিলাপিত হং।
রক্ষাভিযোগ দৌর্গন্ধা বেদ দাহ জ্বরাপহা ॥
বাঙি জাওাতিলার্থ্রী বক্তুজাতা বিনালিনী।
থলা তুট্ বিবনোহল্লী তথ্প গন্ধপ্রিয়লুকা ॥
তৎকলং যধুরং রক্ষং ক্যায়ং লীতলং ওরু।
বিবন্ধান্ধান বলক্থ সংগ্রাহী ক্মপিত জিং॥
জ্বাত্তা দালা ১ মাষকঃ ফ্লন্য ৬ রক্তিকাঃ।

প্রিয়সু।

পর্যার। প্রিরস্কু, ফলিনী, ক'ন্ডা, লভা, গুল্রা, গুল্লফলা, প্যামা, বিষক্ষেনা অঙ্গনাপ্রিয়া এই গুলি এবং স্ত্রী বাচক শব্দ সমুদার ইহার পর্যার।

তা। প্রিরজ্ ও গন্ধপ্রিরজু উভরেই শীতল, তিক ক্যার, বাত পিত্ত নাশক। প্রিরজুর কল মধুর রক্ষ, ক্যার, শীতল ও ওক্ষ।

আনরিক প্ররোপ। অভিশর রক্ত করণ, দৌর্গক, খেদ, দাহ, জর, বনি, ভ্রন, অভিসার, মুখের অড্ডা, গুল্ম, ড্ফা বিষক্ষ রোগ ও মেহ নট্ট করে। ইহার ফল ব্যবহারে বিবন্ধ ও আধান উপস্থিত হর ইহা বলকারক সংগ্রাহক ও কফ পিত্ত নাশক। ইহার ত্বকের মাত্রা ১ মাধা, ফলের মাত্রা ৬ রতি। ফলই সচরাচর ঔষধার্থ ব্যবহৃত হইরা থাকে।

কুটজः।

কুটজঃ কুটজঃ কীটো বংসকোগিরিদ নিকা।
কালিদঃ শুক্রণাধী চ মলিকাপুল্ল ইভাপি ।
ইল্রোযবফলঃ প্রোক্তো বৃক্ষকঃ পাতুরক্রমঃ।
কুটলঃ কটুকো কক্ষো দীপন ভবরে। হিমঃ ॥
ভিজ্ঞঃ সংগ্রাহকঃ প্রোক্ত বৃগ্রোয় অরমাশনঃ।
অর্নোহতিসার পিতান্ত কফ্ডুজামকুঠমুং ।
অস্য তুপ্রীক্ষাদিকং গ্রাহ্যং ভ্রুচো মাত্রা >
মাবকঃ।

कुफ्ठी। हिन्दी कादबत्रा।

পর্যার। ক্টজ, ক্টজ, কোটু, বং-দক, গিরিমল্লিক।, কলিজ, শক্তশাখা, মল্লিক। পূলা, ইন্দ্যবফল, বৃক্ষক ও পাত্র-জম।

তাণ। ইহা কটু, রক্ষ, অগ্নিদীপক কষার ও শীহল ভিক্ত ও সংগ্রাহী।

প্ররোগ। অর্শ্য, অভিসার, রক্তপিও, কফজড্ফা, তুগ্দোষ জর, আম ও কুষ্ঠ রোগে প্ররোজ্য। ইহার তৃক্ ও বীজাদি গ্রহণীর। তৃকের মাতা ১ মাধা। ইহার বাজ অর্থাৎ ইন্দ্রঘবের মাতা ও তথাদি ইন্দ্রঘব শক্ষে ডাইবা।

भाष्ट्र।

পাঠাহভাহতিকা চ প্রাচীনা পাপচেলিকা। এফডীলা রুদা প্রোক্তা পাঠিকা বরতিক্রিকা। পাঠোকা কটুকা ডীক্সা বাডরেক্স হরী লখা। তিকা ল্ল6করী চারা ভর্মজান কারিণী। হঙ্জি পূল অর জ্বর্দি কৃষ্টাডীসার জ্বাক্তঃ। হাহকতু বিষধাস কিবি গুলু গর্ভণান্। অস্যা বৃলাদিক১ গ্রাহ্য১ বারা ১ নাবকঃ।

काकनामि।

প্র্যার। পাঠা, অম্বর্ত্তা, অম্বৃত্তিকা, প্রাচীনা, পাণচেলিকা, একটিলা, রদা, পাটকা ও বর্যান্তিকা।

তাৰ। পাঠ। উফ্চ, কটু, তীক্ষা, বাত-শ্লেম নাশক, লঘু, ভিক্তন, অফ চি নিধারক অমাহাদ ও ভগসকান কাবক।

প্রবোধ। শূল, জব, বমি, কুঠ, অভী-সার, জন্মোগ, দাহ কণ্ড, বিষজ্পথোগ, শ্বাস, ক্রিমি, ওপ্র ও বিষত্তণ পোনে পাঠা ব্যবস্থেষ। ইহার মলাদি গ্রহণীয়। মাত্রা ১ শাবা।

আকাশবলী।

আকাশবল্লাডু বুংখং কৰিতা মরবল্লরী। খবল্লা গ্রাহিনী তিকা শিক্তিলা ক্ষাদয়াপথা । তুবরাগ্নি করী হব্যা পিত স্লেকাম মালিনা। অন্যা মাত্রা ও রক্তিকাম।

रिन्ते अमद्भवत्वा।

পৃথ্যায়। আফাশবল্লী, অম্বরবল্লী, খবল্লী ইত্যাদি।

তাণ। গ্রাহী, ভিক্তন, পিচ্ছিল, ক্যার, অশ্বিকারক ও হাদ্য। ইহা পিত্ত, প্রেমা, আম ও চক্ষুরোগ নষ্টকরে। ইহার স্কাংশ গ্রহণীয়। মাতা ৪ রতি ।

मर्गाको।

মৎসাক্ষী বাজিকা মৎসাগন্ধা মৎসাগনীতিচ।
মৎসাক্ষী প্রাহিনী লীডা কুঙপিত ককান্তজিৎ ।
সমৃত্তিকা কথারা চ ধারী কটু বিপাকিনী।
অসা নাত্রা ৬ রক্তিকাঃ।

रिन्मी मदछ्छो,।

পর্যায়। মৎসাক্ষী, বাহ্লিকা, মৎ-সাগন্ধা ও মৎস্যাদনী। গুণ। প্রাহী, শীতল, লঘু কিন্তুন, ক্ষায়, স্বান্ধু ও পাকে কটু।

ইগা কৃষ্ঠ, পিত্ত, কফ ও রক্তদোধ নিবারণ করে। ইহার সমস্ত আংশই গ্রহণীয়। মাত্রাভ রতি।

জলপিপ্রদী।

জলপিপলাভিহিতা পারহী পক্লাদনী।
মংসাদনী সংসা গছা লাললীতাপি কার্ডিতা র
জলপিপলিকা ছখা। চকুখা গুজলা লয়ুঃ।
সংগ্রাহিনী হিমা কুলা রক্ত দাহ এবা পহা র
কটুপাক রুলা কুলা ক্ষায়া বহিবর্জিনী।
অন্যা মাত্রা ২ দাহকৌ।

(वक कै। हुए। हिस्सी शनिम्सा।

পর্যার। জলপিরলী, শারণী, শকুলানদী, মংস্যাদনী, মংস্যাদনী, মংস্যাদনী, মংস্যাগন্ধা ও লাকলী।
তাণ। ক্রদ্য, চক্ষ্ব্য, তক্তকনক, লঘু,
সংগ্রাহী, শীতল, ক্রক্ষ পাকে কটু, রোচক,
ক্বার, অবিবর্দ্ধক এবং রক্তদাহ ও এণ
নাশক। ইহার সর্বাংশ গ্রহণীর।
মাত্রাং মাবা।

ৰীৰতক।

বেল্ডরে অপতি বারড্ক: প্রসিদ্ধ:
শেষা সিভারণ বিজোহিত নালপুলা।
স্যাক্ষাভি তুল্য কৃষুণ লাহিঃ সুক্ষ পরঃ
স্যাহকটকা বিজল দেশক এব হৃষ্ণঃ
বেল্ডরো রনে পাকে ভিক্ত তুলা কফাপরঃ।
ব্রাঘাভাগাক্ষিত্রাহা যোদিব্রানিলাভিজিৎ।
অস্য তুল্ গ্রাহা।। সারা ১ বাবকঃ।

ৰীরতক।

ইহার অপর নাম বেলন্তর, এই বৃক্ষ চার্ন্নি জাতীর হয়, এক প্রকারের পূজা বেল্ফর্ন, বিভীর প্রকার বৃক্ষের পূজা কৃষ্ণবর্ণ, একপ্রকার অরুণবর্ণ, অন্য জাতীর বৃক্ষের পূজা ঘোর লালবর্ণ। এই সকল বৃক্ষে কাঁটা হইবা থাকে, ইহার পত্র খামা পত্রের ন্যার অভিশব্ধ স্ক্র। এইবৃক্ষ জনশ্ল্য দেশে উৎপন্ন হইবা থাকে।

তা। আখাদে ও পাকে তিক, তৃষ্ণা নাশক, কফর ও প্রাহা। মূত্রাখাড অশারী, গোমিরোগ, মৃত্ত পীড়া ও বার্জ রোগে ইহা ব্যবস্থা করা ধার। ইহার ফুকু গ্রহণীর। মাত্রা সাবা।

মরুর শিখা।

वग्राकिनिधा त्याका नवसाविसंदृष्ट्वा। नोनक्षेतियां वच्ची लिस्त्रचाकिनाइसिट ॥ वासा ३ वायका।

मर्ब निशा।

পর্বার। সংস্রাহি, বর্জ্না, মর্র-শিষা, নীলকঠশিষা, বহিশিধা ইভ্যাদি। তাশ। সমুও পিত, লোমা ও অতি-লার নত করে। ইহার সমত অংশ

अद्गीतः माळा भ्यायाः।

गण्डीवन् ।

পদ্বীক্ষক পদ্ধাক্ষ\ গালোভ্যৎ পদ্ধককী। পদ্ধবীক্ষৎ হিবং বাবু ক্ষায়ৎ ভিক্তকৎ প্ৰক্ল ৪ বিউভি, বুৰ্যুৎ ক্লক্ষক পৰ্যসংখ্যাপকৎ প্ৰবৃ। ক্ষবাভ করৎ বল্যং প্ৰাহি পিভাজ বাবনং । দাবা ৮ নাবকাঃ।

भवारीय हिन्दी कवनगरे।।

পর্যার। পদ্মবীজ, পদ্মাক্ষ, গালোডা ও পদ্মকর্মটি।

গুণ। শীতল, স্বাহ্ন, কৰার, তিপ্তান, গুরু, বিষ্টম্ভী, গুরুজন্দন, উত্তম গর্জ সংস্থা-পক, ক্লাক, বাজন্মেয় বর্জক, বলকারক, গ্রান্থী প্ত রক্ত গৈত্তিক দাহ দশিক। পদ্মবীজ্ঞের মাত্রা ৮ মাবা।

-বটঃ।

বটোর জকলং শৃদীক্যপ্লোবং কর্মজো বু বং। দ্দীরী বৈধাবৰো বাচনা বহুপালো বনস্পতিং। বটং পরিষ্কৃতি জন্মগৃহি। ক্ষপিত ত্রবাপহং। বর্বেট বিনপ্ দাহন্তুঃ ক্যায়ো যোনিদোর হুৎ। দাপুত্বাপরো মৃক্তা বেহাসুগৃহর নাপনং।

পর্যার । বট, রক্তকল, শৃষী, ন্যাব্যাধ স্বৰজ, ধুব, ন্ধীরী, বৈপ্রবৰ, বাদ, বহুপাদ ও বনস্পতি এইগুলি ইহার পর্যার।

वष्ठे ।

থা। শীতল, গুলু, গ্রাহী, বর্ণের উৎকর্ব সম্পায়ক ক্যার ও মধুর ইহার যারা কক, শিল্প, ক্রা, বিসর্প, কাহ, বোলিলোয, ড্লো, মৃচ্ছা, বেহ ও প্রথক নিবারিক হর।



##: 1

প্লাক্ষেত্ৰ কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব ।
প্লাক্ষ্য কৰাবং লিপিয়ে ত্ৰণ্যানি ধৰাপথ: ।
কুৰ্যাপিত ক্ৰাৰ্য্য পোন্ধা ক্ৰপিত হং ।
ব্ৰহণেত্ৰয়ে বৃদ্ধান্ত্ৰপাপ ক্ৰমাণন: ।
অস্ত্ৰেপ্ প্ৰাচ্য । সাকা ২ সাৰকো ।

পাকুড়। হিন্দী পাকরি।

প্র্যার। প্লক্ষ, জটা, পর্করী, পর্কটী।
তথা। ক্যার, শীজল, ইহার হারা
ত্রণ, যোনিরোগ, দাহ, পিন্ত, কফ, আমদোষ, শোধ ও রক্তপিন্ত, রক্তদোষ,
মৃদ্র্যা, প্রলাপ ও ভ্রম নিবারিত হয়।
ইহার ত্বক্ গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাধা।

ववत् नः ।

বক্ষু লং কিছিয়াড: স্যাৎ কিছিয়াট: সপীতক:। সূত্ৰব কবিত কছাজৈ রাভা বট্পদ্যোদিনী । বব্বুল: কৰনুদ্ গ্ৰাহী কুঠ জিনি বিভাগহ:। অস্য তুপাদিক১ গ্ৰাহ্য১ বাবা ২ দাবকৌ।

वारला । शिक्षी वव् न ।

পর্যার। বক্ল, কিন্তিরীত, কিন্ধি-রাট, পীতক ,আভা ও বট্পদমোদিনী। তাণ। কদম, গ্রাহী, কৃষ্ঠ, ক্রিমি ও বিব নাশক ইয়ার ত্বক্ ও নির্ঘাদ প্রভৃতি গ্রহণীর। মাতা ২ মাবা।

অস্য বিধ্যাস্থ্ৰণঃ।

বজ্নসা তু নিৰ্ব্যাসো প্ৰাহী পিভানিলাপহः। বজাতীসার পিভাক্ষেহ অহর নালনঃ। ভগ্নসভারকঃ শীতঃ শোণিতক্ত তিবারণঃ।

नं प

বৰ্দনিধ্যাদ অৰ্থাৎ গঁৰ সংগ্ৰাহী, শীভবীৰ্যা, শিভয়, বাহুনাখক, ভন্নদন্ধা- রক ও রক্তন্তার নিবারক। রক্তাতীলার, রক্তপিত, যের ও প্রত্নর রোগে প্ররোজা।

किषिनी।

জিপনী বিলিমী বিশী সুনিৰ্যালা এংগাছিনী। জিপিনী নধুৱা সোজা কৰায়া ত্ৰণপৌথিনী । কটুকা ত্ৰণ ছডোগ বাছাভীসায় ছং পটুঃ। নাত্ৰা ১ নাহকঃ।

हिन्दी जिन्ननित्र।।

প্ৰ্যায়। জিলিনী, বিশ্বী, বিশী, স্নিৰ্যাণা ও প্ৰমোদিনী এই ওলি ইহাঁর পূৰ্ব।য় ।

গুণ। কটু ও লবণরদ বিশিষ্ট। ইহা ব্রণ, হুছোগ ও বাভাজীলার উপশমিত কবে। ইহার লমস্ত অংশ গ্রহণীর। মাত্রা > মাধা।

তুণী।

তুনী তুলক আপীন ভিনিকঃ কক্ষ্ক বৰ্ণ। কুটেরকঃ কাষ্কলকো নন্দিকৃক্ষণ নন্দক। ছ ভূনিরকঃ কটুংপাকে ক্যায়ো মর্যো সমুং। ভিজ গ্রাহী হিমো ব্যো এণ কুঠার পিছলিৎ ই নাতা ব নামকে।

कॅ मत्रकः।

প্র্যার । ত্নী, ভুরক, আপীন, ভুণীক, ক্ষক, কুটেরক, কান্তলক, নন্দির্ক ও নদক।

তা। ক্যার, মধুর, স্থু, পাডেকটু, গ্রাহী, ডিজে, শীতল, বললারক, পিজ, নালক, কুঠর, ত্রণনাশক ও রজনোব নিবারক। ইহার ত্বক্ গ্রহণীর। বাত্রা ২ মাষা। 7".

মোচরসঃ।

নিৰ্ম্যাসঃ শাস্ত্ৰেং পিচছা শাস্বদীবেউকো-হপি চ। শোচাস্ত্ৰাবো শোচরকো বোচনিৰ্ম্যাস ইভাপি ॥ শোচাস্ত্ৰাবো বিকো গ্ৰাহী লিখোবুষ্যঃ ক্ষায়কঃ। প্ৰহাহিকাভিসারাম ক্ষপিভাজ হাবনুৎ ॥ অস্য যাত্ৰা ১ মাৰ্থং।

त्यां हत्रम ।

শাল্লণীর নির্ধানকে মোচরস কছে ইহার অন্যান্য নাম, পিচ্ছা, শাল্মণী-বেষ্টক, মোচাজাব ও মোচনির্ধান।

ত্ব। শীতল, গ্রাহী, দ্বিধ্ব, বল-কারক ও ক্যায়। ইহা দেবন করিলে প্রবাহিকা, অতীলার, আম, গ্রৈগ্রিক রক্ত পিত ও দাহ নিবারিত হয়। ইহার মাত্রা ১ মাধা।

नकानुः।

লক্ষালুং ল্যাৎ শ্মীপতা সম্পা জলকারিকা।
রক্ষপাথী নম্ভারী নামা খণিরিকেডাপি ॥
লক্ষালুং শীতলা ডিজা ক্যায়া ক্যপিতামিৎ।
রক্ষপিত মন্ডীলারৎ যোনিরোগান্ বিনাশয়েৎ ॥
খাতা ২ শাখকৌ।

লক্ষাবতী।

্পর্য্যার। লব্জালু, শমীপত্তা, সমন্বা, জলকারিকা, রক্তপাদী, নমস্বারী ও বাদিরিকা।

ওা। শীতল, তিক্ত, ক্যার ও কফ শিক্ত নাশক।

প্ররোগ। রক্তপিত, অভিসার ও গোনিরোগে ইবা ব্যবস্থের। ইহার সমন্ত অংশ গ্রহণীর । মাত্রা ২ মাধা।

नवत्यार्थाञ्चः ।

(यदान्शनगर्गः।

দাকুহরিতা।

দানী দাক্তরিরা চ পর্জন্যা পর্জ্বনীতি চ।
কটংকটেরী পাড়া চ ভবেৎ সৈব পচন্দার।
সৈব কালীরকঃ প্রোজন্তবা কালেরকোহপি চ।
পাডক্রুল হরিক্রুল পাড়বার কণীডক্র্য।
এবোড়া কটুকা ডিক্রা দেরকর্বাস্য রোগমূহ।
মেহক্ত্ বিসর্পরী ভুগ্রোর রবনালিনী ।
বিবল্পী বেদুনী পিড়ক্তপোধ্য বিনাশিনী।
নারা ৬ রক্তিকাং।

माक्र रतिसा।

পর্যার। দাব্বী, দাক্ষহরিত্রা, পজ্জন্যা, পক্জনী, কটস্কটেরী, পীতা, পচম্পচা, কালী-রক, কালেরক, পীতক্র, হরিক্র, পীত-দাক্র ও কণীতক।

তা। উষ্ণবীর্য্য, কটু, ভিক্ত, বিষয়, স্বেদজনক ও কফপিত নালক।

প্রার । নেত্ররোগ, কর্ণরোগ, মুখরোগ, মেহ, কণ্টু, বিসর্প, তুগ্ দোষ, ত্রণ ও শোথ নিবারক। ইহার কাষ্ঠ ব্যবহার্য্য। মাত্রা ৬ রজি ।

त्रमाञ्चनम् ।

যান্ত্ৰী চাৰসৰ ক্ষীর হয় পঞ্চা বৰাঘনৰ । ভয় রসাঞ্চনাৰ্থ্য ভং নেত্ৰয়ে। পরবং হিতন । রসাঞ্চন ভার্জনৈত্র রস্বর্ভক ভার্জন্তন । রসাঞ্চন কটু প্লেল্ল বিবন্তে বিকারন্থ । উল্লং রসায়ন ভিক্তং ছেদনং ত্রপ্যোধ হং । অস্য বাত্রা ২ বাবকৌ।

রসোত। হিন্দী রসবং।
হারুহরিজার কার্য ও তৎপরিত ত্র্য একত্র পাক করিরা বনীভূত হইলে উহাকে রসাঞ্জন বলাযার, রসাঞ্জন চক্ষের অভিশব উপকারক। রসাঞ্জনের অন্যান্য সংস্কৃত নাম এই ভাক্ষ শৈল, রসগর্ভ ও ভাক্ষ্যালা । রসাঞ্জন কটু, উফ্ল, ডিক্ত ও রসা-রন। ইহা ঘনীজুত প্রেমা প্রভৃতি দ্রীকৃত এবং বিষ নেত্রবোগ ও এপ নাই করে। ইহার মাত্রা ২ মাবা।

> অৰ্কমূপত্ত । বৰ্ষনাপ্ৰবৰ্ষ হৈ বিভা।

ইবা বমনে।পথ বর্গের মধ্যে বর্ণনা করা হইরাছে।

य कुक शरी ।

রসায়ন বর্গে লিখিডা। ইহা রসায়ন বর্গে লিখিত হইয়াছে।

> . मन्द्रमारुशांत्रः ।

भिद्याविद्वहनीत्र वर्गः।

ছিক্ৰী।

ছিত্তনী ক্ষবকুতীক্সা ছিতিকা স্লাগপুংখন। ছিত্তনী কটুকা ক্লডা ডীক্সোভা বহিপাৰকৃৎ । বাত্তকহয়ী কুঠ ক্লিবিবাত ক্লাপহা। পিরোবিরেচনী প্রোক্তা চোর্ছজক্র বিকারনুৎ ।

হেচুটী।

পর্যায়। ছিক্সী, ক্ষবড়ৎ, ভীক্সা, ছিক্কিকা ও আণ্ডঃবদা।

ত্ব। কটু, ক্লচিপ্ৰদ, তীক্ষ, উঞ্চ, অন্নিকর, পিতজনক, বাজক্ৰের নাশক ও শিরোবিরেচক।

প্ররোগ। বাভরক্ত, কুই, জিনি-রোগ ও উর্জন্তু শীড়ার প্ররোজ্য।

क्नकः ।

শিরোগর্গান্ত্রং ক্ষরণঃ ক্ষরের বব্যো বিবাং বিশ্ববিদ্যা হয়। কলম্ব সংবেটন বুবপানাৎ দ্যাক্ষরতাত কুর্ববোগরানিঃ ঃ

ভামাক।

কলঞ্জ অর্থাৎ তামাক পিরোরোগ নাশক, কুৎকারক ও ব্যব কারক। ইহা স্বরং বিষ হইরাও উপস্কু রূপে প্রযুক্ত হইলে সকল প্রকার বিবের নাশক হইরা থাকে। কলঞ্জ সংবেষ্টন অর্থাৎ চুরাটের ধ্নপান করিলে দক্তভিছি ও বিবিধ মুধ্রোগের নাশ হর।

श्वाक्तम्।

६७। कर कर कर निर्दाश्यिनम् १७५ ।

क्र ।

কুঁচবীল ক্ষুৎকারক ও শিরঃপীড়া প্রশাস

महाक्या ।

ভৈনী বহাক্ষবা জ্বেয়া ক্ষরনী প্লেয়বারিনী। বীর্ষোক্ষাক্ষিপিরঃ কর্ম রুগ্রুজ্ঞী দৃদ্য বোগছঃ ॥

ভূতরাক।

ভৈনী ও মহাক্ষরা এই ছুইটী, ভূত-রাজের সংস্কৃত নাম। ইহা ক্ষুৎকারক, কফর ও উফ্যীর্যা। নস্যরপে প্রয়োগ করিলে ইহা চক্ষ্য, মন্তক্ষ ও কর্ণের বিবিধ পীড়া নাশ করে।

ज्ञानिनी कनम्।

नितः गाव् हि नेमन् क्यम् सानिमी कन्।

(यायाकन ।

ইহা কুৎকারক এবং শিরংণীড়া ও পাত্রোগের শান্তিকর।

একাদশোহধ্যায়:।

মূত্রবিরেচনীরবর্গঃ।

স্থলপদাম।

প্রচারিণ্ডিচরাব্যথা পর্যা চ শার্ষা।
প্রামুক্তা কটুভিকা ক্যায়া ক্তবভিজিৎ ।
মুত্রকুল্ডাপ্রশিল্লারী খান কান বিবাপ্রা
অন্য ভুক্পত্র ব্রুরা গ্রাহ্যাঃ ভুক্ পত্রয়ে।
মাত্রা ১ বাবকঃ । ব্রুরস্য ভোলক্ষ্যম্।

পর্যার। পদ্মচারিণী, অতিচরা, অব্যথা, পদ্মা ও সারদা ইহার পর্যার।

গুণ। অনুষ্ণ, কট্, তিক্ত, কথাৰ, বাত প্রেম্বনাশক। ইহার হারা মৃত্রকৃত্ব, অশারী, শূল, খাল, কাল ও বিধ নত্ত হব। ইহার ত্বক্, পত্র ও অরল প্রহণীর। ত্বক্ ও পত্রের মাত্রা ৮ মাধা, ত্বন্ধের মাত্রা ২ তোলা। মৃত্রকৃত্ব নিবারণার্থ পত্রের রলই সচরাচর ব্যবস্ত হইরা থাকে।

পাৰাণভেদকঃ।

পাৰাৰভেহকোহখনে বিবিভিদ্ ভিন্নবাননী।
আনতেহো হিৰম্ভিকঃ কৰায়ো বন্ধি পোধনঃ ।
ভেহনো বন্ধি গোৰালো গুলু কুলু আ কুলন:।
যোনি রোগান্ প্রবেহা শুল প্রথমি চ ।
অস্য মূলং প্রাহ্যং যাত্রা ১ বাবকঃ।

পাধরচুরঃ।

পাষাণতেদক, অন্মৃত্ব, নিরিভিৎ, ভিরম্ভান্তনী ও অক্ষতেত্ব ইহার পূর্বগার। ত্থা। পাৰাণভেম্বক ভিক্তে, কৰার, বন্ধি-শোধক ও ভেম্বক।

প্রবোগ । ইহা দোষজ্ঞ জর্মঃ, গুল্ম, কঠিন জন্মরী, ক্রজোগ, যোনিরোগ, প্রমেহ, শ্লীহা, শূল ও ত্রণরোগ নিবারণ করে। ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ১ মারা।

ञ्बलिवम् ।

সুর্হিয়ং বৃত্তক্ষণ তল্বাস্থু শ্বনং নতন্। সেয়োৎসারণ নায়েয়ং সুত্তবৃত্তি করং তথা। উপস্থিক নেছক স্বক্ষদেহণ সুদারণন্। খেত প্রদর মর্শাংসি কৃচ্ছুকাপি বিমাপয়েং। নাত্রা ২ নাথকে।

কাবাবচিনি।

স্বাধিষ ও বৃত্তফল, এই তৃইটী শব্দ কাকাবচিনির সংস্কৃত নাম। কাবাবচিনি বাসুনাশক, কফানিঃসারক, আগ্নের ও মৃত্তবদ্ধক। উপস্থিকমেহ, শুক্তমেহ, খেত প্রদর, অর্শঃ ও মৃত্তক্ষুরোগে প্রোক্তা। মাতা ২ মাবা।

क्षवत्रम्।

क्षः।

कूरणांपक्षका वर्षिः मृहास्त्रा यक्कप्रयाः।

পর্যায়। কুশ, হর্ভ, বৃহি, স্চ্যুত্রো ও মক্তভূষণ।

क्नारकाः।

ভভোংন্যে হারপর: স্যাৎ ক্রপর ভবৈব চ।
দর্ভহয়\ রিবোবস্থা ব্রুর\ উবস্থা হিন্দু ।
দুর্ভুজ্য পরি। তুলা বভিন্নক্ প্রব্যাক্তিৎ ।
ক্রম্পু বিশ্ব সাহায়। বারা ২ বাবকৌ

रिकी जाम।

ইহা কুশ বিশেষ।
পর্যার। দীর্ঘ পত্ত, ক্ষুরপত্ত।
গুণ। দর্ভবর (কুশ ও ডাম) ত্রিদোবর
মধুর, কবার ও শীতল।

প্ররোগ। মৃত্রকৃচ্ছু, আমারী, ভৃষ্ণা, বন্তিরোগ ও প্রদরে প্ররোক্ষ্য। এই উভর ভূণের মূল গ্রহণীয়া মাত্রা ২ মাযা।

কাশঃ।

কাৰ্য্য ক'লেক্ ক্লিকা স স্যাধিক্যস কণা।
ইক্লিকেক্ষভা চ তথা পোটগলং অভঃ ।
কাৰ্য্য স্যাধ্য বিজ্ঞান বাদু পাকী হিমা সরং।
বুক্ত কু শ্ম দাহাজক্মপিতজ রোগজিৎ ।
তৃপ্তিবং অকলো বল্যো ক্তিক্ত বলোবছৎ।
কাস্য বুলং প্রাহ্ম বাহা ৪ বাহকাঃ।

(奉(中)

পর্যায়। কাশ, কাশেকু, ইকুরস, ইকুলিকা, ইকুগকাও পোটগল।

ত্তণ। মধুর, তিক্ত, পাক্ষে স্বাচ্, দীতল, সর, তৃত্তিকর, শুক্তজ্ঞনক, বল-কারক, ফুচিকর, প্রান্তিনাশক ও শোষ নিবারক।

প্ররোপ। মৃত্তকৃচ্চু, অশারী, দাহ, রক্ত-ক্ষার ও পিতক রোগ সকলে প্রয়োজ্য। ইহার মূল গ্রাহ্য, মাত্রা ৪ মাধা।

कक्षमुक्षः ।

ভারপুথঃ পরোবাধ ভারসক্ষম বেউনঃ।

পর। হিন্দী রাম্পর।

পর্যার। ভত্তর্থ, শর, বাণ, ভেজন ও চকুবেইন।

T#: 1

বুকো মুখাককো বাধ: খুনবর্ত্তঃ সুবেধনা।
মুখার্যক বর্ত্তঃ কুবরং বিশিরং করা র
বাহ তৃতা বিসপান বুক্তুক্তাকি রোগলিং।
বোহরত্ত হরং সূব্যং বেধলাসুপরুক্তাতে র
কাস বৃদ্ধ প্রাথং বারাং বারকৌ।

युक्त ।

পর্যায়। মুঞ্জ, মুঞ্জাতক, বাণ, স্মূল-দর্ভ ও হুমেখল।

তাৰ। মুঞ্জন্তর অর্থাৎ শর ও মুক্ত মধুর কবার, শ্লীতল, ত্রিদোষনাশক, ব্রুয় ও মেধলার (কোটিবেউন) উপযোগী।

প্ররোগ। দাহ, জ্ঞা, বিসর্প, আৰ, মৃত্রকৃচ্ছ ও চক্ষুরোগে ব্যবক্ষের। ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাবা।

वीवनम्।

ন্যাদ্ বীরণ৲ বীরতক্ল বীরঞ্চ বছমূলকন্। বীরণ ক্লাচন৲ শীতঃ বাভিজ্ঞানু ডিজ্ফন্ ॥ ভচন৲ অরমুদ্ বাভি নদজিৎ ক্ফণিভছৎ। তুলান্ত বিষবীসর্প কুচ্ছা দাহ রণাপ্যন্। অস্য দারা ২ সাধকৌ।

ব্যাণাতৃণ।

প্র্যায়। বীরণ,, বীরভক্স, বীর ও বহুমূলক।

তা। পাচক, শীতস বমন নিবারক, লবু, তিক্ত, তত্তম ও কফলিত নাশক। আমরিক প্ররোগ। অর, মধ, তৃষণা, বীসর্প, প্রবল দাহ ও ব্রণরোগে প্ররোজ্য। ইহার সমস্ত অংশ প্রবেশীর। মারো

२ यावा ।

देणीत्रम् ।

বীরণসাজু মৃলং স্যাধুলীরং মলস্প জং।
অমুগালক সেবাক সমগন্ধিক মিডাপি ।
উলীরক্ষাচনং লীডং ডডনং লঘু ভিককন্।
মধুরং অরহার্ বাভি মন্মুৎ কমপিবহুং।
তুভাত্তবিষ্ঠীসর্প নাম ফুচ্ছু ত্রগাপহন্।
অস্য নারা ২ মাবকো।

द्यान। द्रम्म । हिन्दी थम्।

বীরণ অর্থাৎ ব্যাণা তৃণের মূলকে উশীর বা থস কতে ইহার পর্যার উশীর, নলদ, অমৃণাল, সেব্য ও সমগ্যাক ।

তাণ। পাচক, শীতল, সম্, তিজ, স্তন্ত, মধ্র ও কফপিত নাশক।

আমরিক প্ররোপ। জর, মদ, ভৃষণ বীদর্প, বিষদ্যোষ দাহ ও ত্রণরোগে উপ-কার করে। ইহার মাত্রা ২ মাধা।

कृष्टिक्ष मृ मृतम्।

क्रक्षम्मा पीष्ठभाग् म्यमः भिवनापनम्। वाषायुरमानमः स्वरार माध्युष्यः मिक्वनम् ॥

क्रक्षक्ष्म ।

ইহা শীতবীর্যা, মৃত্রকর, পিত্তম, বা-তামুলোমন, সংতিবর্জক, দাহ নিবারক ও 'মৃত্রকুচ্ছ প্রশাসক।

त्याक्त्रदीकम् । '

रीजः (पीकृतकः भीकः मृजनः (भीवरातनम् । त्रामाञ्चकतः स्रकारमञ्जू कृष्युमानसम् ।

लाक हरीय।

গোন্ধ রবীঅ, শীতল, মৃত্রপ্রবর্তক, শোধ ক, হ্বা, আয়ুড়র, শুক্তমের নিবারক ^{ভিন্নব}্যক্ত প্রশাসক। दरभञ्जम्।

ত্বভিসারশিকা জ্বেয়া ব্রক্লেছাব্বায়িনী।

বাঁলের শিক্ষ। ইহা মূত্রকর ও শোধ নিবারক।

डेन् क्यू।

উল্ক৲ ক্লকো দর্ভ: স্চ্যপ্রণচ ধরক্ষে। উলপল্যোলুপঞ্জ স্থায় ত্রল৲ পৌরসংহরণ ॥

डेन्।

উল্ক, স্লক, দর্ভ, স্চ্যগ্র, ধরছেদ, উলপ ও উল্প এইগুলি উলুর সংস্ক নাম। ইহা মৃত্রকারক ও শোধ নিবারক।

नामककम्।

(লামক্ষক মুশীরবং পীতদ্ধবি তুণ বিশেষ:) লামক্ষক সুমাল > স্যাদ্যুণাল > লয় > লয়ুঃ। ইউকাপথক > সেব্য > নলদখাবদাতক্ । লামক্ষক > হিমা ডিকা > লয়ু দোব এয়াফ্রজিং। ভুগাময় বেদ কৃচ্ছু দাহ পিখাফ্র রোগমুং । অব্যামর বিশাস > । মারা > নাযকঃ।

ল।মঞ্চক।

(डेमीटबब मा।ब छ्व वित्नव जेवर गीडवर्ग ।)

পর্যার। সামজ্বক, সুনাস, অমুণাস, শর, সমু, ইষ্টকাপথক, সেব্য, নসদ ও অবদাতক।

কণ। শীতল, ডিজ্ঞ, লঘু বারু, পিজ, কফ ও রক্তব্যে নাশকু।

আনরিক প্ররোগ। ত্বকের রোগ, ব্যেদ, মৃত্রকৃদ্ধ্য, দাহ ও রক্তণিত রোগে ব্যবস্থের। ইহার মূল প্রহণীর। মাত্রা ১,মাবা।

मणः।

নলং পোটগলং খুন্সবস্ত ধননতা। নলক বৰুৱতিক: কৰায়ং কক্ষকজিৎ। উজো কুব্তি বোনাৰ্টিগাছ পিত বিসপদ্ধ। অন্য বুলৎ প্ৰাৰ্থ। নাৰা ২ নাৰকো।

नल ।

প্রাার। নল, পোটগল, শ্নামধ্য ও ধ্যন।

ত্থা। মধুর, তিক্ত, কবার, ককনাশক, রক্তদোষ নিবারক ও উষ্ণ। ইহা জ্জোগ, বক্তিশীড়া, ঘোনিরোগ, দাহ ও পিত্তবিদর্শ রোগে ব্যবস্থের। ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাধা।

शक्तः।

ঝজাং পটরকো ২ক্ষা স্যাৎ পৃথবেরাত মৃগকা। ঝজাকবারো মধুএং নিনিরা পিতারক্ষিৎ ॥ জন্য অজ্যরজানুত্র নৌধবো মৃত্তু ছুৎ ॥ অন্য মৃত্যুৎ গ্রাছাং। সাত্রা ২ সাবকৌ।

विन्दी भटित्र।

পর্যার। ওান্স, পটরক, আচ্ছু ও শৃঙ্গ-বেরাভ মূলক।

গুণ। ক্যার, মধুর, শীতল, রক্ত পিত্ত নাশক, তথ্য, গুক্তে, রক্ত ও মূত্র-ইহাদের বিভাছিকারক ও মূত্রকুচ্ছুনাশক ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ২ুশাবা।

वंत्रकः।

এরকা ওজন্না চ পিবিওজা পরীতি চ। এরকা পিশিরা ব্যা চকুন্যা বাতকোপিনী র শুন্ত্যুগারী বাহ পিত পৌধিত নাখিনী। অন্যান্দাং এখনীয়াং নাতা ২ বাবকৌ।

ं. त्याममा । दिन्ही त्याबी।

পর্যার। এরকা, ওস্তামূলা, শিবি, ওস্তা ও শরী।

থা। শীভল, বলকারক, চজুবা, বায়্ প্রকোপক।

প্ররোগ । মৃত্রকুচ্চু, আগরী, দাহ ও রক্তপিত রোগে প্রয়োজ্য । ইহার মৃল গ্রহণীর । মাত্রা ২ মাবা ।

भार्म् नकमः।

পার্ন্ত কর্পঃ পোধছো জেয়েংরণা প্রাঞ্কঃ।
ব্রবিরেচনঃ প্রেয় হরণো হতুগা এব চ ঃ
নাঞাতি রেকাদ্ ভবতি বাধিকুল্লভেদনঃ।
অভিনাত্ত: প্রথ্যাহসৌ বিববল্যারয়েম্যন্ ।
পোধে খানে চ ফানে চ ব্রস্পে প্রস্তাতে।
ক্রেল্ডেইভিনারে চ এইণ্ডা\ নাপি শ্সাতে ।
ক্রেল্ডেইভিনারে চ এইণ্ডা\ নাপি শ্সাতে ।
ক্রেল্ডেইভিনারে চ এইণ্ডা\ নাপি শ্সাতে ।
ক্রেল্ডেইভিনারে চ এইণ্ডা\

বদপেরাজ।

শার্দ্ দকক, শোগস ও অরণ্যপাণ্
এইওলি বনপেঁ রাজের সংকৃত নাম।
ইহা মুত্রকারক, ক্ষমস ও অভিশর উগ্রবার্যা। মাত্রাধিক্য হইদে ইহার ঘারা
বমন 'ও বিরেচন ক্রিয়া হইরা থাকে।
অত্যক্ত অধিক মাত্রার সেবন করিলে
ইহা বিষবৎ সাংখাতিক হর। শোধ,
খাস, কাস ও মূত্ররোধে প্রয়োজ্য। ক্ষর
দাহ, অভিসার ও গ্রহণীরোগে নিবিদ্ধ।
ইহার মাত্রা > রভি।

नागममनी ।

বিজ্ঞো নাগ্যুখনী বলানোটা বিশাপ্য। নাগপুন্দী নাগ্দীনা বহা যোগেখনীডি চ s বলানোটা কট্ডিকা লয়ং শিত্ত কলাশবা।
মূৰ্কুক্ এবহরা কারা বাত কলাশবা।
উদ্যাধান পননী কোঠ পোধন কারিবী।
সর্বাহ্য প্রশাননী নিংপের বিষনালিনী ॥
অস্থা সর্বাত্ত ব্যাহা সুষ্ঠি প্রবা।
অস্যাঃ পত্রং গ্রাহাং বাত্রা ও রক্তিকাঃ।

नागमना ।

পর্যার । নাগদমনী, বলামোটা, বিষা-পহা, নাগপুর্জা, নাগপত্তী ও মহাফোগে-

ত্তণ। কটু, ভিক্ত, পঘু, কফপিত্ত নাশক, ক্ষাঁর ত্তণবিশিষ্ট, কফবাত্ত নাশক, উদ্বাধান নিবারক, কোষ্ঠ বিশোধক, গ্রহ শান্তিকন, স্থ্যকরপে বিধ নাশক, সর্বব্য জন্মকারক, ধনদারক, স্মৃতি প্রদা-রক ও অতিশ্র বিষয়।

প্রেরাণ। মূরকৃচ্ছু ও এণ রোগে ইহাছারা উপকার হয়। ইহার পত্র ব্যবহার্যা, মাত্রা ৬ রভি ।

প্রস্থত্ত |

श्रमञ्जूक् अस्परङ्घी त्यांनित्यम् अमारनुरः । मृज्ञत्याय अभयनो शीठा शिक निमाशद्या ॥

कनगात छान ।

পরবত্ত থাৎ ফলসার ছাল প্রেন্
হয়, যোনি ও লিক্ষের দাহ শান্তিকর,
মূত্রদোব বিশোধক, শীতবীর্ধা, পিতয়
ও বায়ুনাশক।

द्यामनावः ।

विराजनातः सम्मृत्युत्रासा समृत्रदतः। -त्यांव विद्वानाता त्यनाव किनिस्ट्रवसानाः।

পস্কবিরজা।

গন্ধবিরজার সংস্কৃত নাম শ্রীবাসদার ইহা কঞ্জ, মৃত্তকর, জ্ঞানশির্ক, ক্রিমিয় ও বেদনা নিবারক। ইহার প্রশেপ শোধ বসিয়া যায়।

बक्रनः ।

বরণো বরণে সেতু ভিজপাকং কুমারকং। বরুবং পিতলোডেখা রোজ কামল মারুতানু । মিছভি ওপা বাতারা জিনীৎ শোজাহরি দীপনং। ক্যায়ো মধুরভিক্তং কটুকো রুজকো লঘুং। অধারীৎ মুবকুচ্ছু ক বিশ্ববিশ বিনাশয়েৎ।

পর্যায়। বরূণ, বরূণ, সেতু, ভিজ্ঞ-শাক্ষ ও ক্ষারক।

তাৰ। শিৱজনক, ভেদক, উঞ্চ, অগ্নিদীপক, ক্ষাগ্ন, মৃত্ন, তি্কু, কটু, কুক্ষ ও লঘু।

প্ররোগ। শৈলিক কামলা, বায়ু, গুলা, বাতরক্তা, ক্রমিরোগ, অশারী, মৃত্র-কৃচ্ছ ও বিদ্রবি রোগে প্ররোজ্য।

বটপত্রী।

বটপ্রাসরা প্রোক্তা রণস্ভারিনী হিনা। মূর বিরেচনী জেরা শৌণিত জুভি বারিণী। অস্যাং স্বরুগো গ্রাহ্য তদ্যমাতা ১ কর্ম।

পাতরকুচা।

পাতরক্চাকে সংস্কৃত ভাষার বটপত্রী ও অমরা বলে। ইবা এণ সন্ধারক, শীতবীর্ষা, মৃত্বিরেচক ও রক্ত ভাষ রোধক। ইহার সরস এইবীর, মাত্রা ২ ভোলা। Constitution of the Consti

क प्रदेशन

র্গাচ্ছোলের সংখ্য করা বিজিপা ও শিক্ষিত্র করা। ইপানের ও গানের বার নিবারক, বিব্রু নান্ত্র, ধর্মক, শশুষ্টকর এবং প্রমের পাক্ষিত্রর । মান্ত্রীকার

वीतरनार्थाञ्चः ।

कुळगरळाश्रीत वर्गः ।

ES HALL

केश परता प्राथमिका नेपादिका द्यान्यकः। केश्वरता कित्या अरुका क्षान्य क्षान्य क्षान्य । सपुत्र प्रपटशा वर्तना क्षान्य व्यान्य । मृत्य निवास निवास नुसान्य वर्गान्य । क्षामा नीस्ट्रिका सुरमा प्राप्त अन्यानियो । वाना क्षाप्तिक अधिक स्थानिया नामकः।

100941

श्वीप्र। छेड्ड्यूड्ड, खंडरून, प्रकाप, ट्रब्ट्डूड्य

खन। जीकन, क्रम, धार, मध्य, समा थ दर्ग । देशा होता वन वर्गण प्र. जनम जनमात्र वन वित्र गात्र। यात्र, देशा त्मार्थ प्र. जनमात्र वन वित्र गात्र, देशा तमात्र निष्य, क्रम, मध्यप्राय, देशा , हाय, मध्यप्रिय च वृद्धा-जीनात्र वाजविक हेत्र। देशात प्रकृत्वात्र जीकन, वृद्धा ध वनन्यात्रक। देशात्र कन्, वीक ध प्रकृत्वात्रक। देशात्र कन्, वीक ध प्रकृत्वात्रक। देशात्र कन्, वीक ध प्रकृत्वात्रक। सात्राः

SALLAND SECURE S

WIR CONTRA

ार्षातः कारकाष्ट्रविकाः कम् ॥ मन्त्राः च कपरमधनाः।

থা। ভশ্তকারক, খান্তু দীওল ভ কৰার, ইহার বারা, কক, শিক্ত, কুব, বিজ্ঞ, তুই, পাপু, কালা ও কারলা রোগ মুদ্র হর। অবিকল্প বজ্ঞভূমুদ্রের যে প্রকা থা আছে, ইহাতেও তৎ প্রবত বজনান আছে কিন্তু ভন্তবেক্ষা অনেক ছান্ত্র পরিবাবে আছে। বাল্লাং মাবা।

NTE i

वरवा वरहे। विकास विद्यारिया वृहक्ताः । वरः चीकां सरकार्गः भागः भिक्तकालकः । वरहः करहः कहाः क्लीकं वर्षः वशाकः। कराः वाताः ३ वाक्षः।

ं पालता दुवा।

गर्गात । यर, यहे, मिलकत, जिल्ल त्योत क स्वयत करे कि देशत गर्गात । का । मीकम, मध्य क क्यात, देशत का किकिर मिडे। यर तात्यर, जार्ग, गापू, निक् क करू मेडे करत देशत क्या नियर मध्य । करे द्रास्त क्या के विद्यान तार्गीत । माता > सीमा

्याचान कर्या कृष्टिन क्षत्रीयाच्या । (बान्याक्यो कर्या कृष्टिन क्षत्रीयाच्या वर्षा ।

विश ।

বিশ্বাফল শীতগুণ সম্পন্ন, আগ্নান নাশক, ত্রিদোধ্য ও বহুনুত্র নিবারক।

जदमानद्यार्थामः।

আর্ত্তবপ্রবর্ত্তক বর্গঃ। সহাসায়ঃ।

বীরাজাবং সহাসারং কুষারীরস সভবং।
সহাসারোহর্গি জনসং পিত্রির্রবেশ মতং ।
বেলকুল্ রেচনং পূজাজননো গর্জগাতনং।
বিট্সক্ জিনি বোগে চ সংন্যানে হপকাতৌ

লুপ্তেরজনি নারীণাৎ শীতিপিতে পিরোরজি।
জারে জেলোন্ডবে লীকি মন্দেঃগৌ চ প্রযুজ্যতে।
জার্লান্ত নাকেবেত নাঙ্গান্তী ন পুশিপণী।
সচাস্গ্দরিণী নাশি যকুদ্র্ভাদি রোগবান্।
অবস্থানা ২ রকিবেত।

भूमनवत्र ।

বীরাজাব, সহাসার ও কুমারী রসসম্ভব এই শব্দগুলিমুসকবেরর সংস্কৃত নাম। মুসকবের অধিজনক, পিতনিংসারক, বলকর বিরেচক, রজ:প্রবর্তক ও গর্জপাতক। মল-বোধ, ক্রিমিরোগ, সংস্ক্যাস, অপস্মার স্ত্রীদিবরের রজোলোপ, শীতপিত, লিরোরোগ, ইম্মিক জ্বর, শ্লীহা ও অধিমান্য বোগে মুসকর উপকারী। অর্লং, সক্তের শীড়া ও বুরুরোগে এবং গর্ভবর্তী, অতুব্দী, ও রক্তপ্রদর রোগাক্রাজাতা ল্লীদিগের প্রক্রিমির। মাত্রা ২ রক্তি।

(द्रगुका।

রেণুকা রাজপুরীত নশিনী কশিলা ছিলা। ভবাৰজা পাঙ্পুরী ক্ষা কৌতী বরেণুকা। রেণুকা কটুকা পাকে ডিজানুকা ক্টুর্কু: । পিতলা বীপনী নেখ্যা পাতিনী গর্তপাজিনী । বলাস বাডকুজৈর তুট্ কর্বিবলাহ ন্থ। অন্যা নারা ৬ কুজিকাঃ ।

্রেণুক।

পর্যার। রেগুকা, রাজপুত্রী, নন্দিনী, কণিলা, হিজা, ক্রুষ্ণাকা, পাতুপুত্র', কোস্তী ও হরেণুক্রী। ইহার আকৃতি মরিচের ল্যার। এই

গুণ। রেণ কা প্রায়েক কট্রস হর, ইহা ভিজ, অনুষ্ঠা, কট্, পদ্, প্রিভেনক, অধিকারক, সারণপত্তি বছক, পাচক, গর্ভপাতকারক, কফজনক ও বারু বছ ক।

আম্ত্রিক প্ররোগ। তৃষ্ণা, কণু, বিষ রোগ ও দাহ নষ্ট করিয়া উপকার করে। এই বীজের মাত্রা ৬ রঙ্গি।

লাম্লী ।

কলিহারীতু হলিনী লাম্বলী শব্দপুষ্ণালি।
বিশ্বলাল্লিথানতা বন্ধিবকু i চ গর্ভনুৎ ৪
কলিহারী সরা কুঠলোফার্লো ত্রণ শুল জিং।
সন্ধারা জেত্ম জিংডিকা কটুকা তুবরাশি চ ৪
ডাক্ষোন্ধা ক্রিমিছলুট্ শিবলা গর্ভণাতিনী।
অস্যান্দ্রং প্রাহাৎ বাত্রা ৬ রক্তিাঃ।

केननाम ना ।

প্র্যায়। কলিহারী, হলিনী, লাঙ্গলী, শজ্ঞপুশী, বিশল্যা, অগ্নিশিখা, অন্তঃ, বহ্নিক্তা ও পর্কমুৎ।

তা। শর, কারতা বিশিষ্ঠ, প্লেম-নাশক, তিক্তা, কট্ট, কবার, তাক্ষা, উষ্ণা, ক্রিমিয়, লঘু, শিত্তবর্ত্ধক ও গর্ভজাব-কারক। ইহা ব্যবহারে কুট, শোথ, অর্শা, ত্রণ ও শুল রোগ নত্ত হর। ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ও রভি।

हेक्पः ।

हेशला रश्चिक्षला अनुष्टः करूग्येनः। स्रोतृष्टा समस्या त्रस्या दृष्ट पङ्गीदकर्षनः ।

८मारागा ।

ইহা অধিকর, বৃদ্ধিছ ক, কত নিবারক, ককল, রজঃ প্রবর্তক, রকা ও মৃচুগভাক্ষক । মাত্রা ∰ রতি।

পীবন্ধী

भीवती त्याचिक्क मार्गि स्थानियाभम् विवाणिनी । प्रत्याद्वाक व्यवस्थी श्रवतादणी नियातिनी ॥ १७ मार्गिक चना ।

ওলটকখলের সংস্ত নাম গীবরী ও গোমিণী। ইহা ঘোনিব্যাপদ নিবা-রক, রজোদোষ নাশক, প্রদর শান্তিকর ও অর্শোনিবারক। মূল গ্রহণীর মাত্র। ১ মাবা।

আবিকা।

সর্বপী পাইলা রৌক্রী স্কাবিকা বস্থলাপি সা।
রক্ষঃপ্রবর্ত্তিনী রৌক্রী সুচপ্দতিবিকর্বণী ঃ
গতপাতানভারোখ পৌণত জুতি বারিনী।
বারত্তেক্ষোণিতোদ্বাভি৲ রক্তবুঞানিক৲ তথা ঃ
প্রত্তেশ্বর নেকাশ৲ অক্তবেরণ বারণণ্।
বারাভিরেকাদ্ বিবরৎ ক্রিয়াশ সংক্ষনত্ত্বদ্ধ বৃষ্ধ ঃ

शिकी भवकिया।

দর্যপী, পটশা, রৌদ্রী, আবিকা ও ধ্বকা এট কলি একার্থ নে'ধক শব্দ। টহা রছঃ প্রবর্তক, মৃচগর্ভাকর্বক, গর্ভ-পাত জানত রক্তল্রীব রোধক, রক্তব্যন নিবারক ও রক্ত মুব্রাদি প্রশাসক বেত-শ্রেলর, পক্ষাথাত ও ভক্তমেহ রোগে প্রয়োজ্য। অধিক মান্তার শেবন করিলে বিযক্তিকা করে। নান্তা ৬ রতি।

mage:

অরিউক্ত বাসলাঃ কুক বর্ণেহর্বসাধনঃ।
রক্তবাক্ত পতিকেনঃ কেনিলো গর্জপাতনঃ র
অস্য কলং গ্রাহাৎ বাহা ২ বাহকঃ।

ब्रीहे।

পর্যাব। আরিষ্টক, মান্বল্য, কৃষ্ণবর্ণ, অর্থসাধন রক্তেনীজ, পীতফেন, ফেনিশ ও গর্ভপাতন। ইহার ফল এহণীর। মাত্রা স্বাবা।

• ठकूर्कटमार्थायः ।

আর্ত্তবসংগ্রাহি বর্গ।

অপোক: |

অপোকো হেমপুষ্পাত বন্ধু স ভাত্যপঞ্জবং। কছেলিঃ পিও পুষ্পাত গদ্পপুষ্পোনট ভৱা ॥ অপোকঃ দীতদভিজ্ঞো প্রাহী বর্তাঃ ক্যায়কঃ। দোবাপটি তৃষা দায় ক্রিমি পোষ বিবাস্ত ভিব.॥ অস্য ভুগুগাতা, যাত্রা ১ দাযকঃ।

অপোক।

পর্যায় : অংশাক, হেমপুষ্প, বঞ্জ, জান্ত্রপার কল্পে, পিওপুষ্প, গন্ধপুষ্প ও নট্র

ত্তণ। শীতল, তিব্ধ, গ্রাহী, বর্ণের উৎকৃষ্টতা সাধক, কৰার ও দোৰম। ইহা ন্যবহার করিলে অপচা, তৃফা, দাহ, ফ্রিমি, শোব, বিষক্ষ পাড়া ও রক্তদোব নিবারিত হয়। ইহার তৃক্ ব্যবহার্য মাত্রা > মাবা।

লাকা ৷

লাকা প্লক্ষালকো হাবো মুকাহরো জড়ু। লাকাহৰীয় হিমা বল্যা জিঝা ৮ ডুবরা লযুঃ ৪ অনতা ক্ষণিগুলু[হিঞাকাস অর প্রগৎ । ত্ৰণোৱাক্ষণ বীসৰ্প ক্ৰিম কুঠ গৰাপৰা। অসককো ধৰৈ,ভগ্নিপোৰাধ্ব্যস নাপনঃ। মাত্ৰা ১ বাছকঃ।

नाश।

লাক্ষা, পলক্ষা, অলক্ত, যাব, বৃক্ষাময় ও জতু এই সকল ইহার নাম। লাক্ষা বর্ণোৎপাদক, শীতল, বলকারক, দ্বিগ্ন, ক্ষার, লঘু ও অনুষ্ঠ। ইহা কফ, বক্ষণিত্ত হিঞ্জা, কাস, জর, তণ দির:ক্ষতে, বীদর্গ, ক্রিমি ও কুঠরোগ নাশ করে। অলক্তক লাক্ষার ম্যার তণ বিশিষ্ট, অধিকক্ত ইহা বাক্ষ বেশ্ব নাশ করে। লাক্ষার মারা ১ শখা।

অল্ফুক:।

অলফকোরজোরোধী রক্তপিত করাপর: । প্রস্রকাপ্তিসার৲ সরক্ত৲ ক্তারেদ্ধূ্বৰ্ ॥ আল্তা ।

ইছা রজোরোধক। দেবন করিলে রক্তপিত, ক্ষর, রক্তপ্রদর ও রক্তাহীশার নিবারিত হয়।

কুমুম্ব ।

স্যাৎ কুসুছা বাহ্নপিথা বজ্ঞর মিডাপি।
কুসুছা মধুরা ক্লছা হাজিকুদ্ রোচনা মড্য।
বিশান্ত হোল পামনা কটুছা গুরু পিত্তপর ।
জিনিহাদ্ বাত্তপা কুল্ড কুজাপিত কফাপ্রন্

क्ष्यम्म ।

কুস্ন বহিশিও ও বন্তরপ্তক এট তালি ইহার পর্যার। কুস্ত মধুন, রুক্ত, অমি ছীপ্তিকারক, রেচক, মলমূরের নোঘ নাশক, কটু, উষ্ণ, তাক্ত, পিওজনক, ক্রি-মিয়, বাব বর্জক, প্রবশ রক্তপিত নাশক ও শ্লেম্ব শান্তি কারক। মাত্রা ১ মাধা।

771

পুজকাকারা রক্তান্স বিজ্বিকান্তিতা সহা।
সংজ্ঞান পুজজনবাঁ, মন্তনতা কৃতিব্বেৎ ।
বোৰত্বী সবুরা শীকা বৃষ্যা, বল্যা রসায়নী। '
কবিতা পুজহাবশ্যং সক্ষরা হুনিপুক্টবং ।
জন্যা বৃদ্ধং প্রাছং স্বারা ২ নাবকো।

मक्ष्रम्म ।

পর্যার। লক্ষণ, ব্রেজননী ও প্রকা।
ইহার আকৃতি শ্রেক ছাগলের নাার।
গাত্রে রক্তেবিশুর ব্যাক্তির হব। ইহা
বিদোষ নাশক, মধ্ব, শ্রেকল, বার্যা
বর্জক, বলকারক ও রসারন। সেবন
করিপে অবশাই পর্তেৎপত্তির ব্যাক্তা
দূর হব। ইহার মূল গ্রহণীর মাত্রা
> মাবা।

व्र**रकार्शनम्**नम्।

মূল৲ রক্ষোৎপলস্য স্যাত্রলোরোধ্যস্ত্রপিভমূৎ।
শীভবীব্যৎ প্রমেহত্বৎ বাভসিব্যপ্রধাননম্ ।
রক্ষোৎপলের মূল।

রক্তে থেলের মূল রজোরে।ধক, বস্তুপিত খান্তিকর, দীত্রীর্যা, প্রমেহ নাদক, বায়ু প্রদামক ও পিত্তয়। মাত্রা ও মাযা।

ত পুলীয়ক মূলম্। তথ্ ভাষক মূলং সামুক্তং স্লেছ বিনাশনম্। রক্ষোরোধকরং র ক্রপিত প্রদার সংহরম্ভ

कैं।हे।नटहेरमून ।

ইহা উচ্চ, কফর, রজোরোধক, রক্তপিত নিবারক ও প্রদর শান্তিকর। মাত্রা ২ মাত্রা।

शेष्ठ हत्रमम्। 🍿

কালীয়কত কালীয়া পীডাডা বৃদ্ধিক্ষণ । ব্যৱস্থান কালদার তথা কাৰীস্থানীকৰ । কালীয়কা রক্ত এবং বিশেষাধুন্ধিক সাশ্মৰ। কাডা প্রাথা বাজা > বাজ্ঞা।

পীত অপুরু।

কালীবক, কালীক শীভাভ, হরিচন্দন, হরিপ্রিব, কালনার ক কালামুনার্থাক এই ওলি ইহার কার্যার। ইহা রক্ত-চন্দনের মুধ্রা ওপি বিশিষ্ট, অধিকন্ত ইহা বাক্ত রোখে বিশেষ উপকারক। ইহার কার্য গ্রহণীর, মাত্রা ১ মাবা।

রক্তদশ্রম ।

রক্ষণন বাধাতে রকাল কুপ্রচলনর। ভিলপর্ন রক্ষারৎ ভংগ্রবাদকলং বভন্। রকং শীতং গ্রন্থ বাদু ছব্দি ভূতাজ পিত ছং। ভিকাং নেকবিতং বৃধ্যং তার এণ বিধাপনন্। নাকা ১ বাধকঃ।

व्यक्तिका ।

রক্তচন্দন, রকাশ, ক্ষুড্রচন্দন দিল-পর্ণ, রক্তদার ও প্রবালফল এই সমস্ত ইহার পর্যার। রক্তচন্দন শীতল ওকে, খাছু, তিক্ত, চকুর হিতকারক ও বলকর। ইহা ব্যবহারে বমন, তৃষ্ণা, রক্তপিত, অর, ব্রণ ও বিষদোষ নপ্ত হয়। এই কাঠের মাত্রা > মাষা।

९ खन्न ।

প্রজাৎ র জনারক সুরক্ষৎ রক্ষম তথা।
প্রক্রিক্ষক মাধ্যাতা প্রকৃত্রক কুচলমন্ র প্রকাশ মধুরং লীতা পিবল্লেক্ষ ত্রধাক্ষমুৎ।
হরিচলম বহুবেহুগে বিলেখা ক্ষাই মার্শনন্ র হত্তমানি তু সর্রাধি সমূশানি রসাধিত। গভেষতু বিশেষযোগতি পূর্বাঃ ভোওতনো প্রাণঃ । নাত্রা ১ দাবতা।

वक्ष ।

পশুদ্ধ রক্তদার, ত্রন্ধ, রঞ্জক, পাট্টরন্ধক, পালুর ও কুচন্দন এই গুলি ইহার পার্যার। ইহা মধুব ও শীতল। ইহার গুণি পীত অগুরুর ন্যার। ইহা পিন্ত, শ্লেমা, রণ ও রক্তেদোষ নিবারণ করে, বিশে-ঘতঃ ইহার বিলক্ষণ দাহ নিবারণ শক্তি আছে। যে করেক প্রকার চন্দন উল্লিখিত হটল। তাহাদের রদ প্রভৃ-তির প্রায় একরপ। বক্ষকাটের মারো ১ মাধা।

भारवाहेः ।

লাখোট, পীতফলকো ভূতাবাদং খরকান:। লাখোটো রক্তপিভার্নো বাডরেলাভিনারজিৎ । অস্য পত্র৲ ভংমরসক্ষ গৃমতে মাত্রা ২ মাযকঃ।

नांश्वदा।

প্র্যায়। শাকোট, শীত্ফলক, ভূতাবাস ও বয়চলে।

তা। ইহা রক্তপিত, অর্থা, বাত লেয়া ও অতীদার রোগ নষ্ট করে। ইচার পত্ত ও পত্তের স্বর্গ গ্রহণীয়। মাত্রা > মাধা।

ማ ም ማ ጃ (

কুকুপরং গতিপুসাং কুজুরক মৃত্তুক্তর: । কুকুপরং কুটুডিকো অর রক্ত ক্তাপ্তঃ । রক্তপিত ষতীবার৲ হাহ৲ ঘোর৲ নিহতি চ । অব্য বারা ২ বাবকৌ। কুক্সিমা, কুকুরসোঁকা।

পর্যার। কুকুন্সর, পীতপুন্প, কুরু-রক্র ও মৃত্তুদ এই গুলি ইহার পর্যার।
গুণ। কুকুন্সর কটু, তিক্তেন, জ্বর
রক্তদোয় ও কফনাশক। ইহা সেবন
করিলে রক্তপিত্ত, জ্বতীসার ও দাহ
প্রশমিত হর। ইহার সম্ভ জংশ
গ্রহণীর। মাতা ২ মাখা।

জবা ত্রিসন্ধা চ। উর্নুপাঞ্চা চাথ ত্রিসন্ধা সারুণা সিভা। জবা সংগ্রাহণী কেশ্যা ত্রিসন্ধা কম্বাড্রিং। ইজ্ঞানুগু মন্তীসারং এমেহাম্ বিংশতিং হয়েং। মাত্রা ২ মাহকৌ।

> খেতদ্বা এবং লালদ্র।। হিন্দী বোড্তল এবং সাক্ষা।

পৰ্য্যায়। জবা ও উৰ্দ্ধপূপ্স, ইহা লাল বৰ্ণ হইলে ত্ৰিসন্ধ্যা কছে।

তথা। অবা সংগ্রাহী ও কেপের হিতকর। ত্রিসন্ধ্যা বাতল্লেম নাশক। এই উভর বিধ অবা ইক্রসুঞ্চ, অভিসার ও প্রমেহ রোগে প্ররোজ্য। জবা পুম্পের মাত্রা ২ মাষা।

অপুথ।

বোধিজঃ পিপালোহখখনজগতে। বজাননঃ। পিপালো পূজ্জিঃ দীতঃ পিতল্পের এবাজানং। গুলু ভ্রমকা রুজো বর্গো বোলি বিশোধনঃ। অর্থপার কলং পকা বোলিলোবহরং হিনন্। ভূমি পোবাল্লভিয়েৎ বিবয়ুৎ রক্ষণিতনুৎ। অন্য ভুচো বাজা ৷ বাবকঃ, পঞ্চন্স্য)

8 मांचकाः ।

অধিখ। হিন্দী পীপর। পর্যায়। বোধিক্র, পিপ্লপ, অধিখ, চলপত্ত ও গজাধন। তার ক্রিক্ট নহতে জার্থ হর না, শীতল, তার, করার, রুক্ষ ও বর্ণের উৎকৃষ্টতা সম্পাদক। ইহার হারা পিন্ত, প্রেরা, রগ, রক্তদোর ও যোনি রোগ উপশমিত হর। পক্ষ অব্ধ ফল শীতল, যোনি-দোহনাশক, বনি নিবারক, শোবপ্রশন্মক, অক্রচিনাশক, বিষয় ও রক্তপিত্ত শান্তিকর। আর্থান্থের ত্বের মাত্রা ১ মাধা ও ইহার প্রক্রিক্সনের মাত্রা ৪ মাধা।

नचीवकः। 🗽

নদীর্জাঃবথতের: এরোহী বল্পাইদাঃ । বালীবৃক্ষ কর্যক কীরী চ সাধ্যসাতিঃ ॥ নদীবৃক্ষা লঘু: বালু ভিজক্তরর উত্তর: । কটুপাক রনোগ্রাহী বিহুপিত ক্লাশ্রজিৎ ॥ ক্লাত্ত্ব প্রাবা, নাবা > নাহকঃ।

অশ্বথ বিশেষ।

পর্যার। নন্দীরুক্ষ, প্রয়েহী, গজ-পাদপ, স্থালীরুক্ষ, ক্ষযভক্স, ক্ষীরি ও বনম্পতি।

ত্ব। লঘু, স্বাহ্য, তিক্তা, ক্যার, উষ্ণা, পাকে কটু, গ্রাহী ও বিষয় ইহার দ্বারা পিক্ত কফ ও রক্তদোব উপশ্যিত হয়। তৃক্তাহণীর মাত্রা ২ যাবা।

विभनाकवरी।

বিশল্য কর্ণী বল্যা ত্রণসন্ধান কারিণী। যারকেন্ডেণিভাঞাব৲ রক্তাভিনারমূল্পণ্ ।

আয়াপান।

ইহার সংস্কৃত নাম বিশল্যকরণী। বিশল্যকানী বলকারক, ত্রণসন্ধাবক, রক্তভাব রোধক ও রক্তাভিদার প্রশমক। পত্ত গ্রহণীব মাত্রা ২ মাধা। भावनी भूभम्।

শালুনী পুন্দ শাক্ত স্থতানতৰ নামিক্ । প্ৰবয়ৎ নালয়তোৰ সুংনাধ্যক নুমীংৰাইঃ । রনে পাকে চ যবুরৎ ক্যারৎ নীকিং প্রস্ল । ক্য শিতাক্স ভিন্ প্রাতি বাতন্ত প্রকীবিতন ।

শিমুলকুল,

হৃত নৈক্ষবের সহিষ্ট এই পূব্দ পাক করিবা ভক্ষণ করিলে ক্ষিত্রর রোগ উপ-পমিত হর। ইহা ক্ষাইটেন ও পাকে মধুর, ক্ষার, ক্ষাইক্ষাই প্রেক্ত, গ্রৈমিক প্রেক্তপিত নার্কিক, গ্রাহী ও বারু ব্যক্ত ।

कक्रहेम्।

পানীয় ত০ু নীয়ন্ত কণ্ঠীং সমুখাছতম্।
কণ্ঠীং ভিজকং রক্ত পিলানিল হয়ং লঘু ।
জনতে নীয়াং পাজে কণ্ঠী নিভি প্রসিন্ধন্।
চবরাই ভেষঃ ।

কাঁচড়া। হিন্দী পানীচবরাই।
পানীব তণুলীবকে কঞ্চ কহে।
তণ। ইহা ডিজ, রক্তপিত শান্তিকর
বাসুনাশক ও লঘু, মাত্রা ২ মাধা।

शक्षपटमार्थाय ।

षो श्वशाहन्दर्भः ।

ত্ব। দ্ৰুক।

আন্তৰ্কৎ শৃহবেরৎ স্যাহ কটুডারৎ ধবার্ত্তিকা। আন্তর্কা ভেদিনী প্রক্রী ডীক্ষোঞ্চা ক্যাপনী সভা র কটুকা মধুরা পাকে ক্লক্য বাভককাপনা। বে প্রশাং কবিভাং স্বত্ত্যা ভেহ্পি স্ক্রার্ত্ত কেহবিলাং র

ভোজনারে সদাপর্যাৎ স্বধার্ক্র ভর্জন্ম। অগ্নস্থাপন্থ ক্লচ্ছা ক্ষিত্রা কঠ বিশোধনন্। কুঠ পাঙ্গাদরে কুছে, রক্তপিতে রবে অরে। হাবে নিভাৰ শীরবো দৈবি পুজিত যাত্রকিন্ । অন্য মূলৎ প্রাহ্যৎ, যাত্র। ২ যাবকৌ।

ष्याज क (ष्यामा)।

আন্তর্ক, শৃকবের, কটুডল, আন্তিক।
এই ওলি, আন্তর্কের পর্যার। আন্তর্ক ডেদক, গুরু, তীক্ষ, উষ্ণ, অন্তিদীপক, কটু, পাকে মধুর, রক্ষ ও কফ বারু মার্শক গুঠীর যে সমস্ত গুণ লিখিত হইরাছে আন্তর্কেও সেই সমস্ত আছে। শুদ্ধ আ-র্জকেই (গুঠী বলে)। আহার করিবার পূর্কের্ক লবণের সহিত আন্তর্ক ভক্ষণ বিশেষ উপকারী। তদ্ধারা অন্তির দীপ্তি, ক্রতির্কি এবং জিহবা ও কঠ বিভন্ধ হয়। কুঠ, পাত্রোগ, রক্তপিত, রগ, ভ্রর ও দাহ রোগে এবং গ্রীম্ন ও শরৎকালে আন্তর্ক সেবন বিভকারক নহে। ইহার মূল গ্রহণীয়, মাত্র ২ মাবা

গঞ্জিপ্লালী।

চবিকায়াং কলং এ: জৈঃ কবিতা প্রশাপপানী। কপিবলী কোলবলী কোয়নীবলিরত সা । প্রকৃতা কটুবাত স্নেম্ছযুক্তি বর্তিনা। উভঃ নিহ্বাতীলারং খাসকথাব্য কিনীন্। বাবা ও ইতিকা।

गक्रिश्रम ।

চবিকার ফলকে গঞ্জপিপ্পলী কহে। পর্যায়। কলিবলী, কোলবলী, জ্রে-য়সী, বলির ও গঞ্জক্ষা।

ত্ত। ইহা কটু, বাডপ্লেমনাপক, অধিবন্ধ ও উফ।

প্ররোগ। অভিসার, খাস, কঠরোগ ও ক্রিমি নাশ করে। মাত্রা ৬ রচি।

চিত্তকঃ।

চিত্রকোহনজনামা চ পীঠো ব্যালন্তগোৰবঃ ।

চিত্রকঃ কটুকঃ পাকে বন্দিকুৎ পাচনো ক্যু র
ক্রন্ধোন্তা এহনী কুঠগোনার্শ্য ক্রিনিকাসন্থ ।
বার্তসেশ্য হয়ে। গ্রাহী বাতার্শ পৌর পিকস্তৎ ।
ক্রন্পোক্রিকস্থক্ স্যাক্ষাহিনী এণকারিনী।

किका।

অধিবাদক নাম সমুদারে চিত্রক বুঝাব মধা, অনল, অধি, বহিং ইত্যাদি চিতার নাম, তদ্ভির শীঠ, বালে, ও উবণ এই গুলিও চিত্রকের প্র্যাহ।

থাণ। চিতা পাকে কটু, অগ্নিকারক, পাচক, শব্, রুক্ষ উষ্ণ ও গ্রাহী।

প্রবোগ। গ্রহণী, কুন্ঠ, শোধ, আর্শঃ, ক্রিমি, কাস, বাতগ্রেমা, বাতার্শঃ ও গিন্তপ্রেমা নাল করে। ইহার তকের প্রলেপে দাহ ও ফোসা উৎপদ্ম হয়। মূল গ্রহণীয় মাত্রা ৪ রতি।

গ্ৰানা।

यवानिरकाञ्चकां व्यवस्थि इस्तर्भाक्तः । देनरवाकः मोनाका मोनाः छवा नाम्ययनास्याः ॥ यवानी नाम्नो क्रमाः डोस्क्रांका कर्षेका नय्यः । मोननी ४ छवा छिका नितना वाविश्वस्य ॥ योजस्थायावदानां छन्। सीय क्रिनि अन्यः ।

यमानी, त्यं व न ।

ষবানিকা, উগ্রগন্ধা, গ্রহ্মন্ত্রা, অন্ধন্ধানিকা, দ্বাপাকা, দ্বাপাগা ষব (ঘব পর্যায়) এই গুলি ঘবানির নাম। ঘবানী পাচক, ক্রচিকর, তীক্ষা, উল্লন্ধ, তালিলাপক কিক, পিত্ত কারক, বাম ও শূলনাশক। ঘবানী বাতন্মেয়া, উদরব্রোগ আনাহ (মুদা),গুলা, সীহা ও ক্রিমি নই করে। মাত্রাং মাষা।

ेल्ल जाक्रामाणः ।

जाक्रमाणं चेत्राचा व सञ्जूद्धा शेणाक्षवयाः ।

जावा अक्रम्भा दक्क्षणं कार्याणी व नमस्याः ।

जावा कर्मे क्ष्मा शेणमी क्षमाण्यः ।

जावा विवादिनी क्षमा स्थाप विकाद ।

दिस्ता क्षमाण्या क्षमाण्याः ।

दिस्ता क्षमाण्याः ।

वन्धेमाना ।

অজনোধা, ব্রাখা, মহ্র, দীপাক,
ব্রহ্মপুণা, কার্র্ট্রী ও সমস্তকা এই
সম্বার বনষনানীর নাম। বনষনানী কটু,
ভীক্ষ, অগ্রিদীপক, বাউট্রেম্বানাশক, উষ্ণ,
বিবাহী, জ্বা, বলকারক ও লঘু এবর্ধ
নেত্ররোগ, কক, বমন, হিক্সা ও বস্তি
রোগ নিবারণ করে। বীক্ষ গ্রহণীৰ মাত্রা
২ মাষা।

शांत्रजीक यसानी । शांत्रजीक यसानी कू बसानी जनूनी अदेव: । विरन्दार शांक्षी क्रका श्रादिनी गांविमी सक्रः ॥ श्रुजान द्योतान् ।

ব্রাসানী ষমানা ঘমানার ন্যার গুণ বিশিষ্ট, বিশেষতঃ ইহা জানিক পাচক, রোচক, গ্রাহক, মাদক ও গুরু। মাত্রো ২ মাঘা।

শতপূষ্পা মিশ্রেষা চ।

পতপুন্দা প্রাছা চ বধুরা কারবা বিসিঃ।
আত্তপ্রা সিড্সছুরা সংবিডা ছত্রিকালি চ ঃ
ছুরা অ'লের পালীনে বিক্রেয়া বধুরা বিসিঃ।
পতপুন্দা লযুক্তীক্ষা শিক্তৃৎ দীপনী কটুঃ র
উক্তা অরানিল প্লেম্ব রবংপুলান্দি রোক্ষৎ।
বিজ্ঞোর ছুধুরা রোক্ষা বিশেষাব্যেনি

অগ্নিয়াক্য হরী হব্যা বছবিট্ ক্রিনি সূলহুৎ। ক্লোজা পাচনী কাস ববি প্লোলিলান্ হরেৎ। অন্যোগাত্রা ২ সাবকো।

सन्का ७ त्यां है।

শতপুন্দা, শতাহ্বা, ব্রুলা, বিসি, কারণী, অভিনয়ী, নিজেরা, নিজেরা, ড ছাত্রকা এই লমত তল্কার নাম । ছারা, শালের, শালীন, মিতেরা, মার্লা ও মিলি এই শকল মৌরীর নাম। শুরুপুন্দা (তল্কা) লঘু, তাকু পিতকারক অভিনীপক, কটু, উষ্ণ, অরর, বারু দমন করি, প্রেম নাশক, এবং ত্রণ, শূল ও চকুনোর্গা নই করে। মৌরী শতপুন্দার করি বিশিষ্ট, বিশেরীর ইহা ক্রেমি শূল, অরিমান্দা, মলবক, জিমি ভ কুনরোগ নই করে। মৌরীফুক্ষ, উষ্ণ, পাচক, জন্য এবং কান, বমি, প্রেমা ও বারু নাশক। উভরের মাত্রা ২ মাবা।

शिक् ।

সহস্রবেধি অতুক্ রাজীক বিশ্বাদটন্। হিল্লং পাচনং ক্লচাং উঞ্জং বাধ্যকাসকং চ দুল ওস্মেল্রানাথ ক্রিনিয়াং পিথবর্জনন্। জীপুলাজননং বলাং যুক্ত পিকার কংশরন্। নাত্রা ৪ রক্তিকাঃ।

হিন্দু (হিং)

সহজ্ঞবেষি, জাতুক, বাহ্নীক, হিছু ও রামঠ এই ওলি ভিক্লের পর্যার। হিছু উষ্ণ, পাচক, কচিকারক, ভীক্ল, পিত বছ ক, বলকারক ও রক্ষা প্রবর্তক। হিছু গেবন করিলে বাতপ্লেমা, খুল, ওম, উদর্রোগ আনাহ (মুদো) ও ক্রিমি, মুদ্র্য ও অপস্মার রোগ্ন নষ্ট হর। নাজা ৪ রতি।

रत्यापत्रम् ।

ভন্মব্যে প্রবাদ করা বংস্যাসমূলী বিজ্ঞানত। ভিতীয় দথাবা কল সমূলী বংস্যাসজা ভয়োলী-বালি প্রবাদ্য। वहुन्। स्तुन्य विका निहानचन्ना स्वाः वदनानवा सीवयको दिन्ही वर्गक्नानिती ह वहुन्य होन्दी क्रिका सुबूका छून्ता क्रिकाः निरकः एकं नवीहार्त्या अवयो क्षत्र मृत्यक् इ नहारनाञ्चका स्थाका सनरकरण वरवादनि । क्रुवाम क्षारक छू क्रिका क्षत्र मुकारकः

पुरे धाकांत स्त्र।

जनारवा टार्चम टाकान कल रम्बर्फ मश्रमात्र ना।त 😉 विव्यवश्वि (व्यामश्री), বিতীয় প্রকার ফল আখথ ফলের ন্যায়; मर्टमात नात शक विभिष्ठे । अकटतत माम ७ ७१ अरे ध्रयम ध्रकात करकत नाम হবুৰা, বঁপুৰাও বিজ্ঞা। বিভীয় প্ৰাঞ্চল दबब्र नाम जायथरूमा, मर्गागका, भीव-इही, विषयी ७ शाड्यनामिनी। इत्रा व्यक्षिपीशक, किला, मृत्, केशा, करात्र 😉 श्वत्र । देश शिक, छेनत्र द्यांग, याहु, कार्यः, ठारुगे, प्रम्य 😘 भूनदर्शांग नष्ठे कदत । दिकीत धकात करनवर अरे প্রকার তা। হবুষের পরিবর্তে চই বাব-হার্য। সময়চর ছুবুৰ বলিয়া যে জব্য विक्रीक इन्न, कारा द्यूषा मरह। हैदा का शविति वा महित्व वृष्ट ।

তেজাৰতী। তেজবল্ফল্ইতি চ। ডেজবিনী ডেজবড়ী ডেজোজা ডেজনীবনা। ডেজবিনী কফবান কানাসাময় বাড্ডাং । পাচনুজা কটুভিজা প্লচি বাজ্ঞানী।

ভেজাবল।
ভেজাবিনী, ভেজাবতী, ভেজােজা ও
ভেজাবি এই সমত্ত ভেজাবতার নাম।
ভেজাবল পাচক, উফ্ল, কটু, ভিজ্ঞা, রোচক
ও জান্তিবীপক। ভেজাবল ব্যবহারে কক,
বাল, কাল, ব্রহােল ও বারু মই হয়।
মাত্রা ১ মাধা।

বালমু।
বালং মুীকেরকহিতে বাল্যান্দ ।
বালকং লাভলং ক্রকং সমুদীপন পাচনদ্ ।
ক্রানাক্রতি বাল্প ক্রোগাদাভিলার ক্রিং।
বাল্যা

প্রধান। বাল, হীবের, বর্গি ও উদীচ্য এই গুলি এবং কেশবাচক ও কলবাচক শক্ষ সমূদার ইকার পর্যায়। গুণ। শীতল, ফক্ষ, লঘু, দীপন ও পাচক।

আমষিক প্ররোগ। জলাস, ক্ষরুচি, বীস্পা, জাছোগ ও আমাছিদার রেণ্ট্র ব্যবস্থো। মাড়ো ১ মাধা।

হিন্দু গত্রী।

ছিলুপ্রী তুক্বরী পূল্কা পূল্ক। পূল্। ছিলুপ্রা অবেজভা তীংক্ষে, গাচনা কটুঃ ॥ ভছিত রু ঘ্রভাশ, জেল গুলু নিদ প্রা।

कं खुनो ।

পর্যার। হিঙ্গুপত্রী, কবরী, পৃথিক। পৃথুকা ও পৃণু।

ত্ব। ক্ষা, ভীক্ষ, উফ, পাচক ও কট়। ইহা জড়োগ বজিপীড়া, বিবন্ধ, আর্দ, প্লেমা, তাল ও বাসুন।শ কণে মাত্রা২ মাধা।

বংশপত্তী। বংশপত্তী হেণুপত্তী পিতা হিছুপিবাটিকা। হিছুপত্তী গুণা হিছেবংশপত্তী চ কাউডা।

পর্যাষ। বংশপত্রী, বেণুপত্রী, পিণ্ডা ও হিন্দুশিবাটিকা।

७१। देश बाङ्नी विटन्य हेटांत ७१% ब्राङ्नीत नागि।

ठाटकती ।

हारमही हुक्किका वृष्ट्रणेश्वरेश्वरमानिका। व्यक्षक्रक विकति निमनी शक्किककः। চাকেরী সুঁথিয়া হচ্যা হকোতা ককৰাতমুৎ । পিকবায়া ক্রিনেন্ন কুইচীবার বাপিনী । আনক্ষী । হিন্দী অখিনী ।

পর্যার দ[্]কালেরী, চ্ক্রিকা, দত্তশঠা. অস্ত্রী, অমলেনিয়া, তলাভক, শিসলী ও অমপত্রক এই আনু ইহার পর্যাব।

তাৰ। চাইনী অধিবৰ্ধক, সচ্য, বৰু, উফ, বাজনীয় নাশক, পিওজনক ও অন্ন। ইয়া গ্ৰহণী, অৰ্থা, কৃষ্ঠ ও অভিযাব বোল নিয়াৰ করে। মাত্রা ৪ মাধা।

८ त्रोहनी । ८ द्राहनी विकासनी वक्तुवाकामित्र्वती । कक्ष्याक्टती वक्ताक्क्षांत्रकाहकवादिनो ।

भूषमा ।

রোচনী অর্থাৎ পূদিনা অধিকর, মুখের জড়তা নাশক, কফর, বাযুপ্রশমক, বশকারক, বমন নিবারক ও অফুচি নাশক। মাত্রা স্থায়া।

বোড়পোইধ্যায়.।

गम्टबङ्गी य वर्गः।

क्षीम्।

সভিন্দুকণ কৰিতে। সসংখ্য দীৰ্ঘপতক ।
কুপীসুং কুলকং কালছিন্দুক, কালপীপুকং ॥
কাকেন্দু বিশিঙ্গুন্দ তথা মৰ্কট ভিন্দুকং ।
কুপীগু শীতলং ডিফ্ৰং বাতলং মদকুল্লছু ॥
পরং ব,ধাছরং প্রাই কফ্পতাক্ষ নাপনম্ ॥
মুখ্যবর্তনং বলাং বিশ্বং কামদীপনম্ ॥
মুখ্যবেকাশহোগক অকংনহমপন্স ভিন্দু ।
প্রাহণী মভিসারক ওদ্তাংশং মহ'তায়ন্ ।
স্বাহ্যকলাং হৌজালাং ন ভিরেশ বিনাশয়েৎ ॥
খলা বীজাং প্রাহাৎ মাজাং ব্যক্তিকো ।

कें हिना।

পর্যার। তিত্ক, আরু রীর্থপত্তক, কুপীন্, কুলক, কালতিক্ষ্ম কালণীল্ক, কাকেলু, বিষ্ঠিশুক ও মুক্তিক্ষিক।

তণ। শীক্ষল, বার্কণক,
মানক, লঘ্, প্রাহী, অফিলার বাবা নাশক,
কল্পন, রক্তণিত প্রশানক মুক্তারক, আগ্লবক্রিক ও কামোন্দীপক। বা লেবন করিলে
শূল, পাফাবাত, অফিলিয়া, অপানার,
মাহনী, অভিনান, তিইনার, মিবারিত হর।
ইহার বীন্ধ প্রহনীর, মান্তা ২ রতি।

G# 1

ভলা পৰা মাতুলানা নাবিনা বিজয়া জয়।
ভলা কক্ষরী তিন্ধে গ্রাহিনী পাচনা লযুঃ চ
ভীক্ষোভা পিতলা নেঃহ বছবাবৃৰক্ষি বর্জিনী।
মহনোভাপনা নিপ্রাজননী হর্ষায়িনী ঃ
ধনুভঙ জলভাগ বিসূচীক্ষণভায়ন।
প্রসূতিত রজনো বজী ছভাপত্যপ্রসূতিকৃৎ ঃ

সিদ্ধি, ভাং।

ভদা, পরা, মাতৃলানী, মাদিনী, বিজরা ও অশা এট গুলি দিছির নাম। কফনাশক. ভিক্ত, গ্রহা, পাচক, লঘু, ভীক্ত, উষ্ণা, পিতৃতারক, মোহকারক, মাদক, অরিবন্ধ ক, ক মোদ্দীপক, নি দাফ-নক ও হর্ষদাবক। ইহার চারা গমুক্তবার, অল্ডাস, বিস্টিকা, মহাভার ও অধিক রক্ষঃপ্রবৃত্তি নিবারণ হওরাকে প্রসা করায়র শৈপিল্য নিবারণ হওরাকে প্রসা ব্যাবা দ্বীভূত হব। মান্তা ৪ রতি।

मर्चियामध्यी ।

शिवासभारि रहांशां वांच्यी स्थिती कथा ।
व्याद्यांशी स्थिती वक्ता सम्माद्यांभीगंभी ह ना ॥
विज्ञा अरुक्तस्यो गर्क्यांक्ष्मि । दिकांविती ।
दिव्यांदिक्ष्म स्थ्यो रक्क्षा ह सम्बादिती ॥
व्याद्यांशांक्षि क्ररणांचर रहांबाक्कर निर्वाहरण ।
वांद्यांशांक्षशांवारमे दिश्वही मणिवांक्ष्म्यां ।
व्याद्यांशांक्षशांवारमे दिश्वही मणिवांक्ष्म् ।
व्याद्यांशांक्षशांवारम् ।
व्याद्यांक्षांत्र स्वाह्यांक्षि अरुक्ष्म् ।
व्याद्यांक्ष्मां स्वाह्यांक्ष्मां क्ष्म् ।
व्याद्यांक्ष्मां स्वाह्यांक्ष्मां अरुक्ष्मां ।
व्याद्यांक्ष्मां स्वाह्यांक्ष्मां स्वाह्यांक्ष्मां ।

मांका ।

मिमामधाती, देशा, मापिनी अ হবিণা এই ওপি গাঁজার সংস্কৃত নাম। हेरा जात्मन्न, रमकातक, कात्मामीनक नियाकात्रक, गर्डशास्त्रक, विकाणी, विष्ना নিবারক, আজেপনাশক 😉 क्का अ भगामापित परभन जना संग-जाम, वाद्यात्राम, काखतात्राम, विष्ठिका, सप्ताकात, जुन, অমুগিত, व्यक्षिमाना অতিপারত রজোরক্ষ নিধারণার্থ ইহা প্ররোগ করা যায়। গালা হইতে এক প্রকার সার প্রস্তুত হইসা থাকে, ভাহার তা গাল্পার ন্যায় ও গাঁলার পরিবর্তে বাৰহার করা হার। চরস্ও গাঁকার এক প্রকার সার, পাঞ্চার সাবের পরিবর্ডে টহ_'ও ব্যবহার করা মাটডে ইহার সাবের মাতা॥• রতি।

बुक्तु हर ।

বুজুর বুর্ব বৃষ্ট্র উদারঃ কনকাজরঃ। দেবতা কিতবজুরী সহালোহী শিষ্ট্রায়ঃ ॥ মাডুলো মহনশ্চালঃ কলে মাতুলপুত্রকঃ। মুজুরো মহবণায়ি বাতকুজর সুঠমুং ॥ ক্ষায়ো ব্যুদ্ধ কিজো মুকালিকা বিনাপক।
উলো প্রস্তুর্ক রেজ ক্যুক্তিনি বিষাপহ।
বেষ্ণাহরণো নিজালননো বুরবর্জনা।
ন্যব্জঃ প্রদেশেন নেত্রভারা প্রসারণা।
বজ্যুমুম্পানেন খাসক্ণি প্রশাবাতি।
ক্যাযুমুম্পানেন খাসক্ণি প্রশাবাতি।
ক্যাযুম্পারাধিকং প্রাহ্যং, যারা ১ রকিকা।

धुङ्बा ।

পর্যার। ধৃত্ব, ধৃত্ত, ধৃত্ত্ব, উদ্মন্ত, দেবতা, কিতব, তৃথী, মহামোহী, পিব-প্রির, মাতৃল ও মদন এই ওলি এবং ফর্ণবাচক শব্দ সমস্ত ইহার পর্যার। ইহার ফলকে মাতৃলপুত্রক বলে।

গুণ। মাদক, বর্ণোৎপাদক, অধিকারক, বায়ুজনক, কথার, মধুর, ভিক্ত, উষ্ণ, গুরু, বিষয়, বেদনানিবারক, নিজাকর মৃত্তবদ্ধ ক। চল্ফের চতুর্দিকে ইবার প্রবেশ দিলে কনীনিকা প্রদারিত হর।

প্ররোগ। জর, কুণ্ঠ, শ্লেমবৃদ্ধি, কণ্ডু, সৃক লিক্ষাদি ক্রিমি ও ব্রুগ নস্ত করে। ইহার ধূমপানে তৎক্ষণাৎ খাদ কন্ত নিবারণ হয়। ইহার মুল্পত্রাদি গ্রহণীয়, মাত্রা ১ রতি।

বোলম্।

र्वाणः अध्यानः श्रांतिश्व स्वानंत्रवाः नयाः। रवाणः त्रकंवतः नीकः त्यकः मोनव नात्रवः । वद्गाः कट्टेक्किक अवस्वन किरवाय श्रितः। स्वतानस्वातं कृषेत्रः अधीनतं विश्वक्तिः । नावाः । नायकः।

शकत्याल ।

বোল, গৰুৱন, প্রাণ, পিও, গোপ ও রন (এবং গোপরস) গৰুবোলের সংস্কৃত নাম। ইহা বক্তবোব নাশক পীতবীর্বা, নিধা, অধিকর, পাচক, মধ্ব, কটু, তিজা, নিধাৰ প্রশাসক ও জনাত্ত্ব লোব লাপক; ক্রোধিকা, জর, অপখার ও কৃষ্ঠ রোগে শীপকারী। মাত্রা ১ মাবা।

नो सिन्तः।

বাধিবুলো মলমুত্রকৈ বুলোংশি স ক্তঃ। বল্যো বাতমলানয়ে ক্রিক্স্মীত বারবঃ। অন্য মূলপুক্ প্রামা, মৃদ্ধি ১ নাৰকঃ।

কাকাখেছীয়ালী হ

কাকাতোদালীকে সংগ্রহী জাবার্য পাবিষ্প, মলরজু ও অভিরক্ত বলে। ইহা বলকারক, বাজরেম নাপক, অরষ্ ও শীত নিবারক। ইহার মূলের শ্বক্ গ্রহণীর, মাত্রা > মাধা।

धुमद्राजः।

धूनहास शीषतरमा समृता शक्तिमी विद्याम् । मृज्यामा कृततासः गाम् जासकः सम्मानकः ॥ संस्कृतास्यक्षां सरमागुन्न नोष्टमः । माजा २ मांस्टको ।

क्रमिष्ड्को।

ক্রমিনজকীর শংকৃত নাম ধ্নরাজ, পীতরস, ওজুরা ও গন্দিনী। ইহা মূত্র কারক, সংগ্রাহী, কফদ্প ও বলকারক। দস্তরোগ, মেহ ও প্রদর রোগে উপকারী।

(अञ्चलग् ।

ক্লীবে ক্লেক্ষ্কণ বোক্ষকতী চ বিশ্বা> নতা। অভন্তী কমনুদ্ বল্যা নিজাভতা বিশ্বাভিনী চ মান্তুশা> বল্বা বোক্তা খাসকাস অৱানদ্ধান্। অৰ্থাবভেষক আভ্য মভীনারক নাগরেৎ চ অন্য কাঁক্টা সেহাঃ।

कारि ।

কামিকে সংখ্ ত ভারতি রৈদ্দেশপ ও অতল্রী বলে। ইহা আছু খণভারত, নিজা নিবারত, তলা নাশক জারবীর বলকর ও অভ্ততা নাশক জীয়, কাল, জর, অর্জাবভেদক ও অভিযুদ্ধ রোগে ব্যবহুর । ইহার ফাট কেন্দ্রীর, চুর্প ও ব্যবহার করা বাইতে প্রাকৃ

কুইবীরোজ্বা ক্রাক্সা ভীত্রশক্তাক্ষতে তথা। কুইবীরায়িক্সাবী বলাপত্রী চ বাহিনী। বঙাজীব্য বিস্চীক এবং ক্লিমাং সুধারুবন। ভজাগ ধোহা প্রকাপক বরভেত্ব ধরোচকন। নত্র প্রধারণ জীক্ষা মুড্যোরাকুবা লীবাহেও। অন্যা: কল্য প্রায়ং বাহা ১ রাজ্যকা।

शकावतिष्ठ ।

লহামিকিকে লংক ত ভাষার কটুবীরা, উজ্জলা, তাঁক্সা, তাঁবলজি ও অফড়া বলে অত্যন্ত কটু বলিরা ইহাকে কটুবীরা বলে। ইহা, অবিকারক, কফলু ও ঘাহক অজী, বিস্টিকা, পরা ক্ষত্ত, ওস্তা, মোহ, প্রলাপ, স্বরভন্ন, ও অরোচক রোগে প্ররোজ্য। নাড়ীবিহীন, ক্ষাণলজি ও ইান্তর লক্তি বিহীন, দক্ষিপাত রোগীর পক্ষেও ইহা বিশেষ উপকারক।
ইহার ফল প্রহণীর মাত্রা > রতি।

मखन्द्रभाष्ट्रभाग्न ।

कष्ट्र हो।

मुननाणि मृत्रेनमः कविक्ष मरळणिरः। कर्जुक्रमः इक्तुते (यस्तुनाः इना मृणः ॥ কাৰ জনোইনা কুলা ইনপালী দীনগৰ্প বুজ্। কাৰ্যান্তি কলিল আনে কনুমী অবিধা আভা । কাৰ্যান্তিৰা কেওঁ ইনপালী দথ্যনা কৰেও। কাৰ্যান্তিৰা কেওঁ ইনপালী দথ্যনা কৰেও। কাৰ্যান্তিৰা কটুজিলা আনোআ অজলা প্ৰসং। ক্ষৰত বিষক্ষি পিত বৌৰ্যা পোৰ ছব। আন্দেশহরণং বেশ্বজননং কাৰ্যীপনং। বিভাল্লো সুমধ্যে বলাং কিভিন্নক্ষঃ আভা । বামা ২ ব্যক্তিক।

মুগনাভি।

मूनमाणि, मूनमम्, मदल्खां ५, कर्छ-त्रिका, कलु ही, दश्म्या। धरेशन कलु -মার নাম। কন্ত্রী ভিনপ্রকার এক लकात कखुती कोमज्ञरण উৎशत्र एत्र, এক প্রকার নেপালে ও অপর একপ্রকার काश्रीत रमर्गा क मज्ञान रमणीत कछ ही कृष्णवर्ग, त्मशाम प्रामीत कथा ही मीनवर्ग 😘 ও কাশ্মীর দেশীর কন্ধারী কলিলবর্ণ। কামরূপের কন্ধুরীই লেষ্ঠ, নেণাল त्वजीत कछ दी सदाम ७ काम्बीत दण्डण त कछ हो निकृष्टे। कृष्णु दिका करू, जिल्हा, चारतेष्ठ, एकथनक, श्रम्, भीक निवा-त्रक ७. जूर्रकाणक। देश वार्, करु, दिष्टदाव, विभि ७ ८ नाय , मिवात्र कटत । खहिकछ हेरा खाटक्रशमाक, त्यायनक, कारमामी गक, दिका निवातक, मूख्यवर्षक यनकत्र ७ किथिए मानक। देशात्र माजा २ इकि।

कर्भ अम् ।

পু৲সি ক্লীৰে চ কপুতি- সিভাজে। বিশ্ববাসুকঃ। অনসায় শুক্তসংখ্যা বিশ্বনাসপি স অন্তঃ। কপুত্রিঃ শীভলো নৃষ্যা শুস্তুত্যো সেথলো সমুঃ। সুত্রভিন্দ্রত্বিকর কক্ষণিত বিশ্ববাহঃ॥ ছাই ভূজান্য বৈরুদ্য যেবেং ছে'র্গন্ধ নাশনঃ।
আক্ষেপ্শননো নিজান্ধননো হার্মবর্গনঃ।
বেছনাহারক: কামণাতি বুজ্জু জমেহছৎ।
কপুরো ছিবিখঃ প্রোক্তঃ পকাপক প্র'ডদ্তঃ।
পকাৎ কপুরতঃ প্রান্থ রপক\ ওপ্রতর্ম;
মানা ৪ র্জিকাঃ।

কপূর।

পর্যায়। কপুরি, শিতাত্র, হিমবালুক, ঘনদার এই শুপি এবং চন্দ্রবাচক ও হিমবাচক শক্ষ সমস্ত ইহার পর্যায়।

কপূর শীতস, বশকাবক, চলের হিচকর শেখন, লঘু, হুগদি, মধুর হুগদ্ধ নাশক, তিক্ত, আচ্চেপ নাশক নিঘালনক, ঘর্মান্দক, বেদনাশক ও কামবেগ শেশমক। ইহা সেবন করিলে শিক্ষ, প্রেমা, বিষদোস, দাহ, হুফা, মুখ বৈরসা, মেদোরোগ ও শুক্রমেহ নিবা-রণ হয়। কপুর ছুই প্রকার পক ও অপক। ইহার মধ্যে অপক কপুরই বিশেষ গুণকর। মাত্রা ৪ রতি।

চীনকপূরিম্।

होन'क म्रेक्ड कर्भू दर कष्क्या कहर मा्डः। कृष्ठेकध् दमिष्द्र खर्था जिक्क समन्त्र माः॥

र्तिवाकपृव।

াশনিবা কপু ও বিক্ত ও কজনাশক। ইহা কুঠা, কণু ও বাম নিব্যেণ কৰে।

क्कृमम्।

কুৰ্ব যুসুন রক্তা কান্ধারং পাতকং সরম্। সংখ্যাত পিশুনভারং বান্ধাকং লোগিত ভিধন। কান্ধার বেশতে কেতে কুমুবং যন্তবেছিতং। সুক্ষাকেশন্ত দ্বীন্তকং পদাপতি তদুব্যন্ ।
বাক্ষীক ৰেশ স্থাতং কুছুমং পাতুর্মাতন্।
কেতকী গভাৰুক্ত কুছুমং সাংগ্রহদারন ।
কুছুমানাই কিং মধুপতি তদ্ধীনিতন্।
ক্রিং পাতুর বর্ণং অন্ধ্যা কুলুকেশন্তন ।
কুছুমং কটুকং নিজাং ক্রিংরোল্গ্ এব ছন্তানিব।
ভিক্রংবি হন্তং বর্পতি ব্যল্পন্থে জ্লুগোহন ।
নারা ৬ রভিকাং।

क्ष्रम। स्मि काफ्रान।

কাখীর, বাজনীক ও পারস্বদেশে ক্রুম উৎপন্ন হব । ''জন্মাধ্যে কাখীর দেশে যে কুরুম জন্ম ভাষা ভূক স্ক্রম কেশর বিশিষ্ট, ঈষৎ বক্তবর্ণ ও পাল্মের ন্যার গন্ধ বিশিষ্ট এই কুন্ধুমট সর্বা-পেকা। উত্তম। বাহলীক দেশীর কুন্ধুম পাত্রবণিও কেভনীর ন্যার গন্ধবিশিষ্ট ও সেল্ম কেশর মৃক্ত ইহা মধ্যম। পারস্য দেশীর ক্রুমের গন্ধ মধ্র ন্যায়, বর্ণ ঈষৎ পাত্র ইহার কেশর সকল ছল এই কুন্ধ নিক্ট। এই প্রপের মাত্রা ৬ রতি।

কুজুমের পর্যার এই কুজুম, ঘূদ্ণ, কাশ্মীর, বাহলীক ও রক্ত পর্যাব।

গুণ। কট্, ল্লিগ্ধ, তিক্ত, বমন 'ন্বারক গু বর্ণ সম্পাদক ।

স্থামরিক প্রবেষ্টা। শিরোহরণ এণ, ব)ট, বাঞ্চদে।য় ৩০ জ্বস রোগে বিশেষ উথকার করে।

ठक्षम् ।

কীখন চন্দম নক্সী ভক্ত দী ইন্তলপ'ৰ্কঃ । প্ৰভাগরো মলগ্ৰন্ধ তথা চক্ত দু'ভিন্চ সং । বাংল ভিকা কৰে প'তা কেচ্ছে রকা ভাগে। দিওমু । এবি কোঠর সংযুক্তৎ চন্দনং লেও বুর্থাতে ই চন্দনং শীতলং রক্তং তিক বার্ণারিবং গরু। শ্রম পোব বিষয়েয় তৃতা পিঞ্জি বাহনুৎ । অস্য কাঠং গ্রামুণ, বারা ৮ র্ক্তকাঃ।

(४ ट हम्मूम)।

শ্রীবণ, চন্দন, জ্লাইনী, তৈলণাকি গল্পার, মলরজ ও ক্লাক্লালাত এই ওপা পেত চন্দনের নমার্ক্ত মাহার আবাদ লিজ, কষাস, পাতর্থী, ছেদন কবিলো মবাভাগ র কুৰুও ছুল্লী হয় উপারিভাগ ক্লোতান্, মাহাতে গ্রান্তি (সাঁট) ও কোঠর পাকে, দেই চন্দনই শ্রেষ্ঠ। শ্রুন লাভল, রক্ষ, তিক্ত, আহলাদ জনক ও প্রা, ইফা, রক্তাপর ও দাহ নিয়েবণ করে। চন্দন কার্তের মাত্রা ও রাত।

তাহাক ।

অওক প্রবরণ সৌৰ্গ রালাই যেগক। তথা।
বংশিকং ক্রিমিল্লং বংশি ক্রিমিল্লন মনার্থ্যক্ষ্ম
অন্তক্ষ্ম কটু হুচাং তিকে ভীক্ষ্ম শিষ্তম্।
লয় ক্রিফি রোগল্প শীত্রাত কক্প্রপৃথ।
কৃত্যা প্রথাবিদা তথা লোহদদ্ বারি মক্ষতে।
অন্তর্গ প্রভাগ বাহা কৃত্যা প্রকাশ ক্তাঃ
অন্তর্গ প্রভাগ বাহা কৃত্যা প্রকাশ ক্তাঃ
অন্তর্গ বাহা প্রকাশ বাহা বাহা বাহা বাহা

ৃষ্ণ সহকু।

ত ওক প্রাং, লোগ, বালার্গ যে গজ, বংশিক, ক্রিক , ক্রিক র ও সন্ধ ক এই ওপি রক্ত ওপন ংর্ষ । অওক উক্ষ, কটু, হকেন উপাধ্বক, হিজ, হাক্ষ পিততনক ও লালু। ইংগ কারিগা, চল্লু রোগ, বমুক্ত প্রশিক্ত প্রাকারক, ইংগ জলে ফোললে ভূবিবা যার অগুরু ছইছে নিষ্কা'নত ক্ষেহ অগুকর নার গুণ বিশিষ্ট অগুরুকাটের মাত্রা ৩ রতি।

स्वायामः।

কীবাসং সরজঃ আবং ক্সিনেকো। বৃক্ষপুপকর।
জীবাসো মধুর জিকা ছিলোছা ছবরং সরঃ ॥
পিওলো বাত মুদ্ধাক্ষি দ্বর রোগ কফাপছঃ।
রক্ষোছ ঘেদ দে গাঁছা) ফিনি কগু দ্বৰ প্রাপুত ॥
বেদনক কফোৎসারী শোণিতফ্র ডি বারকা।
আক্ষেপহরবো মুক্ত জননো অবনাশনঃ ॥
বেদনা শননো বলা আনবাত প্রশাভিত্রং।
মাত্রা ১ শীষকা।

हाभिन्देश्य।

জীবাস, সরলজাব, লাবেষ্ট ও বৃশাবৃপক এই তাল ইহার প্যায়। ইহা
মধুর, হিল্ক, লিডোফ, কষার, সর,
পিতজনক, অর্থাকারক, কড নিঃসারক
ম্বকারক, বেদনা নিধারক ও বলকর।
ইহার হারা বায়, মতক রোগ, নেত্র
রোগ, স্বরণেশ, ক্ল, ত্বেদ, ভূগন্ধ, জিমি,
কণ্ড, বন, রকজাব, আক্ষেপ, জর ও
আমবাত প্রাথমিত হয়। মাত্রা ১ মাবা।

छ देलना ।

কল'দ্বাচ বহুলা পৃথীকা বিশুটাপি চ ভট্ডেলা সুহদেলা চ চক্ষবালা চ নিজ্বটিঃ । দুলৈলা কটুকা পাকে রলে চানলকুল্ডাঃ। দুল্লোভা সেল শিষাক্র কণ্ড্রাস ভূষাপদা। কলাস বিষ বন্ধান্য শিরোপ্ত বৃথি কাসমূহ। জনায় বীক্ষা স্থান নিবাক্ত ।

वक् अनः है । दिग्मी धनाईही भूवती।

ফুল এলা, বহুলা, পৃথ্টকা, ত্রেপুটা, ভদৈলা, রহুদেলা, চক্রথালা ও নিক্টি এই গুলি বড় এল।ইচের নাম। এই এলাইচ কটু পাকেও কটু, অগ্নিকারক, লঘু, রহল ও উঞ্চ। ইহার হারা, গ্লেমার রক্তাপিত, কণু, খাল, ড্ডা জল্লাস (গাবমি বমি করা) বিষ্দোষ, কাল বমি, বস্তিলোগ মুবলোগ ও লিলোহোগ নাই হয়। ইহার বীজ গ্রহণীয়, মাত্রা মাধা।

সুবৈদ্যলা।

সুক্ষোপকুষিকা তৃজ্ঞা কোরদা জাবিড়া ক্রটি।
এলাস্ক্রা কফখাস কাসাবোঁ যুক্তভু হং ।
রবেডু কটুকা শীডা গঘুী বাডদরী মঙা।
অস্যা বীজা এদ্বীয়া মাজা ১ মাষকঃ।

গুজরাটা এলাইচ, ছোট এলাইচ।

স্থৈপা, উপকৃষ্ণিকা, ভুচ্ছা, কোরদা, জাবিড়া ও বুটি এই ওলি ইহার নাম।
ইহা কটু শাতিল, লঘু ও বাবু নাশক।
ইহা দারা কফ, কাস, শাস, অর্পন্ন ও মূরকৃচ্ছে বোল উপশ্মিত হব। ইহার বাজ
গ্রহণীয়, মানো ১ মাধা।

ত্বক্পত্রম্।

ভুক্পত্রথ বরাজ স্যাদ্ ভূল । চোরস্তবোহকটন্। ভূচ । সহ্যা কটুক আৰু ডিকাণ্ড ক্লকন্। পিকস কলবাডর । কগুমাকচি নালনন্। শ্রহার রোগ বাডালঃ ফিনি পনিস অক্ষম ।

रियो ज्ञा

ত্বক্পত্র, বরাঙ্গ, ভৃত্ন, চোর ও উৎকট এই সমস্ত তত্ত্বের নাম। তত্ত্ব শঘু উষ্ণ, কটু, স্থান্ত, তিন্তু, কৃত্ম্বাম, কুন্ক। ইহা ভাষা কন্ধ, বারু, কণ্ড্যাম, অর্ন্নচি, প্রাইজাগ, বাতার্শঃ, ক্রিমি, পীনদ নিবারণ ও উক্র কর হয়।

ত্ব

ত্বক্ৰাণীতু ওড়জুক্ৰীয়তথা দালনিতা মতা। উকাৰাজনিতা ৰাখী ভিজা চানিল শিৱ হং ॥ সুমুখ্যি অললা বৰ্ণা শ্ৰুষ্বাৰাৰ ত্ৰাগহা।

बाक्टीति।

স্তুত্বক, পাছতক্ ও দারুসি চা এই গুলি দারুচিনির নাম। দারুচিনি স্থাত্ত, তিজ্ঞ, স্থান্ধি, গুল্লেনক ও শরীনের উৎকৃষ্ট বর্ণ সাধক। ইহার হার। বায়, পিত, ম্বশোষ ও জ্ঞা দূর হয়।

काकीकनम्।

মাডীকলং মাডিকোষং দাল্ডীকল দিউ।পি।
মাডীকলং রনে ডিক্রং ডীক্সেলং রোচনং ল্যু।
কটুকং দীপনং গ্রাহি মুখ্যং ক্লেডানিলাপ্তন্।
নিহারি মুখ্যেরস্যাং দল দৌগল্য কূল্ডাঃ।
ক্রিকি কাল বনি খাল শৌখ পীন্য ক্লেডাঃ।

ব্যায়কল।

জাতিফল, জাতীকোষ ও মালতীফল এই গুলি জাবফলের নাম। জাবফল তিক্ত, তীক্ষোঞ্চ, রোচক, লবু, কটু, দীপন, গ্রাহী ও প্ররপরিক্ষারক। জাবফল বাবহার করিলে বাবু শ্লেমা, মলের তুর্গন্ধ ও ক্লফবর্ণ, ক্রিমি, কাল, বমি, খাল, শেষ, পীন্স ও জন্দোগ নিবারণ হয়।

लवक्ष्य ।

नवन (व्यक्रपूप किश्वाप किश्वाप्तकम्। नवन कर्वेक डिका नवृत्तव दिङ् विगय्। খীপনং পাচনং রক্ষং কটপিতা নিক্ত।
নুনাং ছক্ষিং তথাখানং পূচনু বিশ্বনিব্যাহ ।
কাসং খাসক হিকাক কয়ং ক্রিটিডি গুনুব।
নানা ১ মাৰ্ছ্যঃ

ল 🐙

পর্যার। লবদ, বিশ্বস্থা, ট্রীনংক্ত ও প্রপ্রাক ।

গ্রণ। ইহা কটু, ভিজি, পরু, চল্মর হিতকারক, শীতল, দীপন, গৈচেক ও রোচক।
প্রেগে। ক্রড়, শিক্ষ, রজনদোর, তৃফা।
ব্যন, আল্লাল, শুল, কাস, বাস, হিকা ও
ক্ষার ক্লোকে আভ উপকার করে। মাত্রা
১ মাধা।

क्रोमःभी ।

ষ্কটাখাৎসী জুড়জটা ষ্কটিলা চ তপৰিনী।
বাৎসী বিজ্ঞা ক্ষায়া চ মেধ্যা বাবি বলপ্ৰদা।
স্বাহী হিমা তিলোখাল দাহাপলার সুঠনুও।
লেপনাক্রকতাৎ হবি অর্থ চর্মোন্তবং গদন্।
অস্যা সুল্থ গ্রহণীয়াৎ যাত্রা ২ ইক্রিকাং।

कहामाः मी।

পর্যার। জ্ঞুটামাংশী, ভূতজ্ঞ্টা, জ্ঞাটলা, তপস্থিনী ও মাংশী।

ত্যা। তিক্ত, ক্যায়, শ্বরণাক্তি বর্দ্ধক, বলকারক, কান্তিপ্রদ, স্থাত, শাতল ব্রিদোষ ও কক্ষতা নাশক।

আমেরিক প্রবোগ। রক্তবোগ, দাংগ, অপস্থার, কুন্ধ, জ্বর ও বিবিধ দর্ম্ম রোগে বাবছের। মাত্রা ভারতি।

युवामारमी।

ৰুৱাগন্ধকটি বৈভ্যা সূত্ৰভিঃ লালপৰিকা। দুৱাতিকা হিনা ৰাভী লঘুট পিতা নিলাপহা। च्दत्रांतृत् कृषत्रकाञ्ची कृषे कान विवानिती। वाजा ७ व्रक्तिकाः।

भूवामाश्मी, এकान्नी।

পর্যার। মুরা, গন্ধক**ী, দৈ**ত্যা, মুর্বাভ ও শালপর্বিকা।

ত্য^ণ। তিজ, শীৰল, স্বা**নু, লঘু,** ও বাষ্থিত নাশক।

আমরিক প্রেরোগ। জ্বর, রক্তদোষ, কৃষ্ঠ ও কাস রোগে ব্যবচ্ছের। মারো ৬ রভি।

कर्फ ब्रः ।

কর্ড রো বেধমুখাক প্রাবিতঃ কপোকঃ শঠী।
কর্চ্চার দ্বীপানো ক্লচ্চার কৃটক বিজ্ঞ এব চ।
নুগদ্ধীঃ কটুপাকস্যাৎ কুঠাপো এগ কাসমূহ।
উজ্ঞোগদ্বঃ হরেজ্ঞাসং গ্রন্থাত ক্ল ক্লিমীনু ই
পলগৎ গণ্ডথালা মপচাং মুখলাত্য ছহ।
অস্যা মুলং গ্রাহাং মাত্রা ও ইজ্ফিকাঃ।
স্পাণ্ড

পর্যাব ৷ কর্চর, বেধমুধা, ভাবিড়, কল্লক ৩৪ শঠা '

ওাণ। অগ্নিদীণক, রোচক, কটু, তিক্ক, মুগদ্ধি, উফাও পাণু।

জামরিক প্রেরোগ। কুঠ, অর্শং, রণ, কঃস, খাস, গুল্ম, বারু, কফ, ক্রিমি, গল-গও, গওমাসা, অপচী ও মুখের অড্চা দক্ত করে। ইহার মূল গ্রহণীস, মাজা ভরতি।

পশাশীশঠী।

্ গম্পলালী সুগদ্ধস্থাৎ ক্রবাৎ কান্দীরে প্রসিদ্ধ।) শসপলালী বড্মঘা সুত্রভা গছমূলিকা। বছারিকা গছসমু বঁগুঃ পৃথুপলালিকা। ভবেন্ধৰপ্ৰাণী ডু ক্যায়া গ্ৰাহিণী সমুদু। ভিজাভিজা চ কটুকা মুক্ষাস্যনসমানিনী । নোৱ কাস বৰ খাস শুসহিলা গ্ৰহাপহা।। অস্যা বুল\ গ্ৰহণীয়\ুধাত্ৰা ৬ ব্ৰক্ষিকাট।

हिन्ती शक्तशनानी।

প্র্যায । প্লাদীপঠা, ষড্গ্রস্থা, সুব্রছা, গন্ধম্লিকা গন্ধারিকা, গন্ধবধ্, বধ্ ও পৃথ্পলাশিকা।

জুণ। ক্ষার, গ্রাহী, লঘু, ভিক্তন, তীক্ষ, ক্টু, অনুষ্ঠা, মুখের মলশ্রিকার ক'রক ও গ্রহদোষ নাশক।

জামধিক প্রযোগ। শোপ, কাস, এণ, খাস, শূল ও হিকা রোগে ব্যবস্থে। ইহার মূল গ্রহণীয়, মাত্রা ৬ রতি

जाभेगता।

জাঙীক্সস্য ত্বক্ প্রোক্তা জাতীপত্রী ভিষণ্যইয়ঃ জাঙিপত্রী স্যু, ঝাবুঃ কটুজা ক্লভিবর্ত কৃৎ। কৃক্কবাস ব্যিখাস ভূজা ক্রিমি বিবাশহা । বক্লুবৈশ্বাস্থননী ভিক্তা বৌর্যক)হারিনী। বারা ৪ রক্তিকা।

प्रशिद्धी।

জারফলের ত্বক্কে জারিপত্রী বা জারত্রী বলে। জনিব্রো লঘু, স্বাচ্চু, কটু, উষ্ণু, কচিকারক, বর্ণের উৎকর্ম সাধক, মুখবৈশন্য জনক, ভিক্ত ও দৌর্মদা নাশক।

প্রবোগ। ইহা কফ, খ'দ, কাম, বৃষ্ণি, পুঞা, ক্রিমি ও বিষ্দোষ নষ্ট করে। মাতা ও বৃত্তি।

্ককোলম্।

काबानर रवीनक प्रशासन उसा रकायसम्बर मृज्युः

কভোগৎ সমু খীন্টোখন ডিজন জ্বাৎ ক্লচি প্রথম মু

আস্যাদ্রে বিশ্ব হারে বিশ্ববিভাষয়াক্ত হং।
বাহা ৬ রতি।

কাঁকলা বিশ্ব দীতলচিনি।

পর্যার। করে। ক্রিকেল

তাণ। ইহা লখু, জীখা, উষ্ণে, তিজ, জন্য, রোচক, মুখের মুর্ণনা নাশক জ কফ নাশক।

আন্মিক প্ররোগ। জন্মোগ, বাত-ব্যাধি ও চক্ষুরোগে ব্যবস্থের। এই বাংকর মাত্রা ৬ রতি ।

গন্ধকোকিলা গন্ধনালভী চ।

বিধোজা কফছৎ ডিকা সুগদ্ধ গছকোকিলা। গদ্ধকোকিলয়াডুলা। বিজেয়া গদ্ধনালতী ॥ শানা ৪ ব্ৰক্তিকাঃ।

বোঁড়বচ ও গন্ধনাত্রা। এই সুই দেবা, প্লিঞ্জ, উঞ্চ, কফনাশক. ভিক্ত ও সুগন্ধ। মাত্রা ও রভি।

পত্রকম্।

প্রভ্যালপর্ক তথা সাং প্রন'সক্ষ্ প্রক্ষেপ্রং কিকিওাক্সেল্ড পিজ্জি স্মু ঃ নিহার কক্ষাতালো ফ্রামাস্টিপীনসান্। বারা ১ বাষকা। '

ट्डब्य वा

পর্ব্যার। পত্ত, তমালপত্র ও পত্ত পর্যাব। তথা এই দ্রবা কিঞ্চিং মধ্র, ভিক্ষোফা, পিচ্ছিল ও লঘু। প্ররোগ। ইহা কল নার্চ, অশা, হারাণ (গা বমি বমি বুল), আফুচি ও পীন্দ রোগ দূর করে ইহার মাত্র। ১ মাধা।

न ठाक खुनिका ।

লভাক্ষুরিকা ডিজা বাহিনী বুলী হিমা সমূহ। চক্ষা ভেলিনী সোৱা তৃত্বী মন্ত্রীসাম রোগছৎ।

ক্ষা বীলং গ্রাহং শাক্ষ্যীক্ষাকায়।

লতাক্**জুরী হিন্দী মুহ্**কদান।।
তিওপ । পিতাকন্তুরী ভিডেপ, সাতু, বলকারক, শীতেল, লড়, চক্ষা ও চেদক।

প্রবোগ। ইহা ক্লেমা, ড্ফা, বন্ধি-রোগ ও মুধ্রোগ নিবারণ করে। এই বীজের মাত্রা ভুরতি।

यहानी।

গভনাজ্যারবীর্যান্ত বীর্যাকৃৎ কজবাত ৯৭। কণুকৃত হর্ম নেত্রম সুগল্প স্বেদ্ধভনুৎ ॥ নাত্রা ও রক্তিকান।

वाडानी।

বাটাশী বীর্গা কারক ও সুণন্ধ।
ইহা বার কফ কণ্ডু কুণ্ঠ নেত্র গোগা, স্বেদ
ও তুর্গন্ধ নিবারণ করে। ইহা মুগনান্তির
ন্যার অংশুব পদার্থ। ইহার অভ্যন্তরশৃ রেণু মুগনাভির পরিবৃত্তে বাবহার করাসাইতে পারে। মার্টা ৪ বটি।

भवकी निर्शामः ।

কুলুকুৰু যুকুলং ল্যাৎ সুগন্ধ- কুল্মইড্যালি। শিলুকুৰ্মানুদ্ৰ বিষ্ণু ভীক্ষন্ত্ৰ্যা কটুৰ্যগ্ৰেৎ। করছেগ্রহারকার মুখরোগ ককানিলান। নাহপ্রহা শিকানী র্নেশনালৈত্ত্ত্ব্যক্ত ক্তঃ । নামাশ্য রক্তিকাঃ।

कुल्बद्धानि ।

পথার। কুন্দুরু নৃক্তন স্থান্ধ ও কুন্দ।

থাণ। ইহা মধুর, ভিজুত, ভীক্ষা, কটু
ও পুনের সাম্মারক্ষক।

প্রবোগ। এই দ্রব্য হার, কেল, প্রত, অসক্ষী, ম্বরোগ, কফ, বায়ু, দাহ, প্রদর ও পৈতিক দীড়া নিবারণ করে। ইহাব কেলপন ইনজ্যাৎপাদক। মাত্রা ৪ রচি

दम्यभ्य ।

দেবণার নাতে দার ভরণার্মিন্সদার চ।
মন্তদার ক্র'চিলিন কিলিন সুরভুরুছঃ ।
দেবণার লগুলিক চিলিন উল্লেখ্য কটুপাকি চ।
নিবভাগ্যান পোলান তলা বিকা অরাম বিব ।
প্রানের পান্স লেখ কাল কণ্যু সমীরনুহাঁ।
মারা ৮ র্মিকান

CHARITY I

দেবদাব্য, দাক্স, গুদেদাক্য, উন্মাদাক্ষ, মশ্বদার্ম, ক্ষকিলিম, কিলিম ও ক্ষ্মভুক্তহ এই গুল দেবদাক্ষম প্রয়ায় ।

ত্তণ। ইহা ল্যু, দ্বিশ্ব ভিত্ত ও উষ্ণ। ইহাপাকে কটুরদ বিশিষ্ট হয়।

প্ররোগ। ইহা বিবন্ধ, আগান, শোগ, আম. করা, কিন্তা, জর, রক্তদোধ, প্রমেচ, পান্য, প্রেমা, কাস, কণ্ডু ও বারু নাশ করে। দেবদায়ে কাঠের মান্তা ৬ রক্তি।

पूष्क कलम् ।

তুদুক্লং ক্ষেত্ৰত কোনো বনজং সানুজোহডক:।
তুদুক্লং প্ৰতিও ডিজও কটুপাকেংপি তথ কটু।
ক্ৰেজাকও দীপনও ডিজও ক্ৰচাও লঘু বিদাধি চ।
বাতলেজাকি কৰ্ণেই শিলোকক্ গ্ৰক্তা ক্ৰিমীন্।
কুঠশুলাক্লি খাস দীৰক্চ্ছু।বি নাশবেং।
অস্য বীজও প্ৰাহৎ নাজা ২ নাৰকং।

তৃপুরু।

পর্যার। তুছুরু, সৌরভ, বনজ ও সামুজ, অন্ধক ও সৌর।

গুৰা। ইহা ভিক্ত, পাকে কটু, রক্ষ, উক্ত, অন্নিদীপক, তীক্ষ, ক্ষচিকারক, লবু ও বিদাহী।

প্ররোগ। ইহা বাছদ্রেমা, নেত্র-রোগ, কর্ণিরোগ, ওঠরোগ, শিরংগাড়া, দেহের ভার, ক্রিমি, কুঠ, শুল, অরুনি, খাস, প্রীহা ও মৃত্রকুক্ত নিবারণ করে। ইহার বাজ গ্রহণায়, মাতা > মাধা।

नथ्य ।

মধা বাজনধা বাজায়ুখন চক্রকারকন্।
নধা কপো নধালোকা খনুইটাকলালিনা ।
নধ্বনা গ্রহপ্রের বাজান্ত মর কুঠ কং।
লগ্জন প্রকাশ বর্ণা স্বাপুরণ বিবাপকন্।
অলসমা মুধ বৌর্কান্ত্রশাক রস্যোহ কটু।
বাজা ব রক্তিকে।

नर्थो ।

পর্যায়। নথ, বাজেনথ, বাজিন্থ, চলেকারক। নথ জ্বল ছইলে ভাহাকে নথী বলে, ইহার পর্যায় হত্ত ও হটু-বিলাসিনী।

উভবের ৩৭। শবু, উষ্ণ, শুক্রজনক, বর্ণা, স্বাহ্, স্বাহে ও পাকে কটু, গ্রহ ও অসম্প্রীনাশক। আমারিক প্ররোগ। তাণ ৩ বিষয় পীড়া, মুখনে বিষয় প্রভৃতি নিবারণ করিয়া উপকার করে সমাতা ২ রভি। ইহার আভ্যন্তরিক প্রয়োগ অতি অয়।

मुक्रकर में क्रिमुखक्य ।

যুৱক । বিরা । যুক্ত বিরু বারির নামকন্।
কুরবিদশ্চন । তেড়িক কেলের কং।
ভারুরক ওলা ভ ভারি নাগরমুক্ত ।
যুব । কটু হিন । আহি ভিনিত্র ক্তার হহ।
আয়ুলবেশে যক্তাও যুবক । ভংগালাকে ।
ভারুলবেশে যক্তাও যুবক । ভংগালাকে ।
ভারুলবেশ যক্তাও যুবক । ভারমুর্কন্।
নাতা । নাবা।

মুকা ও নাগর মুকা।

পর্যার। মৃত্তক, মৃত্ত, কুঞ্বিক্স, কোর, কনেক্সক ও মেঘবাচক শব্দ ,সম্দাব ইহার পর্যায়।

ভরমুকার পর্যার। ভরমুকা, ওন্দা ও নাগরমুক্তক।

গুণ। কটু, শীকল, গ্রাহী, হিক্ত, দীপক, ক্ষাধ ও পাচক।

আমরিক প্ররোগ। কমবৃদ্ধি, রক্ত-পিন, ত্কা, জ্বর, অভিসার ও ক্রিমি প্রভৃতি নম্ভ করে। এই ত্পের মূল গ্রহ-পার, মারো > মায়া।

মেধিকা বৰ্নেকিকা চ।

মেধিকা মেধিনি যেবি ছবিশনী সজপত্রিকা।
বোধিনী বজবীয়া চ জাতি বঁজকলাজবা ঃ
বল্লয়ী চ কামব্যা বিশ্রপুষ্পা চ কৈরবী।
কুলিকা বজপণী চ পিক্তমিৎ বায়ুনুৎ ছিখা ঃ
বেবিকা বাজপ্যনী কেছ্য্যী জ্বনাপিনী।

ক্লডিপ্ৰহা হীপনী হ ব্লক্লিন্ত প্ৰক্ৰেট্ৰিনী । তত্ত ৰাজ্য এবা বল্যা বাজিনাং ক্লিক্ল্ট্ৰু পুজিকা। অনয়োবীকাং প্ৰাৰং ধানা ২ ক্লিক্টেন্ট।

त्मथी ७ वनद्भारती

মেথিকা, মেথিনি, ক্রি, দীপনী, বছ-পত্রিকা, বোধিনী, বছবীলা, আজী, গন্ধকলা, বল্লরী, কামমন্থা, ক্রিপুলা, কৈরবী, ক্রিকা ও বছপনী ক্রিপুলার মেথীর নাম।

মেবী বাবুনাশ্কু প্রের্থাশিক, জরম, ক্রচি-প্রায়, জারাইপিক ও রক্তলিও প্রকোপক। বনমেবী উহা অপেকা স্বরুত্ব বিশিষ্ঠ ও বাজীবনের প্রেক হিচ্চারক। ইহা-দের বীজ গ্রহণীয়, মাত্রা ২ মাবা।

एक्कीत, कृक्कीत, कामाकाकी।

জীরকো জরনোজালী কণাস্যাদ্যার্থজীরক।
কৃষ্ণান্তির সুগজন উঠেবোদ্গার শোগন।
কালাজালী তু সুখনী ফালিকা চোপকালিকা।
পূলীকা ক'রবী পূলী পূলুকুজোপকুঞ্জিকা ॥
উপকৃষ্ণী চ কৃষ্ণা চ সৃহক্ষারক ইডাপি।
জীরক ভূতরং রক্ষং কটুজং দ্বীপনং লঘু ॥
সংগ্রাহি শিশুলং নেখ্যং গভালার বিশ্বজিকৃং।
জরন্ধং পাচনং সুখ্যং বল্যং রচাং করাপহন্ ।
চক্ষ্যং পাচনং সুখ্যং বল্যং বিসার কং।
নামা ২ ন্বকৌ।

एक्रजीता, इक्षणोता कलांभी।

জীরক, জরণ, অজাজী, কণা ও দীর্ঘ জীরক এই সম্বার শুক্তজীরার পর্যার। ক্ষাজীব, সুগন্ধ, উদ্বার লোগক এই সমস্ত ক্ষাজীরাব পর্যার। কলাজাজী, সুষ্ণী, কালিকা, উপকালিকা, পৃণীকা, কারবী, পৃথুক্ষা, উপক্ষিকা, উপক্ষী, কুঞী ও বৃহক্তার এই সম্বার কলোজীর পর্যার। তাৰ। তিন প্ৰকার জীরাই ক্লম, কটু, উফ, অধিদীপক, লঘু, সংগ্রাহক, পিত্ত কারক, অরণশক্তি বর্জক, জরারুশোধক, জরম, পাচক, শুক্রবর্জক, বলকারক, ক্ল'চকারক, কফনাশক, চক্লুর হিতক্ষর।

প্রবেশ। বার্ছারা উদরামান, ওকা, বন্ধন ও অভিসার নষ্ট করে। ইহাদের বীজ গ্রহণীর, মাত্রা ২ মাধা।

मिस्लकः।

নিক্ষকৰ তুরুজ্য ন্যাদ্যতো যবনদেশত।
ক'পতৈলক সংখ্যাতা তথা চ ক'পনানকঃ ।
নিক্ষক কটুকঃ বাদুঃ লিখোকঃ প্রক্রাভিত্ব।
নুবাঃ কঠাঃ বেদকুঠ জারদাহ প্রবাপনঃ।
মুক্রভাত'ভারী মুক্তকু কর্মানানা।
মারা ৪ মুক্তিকা।

भिनाशम।

। সিহনক, ভুরুষ্ক, ঘবনদেশর, কপি-টৈল এই থালি এবং বানরবাচক শব্দ । সমস্ত ইহার গ্রায়ে।

কা। ইহা কটু, স্বাহু, স্পিন্ধোফ, শুক্রাল, কাজিকারক, বলকর ও কণ্ঠ শোধক।

প্রবোগ। শিলার্য স্বেদ, কুট, কর্ম। দাহ, তার দোষ, মৃত্যাতাত, ক্ষামারী, মৃত্রক্ষ্ ও ক্ষতুনিবাবণ করে। এই নির্গাণের মারোও রজি।

देभटलगणम् ।

লৈলেয়ন্ত লিঙাপুল্পাৎ বৃক্ষৎ কালানুলাৰ্যকন্। ইললেয়ৎ লীডলং ছাৰ্যৎ কফলিডৰয়ৎ লয়ু ই কণ্ডু কুঠান্দায়ীৰ্যি নিৰ্ভাগ্ গ্ৰহমক্ষ ছাৎ।

रेनलक। हिन्नी फुद्रस्ट्रहीन।

প্র্যার । শৈলের, শিলাপুস্প, বৃদ্ধ ও কালামুসার্থ্যক । গুণ । শীক্ষ, চদ্য, লবু ও কফ্পিত নাশক।

আমারিক প্রয়োগ। কণ্ডু, কৃষ্ঠ, ক্ষমানী, দাহ, বিধ্বদোষ ও কার্ন পঞ্চি বেংগ উপকারক।

महत्र ।

সরসঃ পীত্রকঃ সাত্থা সুর্ভিদ্রেক।
সরলো মধুরস্তিকে। কটুপাকরনোপঘ্ ॥
বিধোকঃ কর্ণকঠান্দিরোগ রন্দোত্র মাতঃ।
ক্ষানিস্থেদ দাহকাস মৃত্যা ত্রণপ্রঃ।

मन्नकाष्ठे हिन्सा ननाभवन ।

প্যাায়। সরস, পাতির্কা, ও স্বাভি-দারক।

তাণ। ইহা মধ্ব, শিক্ত, লালু পাকে কটু ও লিধ্যোঞ্চ।

প্রেণাণ। ইথা ধারা কর্ণ রেণার, নেররোগা, কফ, বাসু, কেন্দ, দাহে, কাস, মূচ্ছেণি ও রেণরোগ এবং বাক্ষণ ৬য় নিবারণ হয়।

नाभदक्षत ।

নাগপুক্ষা আ তোনাগঃ কেপরো নাগকেপর:।

চান্দেরো নাগ কিল্লক্ষ্য কলিডঃ কাঞ্চনাগ্রঃ
নাগপুক্ষা ক্ষায়োজা কলেও তথাম প চন্দ্র।

আরক্ষ্ ভ্রাবেদ ক্ষমি হালাস নাশনদ্র।

দেশগন্ধা কুঠ বীসপ কক্ষিত বিবাশবদ্ধ।

नाशटकन्द्र ।

পর্যায়। নাগপূজ্প, নাগ, কেশর, নাগকেশর, চাম্পের, নাগ, কিঞ্জত স্থ স্বর্ণ পর্যায়।

থা। কথার, উঞ্চ, কুফ, লঘুও আমণাচক। আৰ্ক্টিক প্রযোগ। জন, কণু, তৃষ্ণা, সেদ, বদ্দালীলান (গা বদি বদি করা) দৌর্গনা, কুই, নীনর্গ, কফ, ণিত ও বিব-দেশে প্রভৃতিকে প্রযোগ করিলে উপকার সম।

विक्तिर्गम्।

প্রবিপর্বং প্রবিক্ত ক্ষাকপুত্রক ওচ্ছকন্। নীলপুত্রাং সুসক্ত ক্ষরিত্রংতলপর্বকন্ । প্রহাপর্বং ডিজ্ডাক্ষাং ক্ষরিত্রংশীলনং লগু। কক্ষরত বিষধান কণ্ডুকোর্মকা ক্ষরিত্র বি

(गटलेश किनी गतिवन ।

প্যাধি। প্রস্থিপর্ণ প্রস্থিক, কাকপুদ গুডাংকে, ন'লপুপা, স্থাৰ ও কৈলাপর্ণিক।

গুণ। কিন্তু, গীক্ষ, কটু, উষ্ণু, অগ্নিদা পক ও লগ্।

আমবিক প্রয়োগ। কফর্দ্ধি, বাষ্ রুদ্ধি, বিষ্ফরোগ, স্থাস ও কণ্প প্রভৃতিতে বাবস্থেষ, ইহার ভূর্যন্ধ নাশকত। শক্তি আছে।

খে।নেবকম্

(এদিপর্ণ সৈ)বতে দ ঈবং সুগক: কে'নেযা ব্নের ইভিলে'কে প্রসিদ্ধ।) ঝৌরেরকা বহিবঁহা স্তক্ষরক ক্রুন্ লিরিরের স্তক্ষালি স্তক্ত্রন্ । ক্রেন্সেকা কটু স্বালু ভিকা বিকা বিলোধনুং। মেধা স্তক্ষরা ক্লচা রক্ষোত্রা অরক্তরিং। হতি ক্থান্ত ভূত্বাহ দৌর্গছ) ভিস্কালকান্।

शिकी धृतनता

এই জব্য গ্রন্থিপর্ণের প্রকার ভেন্ মাজ ধ্রের বলিয়া প্রশিদ্ধ। ইহার পর্যার। ছোলের বৃহি বহ, ভক্বহ, কুকুর, দীর্গরোম, ক্রী, ভক্পুলা ও ভক্তর।

ত্তণ। কটু, ভাতু, তিতুলীকা, ত্রিবোধ নাশক, মেধাবদ্ধ কি, আইন্দিক, ফচিকারক রাক্ষম নাশক ও ক্রিকিন্সিক।

আন্ত্রিক প্রবোগ क्षेत्रका, কৃষ্ঠি, রক্ত-দোষ, ভৃষ্ণা, দাহ, দৌর্মী ও ভিলকালক রোগে বাবছের।

Tara I

(अक्रिमर्व देवतरकपः क्रावेखेत के कि

মেপাল বেশে ভগত।)

নিশাচরে ধনহরং কিছবো গ্রহাসক। । রোচকো মধুর ভিকং কটু পাকেকটুর্গলং । তীক্ষো হবো হিমে হ'বস্কুকস্কফানিসাম। রক্ষে জীবেশ্যেশে। আ অব্যাহ্য বিশ ব্রানু ।

***ভটেউর**।

এক প্রকার এস্থিপর্ণ নেপাল দেশে ক্ষতেন।

প্যথায়। নিশাচর, ধনহব, কিছেব ও বনহাসক।

জা। বোচক, মধুব, তিক্ক, কটু, পাকেও কটু, পথু, হাঁক্ষু, প্রদা রাক্ষণ ভ্যমাণক ও শে:ভা সম্পাদক।

আম্বিক প্রবোগ। কুঠ, কণ্ড, কদ, বাগ, তেদ, মেদোরোগ, রক্তদোগ, জর, ভুর্গদ্ধ, বিষ ও ত্রণ নত্ত করে।

পর্ম টী

(পংপ'টা ইভি প্রনিদ্ধং পদাবতী ইভি হ: উত্তর দেশে সুখতি স্কবান্।) পংপ'টা রঝন। কুখা অইকা কমনী কনী। ক্ষতুকুখাগ্রি সংস্পান্য অতুকুসক্ষবর্তিনী ঃ नश्न मि क्राता किका निनिता वर्षमृत्य । विवत्तवस्त्रो कप् कक्ष्मिक्ष कृषेत्रव ॥

शिको भगावको।

পর্যায়। পর্ম টী, রপ্তনা, ক্ষা, জতুকা, জননী, জনী, ততুক্তনা, অগ্নিসংস্পর্নী, জতুকুৎ ও চক্তবর্তিনা।

ওাণ। ক্যায়, ভিজেন, শীসল, বর্ণকারক ৩৪ লঘু।

আমারিক প্রবোগ। বিষদোম, বান, কত্, কফ, নিজ, রক্তদোম ও কুট নিবারণ কবে।

ন লিকা।

নলিকা উত্তর পলে থাকিবা। সুগঞ্জা প্রবাধা।

কৃতি থবারী ইতি চ কৃতিৎ প্রশিকা।

নলিকা বিজ্ঞানতা কপোড্চরণা নটা।

ধ্যন্ত্রনকেশী চ নির্যাধ্য সুহিরানলী ॥

নলিকা শতিকা কর্য্য চন্তুষ্য বিজ্ঞানিকা লং।

কৃত্যাপা বাত তুক আ কুঠ কর্ম ক্রাপ্যা।

ন্লিক।

- প্রবাশাকৃতি সুগন্ধ অব্য।

প্র্যায। নলিকা, বিক্রম্বতা, ক-পোর্চরণা, নটী, ধ্যনী, অল্পন্কেশী, নির্মাধ্যা, সুধিরা ও নলী।

৩3৭। শীতল, লঘু, চলের হিতকর, কফ শান্তিকর ও পির নাশক।

আম্বিক প্রয়োগ। কঠিন জন্মরী ' রোগ, বান্ধ রোগ, ডফো, রক্তবোষ, কুঠ, ' কণ্ণ ও জররোগে ব্যবস্থের।

व्यत्थी १ भी कम्।

(প্রপোতরীকণ্ সুগদ্ধরে ১ প্রেরী ইভি লোকে প্রসিদ্ধ ।)

अर्लोक्द्रीकः (लोक्यां) ठक्ष्याः (लोक्द्रोग्नकः) । रलीक्यां) यथुतः ठिकः। कयाग्रः सक्काः दिसयः॥ ठक्ष्याः सपुतः लाटकं वर्गाः लिखं कथक्षमृषः।

হিন্দী পুতরিয়া।

পর্যাব। প্রেণোওরীক, পেনওর্ঘ্য, চ-স্কুষ্য ও পৌওরীয়ক।

পর্ব। মধুর, তিক্ত, ক্যাব, শুক্তে জনক, শীক্তল, চল্ফুর পক্ষে উপকাবক, পাকে মধুব, বর্ণজনক, পিত্র নাশক ও ক্থশান্তিকর।

म्भ का।

্ স্পৃকা সুপজি দ্ৰব্যৎ লাক বিলেৰ লক্ষেত্ৰ পুৱাতি লোকে চ।

ন্স্কাপুক্রাজনে বেবী বক্তমালা গঙা লঘুং। সহুমাঝানপুং কোটি ব্যাল্ডায়িকেড)পি । পোকা আছি হিমা বুৰনা ডিকা নিশ্বিল দোৰনুৎ। কৃষ্ঠ কণ্ঠু বিষ হেম্ম দাহাক্ত কর্ত্তক্তহং । ...

গন্ধপিড়িং ৷

পর্যায়। সপ্রা, অস্ক্, এাজনী, দেবা, মরুম্বালা, লভা, লঘ্, সমুম্বাভা, বধ্, কেটি ও বর্ষালভায়িকা।

ওা। সাচু, শীতল, বলকারক, ভিক্ত ও সর্বদেহে নাশক।

আমরিক প্ররোগ। কুঠ, কণু, বিষ, স্বেদ, দাহ, রক্তগত জ্বর ও রক্তদোধে প্ররোজা।

क्रीपटनार्थायः ।

्रिक्रमध्रवर्गः ।

नियः ।

নিম্পাৎ পিচুম্মুক্তিবিচ্নু ক্ষাত ডিজকঃ।
আনুষ্ঠ পারিভজ্জ ক্রিক্তিবিচ্নু ক্রিনাগ ইতাপি ।
নিম্ব ক্ষেত্র কার্ত্তিরাক্তি ক্রিনাগ বিভাগ ।
অভ্যাঃ আনত্ত কার্তিরাক্তি ক্রিনাগ নেহনুৎ।
নিম্বান আত ক্রেনা ক্রিনিগ্র বিষ্ণাণ ।
নিম্বান ক্রিক্তি ক্রিনাগিত বিষ্ণাণ ।
নিম্বান ক্রিক্তি ক্রিনাল ক্রিন্তিরাক্তি বিষ্ণাণ ।
নিম্বান ক্রিক্তি পারক ক্রিনাল ক্রিন্তির্বান ।
নিম্বান ক্রিক্তিরাক্তিক ক্রিনাল নিম্বান ।
নিম্বান ক্রিক্তিরাক্তিক ক্রিনাল নিম্নাল ।
নিম্বান ক্রিক্তিরাক্তিক ক্রিনাল নিম্নাল ।

भिम ।

পর্যায়। নিম্ন, পিচ্মর্ম্ম, পিচ্মন্দ, তিব্রুক, অরিষ্ট, পারিভদ্র ও হিঞ্কু-নির্যাদ।

ত্তা। রূক্ষ, কটু, ভেদী, পাকেও কটু, অধিবাত নাশক ও প্রম শান্তি-কারক।

প্রবোগ স্থল। তৃষ্ণা, কাস, জর, সক্রচি, ক্রিমি, ত্রণ, পিন্ত, কফ, ব্মন, কুঠ, জ্রাস ও মেহরোগ নইকরে।

নিম্বণত্ত চক্ষুর উপকারক, ক্রিমি নাশক, পিশুনাশক, বিষয়, বায়ুজনক, পাকেকট্ট, অফ্রচিনাশক, ইহা কুঠবোরে উপকার করে।

নিৰ্ফণ আগানে ভিক্ত, পাকে কট্-রদ হর। ইহা ভেদক, দিখা, উফা, পর্ এবং কুঠা, ওবা, অর্শ্য, ক্রিমি ও মেহ রোগ নষ্ট করে। ইহার ত্গাদি প্রক্ণীর। মাত্রা > মাবা।

কিবাস কিন্তাঃ

বিশ্বাত ডিকা হৈব্যত: কটু বিশ্ব বিশ্বাবকা। কাওডিকো নার্ব/চিকেনা ভূনিয়ে স্থাবনেনকঃ র কিরাতকোহন্যো নৈপালা ব্যাইউডিকো

কিরাত: সারকো ক্লফ প**্রিটা ডিফাকোগযুঃ ঃ** সমিপাতঅর খাস কফপি**স্কায় বাহসুৎ।** কাম পোল তুব। কু**ঙ অরব্**ট ক্লিমিপ্**ং** ঃ বাকা ১ যাবকঃ।

তিরাজা ।

পর্যায়। কিয়াভভিক্ত, কৈরাত, কটুভিক্ত, কিরাতক, কাশতিক্ত, নার্যাভিক্ত, ভূনিষ ও রামদেশক। নেপাল দেশে একপ্রকার চিরাতা ক্ষয়ে তাছার নাম অর্জভিক্ত ও নৈপালনিয়।

তার। সারক, ফক্ষ, শীতল, ভিক্ত ও লঘু।
প্ররোগ। ইহাঁ সন্ধিপাত জ্বর, খাস,
কফ, রক্তপিত, দাহ, কাস, শোধ, ড্রাং,
কুঠ, জ্বর, ত্রণ ও ক্রিমি নত্ত করে।
মাত্রা > মাহা।

कहा।

खण्डी यसूर्णनीतायम्कीश्यक्ताताः ।

हिवा हिन्नमा स्वीत्रया यस्त्रेमणिक ह
स्रोत्रयो एकिका त्यामा त्यामयस्त्री ह क्ष्मणी ।

हस्त्रमण्डा योगा विचला ह स्वास्त्री ह
स्रमण्डा यद्या ह मक्ष्मी द्वादिविका ।

खण्डी क्ष्मणा हिका यासूर्णामा स्वीत्रयामिका ।

स्रमण्डा विचला स्वाद्यामा स्वीत्रयामामा ।

स्रमणा क्ष्मणा स्वाद्यामा स्वीत्रयामामा ।

स्रमणा क्ष्मणा स्वाद्यामा स्वाद्यामा ।

स्रमणा क्ष्मणा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा ।

स्रमणा क्ष्मणा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा ।

स्राद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा ।

स्राद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा ।

स्राद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा ।

स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा स्वाद्यामा ।

七百年 |

श्वाहः। ७५ हो, सप्तरी, जाइका, जाइका, जाइका, क्रिक्रवहरी, क्रिक्रा, क्रिक्रवहरा, क्

ত্ব। তড়্চী মধ্ব, ডিজ্ঞা, পাকে স্বাছ্রস বিশিষ্ট, রসারম, গ্রাহক, ক্যার, উফা, লঘু. বলকারক, অধিনীপুক ও ব্রিদোধ আশক।

আমরিক প্ররোগ। আম, তৃষ্ণা, দাহ, মেহ, কাস, পাণুড়া, কামলা, কুঠ, বাড-রক্ত, জব, ক্রিমি, বমি, প্রমেহ, খাস, কাস, অর্শঃ, প্রবল হুড়োগ ও বাধু রোগে বাবছের। মাত্রা ২ মাধা।

অভিবিশা ৮

বিষাক্তিবিষা বিখা শৃঞ্চী প্রতিবিষায়না। অফ্লকন্ম চোপনিবা ভলুরা খুনবল্লভা । বিখা সোখা কটুবিকা পাচনী ধীপনী বরেৎ। জীব্যরাভিসারার শিক্ষাস কক্ষাক্রীন্ ॥ অব্যা মুদ্যাৎ প্রাশ্বং যাজা ২ সাথক:।

जाकर्रेह ।

প্রধার। বিষা, অভিবিষা, বৃষী, পৃষী, প্রতিবিষা, অস্ত্রণা, ওক্ষমুন্দা, উপঞ্জিয়া, ভসুরা ও ঘ্নবয়তা।

তা। আন্তহিচ উচ্চ, কটু, ডিজ্ঞা, শাহক ও অৱিদীধিবাহক। প্রসোপ । জীবিজর, অতীয়রে, আম, পিত্ত, কাদ, কফ ও ক্রিমি নিব'রণ করে । ইহার মূল গ্রহণীর, মাত্রা ২ মাযো ।

রে:হিতকঃ ।

রোছীতকে। রে:ছিত্রকো রোছি ছাডিমণুক্সকং। রোছীতকংপ্রীছ্যাতী ক্রচ্যে রুক্থনাধনং। ক্ষারং শীত্রং নিজো যুকুদ্ রেগুড্রে: মতং। মেররোগ প্রশাননং ক্রিমিয়ো রাণনাশনং॥ ক্ষায় মুগতুর্গ্রাচনায়া, মাত্র ১ মাধকা।

পর্যার। রোহাতক, রোহিতক, রোহী ও দাড়িমপুম্পক।

পুণ। ইহা ক্তিকারক রাক্ত বিশোধক, ক্যার, শাহণ পুরিয়া।

প্রবোগ। প্রীহা, ষ্ক্র গুরা, নেজ্রোগ, ক্রিমি ও রণরোগে প্রগোগ্য। ইহার মূলের ত্বক্রাবহার্যা, মাড্রা ১ মাধ্য।

খেতপুষ্প। নীলপুষ্প। অগবাজিত। চ।

আক্ষোভা বিরিক্তী স্যাহিত্ত কাঞ্চাপরাজিভা। অপরাজিতে কটুমেন্সে লোল কতেঁয়া সুভূষিদে॥ কুঠ শুল বিলোধান লোল এব বিষাপছে। ক্ষায়ে কটুকে পাকে ভিক্তে চ স্মৃতি বুদ্ধিদে॥ অন্যায় কুসিৎ গ্রহণীয়ৎ, যাত্র। ৪ ব্রক্তিকাঃ।

থেত অপরাজিত, ও নাল অপরাতিতা।

পর্যায়। আফোচা, পিরিকণীর্নি বিজ্ঞান্তা **ও অ**পরাজিকা।

গুণ। কটু, অরণশক্তি বর্ষক, দীতল কর্মপ্রিক্ষারকাবক, দৃষ্ট প্রদানতা কারক, ত্রিদোষ নাশক, ক্যার, তিন্তু, পাকে কটু, বুদ্ধিপ্রদাও বিষয়। প্রবেশি কুট, শূল, আম, শোর ও ব্যবহারে প্রয়োচ্য। ইহাদের মূল গ্রহণীর মাতা ৪ রতি (উ

निक्रीवाव ।

নিজুবারঃ খেতপুষ্পাঃ নিজুক বিদ্যুবারকঃ ।
নীলপুষ্পা হু নিজ্ঞী ক্লেকালা সুবছা চ সা ।
বিন্দুকঃ আভিছিল ক্লিকাল কট্টকো লঘুঃ ।
কেলো; নেএছিতো ছাঁছি দুল লোকামমাকভান্ ।
কিমি কুলাকচি জোৱা জ্লোমীলালি তছিল।
বিন্দুবার দল্প ছাজ্বাতজ্যে ছর্ছীগুলু ।
ভাষা মু াদিক্য প্রহাণ, মারা ১ মাধ্যুক্ত

निभिन्ता।

নিশিক। রুক্ত হুই জাতীয়, এক প্রকার রুক্তের পূজা কোত্রবর্গ, আগর জাতীয় রুক্তের পূজানীলবর্গ।

প্রথম প্রকৃষি বুক্তের পর্যায় এই দিন্ধুবার, স্থেতপুন্প, দিন্ধুক, দিন্দুবারক।

বিভীগ প্রকাষ বুমের পহারে নাল-পুপ্ণী, নির্মাণী, বেফাণী ও সুধহা।

ওন। স্থারণ শক্তিপ্রদা, কিন্তা, ক্ষার, কটু, লাঘু, কেশের হিত্কর, নেত্রের উপ-কারক।

প্রাংগি। শ্ল, শোগ, আম্বাচ, ক্রিমি, ক্ট, অন্নতি ও প্রেয় অরে উভয বিব সিক্ষ্রারেই বার্তেয়।

নিসিকা পত্র, ক্রিমি প্রভৃতি কর ও বাতশ্রেম নাশক। ইহার মূলাদি গ্রহণীয়, মাত্রা: মাধা।

ষ্ব'ভক্তা।

বরতিকো মহাতিক। সাধ্যিকুদ্ধিবর্ধিনী। তিকা অরাতিসারদ্ধী বালানা গ্রেছিদা সদা। অস্যান সরসো গ্রাহা, মানুধিনকদ্মন।

কাল নৈছে।

সবজিক্তা ও মহাতিক্তা এই তুগটী সংস্কৃত শক্ষ ক লংগেৰিল বাচক। ইহা কিন্তা, বলকর, তাগি লেকি ও জনাতিসাব নাশক। বালকাদিকোন জব ও উদ্বা-ময়াদি পাড়াল ইহার হাখা বিশেষ উপকার পাওরা যার। ইহার প্রমা এহণীর মান্তা > ভোলা।

5 m 7: 1

চন্দাকঃ শ্বৰ্ণাপাঞ্চ চান্দোযো কেন্দ্ৰাপাক? ।
দ্বীপপুল্পো ভূক্ষেটো সুৱাভ স্থনগানিগৈঃ ঃ
বনদ্বীপা নীতপুল্পো ক্ষালো লাতবন্ধান ।
দুভনঃ দিৱেগগান সুকুমালোচভিন্তন ও
চন্দাকঃ শতিকা স্বাদু কচু দ্বিতা ক্ষায়েলঃ ।
বলো বিশ্বিদ্যিত্বঃ ক্ষাপিত প্রনাশান দ্ব লাহবাভাপ্রক ও অব্যাদ্য নিশ্বান্ চন্দেই ।
স্বাহ্রাভিন্তন একাশিত নিশ্বান্ চন্দ্র ।
স্বাহ্রাভিন্তন একাশিত নিশ্বান্ চন্দ্র ।
স্বাহরাভিন্তন একাশ্বান ব্রাহ্রাভিন্তন একাশ্বান ধ্রাহরাভিন্তন একাশ্বান প্রব্যাভিন্তন প্রদান শ্বান ক্ষ্মিন ।

कर्द है थ्रा ।

চল্লক, প্রতিপুল্স, চাল্লের, হেমপুল্পক, দ্বীপপুল্স, ভ্রন্থমাই হ্রবজি, জমরংভিথি, বনদীপ, পাঁতপুল্ম, শৌহলক্ষদ, হুওগ, ছিরগন্ধ, হুকুমার ও কতিগন্ধক এইওলি এবং স্থানিচক যাবভীর শন্ধ চাঁপার সংস্কৃত নাম। ইহা শাঁতল, স্বাভূ, কট্ট, ভিক্ত, ক্যার, বলকারক, বিষয়, ক্রিনিনাশক ও কফ্পিত্ত প্রশাসত। দাহ,

বাতরক্ত, কণ্ডু ও করেরোগে প্রয়োজ্য। ইহার তৃক্ ও ত্বরদাদি গ্রহণীর, তৃকের মাত্রা ১ মাবা, ত্বরদের ১ তেলা।

মহাতিকা।

ভঞ্জিত। মহাতিকা রলে ডিকাপ্রিবর্জনী। অর্থ্রী পিদহদ্ বল্যা জেখ্যান্মপি মাপলেও ॥ অস্যান্মাকা ৬ প্রতিকান।

বিশ্বিহিছা।

ভদ্রতিক্তা ও মহাতিকা এই তুইটী শক্ষ মিশ্মিতিতার সংস্কৃত নাম। মিশ্-মিতিতা তিক্ত, অগ্নির্কি, জরস, পিত্ত-নাশক, বলকর ও ক্ষয়। ইহার মাত্রা ৬ রতি।

উনবিংশোহধ্যায়:।

কাসগ্নধর্ম: ।

विक्षेत्रकः।

यदक्षा ।

বিভাণক, বিভাতকী, অক্ষ, কথ্যিল, কলিজ্ঞ, ভুতাবাস ও কলিসুগালের এই গুলি বংগড়ার নাম। বিভাতক ক্যাস, পাকে স্বাস্থ্য, ক্ষণিত নাশক, উষ্ণবাধ্য अवाकान्य.

ল্পাৰ্কে নীক্ষন, ভেষক, জীল নাগক, ক্ষক, ক্ষেত্ৰ ও চন্দ্ৰের হিতকারক, ক্রিবি নাগক ও স্ববদায় নিবারক।

বত্ত্বার লক্ষা তৃষ্ণা বনন, কক ও বারু নাশ করে, লগু, কবার ও নালক। আমলকীর মক্ষারও এই ওণ আনিবে। ইহার ফল ও ফলের, মক্ষা গ্রহণীর। উভরের সারা ২ মাবা,।

शिक्षणी।

निल्ला मांगरी क्यां देवर्षी घला, करा।
उलक्लायवा व्योवी कालागार खेळा कर्ण, व निल्लायवा व्योवी कालागार खेळा कर्ण, व क्रिका क्रिका खिखा वांडर्डायक्ती लगुः इ निल्ला दाइमी क्रिका वांडर्डायक्ती लगुः इ निल्ला दाइमी क्रिका वांडर्डायक्ती लगुः इ क्रिका क्रिका क्रिका महना खड़ान् क्रुके क्रायक संग्राची क्रीक चृंजाममा अर्जा व क्राया। क्रकावा क्रिका नीव्या महना खड़ान् निल्ला मंद्र अर्थ्युका स्मानित क्रिका व निल्ला मंद्र अर्थ्युका स्मानित क्रिका व चांजिक्द्रविद्याल्या इ नेजारक संज्ञानित व क्रिका निल्ला क्रिका क्रिका क्रिका व क्रिका निल्ला क्रिका क्रिका क्रिका व क्रिका निल्ला क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका व क्रिका निल्ला क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका व क्रिका निल्ला क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका व निल्ला क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका व निल्ला क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका व

निभून।

निश्चनी, मानवा, कृष्णा, देवदवरी, हनना, स्वा, छेनकूना, स्वेदा, त्योजी, दकाना खुळीचू छण्ना धरे ममून।व निश्चनीय नर्याच ।

পিরালী অধিদীথিকারক," বলকারক, গাকে মিষ্টরল রসারন, উল্ল নতে, কটু, শ্বিষ্ট, বাডল্লেম্মনালয়, লঘু ও রেচক। খান, কান, উর্ক্রেনার, অর, কুঠ, প্রথেষ, গুরুআর্না, মীহা, খুল ও আমবাত এই সর্বার
রোগ নইকরেন লিপুল আর্জ অবছার
প্রেম্মকারক, লিয়, শীতল, মধুর, গুরু ও
লিত নাশক, গুরু অবছার লিত প্রকোশক। মধুর সহিছে লিপ্পনী সেবন করিলে
বেলোরোর, কফ, খাস. কাস ও অর
নিবারণ হর এই বল, মেধা ও অগ্নি
রৃদ্ধি হর। গুরুলিপ্রলী দেবন করিলে
জীব্রর, অগ্রিমান্য্য, কাস, অজীর্ণ, অক্রচি,
বাস, জজোগ, পাপুরোগ ও ক্রিমিরোগ্ন
উপশমিত হর। একভার লিগ্রনী চুর্ণ ও
চুইভার পুরাতন গুড় দিরা গুড়লিগ্রলা
প্রভাত করিতে হর। লিগ্রনী ফলের মাত্রা

यः भेदबाह्या ।

স্যাহ\পরোচনা বাংশী তুপাঞ্চীরী তুপা বাডা তুক্সীরী বংশজা করা বংশজীরী চ বৈনবী ঃ বংশজা বুংহণী বৃষ্যা বধ্যা বাছী চ শীওলা। ক্লক কথায় পিঞ্চী দুউলোনিত পোধিনী ঃ তুজা কাস অরখাস ক্ষয় পিঙাক্ষ কামসাঃ। হরেৎ কুঠং এবং পাতৃং দাহনুদ্ বাতকৃচ্ছু বিং ঃ অস্যা ধারা ৬ য়ক্ষিকা।

বংশলোচন ৷

পর্যার। বংশবোচনা, বাংশী, ডুণা-জীরি, ডুগা, শুভা ত্বক্ষীরি, বংশকা, শুভা, বংশকীরি ও বৈশবী।

৬৭। ইহা পৃষ্টি কারক, শুক্রবদ্ধ ক,বল কারক স্বাচু, শীকল, রূস, কবার, পিতর ও রক্তবোধ নিবারক। প্রবোগ। ইহা ব্যবহারে জ্ঞা, কাশ, জ্ঞার, খাস, কব, রক্তপিত, কাশলা, কুট, ত্রণ, পাতু, দাহ ও বার্ক মুত্তক্ত দূর করে।

कर्करेगुडी।

শুলী কর্ক উপুলী চ স্যাৎ বুল্টীরবিষাধিকা।
আন্তপুলী চ বক্তা চ কর্কটার্থাই ই কীবিজা হ
পূলী ক্যায়া তিকে।আ ক্ক্রাজ্জর আরাব।
আগোহর্দ্ধ বাত ভূই্কাল বিশ্বায়নি বলীব্যরেৎ হ
আসা: ফল্ প্রায়াৎ, বারা ১ শ্যকা।

कीक कामुकी।

পর্যার। শৃত্বী, কর্কটশৃত্বী, কুশীরবিষাণিকা, অক্সপৃত্বী ও বক্তা ইহার পর্যার, কাঁকড়ার বে যে নাম আছে ইহারও সেই সেই নাম জানিবে।

গ্ৰণ। ইহাঁ কৰার, জিন্তু, উষ্ণ।
প্রান্থার । ইহা কন্ধ, বারু, ক্ষরবেরাগ, জর,
খাগ, উর্দ্ধবারু, তৃষ্ণা, কাস, হিন্তা, অক্লচি
ও বমি নিবারণ করে। ইহার ফল গ্রহশীর। মাতা ১ মাবা।

क्रेक्नः ।

কট্কলং গোষৰকেত কৈটব্যং কৃতিকাংশি চ।
কীপৰ্নিত কৃত্বিকা ভাৱতিতি চাঃ
কটকলং ভাৱত ডিকং কটুজাত কক্ষরান্।
হতি খাস প্রবেহার্থিং কাসক্ত্বান্তান্তরী ঃ
ভাৱত খুগুরাহ্যা, মারা ভারতিকা

कहे एन वा कात्रहान ।

পর্যার । কট্ ফল, লোমবক, কৈটর্যা, কৃত্তিকা, প্রীপশীকা, কুম্বিকা, ভলা ও জন্তাবতী এই ওলি ইংার নাম। था। करोत्र थिक ७ कहे।

প্ররোপ । ইবা ছারা বাডরৈছিক মার, খাস, প্রথেষ, জর্মা, কান, কঠরোগ ও অক্লচি নত্ত হর এই ব্যক্ষর ভূক্ প্রথ-শীষ, মাজা ৬ রচি ।

कार्ती।

ভাগী ভূথখন পঢ়া কন্ধী র জনবন্ধি। রাজনাগারহালী চ বরপাকা চ হতিকা ।
ভাগী ক্রজা কটুডিজা প্রচ্যান্তা পাচনী স্মুঃ।
দীপনী ভূরাওলু রক্ষুভাগারেদ্ গু বন্ধী
পোর কাল কন্দ্রানাগারী পালস অর্গাল্ভান্।
মারা ১ মারক।

वायुनदानि ।

পর্যার ভোগী, ভৃতভবা, প্রা, ফ্রী, তান্ধব্যক্তিকা, তান্ধনী, অন্ধার্থকী, ধরশাক ও হতিকা।

ওণ । ইহা রক্ষ, কটু, বিজ্ঞা, মোচক, উক্ষ, পাচক্, লঘু, অগ্নিদীপীকর ২৪ কবার।

প্ররোগ। ইছা সেবনে ১ক্ত গুল্ম, শোধ, কাল, কৃচ, খাল, পীনস, জর ও বার উপশ্মিত হয়। ইছার সমস্ত জংশ প্রহণীব, মাতা > মাধা।

वागकः।

বাসকো বালিকা বাসা ভিষ্কুষ্টা চ কৈছিক। ই সিংহাস্যে বাজিল্ডস্যা ঘটলবোইউএবকঃ চ অটলগো বৃষ্ঠাজা নিংহপৰ্ক সন্মৃতিঃ । বাসকো বাজকুং থান্য কক্ষণিভাল নাশাসঃ চ ভিজ্ঞভূববকো হব্যো কছু: শীতভূক্ষিত্ৰ। বাসকান অৱচ্ছবি নেহকুঠ জন্মগাহ চ জন্য মূলভূপ্ নাজা, নাত্ৰা ১ মাৰকঃ।

বাসক।

পর্যার। বাদক, বাদিকা, বাদা, ভিষড্যাতা, দিংহিকা, দিংহাদা, বাজি-দক্ত, আটক্রম, অটক্রমক, অটক্রম, রুম, তাম ও শিংহপুর্ব।

ওপ। বার্কারক, স্বর শোধক, তিওক, ক্যার, হৃদ্যে, লঘু ও শীতল ।

প্ররোগ। কফরুদ্ধি, রক্তাণিত, ভৃষ্ণা রোগ, খাস, কাস. জর, বমি, মেহ, কুষ্ঠ ও ক্ষররোগে বিশেষ উপকার করে। ইংগর মূলের ছাল গ্রহণীয়, মাত্রা ২ মাসঃ।

त्मधन्त्री।

মেষণালী বিষাণীস্যাংখ্যবাল্যা ছণ্ডিকা।
মেষণালী রসেতিকা বাতলা খাসকাগ্রহ ।
ক্রন্থা পাকে কটুন্তিক তাংক্রের কিন্তুন্থ।
মেষণালী কলং তিকেং কুঠমেই কক্প্রন্থ।
ছীপনং ক্রংগনং কাস ক্রিমিত্রণ বিষ্ণাহ্য।
অস্যাং কলং প্রাহং, নার্য ১ মারকঃ।

(यङ् (गन्ना)

পর্যার। মেষশ্লি, বিষাণী, মেষবর্রী ও অজ্বশ্লিকা।

তাশ। তিকে, বায়ুক্তনক, রুক্ষ ও পাতক কট ।

প্রেরাগ। ইহা ছারা খাস, কাস, এণ, শ্লেমা ও নেএখুল নিথারিত হয়। ইহার ফল ভিজ্ঞ, দীপন ও অংসন, ইহা ছারা কুষ্ঠ, মেহ, কফ, কাস, ক্রিমি, এণ ও বিষ নত্ত হয়। মাজা ১ মাবা।

ज्यामनकी।

फूगामनकिका त्थाका निवाडामनकोडि हः। मक्ताबा वस्त्रमा वस्त्रीवाकोत्नि हः॥ ভূধানী বাৰ্ত্ত তিক। কৰার। মধুরা হিলা। পিপাস। কৃষি প্রিভাজ ক্ষতত্ত্তগোপহা র মানা ১ মাৰ্কা

ছুই আমলা।

পর্যার। ভূমীমালকিকা, শিবা, তাম-লকী, বহুপুত্রা, বৃহুফলা ও বহুবীর্যক্তা।

ওণ। বাসুক্ষীক, তিক্ত, কৰায়, মধুর ৩৪ শীভল।

প্রবের । ইহারার। পিপাসা, কাস রক্তপিত্ত, কফ, কণ্ঠ ক্ষত উপশ্পিত হয়। ইহার সমস্ত অংশ প্রহণীয় মাত্রা ১ মাধা।

भागी।

শনী শক্ত ফলা ভুজা : কৰ্মখুক্ষা শিবা।
মঙ্গলা চ তথা, লক্ষ্মী শনীরা সাম্পিকা ক্র্তা।
শনীতিকা ক্ট্রেণীড। ক্যায়া রেচণী ক্যুং।
ক্ষকান জ্যখান কৃষ্টার্শ্য ক্রিমিজিং ক্রা।
জ্যায় নুজারুগ্রাহ্যা, মানা ১ মাধকা।

শ্:ইবাবসং ৷

পর্যায়। শ্নী, শক্তকুলা, তুমা, কেশহস্ত্রসা, শিবা, মম্বলা ও শল্মী ক্ষুদ্র শ্নীকে শ্নীরা করে।

ত্যণ। ভিতন, কটু, দীতল, ক্ষাৰ, ক্ষেত্ৰ ও লঘু। ইহার মৃলের ওক্গ্রহণীর মাত্রা ১ মাধা।

351 1

বচোগ্ৰক। যক্ষাৰা পোলোনী প্ৰপ্ৰিকা। কুলপত্ৰী চ নক্ষা। কটিলোগা চ লোনপা ঃ বচোগ্ৰক। কটুকা ডিকে:আ বাভি বন্ধিকৃৎ। বিবন্ধায়ান শ্লন্ত্ৰী শত্ন মুত্ৰবিশোধিনী ঃ অপ্ৰায় ককোন্ধাৰ ভূডজৰ নিলান্ হয়েই। वह ।

পর্যাব। বচা, উত্রক্ষী, বড়্গ্রমা, বোলোমী, শতপর্ব্বিকা, কুরোপত্রী, মঙ্গনা, ভটিলা, উগ্রা ও লোমশ্বা

প্যপ । ইহা উপ্ৰ**শন্ধ** বিশিষ্ট, কটু, ভি**ন্তন,** উষ্ণ, বমনকাৰক **ও** অগ্নিবন্ধক।

ভাষ্ঠিক প্রেণ্ড। বিবন্ধ (ম্লা দির বন্ধ), ভাগ্ধনে পেটকাপা, ক্ষজনা উন্মাদ, অপস্থাব ও **শ্লারো**গ নষ্টকরে। ব্যাদ সেবনে ম্লাম্য বিশুদ্ধ ও ভূভাদি হয় দুরীকুত।

भावमीक दर्भ।

পারদীকবচা ঋত্না প্রোক্তা হেমবডীতি সা। হেমবডু)বিভা তব্ছাত১ ছব্রি বিশেষতঃ ঃ

भूदीमानी वह ।

বুবাদানী বচ শুকুরর্ণ, ইহার অপর নাম হৈমবা। বেগারাদানী বচ দামান। বচের ন্যার তাণ বিশিষ্ট বিশেষ ইছা বায়ুনাশক।

ながれている

বস্পোকে ক্লিপ্তন ইতি নাগছের্য।
সুমন্ধা পুল্লমন্ধা চ তিলেব'ং ককক'তনুং র
স্বর্জকরী রচ্যা অংকও মুখলোগিনী র
সুলগ্রিং যল্যালোকে বহাতনী ইতিনাম।
সুলগ্রিং সুগল্পানাং ততে্টীন অবাক্তা ।
সুলগ্রিং সুগল্পানাং ততে্টীন অবাক্তা ।

गरानवती वह।

লচর¹চর এই মহ।কারী বচ**ট প্রচলিত** ইহার অপর নাম কুলিঞ্জন। মহ:কারী বচ মুগন্ধ, উপ্রগন্ধ, কফনাশক কাসরোগে উপকারক, রোচক। ইহা কর্প্রের জুম্ব-রতা কারক এবং জ্বাস্ব, কণ্ঠ ও মুখ নির্ম্মল করে। সর্মপ্রকার বচের মাত্রা ১ মাবক:।

क्षेय_।

কৃঠরোগাজয়ধালা> পারিভব_{্যুন্ত}থোৎপলম্। কৃঠমুক্ত৲ কটুয়ালু অফল৲ ডিজকৈ লয়ু ॥ ছঙিবাডাক্ত বাল্প কাল কৃঠ মঞ্ছৎককান্।

কুড়।

কুঠারোগের নাম কুড় বুঝায়, ইহার জান্যানা নাম ব'পা, পরিভব্য ও উৎপশ।

দাণ। ইহা উষণ, কটু, স্বান্ধু, পাক্র-জনক, ভিক্ত ও লঘু।

প্ররোগ। ইছা বাতরক্ত বীদর্প,কাদ, কুষ্ঠ, বায়ু ও কফ নষ্টকরে।

क्षे: १ न अध्यस्माम् ।

উক্ত৲ পৃষ্ঠর মুগন্ধ পৌজর৲ পৃষ্ঠরক তথ। পদাপরক কাশারিং কৃতকের নিমান কঠা। পে করমাকটিকথিক মুক্তমারত কক্ষরান্। ছবি পোলাফটি খাল ছিপোলাথ পার্থ স্থান্থ । অন্যেম্প্রমাধ্য মাধ্য হাক্তকে।

পুষর মূল (এক প্রকার কৃষ্ণ)

পুদ্রমূল, পৌদ্র, পুদ্র, পদ্মশত্র ও কাশ্মীর এই গুলি ইহার পর্যার ।

থান। ইহাকটুও ভিক্ত।

পর্যার। ইবা বাচ দ্রৈমিক জ্বর, লোপ, অক্লচি, খাসরোগ নষ্ট করে, বিশে-যতঃ পার্যপুল রোগে অভিশন্ন উপকার করে। মাত্রা পর্যান্ত। বিক্তা।

শ্যামপ্নী।
শ্বেদ্ধারি বিরিভিচ্ছ্যাবপর্ন্যকন্ ক্রিয়াযুকে।
শ্বেদ্ধারিপত্র ক্ষন্ত বের্দ্ধ বলবর্ধনন্ র
প্রান্তিপত্র ব্যক্তি ক্ষান্ত ক্ষান্ত কাল লগতের বিজ্ঞানিত ক্ষান্ত নাল্যন্ত ব্যক্তিন ক্ষান্ত নাল্যন্ত ব্যক্তিন স্থান্ত নাল্যন্ত ক্ষান্ত নাল্যন্ত ব্যক্তিন সিল্লা মুক্ত সেব্যো নৈক্ষা

511

শ্লেমারি, বিভিন্, শ্যামপরী ও আছলী এই ২ । চাশর সংস্কৃত নাম। ইহার পত্র কফর, স্বেদজনক, বলবর্দ্ধক, প্রভিশ্যাব নিবাবক, জরন্ন, কামোদ্দাপক, কাসনিবারক, আমিদ্দাপক, ও শরীবের জড়তানাশক। ইতার ফাণ্ট চিনির সহিত দেবনীর।

ভালীশম্।

ভালীশ যুক্তৎ প্রাচাৎ যাজনৈত্রক তথ্য তথ্। ভালীশৎ সমু তীক্ষোক্তৎ খাস কাস ককানিলান্ । নিহত্যকাট প্রস্থায় বাহিনাক্ষ্য ক্ষ্যায়য়ান্। নাত্রা ১ বাহকঃ।

পর্যাব। ভাসীপ, পর্যাচ্য ও গাত্রী-

৩৭। পঘু, ভীক্ন, উষ্ণ, কফ না**পক** ৩৪ বাছু নাপক।

জাষরিক প্রয়োগ। অক্তচি, গুলা, জাম, আরিমাশ্য ও ক্ষয়রোগে ব্যবচ্ছের। জালীশ পড়ের মাতা > মাবা।

विश्मिजिजस्मार्थायः।

কতুমবর্গ্য।

ठळम्पः।

क्षंवर्षाः अनुपारका एकस्या स्वरवादमः। श्रीवादेः नगरेरक्षक ऋत्वर जूनकि वेद्यान ॥ अक्षिमस्या मणुः पाषु अकः निकानिसानवः। श्राक्षणं विवेद्वी क्रमणं मान्द्रेयक क्रियोम् ब्राह्मः । ब्राह्मः श्राप्तकः स्कृतः कृते कर्षः क्रम्ययानिकान् । ब्राह्मकान क्रियोक्ति मानसः क्ष्रेकः मृद्यः ॥

っち「更啊」

পর্বার। উট্টুমর্ছ, প্রপ্রাট, দক্তর, মেবলোচন, পঞ্জাট, ঐড়গজ, চক্তে ও পুরাট।

ওণ। ইছাঁ লঘু, স্বাচ্, রুকা, বাত-শিতনাশক, জন্মা, শীকল।

প্ররোগ। ইখা কফ, খাদ, কুঠ, দক্র ও ক্রিমিনোগ নাপকরে। চক্রেমর্জের ফল উফ ও কটু এই ফল কুঠ, কণ্ডু, দক্র, বিবদোব, বারু, ওল্ম, কাদ, ক্রিমি ও খাদ রোগে উপকারক।

मश्मिकः।

(বকাৰণ ইতি কোকে।)
মহানিখা অংজানেডা রখ্যকো বিষযুক্তিকা।
কেশামুক্তি নিখকক কামুকো আৰু ইডালি ।
মহানিখে। বিখোৱক কিলো নাথী কথায়কা।
কক্ষিত্ৰ অধ্যক্ষি কুঠ মহানে বক্ষানিখ।
প্রবেশ শাস বাদানি। বৃধিকা বিশ্বনাশনা।

(राशनिम।

পর্যার । মহালিব, নেতা, রন্যক, বিষ্টক, কেশার্টি, নিয়ক, কার্ম্ব ও জীব।

তণ। শীক্তন, রক্ষ, তিক্ত, **এ** ও কবার।

लातान चन । कमनित्र, जनतान, रमन, कृषे, स्वान, अक्टरमान, सारम, चान, चच, ध वर्षः धरे नमन्न तार्थः मरामिष् लाताका । देश मृदिस्क विषे नार्थक ।

Va

ं भक्ति।

मिक्कि विकास मिक्की सम्मा है किटिन विकास स्वाधित विकास सम्मान समान सम्मान समान सम्मान समान सम्मान स

मिकिहा ।

পর্যার। মঞ্জিটা, বিক্সা, ক্রিজী, সমস্থা, কালমেদিকা, মতুকপর্ণী, ভতারী, ভত্তী, ষোঘনবন্নী, রশারনী, অরুণা, কালা, রক্তান্ধী, রক্তবৃষ্টিকা, ভত্তীত্তকী, গতীরী, মঞ্চবা ও বক্তরঞ্জিনী।

গুণ। মঞ্জিটা মিষ্ট, জিক্ত, ক্যায়, গুরু, ও উষ্ণ।*

প্রবেগ। ইহা ব্যবহারকরিলে খর ও বর্ণ উত্তম হর এবং বিষদ্যেষ, ক্লেগ্লা, শোধ, সোনিরোগ, চক্ষ্রোগ, কর্ণরোগ, রক্তাভিশার, কুঠ, রক্তদোঘ, বীসর্গ, রগ ও প্রমেহ রোগ উপশ্মিত হব। মাত্রা সমাধা।

क्रिमा ।

হরিছা কাঞ্চনী পীতা নিশাখ্যা বর্ত্তর্পনী। ক্রিনিয়ো হল্টী বোবিৎত্রিয়া হউবিলাগিনী ঃ হরিছা কটুকা ডিকা রক্ষোত্রা ক্ষণিয়নুও। বর্বেয়া জুগুলোহ মেহান্ত্র বোঁধপাঞ্ রব্যশহা ॥ নারা ২ নাহকৌ।

रदिला।

इतिज्ञा, काकमी, शीका, वत्रवर्शिनो, खिनित्री, रमणी, त्याविश्वित्रा, रहेरिया-

দিনী এই গুলি এবং রাজিবাচক পদ্
লমগু ইহার পর্যার জানিবে। হরিন্দা,
ফটু, ডিজু, রুল, উষ্ণ ও বর্ণজনক।
হারদ্রা ব্যবহারে কম, শিলু, হুকের দ্বোব,
মেহ, রক্তবোধ, পোণ, পাণু ও ব্রণ নষ্ট
হর। মাজা ২ মাবা।

বনহরিত্রা আমুগজিহরিতা চ।

অরণ)হলবী কক্ষা কুঠ বাডাক্স নাপনঃ।

আমগজি হরিত্রা যা সা শীডা বাঙলা নত্না।

শিক্তভাধুরা ডিকা সংক্তক্স বিনাশিনী।

অন্যোমাত্রা ' মাবকৌ।

दनश्रिक्षा ७ जाम जाए।।

বন্ধরিজার কল কুঠ ও বাতরজ্ঞারোনে ব্যবছের,। আনুগন্ধি হরিলো অর্থাং আনজাদা দীতক, বাযুক্তনক, পিত নাশক, মধুর, ভিক্ত ও কণু নাশক। উত্ত-বের মারা ১ মাধা।

१ प्रक्रम् ।

পদাসং পঁড়াগছিস্যা তথা পঁড়ালয়ং আতৃ। পদাকজনর বৈত্তাং পতিকাং বাতলং লয় । বাসপ বংচ বিজ্ঞোট কুঠ সোধাক্ষণিতমুব। গাড়সা ভাগনং ক্ষচাং ব্যৱস্থিত হব্য প্রবৃথ । মাত্রা ২ বা।

शयकः है।

প্রক, প্রগেদ্ধি ও প্রাথাচক শক দমত ইচার প্রগার। প্রাকাঠ ক্যার, ভিক্ত, শীতন, বার্জনক ও লঘু। ইহা বিদর্প, ছাহ বিজ্ঞোট, ছুঠ, শ্লেমা, রক্তপিত, বমি, এব ও স্কুমী নাশকরে। ইহা বর্ত- সংস্থাপক ৩৪ ক্লচ্য। ইহার কাঠ গ্রহণীয় মাত্রা > মাধা।

গোরোচনা ।

গোরোচনা জু যদস্যা বস্যা গৌরী চ রোচনা। গোরোচনা হিলা ডিজা বশ্যা মদসকাছিদা। বিবাসক্ষীপহোদ্মাদ গর্জনাব ক্ষডাক্রকং।

त्राद्याह्या ।

পর্য্যার। গোরোচনা, মঙ্গল্যা, বন্ধ্যা, গৌরী ও রোচনা।

থা। শীতল, তিক্ত, বশ্য, মঙ্গল-জনক, কান্তিকর, বিষয় ও অলক্ষ্মী নিবারক।

আম্বিক প্রযোগ। ক্ষতাদি হইতে অংবা গর্ভজান নিবন্ধন রক্তপাত নিবারণ করিরা উপকার করে, উন্মাদ রোগেও ইহা ব্যবস্থেষ।

এলৰ লুকম্ ৷

এলবালুক দৈলেয়ে সুগতি ছরিবালুক্য।
এলবালুক মেলালু কপিথ পত্রমীরিতম্ ।
এলালু কটুকং পাকে কবায়ং পীওসং লয়।
ছত্তিকও ব্রণজন্মি তৃট্ কালাক্ষতি ফ্রুক্র: ।
বলাস বিষ পিভাসু কুঠমুত্রগদ ক্রিমীন্।
মাত্রা ১ মারকং ।

এসবালুক।

পর্যার। এলবালুক, ঐলের, সুগন্ধি, হরিবালুক, এলালু ও কপিথপত্ত।

থা। ইহা ক্যার, শীতল, লঘু. পাকে কটু। আমারিক প্রয়োগ। কণ্, রণ, বনি, তৃষ্ণা, কাগ, ক্ষুক্তি, হুজোগ, কফ, বির, রক্তপিত, কুই, মৃত্যকৃত্ত ও জিনি রোগে ব্যবচ্ছের। মাজা ১ মাবা।

कुछेब्रहेम्।

(**গুড়ক) ইভি চ ই**য়ন্ত বিভূষক নালে। সূ**ড়ক্য ভুক্ মু**ভাক্তিঃ।)

কুটনট পাসপুর বাসেয় পরিপেলব্ন । প্রব গোপুর গোনর্দ্ধ কৈবর্ত্যুক্তকানি চ ॥ মুক্তাবং পেলব পুট শুক্তাজ স্যান্তিত্রকন্। বিত্রক হিন জিক ক্ষায় কটুকাভিদ্ন ॥ কফ প্রাম্ম বীসপ্রুঠক জুবিষ্ঠাপুথ। নাত্রা > নাষকঃ।

क्ष्यत्रथा हिन्दी कामहीत्याथा।

(এই জব্য বিভুন্নক নামক ব্ৰক্ষের ত্বক্ ইহার আকার মুন্তার নাার ।)

পর্যায়। কুটয়ট, দাসপুর, বালেয়, পরিপেলব, প্লব, গোপুর, গোনদ্দ ও কৈবর্ত্ত মুক্তক।

বিজুল্পক মুস্তার ন্যার পেলব পুট বিশিষ্ট ও ঈষৎ শুক্লবর্ণ।

গুণ। বিজ্মক শীতল, তিক্ত, কৰার, কটু, কান্তিপ্রদ, বিষয় ও কফ নাশক। আম্বিক প্রয়োগ। বীস্প্, রক্ত-পিন্ত, কুঠ ও কণ্ডু নাশকরে। মাত্রা ১ মাষা।

कुष्ठदेवशी ।

কুঠবৈরী শৈলরোহী মহাগদ মহাক্রহ:। বৈবস্তজ্ঞন: সম্যাদ্বলকুচ্চ রদায়ন:॥ পামা বিচচিয়া কড় নিম্নোহর্দ বিপাদিকাঃ।

*

स्कामपाकः वेशासः क्षाति व वित्नेत्रसः । व्या क्षात्रा वीत्रः व्यवकः अवश्रेत्रस् वीकाः वाता ७ तक्षिकाः, रेटक्केट व वित्यरः ।

डालक्ष्वा

কৃতিবৈরী, শৈলরোহী, মহাবদ, মহীকৃত্ ও বৈবস্বতক্রম এই গুলি চালমুগ্রার
লংকৃত নাম। ইহা বলকর ও রলাবন।
পামা, বিচর্চিকা, কণ্ডু, লিগ্ন, উদর্জ, বিপাদিকা, আমবাত, বাতরক্ত ও কৃতিরোগে
প্রয়োজ্য। কৃতিরোগে কিছু কাল ব্যাপিনা
ব্যবহার করিলে ইহার হারা যথেষ্ট উপকার দর্শে।

ইহার ফলের বীক ও উহার তৈল ব্যবহার্য। বীজের মাত্রা ৬ রতি, তৈলের ৪ বিন্দু।

"ভাগদ:।

चर्तात्वा वक्तमन्त्री माथ कोहे।शिक्षात्रमुणस्यः। वक्तमन्त्री बद्धम् वक्तभीवाककृ विवर्णक्ताः॥

मामम्बन ।

দানমর্দনকে সংস্কৃত ভাষার কানদ, দক্রমন্দী, কীটারি ও অঙ্গস্থানর বলে। ইহার প্রানেপে দক্ত, পামা, কণু ও বিচ-চিকা রোধ নষ্টহয়।

বেভরক্ত গুলা।

খেতাগ্রপ্থায়টা প্রোক্তা কৃষ্ণকা চাপি সাক্ষ্তা।

র জানা বাক্তিথি স্যাৎ কীক্ষ্ হী চ রক্তিকা ।
কাকাদনী কাকপালুং সাক্ষ্ কাক্ষ্মেরী।
প্রশাস্থিত কেলাং স্যাৎ বাতপিত অরাপ্তন্ ।
বুধপোর অবস্থাস ভূজা নদ্বিনাপনন্।
নেত্রাবন্ন হরং সূবাং বলাং অসুরুধং হরেং ।
ক্রিনীজন্প্র কুঠানি রক্তা চ ধ্বজাপি চ।

খেতকুচ ও লালকুচ।

খেছওঞ্জার পর্যার। বটা ও কৃষ্ণলা। লোহিত ওঞ্জার পর্যার। কাকচিঞ্চী, কাকমণ্ডী, রক্তিকা, কাকামনী, কাকপীলু ও কাকবল্লনী।

তা। ছই জাতীর তঞ্জাই কেশের হিতকারক, বলকারক ও শুক্ত জনক।

প্ররোগ। বাতপিত কর, মুবশোব, জনরোগ, খাস তৃষ্ণা, মদরোগ, চক্ষ্রোগ, কঞু, ত্রণ, ক্রিমি ও ইক্রকুগু (ট্রাক) রোগে গুলাহার ব্যবস্থের।

খেতবক করবীর।

করবীরং শেওপৃষ্ণাং শেওক্ভোহখনারস্ক। দ্বিতীয়ো রজপুষ্পাস্কু চবাতোলগুড়খবা । করবীর হয় ওি ক বিকাশ ক্ষান কটুকণ্ডত । ত্রণলাহ্য ক্ষেত্র কোপা কুষ্ঠত্রগাপাহম্ । বীর্থোভা কিমি কণুস্থা ভাকিত বিষয়াতম্ ।

त्थककशी ७ मामकत्रवी।

শেতকরবীর পর্যায়। **খেতপুশ,** শতকুন্ত, অখমার।

রক্তকর্বীর পর্য্যার । রক্তপুস্প, চণ্ডাঙ্ক ও লণ্ড ।

তা। করবীর হয় ভিক্তে, কবাচ, কটুও উফ্লবীর্য।

প্রয়োগছল। ব্রণ, চক্ষ্ণীড়া, ছুঠ-ক্ষত, জিমি ও কণ্পু প্রছতি হোগে ব্যব-হার্যা। ইহার মূল গ্রহণীর।

আভ্যস্তরিক প্ররোগে ইহা বিষয়ৎ কার্য্যকরে: কাঞ্চনার কোনিবাব কাঞ্চনারং কাঞ্চনকো গণ্ডারেং শোনপুস্পকঃ। কোকিবারশ্চ মরিকঃ কুদ্দালো যুগ্পত্তক ॥ কুণ্ডুসা ভায়পুস্পাশাশুক স্বস্পকেশরী। কাল্ডনারো বিশোগ্রাহী ভুলর শ্রোপনিবসুং॥ বিশিক্ষ প্রদ্র শাগ্রহমাশ পুস্প বিদ্যান মন্। কোবিবারোগিভিছ্ন স্যান্তমেশ পুস্প বিদ্যান মন্। ক্রুম্ব সংগ্রাহি পিত্ত প্রদান ক্রম বাসন-

ल पकाकान ७ ८५ . ११ न

লাশক,ঞ্নের গ্রিষ। কাঞ্নার কাঞ্নক, গুড়ারি ও শোনপুশক।

খেতকাঞ্চনো গ্রাস। ফোবিদার, মরিক, কুদাল, সুগ্রপত্রক, কণ্ডলা, হান পুলা, অথাস্তক ও কনকেশবা।

গুণ। কাঞ্চনার শাস্ত, পাঠী ক-যাস, পিত্তপ্লেম্ম নাশক, ইহা ক্রিম কুষ্ঠ গুদভংশ, গুড়মালা ও ব্রণ শাস্তিকরে।

কোরিদারও কাঞ্নাব সদৃশ গু।বি-শিষ্ট। উভ্যের ত্বক্ গ্রহাণি মান। ১ মাশা।

এই তুই বুজোর পূম্প লঘ্ কল ও দংগাহী, ইহা রক্তবিত্ত, পেদর, সংস্ত কাস রোগ নৃষ্টকরে।

बिन्न यः।

শিরীবো ভবিলে। ভবি জ্ঞীরশ কপে দন শুকপুশাং শুক্তর মৃদুপুশাং শুক্তিয়ে। শিরীবো মধুরোঃনৃষ্ শুক্তার তুবরে। লঘু।। দোর পোর বিশপদ্ধঃ কাস রব বিধাপনঃ এ

পর্যাশ। শিরীষ, ভণ্ডিল, ভণ্ডা, ভ থাব, কলীছন, শুকপুন্স, শুক্তক, মৃত্-পুন্স ও শুকপ্রিষ এই গুলি ইহার প-গ্যাম। তা। মধ্র অনুষ্, ভিজ্ঞা, ক্ষার লম্। ইহাছারা দোষজ শোথ, বিসর্প, কাস, ত্রণ ও বিষ নষ্ট হর। ইহার বীজ ও মূল তুক্ প্রহণীয়, মাত্রা ২ মারা।

শিরীষিক।।

শিরী যকা টিন্টিনিকা দুর্বকাগুশিরী যিকা। তিনোম বিষকুক শোহরী বারিশিরী যিকা।

क्वलान्त्रात ।

পর্যায়। শিরাদিকা, টিণ্টিরিকা, তু-র্কাশ ও অধুশিরীধিকা।

ওা। দোষত্রষ, বিষ, কু**ঠ ও অর্থ:** নউকরে। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীয মাত্রা সমাধা।

मालः।

শ সভ সভকেকাখকবিকাশসসভবং। অশকৰ ক্ৰায়ং সাদ্ৱৰস্থেদ ক্ষকিমীন্। নুশুবিজৰি বাাধিয়া যোকিকৰ গ্ৰান্হয়েছে।

MIM!

প্যায়। শাল, স্ক্রক, অথকণিক। ও শ্ন্যুম্থ্র।

গুৰ্ব। ক্ষাষরস, ইহা এণ, স্বেদ, কফ, ক্রিমি, এর, জন্দ্রোগ, ব্ধর্কা, যোনি-রোগ ও কর্ণবোগ নিবারণ করে। ইহার ফুক্ গ্রহণ য মাত্রা ২ মাধা।

ত্রদালঃ।

उपालः नामराष्ट्रपः। म'व्यारकः छ व्ययुगः।

তথাল বৃক্ষ।

ইহার ৩৩৭ শালের ন্যাস অধিকন্ত ইহা দাহ ও বিফোটক উপশ্মিত করে।

मक्क करा (भाल एक)।

সক্তৰ্কোহন্তকৰ্ব(না)জ্যালো মবিচ পতক:। অন্তৰ্ক: কটুভিক্তঃ ক্যাযোজো বা)গোছতি। কফপাঞ্জতি গদান্ মেহকুঠ বিষৱধান্।

বাজি শাল।

পর্যায়। সজ্জকি, আজককর্ণ, শাল, ও মরিচপত্রক।

ত্থা। ইহা কটু, ভিক্ত, ক্ষাস ও উষ্ণ। ইহাক্ষ, পাণ্ডু, ক্বিরোগ মেহ, কুঠ, বিষ ও এণ নষ্টকরে। ইহার ত্রুক্ গ্রহণীয় মার্ড ২ মাখা।

শ্রক) ৷

শলকী গজভক্ষা চ সুবহা সুন্তা রুদা। মহেরুণা কৃত্তকৌ বলকী চ বহুস্তবা । শলকী তুবরা শীতঃ শিল্পলুগাতিসার্গ্রিহ। রুক্তপিত এবছরী পুর্তিকৃৎ সমুদ্যিতা।

हिन्ही भनाहै।

পর্যায়। শরকী, গজভক্ষা, সুবহা, স্থরভি, রুশা, মহেরুণা, কুলুফুকী, বরকা ও বহুস্রবা।

গুণ। ক্যায, শীতল ও পুষ্টিকারক। ইহা পিত্ত হৈছিক ক্ষতীদাব, রক্তপিত ও ব্রণ নষ্টকরে। মূল কৃক গ্রহণীৰ ম'বা ২ মাধা।

লিংগণা, (কিলিল্না শ) দব)।

লিংগণা পিছিল। শানা কুজন রাচ নার দক্ষণলা দৈব মুনিভিড মাহতে ও কাটিতা।

লিংগণা কটুকা ভিজা ক্ষায়া ঘোষহারিন)।
উজ্বীখ্যা হরেলেছা ক্টবিত্র রানিজয়ীন ।
বিশ্বিত্র বাদাহাজ বলাদান্ প্রতাতিনী।

भिला

পর্য,াষ। শিংশপা, পিচ্ছিলা, শ্যামা, রফ্তদার, অতরু, কপিলা ও ডম্মনর্ডা।

তা। কটু, জিন্তা, কষাৰ, শোষ-নাশক, উন্ধনীৰ্য্য, কফল্প ও গ'ৰ্ভজ্ঞাব**ক।**

প্রদোধ। ইং। নেদোরোগ, কুঠ, পিত্র বমি, ক্রিম, বস্তিবোগ, বব, দাহ ও এক্তদোগ নিমারণ করে। ইহার প্রক্ত প্র গ্রাই মানা নামা।

BIHAS 1

নীয়াকঃ প ভ্যাবন্চ পীতশালক উত্পি।

ক্ষুক্ৰপুষ্প প্ৰিয়ক সঞ্জুক শাসন্ আ হঃ ॥

বীয়াকঃ কও ব'সপ স্থিত যেত গ্ৰদ্ধিয়ানু।

হ'ও শ্ৰোহাত পিতাক স্কুচ্ঃ কেশ্যো রসায়ন ॥

পিয়'ল। হিন্দা আদন।

পর্যায়। াক্তক, প্রক্রার, পাত-শালক, বন্ধুকপুম্প, প্রিয়ক, সঞ্জকি ও ভাষন।

ওা। কেশ ও ওকের খাছাকর প রশাসন। ইচা কৃষ্ঠ, বাসপ্, খিন, নেহ, ওচ্চিনি, প্রোম ও রক্তপির রোগ নই-করে। ইচার মূল হক্ গ্রহণীয় মাত্র। ২ মাধা।

हेन्द्रमा ।

देन (सांश्रम'त १ जन्छ जिसक सालगळामः। उन्नादा कृष्टेकुडा'त अस्त्रगतिम क्षिमा ॥ इस्टकाः चित्र मृज्यु जिसकार कृष्टेशाकराम्।

हेक्सी हिम्सी हैटकोडे।

পর্যার। ইঞ্স, অঙ্গারবৃক্ষ, তিক্তক ও তাপস দ্রুয়।

তা। উষ্ণ, তিক ও পাকে কটু। ইহা কুঠ, বণ, বিষ, ক্রিম, খিত্র, শূল, গ্রহ ও ভৃতাদি নষ্টকরে। ইহার মূল ত্বক্ গ্রহণীয় মাত্র। মাধা।

একবিংশতিতমোহধ্যায়.।

किभिन्ननर्भः।

বিড়ক্ষঃ।

পুলিক্টাৰ বিজ্ঞান সাংহ কি বিশ্বোজন লাশনঃ।
তত্ত্বশত তথাবেল ন্যাখা চি এওগুল।
বিজ্ঞান কট্ডীক্লোক্ষা ক্ষান্ত বিক্রান্ত সমু।
আশিক্ষা বিষশ ভাগি আশিহদোৰনিক্থনম্।
শ্লাপ্মানোদর সোলা কিশি বাতবিবজন্হ।
অসা কলা একি মাহা মাহকৌ।

বিভ্না

বিড়ন্থ, ক্রিমির, অন্তনাশন, তণুল, বেল্ল, অনোখা ও চিনেতণুলা এই গুলি বিড়ন্থের নাম। বিড্রাকট্, তীক্ষা, উষ্ণ, কক্ষা, অগ্নি কারক, লঘু, ঈষ্থ, তিন্তা, বিষয়, ভাজি নিবারক।

আম্থিক প্রয়োগ। ইহা শূল আরান (পেটফাপা), উদর বোগ, শ্রেমা, ক্রেমি, বাষু ও মলবদ্ধ নিবারণ করে। ইহার ফল গ্রহণীর, মাতা ২ মাধা।

পারিভদ্রম্।

পরিক্তরো নিধতর্মন্দারং পারিস্কাতকঃ। পারিক্তরোংনিকালয় শোলমেক্ট ক্রিবিপ্রবৃৎ 🛊 তংপত্রং শিশুরোগস্থং কর্ণবাধি বিনাশনম্। অস্য তুর্গাধিকং গ্রাভং, নাত্রা তুরু ৬ রক্তিকা । পত্রাবি ব্রস্ক, ৪ নাবকাং।

পালিদামাদার। হিন্দী ফরহদ্। পর্যায়। পারিডন্ত, নিম্বতক্ষ, মন্দার ও পাবিজাতক।

গুণ। ইহা বারু, শ্লেমা, শোণ,
মেদোবোগ ও জিনি নাশকরে, ইহার পত্র
শিরোরোগ ও কর্ণ পীড়া নিবারণ করে।
ইহার ত্বক্ ও স্বরস গ্রহণীর, ত্বক্ চুর্ণের
মাত্রা ৬ রতি, পত্রাদির স্বরসের মাত্রা
১ মাধা।

সোমরাজী।

অবল্ওভো বাকুটা স্যাৎ সোমরাজী সুপর্ণিক।।
ল ললেথা কুলফ্রনা সোমাপুতিফ্রনিডি চ ॥
সোমবল্লা কাগমেথা কুঠজা চ প্রকারিতা।
বাকুটা মধুরা ভিক্তা কটুপাকা রুমায়নী ॥
বিউদ্ভর্গহ্মা কুচ্যা সরা জোহা প্রপিন্তন্থ।
কুক্ষা হৃদ্যা ঋণা কুঠ মেহজর ক্রিমিপ্রন্থ।
ভংকলং পিওলং কুঠ ক্ফানিল হরং কটু।
কেশ্যা বুচ্যা বিমিধাস কাশ লোধাম পাও নুথ।
অন্যা বীজং গ্রহং মাত্রা ১ মাষকঃ।

গোমরাজ।

পর্যাষ। অবল্গুজী, বাকুচী, লোম-রাজী, স্থার্থিকা, শশিলেধা, কৃষ্ণুফলা, দোমা, পৃতিফলা, লোমবল্লী, কালমেধী ও কৃষ্ঠনী।

ত্থণ। ইহা মধ্র, তিক্ত, পাকে কট্, রসাধন, বিষ্টন্ত নাশক, শীতল,রে'চক, সর, শ্লেমনাশক রক্তপিত্ত নাশক, রক্ষ ও হাদ্য।

পর্যাষ। ইহা শ্বাস, কুন্ঠ, মেহ, দ্রর ও ক্রিমি নাশকরে। সোমরাজীর ফল, পিরজনক, কেশের হিতকর, ত্বকের উপকারক ও কটু। এই ফল কুঠ, কফ, বাবু, বমি, খাস, কাস. শোথ, আম ও পাতুরোগ নত্ত করে। ইহার বীক গ্রহণীয়, মাত্রা ২ মাযা।

काण्डिला सुर ।

কাম্পিল কর্কশ-চজ্রে রকান্সে রোচনে হ'প চ। কাম্পিলঃ ক্ষপিতান্ত্র ক্রিনি গুরে দর এব'ন ॥ ছঙ্ভি রেচী কটুজন্চ মেদানাদ বিশ শানুৎ। অসা মাত্রা ১ ব্রক্তিকাঃ।

कमलाखं दि।

কাম্পিল্ল, কর্কশ, চন্দ্র, রক্তাঙ্গ ও রোচন এই গুলি কাম্পিন্থের ন'ম। কাম্পিল্ল রেচক, কটু, উষ্ণ, কফনাশক ও বিষয়। ইহা রক্তশিত্ত, ত্রিমি, গুল্ম, উদরবোগ, এর্ণ, মেহ ও অশ্বরাবোগ নষ্ট করে। ইহার মাত্রা ৬ রভি

मर्भ को ।

সপাক্ষী স্য'বু গঙাপা তথা নাডাকপাপক। সপাক্ষী কটুকা তিকা সোজা ক্রিমি নিকুওন। ॥ বৃশ্চিকোন্দুর সপাণাৎ বিষয়ী এগরোপিনী। মাত্র। ২ রক্তিকে।

हिको मद्रही। गाउनी।

প্র্যাব। স্পাক্ষী, গঙালী ও নাড় ক-পালক।

ত্তণ। কটু, তিক্তা, উন্ন, ক্রিমির এবং বৃশ্চিক, ইন্দুর ও সর্পের বিদ না-শক।এণে প্রবোগ করিলে এণ বসিধা যার। ইহার সর্ববিংশ গ্রহণীর, মাত্রা২ রতি।

ष्प्रकृत्रेक्षी ।

অর্কপুশ্বী জারকর্মা প্রস্যা জলকাযুক। ।
অর্কপুশ্বী জিমিল্লেয় মেছপিক বিকার জিম ।
নাত্রা ১ মাধকঃ।

বড় ক্ষীক্ই।

প্রদাধ। অর্কপুণ্ণী, ক্রেকর্মা, প্র বস্যাও জলকামুকা।

তা। ইহা কিনি, শ্লেষা, মেহ ও শিক্ষাোগ নঔ করে। ইহার সম্ভ অংশ গ্রহণীয়, মানা ১ মাযা।

447

ত থক ী জু'থকৰ পৰিবাড়ৰরী চৰা আনুষ্ঠী বটু প্রিকাক থাম শীতল পলু॥ বিপ'কে বটুকারুও কফাম্য ক্রিম প্রবৃণ। মাত্রা নাৰ হঃ।

हेन दकान थाना।

প্র্যাস । কাথুকর্ন, গাখুকর্ন, গণিক। ও ভুনরাভ্না ১ট তাশে ইহার প্রায়ে।

থ্যণ। কটু, তিক্তন, কধাৰ, শতিল, লঘু, ও পাকে কটু।

প্যাব। ইহাদ'রা মূর্রেরাণ ট্রে গুক পীড়া ও ক্রিমি নষ্ট হয়। ইহার মুম্ভু জংশ গুহণায়, মুরো ১ মাধা।

0 84 141 1

পলাশঃ কিং নক পণী য'জকো রক্তপুষ্পকঃ। ক্ষারশোধ্য ক'তহরো রক্ষতৃক্ষঃ সমিদ্ধঃ। পলাশৌ দীপনোবৃদ্যঃ সরোজ রপ্তস্থাকিং। কথায়ঃ কটুক'স্তিকঃ বিজ্ঞো গুদ্ধরোগ'জিং। ভগ্নস্থান ক্দোৰ গ্রহণার্গ ক্রিন্ন হরেং। ভগ্নস্থান থাদুপাঁকে তুক্টুভিক্তং ক্যায়ক্য়। বাত্তপ ক্ষা পিপাস্তা কৃষ্ণ ভিদ্য এ। হিশা ওস্ম তৃড় লাক লাখক বাত্ত ৮০ কৃষ্ঠ হবং প্রেম ॥ ফলং অস্থা মেকলা 'এং মাবাত ককাপ্রমা। বিধাকে কৃষ্ণ কেন্সং কৃষ্ঠ এন্দোর প্রথাৎ । অস্যা এগবাফা দিক আছি। ম'লা না'্যক.।

4141

পর্যায়। প্লাশ, কিংশুক, ধ্বী, স্থ্যিক, রক্ষপুষ্পক, ক্ষারভ্রেষ্ঠ, বাত্হর, রক্ষর্ফ ও স্মিদ্বর।

ওণ। স্মাগদীপিক'রচ বশকর, শব, উঞ্চ, কথা, কটু, তিক ও লিগ্ধ

গ্যায়। ইহা এণ, জ্যা, গুহা দেশের বোগ, এহণী, শর্শ, ও কিমিন্ত করে। ইহা হাবা চরস্থান সংযোজিত হব।

প্ৰাশো পুল্প স্থাত, তিক, ক্রাব,
পাকে কট্ বায় কিক, গাহা ও শাত্স।
ইয়া শোলক রক্তপিও, মনকচ্ছ প্রা,
দাত, গাত্রক ও কুঠ নাশ করে। ইতাব বিশাল, উষ্ণ, শেত শ্লেম নাশক, গাকে কট্
ও দ্বা, ইয়ার দ্বারার ঠ, ধুম ও উদ্বর্ধার
নিবারিত হয়।

ইহার জক্ ও বাজ শেচতি গ্রন্থ, মানা ১ মাষা। কিমিবোলে বাজই | সকলোবাৰকক হয়।

দাবিংশতিতমোহধ্যায়।

मका,नी ना ।

तस्त्रं भा।

ধর্দম ধন্ধ কো গো বনুকা সুভেছন। ধর্দা কফ পিডাজ কাসহানু বরো সহু ॥ বুং হণো বলবুজ্জা সভি দ্হ ত্রণবোপন।। জন্য তুর্গ্রহণীনা, মাত্রা ১ মার্কা। ধাওবা বুক্ষ। হিন্দী ধানিন।

পুস্যায়। শ্রহ্ম, ধ্যুর্হিং, গোত্রবৃহ্ম, ৪ সংহেজন।

৩3৭। কমাস, লঘু, পুষ্টিকারক, রুক্ষ, বশকারক ৩ সংযোজক।

পর্যার। ইহার দারা শৈল্পিক রক্তপিত ও কাম উপশ্মিক হয়। ইহার 'তৃক্ গহনীয় মালা ২ মায়া।

चार्क्क् न।

ক্ৰছে। জিন নামা চনদীসক্ষণ কি কিছিল ই- জ বলি পুক্ৰত সক্ষ ধৰলং সাতু ॥ কৰ্ছ শীতাৰ হৃদ্য ক্ষত ক্ষা নি হাজিং গোৰা মেছ এন'ন্ ছড়ি তুৱে, ক্ষপিত ক্ষং ॥ লে প্ৰে সামুদ্যাগস) ভগুস্ক মুকে। মৃত্য । আন্ত মুগ্ৰহনীয় মাহা ৷ মাহকো ।

जङ्गुन किना त्रीह।

পর্যায়। ককুভ, আর্চ্ডান, নদীসর্জ্ঞ, ইন্তেক্, বীরবৃক্ষ, বীর ও ববল।

পাণ। শীৰল, জানা, কমাৰ, কফ পিত্ৰাশক, বাশ্রোগ প্রকোপক ও ভগ্ন সন্ধায়ক।

প্রবোগ। ইহা ক্ষত, ক্ষম, বিষ, রজ-দেশ মেদ, মেহ ও এব নাই করে। ইহাব জুক্ এহণীয়, মাত্রা ২ মাবা।

অস্থিদংহাবক।

প্রবিধানতি গ'ছাবি বছালী বাজিপ্রকাং। অভিনাহারকং প্রোকো ব'দলোগ ছারেংভিষুক্ ॥ উল্লালয়ে ক্রিমিল্লত দুর্নামল্লোডিজিরোগলির। ক্লক্ষা ক্রাড্রাল্লালয় ক্রাড়া কাডে জুগ্রির্হিত মহি শৃস্লালা মারার্ক্তি হিদ্যালক চুক্ত ত্রহর্ষ্। শশ্সিক\ ভদ্মুতত ভিগস্য তৈলে সম্পক্ষ\ বটক মতীব বাওছারি ॥ মাঝা ১ মাহকঃ।

হাড়ভাঙ্গা। হিন্দী হড়দংছোবি।

পর্যার। এছিমান্, অভিদংহারী বজাদ্বা ও অভিশুখ্লা।

জ্প। ইহা বাড্রাগ্রেম নাশক, অন্তি-সংযোগক, উষ্ণ, সর, ক্রিমিন্ন, অর্মেনি-শক, চঞ্চ্বাগ্রে উপকারক, রঞ্জ, স্বাচ্চ, লাগু, বশকারক, ১, চক ও পিরিজনক। ইহার স্বক্তকেশিয়া কাণ্ডের চূর্য মধ্যা ডাইলেব আবরণ লাগে বার্যা অন্ধ্রিমা একরে পেষণ করিয়া ভিল্নেলে পাক করিয়া রউক প্রস্তুত্ত করিবে, এই বটক অভিশ্ব বাহ্নাশক। এই লাভার স্ক্রিংশ গ্রহণ শীষ্য, মাত্রা ২ মাধা।

ব্ল ।

রালন্ত শালনির্যাদ শুলা সংজ্ঞান যাতঃ।
দেবপুপো যকলুপ শুলা সংব্যাদ্য সং ॥
রাপে, হিনো গুরু স্থিক: কমায়ো আহকো ছরেছ।
দোনাস্ স্বেদ বাসপ জর রব বিপাদিকাল।
গ্রহন্তর্গারি দকাশ্রো শূসান্তীসার নাশনল।
মাঝা এর ক্রিকাল।

धूना ।

পর্য দে । বাল, শালনির্য্যাস, সজ্জবিস, দেবপুপ, মহন্দুপ ও মর্কুরস।

তাৰ। ইহা শাভিল, তাকু, ভিক্তি, কণার ও আহক।

প্ররোগ। ইহা বাতাদি দেশি, রক্ষ-দেশ, কেন, বীদর্প, জ্বর, ত্রা, বিপাদিকা, গ্রহ, ভগ্নরোগ, অগ্নিনগ্ন, শূল ও অতিসার রোগে উপকার করে। মাত্রা ও রতি।

ত্ররোবিংশতিতমোহধ্যায়।

ষাং ভাষা বৰ্গঃ।

শেতৈরওঃ।

স। তে ক্লং কাননৈরওং শেতৈরওোব্যক্তনং।
খেতিরও কটু ভিডে বিযোগালং কফরোগন্ধ।
শূলবায়ুকফধন সি অকল মূলযদ্যতু।
নিযাস ক্ষতভংগোকো ক্ষেম্বনাশনং॥
আনবাতক বিট্সক বুলি ক্লণ ব্যামন ভেল্নদ্।
নিহতি কফজ ব্যাধি কলে বামন ভেল্নদ্॥

दानटकटब्रम्भा।

শ্বর্গ, কালনৈর গু, গ্রেট্রবণ্ড ও বাড়থন এট প্রলি বাগড়েরেশার সংখ্যক নাম।
ইহা কটু, তিজে, উফ্লন্মা, কলজবোগনাশক, শুল প্রশমক, বায় নিবারক জ
কজন। ইহার মূল শুক্র জনক এবং
নির্যান (জাচা) চলত শান্তি কারক জ
রস্তরাগ নিবারক। আম্বাত, মলরোর,
ওলভ কজন বোগ সমত্তে ইহা প্রেনজা। বাগলে, ইলার ফল বমন কারক ও
বিরেচক।

এই অধ্যাসে লিখিতব্য বিষয় পরি-শিষ্টে লিখিত হটকে।

চতুর্বিংশতিত্রোহধ্যায়ः।

श्रुष्णवर्गः।

প্রম্।

বা পুণানি পদান মজিনমর্বিশাং মছে। ংশকন্।
স্বত্তপত্র ক্ষল শতপত্র কুশোন্মন্।
প্রেক্ত আমর্স সার্স স্বসীকৃত্য ।
বিস্থাসূন্য জীব পুক্রাছোক্ত মি চ ৪
ক্রেশ শতিকা বিশ্বাস বিশ্বাস মধুর ক্ষাপ্তিলিং।

তৃত্য দাহাত্র বিক্ষোট বিষ বীসর্প নালনম্ । বিশেষতঃ সিত্ত পদাং পুণ্ডরীক নিতিষাত্রম্ রক্তং কোকনদং তেয়েং নালনিন্দ্রিয়ং বা,তন্ ॥ ধ্বলং কনপং লাতং মসুরং রক্ত পিসালিং। তথ্যাদৃশ্যেগং কিঞ্চিদ্যাদ্ প্রকোহপাসাদিকম্ ॥

পদা ।

প্র্যায়। পদ্ম, নলিন, জার্বিন্দ, মহোৎপঙ্গ, সহস্রপত্ত, কমল, শ্রুতিত্ত, কুলেশ্য, প্রেক্ত্র, তামরস, মার্ম, স্ব-সীক্ত্র, বিস্প্রেপ্ন, রাজীব, প্রন ও জড্ডো-ক্রুর এই গুলি প্রোর নাম।

তার। শতিল, বনজনক, মর্ব, ক্র পিত্তর ও বিধ নাশক। ত্থা, দাও, রক্তন দোষ, বিজ্যোত ও বিশপ্রেরের প্রেরে কবিলে উপশম্ভর । জনকা প্রিরেক প্রত্তীক, লোভিত প্রকে কোকন্দ ও নীল্পারকে ইক্বির কুক্তে। বেক্তির শাকল মধ্ব, কর্ক শাক্তির ব ব পিত-নাশক। বক্তোৎপল ইহা সংগ্রাভিতর তার বিশিষ্ট।

ণ্ডিৰী ।

মুগনাল দলোৎফ্লঃ ফলৈঃ সমুদিকা পুন: পদানী প্রোচ্তে প্রতিজ বিসিন্সাদি চ সা আ,ওা॥ পদানী লীভগান্তস্মীমধুবা লগনা চ সা ॥ পিকাস্ক্ কফন্ জক্ষা বাত্তিক্টিন্ধ কারিনী। আদি শক্ষাম্পিনী ক্যাসনীত্যাদি।

মূল, নাল ও দল প্রভৃতি সমুদ্ধে তথে সহিত সমগ্র প্রদেশ প্রনী, বিদিনী, নলিনী, কমলিনী ইত্যাদি কহে। প্রেমী, শীতল, গুরু, মধুর লবগবদ বিশিষ্ট কৃষ্ণ ও বাভবিষ্টিভ কারক। ইহার দ্বারা রক্তাপিত ও কফ উপুশমিত হয়।

পদ্মদা নবপত্রাদি।

মুখ্রিকা নবদলং বীক্সকোশন্ত কৰিকা।
কিঞ্জঃ কেশর প্রোক্তো মকরন্দোরসঃ মাতঃ ॥
০, জনালং মুণালং স্যান্তণা কিস মিতি আভ্রম্।
গ্রন্থতিকা হিমা তিকা কাষ্য্য দাছ তৃট্ প্রবৃথ ॥
গ্রন্থতা ওদব্যাধি রক্ষেশিন্ত বিনালিনা ।
পদাস্য কবিকা তিকা ক্ষামা মধুরা হিমা ॥
মুখ বৈশদ্য কুল্যা তৃষ্ণাপ্র ক্ষামোগ্রাহকোইশি সংল ক্ষান্তঃ শতিলোব্যঃ ক্ষামোগ্রাহকোইশি সংল ক্ষান্তং শতিলোব্যঃ ক্ষামোগ্রাহকোইশি সংল ক্ষান্তং শতিলাব্যঃ ক্ষামোগ্রাহকোইশি সংল ক্ষান্তং বিশ্বাহ রক্ষণো বিষ্ণোগ্রাহ্ব ।
মুণালং শতিলং ব্যাং শিক্সাহাক্ষিথ ওক্ন ॥
দুক্রিং যাদু পাক্ত ভ্রমানিল ক্ষপ্রদ্য ।
সংগ্রাহ্মধুরং ক্ষাং শাল্ক্মপি ভদ্ওব্ন্॥

পদ্মের নবপত্রাদি।

পারের দুকন পাত্রকে সম্বর্তিক।, বাজকোধকে কবিকা, কেশরকে কিঞ্জল, রসকে (মধ্কে) মকলে ও নাপকে দুবাল ও বিস কহে।

সম্ভিকা (ন্তন পত্ত) শীক্তা, তিক্ত ও ক্ষায়, ইহার দ্বারা দাহ, তৃঞা, মূনকুছ্, গুহাপীড়া ও রক্তপিক উপশ-মিত হয়।

কর্ণিকা (বীজকোষ) কিন্তু, ক্যায়, মধুর, শীতল ও লঘু, ইহা ভক্ষণ করিলে মুখ পরিষ্কৃত হয় এবং ত্কা, রক্তদোষ ও কফ নষ্ট হয়।

পালোর কিঞ্জন শাতল, রুধ্য ক্ষার সংগ্রাহী ক্ষণিত এবং বিধ নাশক। ইহা দ্বাবা ভূষণা, দাহ, বঁক্তার্শন্ত শোপ উপ-শমিত হয়।

গালের মৃণাল শীতল, ব্যা, ওক্স, দহজে জার্ন হয় না, জীর্ন হইলে স্বাচ্রদ হয়। স্তানে তুথোৎপদাক, বায়ু বদ্ধকি শ্লেম্ম জনক, সংগ্রাহী, মধুর কৃষ্ণ, পিত জনা দাহ ও রক্তদোষ নষ্ট করে। শালুকের অর্থাৎ পাভারি মুলের গুণও ইহার ন্যায়।

क्म्बन्।

(थंड) कुरनग्र (क्षांक) कृगृष् रेकद्रव उथा। कृगृष् (পिष्ट्रिण) दिखी मधुत्र आदिमीडनम् ।

(गट्डा९लन, मँ मिश्र्य ।

ংখারি। খেতিকুবলর, কুমুদ ও কৈরব।

তা। পিছিল, স্লিগ্ধ, মর্ব, আফনাদ জনক ও শীতল।

कुम् मनी।

कुपूष्ठ है रेकद्रविकाँ छना क्युनिने हि छ । म'डूम्अनि मक्स्टिक क्रका मयूनित दूरियः ॥ भौद्यम्या त्य खनारक्षाका क्रयूनिम्यान्य व्यवस्थाः ।

মূলাদি সর্বাদ্ধ সহিত কুমুনকে রুর্
দিনী কহে ইহার প্র্যায় কুম্বতা, কৈরবিকা ৩ কুমুদিনী। ইহার গুণ প্রানার
ন্যায়।

(मःভी।

শতপত্রী তরুণাকা কর্ণিকা চারুকেশরা। মহারুমারী গভাটো লাক্ষাপুস্পাতিনজ্ঞ লা ॥ শতপত্রী হিমা হৃদ্যে গ্রাক্ষণী স্কুস্পালযুই। দেখেত্রহাক্ষাক্ষথ বর্ণা ভিকা কট্টা চ পাচনী ॥

সেঁউছা :

পর্যার । শতপত্তী, হরণী, কর্নিকা চারুকেশরা, মহাকুমারী, গরাজ্য, লাক্ষা-পুশা ও অভিমঞ্জা। গুণ। শীতল, হৃদ্য, গ্রাহী, শুক্র-জনক, লঘু, ত্রিদোষ নাশক, রক্ত বিশোধক, বর্ণ্য, তিক্ত, কটু ও পাচক।

বাসস্তী ৷

নেপামী কবিতা ওজ্জৈত সপ্তমা নবমালিকা। বাস্থ্যী দীউলা সুদ্দী ডিক্সা দেখিবায়াক্সজিৎ ॥

ৰংশ্লিক।।

পর্যায়। বন্ধালা, সপ্রলা, নর্মালিকা ও বাসস্তা।

প্র । শীসল, লঘু, জিক্ত, ত্রিদোষন্ন
 প্রক্রদোষ নাশক।

জাতা প্র-জিটো।

জাতির্নতা চ সুমনা মাসতী রাজপুত্রিনা। ১চতিকা গুদাগড়া চ সা পাতা স্থণজাতিকা। জাতীগুগাং ভিজনুসংং তুররং সগুদোযাজিৎ। শিচেক্তি মুখানত ডি বিষক্তানিসাক্ষাক্ষৎ।

लाही बन्द वर्षणाको । हिन्दी हात्मली ।

্নুন্য । জাতি, জাতা, স্মনা, মালতী, রাজপুলিকা, চেতিকা ও অদ্যুগদ্ধা । জাতী ীত বৰ্ণ হইলে ইহাকে স্বৰ্ণজাতী কহে।

ক্রণ। জালীধ্য জিজ, উন্নঃ, কথার লাগুও বেংগনে ইতার দ্বারা মন্তক, চন্তু, মূব ও দেখের পাড়া, বিগজ রোগ, কুষ্ঠ, বাসু ও রক্তেশ্য নিবারিত হর।

> ্যুথিকা স্বৰ্থ্যিকা। ভাৰতাকাকীল কেমপ্ৰিক

্যুধিকা গণিকাংখ্যা সা পীতা হেমপুজ্ঞাকা। নুগাযুগ্য হিমা ডিজা কটুগাক্রসা লয়ু॥ মধূর^ তুবর^ জ্বা^ পিডয়ে^ কফবাডলম্। রণাজ মুখদভাক্ষি শিরোরোগ বিবাপহম্॥

जुरे এবং স্বর্ণজুই।

পর্যায়। যৃথিকা, গণিকা, ৩৪ অস্বষ্ঠা। ইতা পীতবর্ণ হইলে হেমপুম্পিকা বা স্বর্ণ-মৃথিকা কহে।

৩৭। মৃথিকাষয় শীতপ, জিল, পাকে কট্রস, লগু, মধুর, কথাস, জন্য, পিরুল্ল, বাতশ্রেল বদ্ধ ও বিসন্ত । তিলার দারা বৃশ, রক্তনোধ, মুখ, দস্ত চল্বোগ ও শির্গাড়া নিবারিত হয়।

5齊雨。1

চামেণ্য শ্চমণকং প্রোক্তা ছেমপুপান্চ ম ক্রেং। এডম। ফলিকা গালকলীতি কলিডা বু'ধ । চমণকং কটুকভিক্তং ক্যাযো মধুরো কিংং। বিষ ক্রিমিছর কুচ্ছ ক্ষবাভান্ত পিওজিং ॥

हाना भूष्म ।

পর্যায়। চাম্পেয়, চম্পক ও হেম-পূষ্প এই গুলি ইহার পর্যায়, ইহার কলি-কাকে গ্লুকলী কহে।

তা। কটু, তিজ, কষায়, মধুব, শীতল, বিষয়, ও জিন্মি নাশক, ইহাব ছায়া বাত শৈল্পিক রক্তপিক উপশ্মিত হয়।

বকুলঃ।

বফুলো মধুগখনত লি৲ছকেশরক স্তথা। বকুল শুবরোংনুজ্ঞ কটুলাক রুলো গুরুঃ ॥ কফ'লত বিদ্যান্ত ক্রিমিদ্স গদীপ্রঃ।

বকুল।

পর্যাব। বকুল, মধুগল, দিংহ-কেশরক।

গুণ। ক্ষায় অনুষ্ণ, পাকে কটু ও গুরু ইহা ব্যবহারে কফ, পিত্ত, বিষ, খিত্র, দত্তরোগ ও ক্রিমি নষ্ট হয়।

শিবমল্লী।

শিবমল্লী পাস্তপত একান্ঠীলোবুকো বসুং। বুকোঃনৃক্তঃ কটুডিকঃ কফপিত বিষাপহং । যোনিশূল ভূষাদাহ কুঠ শোগান্ত নাশনং।

প্রাবক।

পুর্যায়। শিব্মল্লী, পাশুপাক, একা-ষ্টালা, বুক ও বজু। ইহার অপব এক নাম বুহদকুল।

প্রা। অনুষ্ঠা, কটু, ভিক্ত, পিত্ত-নাশক বিষয়।

প্রযোগ। গোনিশ্ল, জয়গ, দাহ, কুঠ, শোধ ও রক্তদোধে ইহাপ্রয়েজ্য।

কদ্সঃ।

কদম: প্রিয়কোনীপীবৃত্তপুল্পো ছলিপ্রিয়:। কনগো মধুর: শীডো কষায়ো লবণোগ্রক: ১ সংগ্রা বিউন্ড কুক্তক্ষ: কফন্তন্যনিজপ্রদ:।

*** የ**፯

পর্য্যায়। কদৃষ্, প্রিয়ক, নীপ, রুক্ত-পূজ্য ও হলিপ্রিয়।

ত্তা। মধুর, শীতল, ক্যার, লবণরদ বিশিষ্ট, তক্ষ, সর, বিষ্ঠস্তী, রুক্ষ, ক্ফবদ্ধ ক ন্তনে দুয়োৎপাদক ও বায়ুজনক।

বাৰ্ষিকা।

শ্ৰপদী বট্পদানন্দ। বাধিকী মুক্তবনা। বাৰ্ষিকী শীতলা লগী তিকা দোৰবয়াপদা। কৰ্ণাক্ষ মুখরোগদ্ধী তবৈল্প তদ্প্তৰ্প নাত্ৰ্য।

(दल ।

প্র্যায়। জীপদী, ষট্পদানন্দা, বা-র্ষিকী ও মুক্তবন্ধনা।

ত্ব। শীতল, লঘু, তিক্ত ও তিদে। য নাশক। ইহা ব্যবহারে কর্ণ চক্ষাং ও মুখের এবাগ দ্র হয়, ইহার তৈলেরও এইরূপ ওবা জানিবে।

মান্লকা।

ম'ল্লকা মদম্ভী চ লীতভীক্লণ্ড ডুপদী। ম'ল্লেকোন্ধা লঘুরু'ব্যা ডিক্লা চ কটুকা হরেং । বাডপিতাল্য দুগ্যাধি কুঁঙাক্লচি বিষর্গান্।

মল্লিকা।

পর্য্যায়। মল্লিকা, মদয়ন্তী, শীত-ভীকুও ভূপদী।

ত্থা। উষ্ণ, লঘু, বলকারক, কিব্রু ও কটু। ইহার দ্বারা বারু, পিকু, মুখ-রোগ, নেত্ররোগ, কুঠ, অরুচি, বিস্পু ব্যান্ট হয়।

মাগ্ৰী।

মাধবী স্যান্ত্র বাদঙী পুজুকো মনকোছপি চ। অভিমুক্তো বিমুক্তণ কায়ুকো অনরোৎসবং । মাধবী মনুৱা শীতা সদ্ধী দোখাত্রয়াপহা।

माध्यो ।

পর্যার। মাধবী, বাসস্তী, পুণুক, মণ্ডক, অতিমুক্ত, বিমুক্ত, কামুক ও ভাষরেংশব। গুণ। মাধ্বী মধুর, শীতল, লঘু ও তিদোধ নাশক।

কেতক সুবৰ্ণকেছকী।

কেন্ডকঃ সুচিকাপুজ্প) স্বাধুকঃ ক্রক্ চছন।
সূবর্ণকেন্ডকী তুলা। স্বাধুক্ষা সুগদ্ধিনী ॥
কেন্ডক: কটুক মাপুকায় ভিক্তঃ ক্ষাপ্তঃ।
উজ্ঞা তিক্তরসা শ্রেয়া চকুষা। ইংমকেন্ডকী ॥

কেছকী, কেয়াফুল।

পর্যায়। কেতক, স্চিকাপুষ্প, জুমুক ও ক্রকচন্ট্রন। অপর এক জানীয কেতকা আছে, ভাহাকে স্থানকৈতকা, ল্যুপুষ্প ও স্থান্ধনী বলে।

জ্ঞা। কেতকা কটু, স্বাচ্, লঘু, ভিজ্ঞ ও কল নাশক। স্বনকেতকী উক্চ, তিক্ত ও চন্দের হিত্তকর।

কিজিরাভঃ ৷

কিন্ধিহাতো ছেমগোর: পীতকঃ পীতভাৱকঃ। কিন্ধিহাতো ছিমন্তিকঃ ক্যায়শ্চ হরেদসো॥ কঞ্পিত পিপাসাজ্র দাহ শোধ বন্ধি ক্রিমীনু .

রজবাটা বিশেষ।

পর্যাায় । কিন্ধিরাত, হেম্পোর, পাঁতক ও পাঁতভত্তক।

গুণ। শাঙ্গ, ডিজ, ক্ষায়, ইহার দারা, কফ, পিত্ত, পিপাদা, রক্তনোধ, দাহ, শোধ, বমি ও ক্রিম নই হয়।

কর্ণিকারঃ।

কৰিকারঃ পরিব্যাধঃ পাদপোৎল ইন্ডাপি। কৰিকারঃ কটু ভিড-ছবরঃ শোধমোলযুঃ । রঙনঃ সুখদঃ লোবমোয়াক্সরণকৃষ্ঠজিৎ।

हाउँ भाषान ।

পর্যায়। কর্ণিকার, পরিব্যাধ ও খাদপোৎপল।

গুণ। কটু, ভিক্তে, কষাৰ, শোধন (বিরেচক ও বমন কারক) লঘু, রঞ্জন ও স্থপ্রদ। ইহার স্থারা, শোথ, শ্লেমা রক্তদোষ, ত্রা ও কুষ্ঠ নিবারিত হয়।

ভার:টনঃ।

অল্লাত্যাহলটেন: প্রোক্ত নগালাতক ইডাপি। কুরুটীকো বর্ণপুষ্পাং স্থাবোকা মহাসহ:॥ অল্লাটনং ক্যারোজ্ঞ স্থিতঃ থাদুশ্চ তিককঃ।

আমলা।

ইহা গৌরাদি দেশে বাণপুষ্প নামে প্রসিদ্ধ।

পর্যায়। অসাত, অস্লাটন, অস্লাতক, কুরণ্টক, বর্ণপূ**প্প ও মহা**শহ।

গুণ। ক্যায়, উদ্ধ, স্থিদ, স্থাতু ও ভিক্তা।

कुन्यः ।

কৃষ্ণ কবিত। যাদ্যা সদাপুষ্পদ্ধ তংঝাত্য। কৃষ্ণ দীত। লযু লেয়াদিরোরগ্বেষপিবছং ।

कॅ म ।

श्वीशित्रः। कून्न, भीनत श्व मणाशून्त्रः। १८९१ः। मीकल श्व समृहेकः। यादशादत्रः मिदशादशाश विष च शिख नष्ठे दशः।

मुर्कुलः ।

यू ठूकुंच्यः कथतुक किञ्चकः अध्वित्कृकः । युकुकुंच्यः नित्रभोका निवास विवत्रानेनः ॥

मुह्कम् ।

় পর্যার। মুচুকুন্দ, ক্ষত্রক্ন, চিত্রক ও প্রতিবিষ্ণুক। ইহা শিরংপীড়া রক্ত-পিত্ত ও বিষ্নস্ত করে।

তিশকঃ।

তিলকঃ ক্ষুক্ত শ্রীমান্ সূপুর শছতপুশ্পকঃ। তিপকঃ কটুকঃ পাকে রলে চোজো রসায়নঃ ॥ কফকঠ শ্রিমান্ বস্তি মুখদন্ত গদান হরেৎ।

हिलक।

পর্য্যায়। তিলক, ক্লুব্লক, শ্রীমান্, স্পুত্প ও ছত্রপুত্পক।

গুণ। ইহা আখাদেও পাকে কটু, উষ্ণ ও রদায়ন।

প্রয়োগ। কফ রৃদ্ধি, কুষ্ঠ, ক্রিমি, বস্তি পীড়া, মুখরোগ ও দন্তরোগে ইহা প্রযোজ্য।

বন্কঃ।

বছুকো বঙ্জীবশ্চ রজ্যে মাধ্যাব্দিকোহপি চ। বঙ্কা কফক্ৎপ্রাহী বাতপিত্তরা লয়ঃ ॥

হিন্দী গেজুনিয়া।

পর্যায়। বন্ধুক, বন্ধুকীব, রক্ত ও মাধ্যাহিক।

গুণ ৷ কফ নাশক, গ্রাহী, বায়্পিত নাশক ও লঘু ৷ *

অগ্রি।

অধ্যপ্তত্তী বজনেণী যুনিপূস্পী বৃনিজয়ং। অসম্ভি পিত ককজিৎ চাতুপাঁক হয়ী হিন্দঃ ক্লজে। বাতকর ভিজঃ প্রতিশ্যায় নিবারণ। বক ৷

প্রাার। অগন্তা, বল্পেন, মুনিপুশ্প ও মুনিজম।

গুণ। শীতল, রুক্স, বারু জনক ও তিক্ত, ইহা দ্বারা পিত শ্লেদ্মা, চাতুর্থক জর ও প্রতিশায়ে উপশমিত হয়।

मिन्हु ही ।

,সিন্দুরী রকবীজা চ রকপুষ্পা সুকোমলা। সিন্দুরী বিষ পিকাজ ভূজা বাহিছরী হিমা !

हिन्ही भिन्तुविया।

প্রায়। সিন্দ্রী, রক্তবীজা, রক-পুলাও সুকোমলা এই গুলি ইহার নাম।

প্রণ। ইহা শীতল ও বিষয় ইহা ব্যবহার করিলে শরক্তপিত, ভৃষ্ণা ও বমি নিবারণ হয়।

<u>ተ</u>ሟጥ: ነ

কৃষ্ণকো ভদ্ৰতর্গী রুছিং পুস্পাছতিকেশরং। মহামহা কঞিকাচ্যা নীলালিকসসমূলা ॥ কৃষ্ণকঃ সুরভিঃ স্বাপুং ক্যায়ানুরমং সরং। ত্রিদেখে শমনো সুষ্যঃ শীতহুরী চ সাক্ষ্য ॥

विकी कुछ।।

প্রায়। কুক্সক, ভদ্তরণী, রুহৎ-পুশা, অভিকেশব, মহাসহা, কটক্রা।, নীলাও অলিকুলসক্ষা।

তাৰ। মুখভি, স্বাচ, ঈষং ক্ষায় রদ, দর, ত্রিদোষ শাস্তিকর, বল কারক ও শীক্ত নাশক। रेमदवत्रक द्धिश्य।

দিদৈরেরকঃ খেতপুপাং দৈরের কটদারিকা।
স্থাচর সহচরঃ সচ ভিশাপি কল্যতে ।
কুরুটকোহত্র পাতেস্যান্তকে কুরুহকঃ আ্তঃ।
নালে বাবো বুবৈরুক্তো ছাস্যার্ত্তগল্ভ সং ।
দৈরেরঃ কুঠবাতান্ত কফ্করু বিষাপ্তঃ।
ভিক্তোন্থো স্থুরো হন্তা সুরিকঃ কেলর্থানঃ ।

তিন প্রকার ঝিন্টী, নাটী।

পর্যায়। সৈরেয়র্ক, থেকপুষ্প, দৈ-রেয়, কটসারিকা, সহাচর, সহচর ও ভিন্দী।

ঝিণ্টী জিন প্রকার। পীজবর্ণ ঝিণ্টী-কে ক্রণ্টক, রফ্তবর্গ ঝিণ্টীকে ক্রবক এবং নীলবর্গ ঝিণ্টাকে দাস ও আর্ত্তগল কতে।

গ্যা। কিন্তু, উষ্ণু, ম্পুর, দক্তের উপাকারক, হারিয়া ও কেশ রঞ্জক।

প্ররোগ। ইহার ছারা কৃষ্ঠ, বাক, রক্তবোধ, কফ, কণ্ড বিষ ন্ট হর। সমস্ত অংশ গ্রহণীয় মাত্রা সমাধা।

পঞ্চবিশংতিত্রমোহধ্যায়ঃ।

ফলবর্গঃ।

कामः।

আন্তঃ প্রোক্তো রসালশ্চ সহকারোহতি সৌরজঃ।
কামানো মধুদুওশ্চ মাকশং শিকসম্লভঃ।
আন্তপুশ্পনভীসার\ ককপিত প্রমেহনুৎ।
অসুগ্ দুব্টিহর\ গাঁড\ কুচিকুদ্ গ্রাহিবাভলম্।
আন্ত্র বাল্ ক্যায়ামু১ কুচ্চ\ মাক্লভ শিভমুৎ।
ভক্রবন্ধ ভয়তাম কুল্প ঘোৰত্রাক্রকৃৎ।
আন্ত্র মাম্য জুচারীন বাভপেহতি বিশোবিত্র।

অন্নং স্বাসু ক্ষায়ৎ সাহেদেনং ক্তবাত সিং। क्रमञ्ज समुद्राः पुत्रः)ः विकार तलामुर्व श्रीमन्। खंडरोड बद्र९ क्रमा९ वर्गा९ मीड मलिंदनम् ॥ कवारा नुद्रमा विकासियास्यक विवर्धनम् । তদের রুক্ষ সংপার্কা গুরুবাত ছরং পর্বা 🛭 মগুরায়া রসং কিঞিদ্ভবেৎ পিত প্রকোপন্ম : चाअर कृषिय शंकक उम्हातर शिवनार्गनम् ॥ রস্ম)লিয়া হীনভাং মাধুয়াজ বিশেষতঃ। উমিত্র তৎপর রুচাৎ বলাং বীয়াকরং লখু॥ শীতলং শাঘ্র পাকিস্যাহ বাদ্পির্চরং সর্ম। खन्ना गानिस्डा रहा। धक्रकार्ड्डः मद्रः ॥ व्यक्तमा अर्थावाष्ट्रीय तुः इतः करन्यर्कनः। ভদা, খড়া ওর পর। রোচনা চিরপাকি চ ॥ मर्पुत्र पूर्वन्य यकार भीड्यर वाउनाचनम्। বাতপিত্ত হরণ রুচ্যেৎ বুংছবাং বলবর্ত্ধনম্ 🛭 नुषार वर्गकत्तर सामू मूकासर क्षत्रमीडनम् ।

নশ্বনিগন্ধ বিষয়দরক
রকাম্ম বন্ধ দেবক।
রকাম্ম বন্ধ দেশেরক।
আন্ত্রাকি আনি নাদ্য ।
করে ভি ভ্রাকি তি তানি নাদ্য ।
এচদমায় বিষয় মনুরাল পর মন্ত্র।
মনুরস্য পর মনৈ বিভিন্তু । এনাযত ।
অভীক্ষ বা প্রথাক ব্যাক্ষ না মতিভক্ষ ।
জীক্ষ বা প্রথাক ব্য মন্ত্রা মহুরান চেত্রিন চ ॥

1 12:10

প্রায়ে। আম. ব্যালি, কামাক্স, মগ্রু দুণ, মাকক্স ও পিক্ষয়ন্ত। আমে অভিনয় নোবিভ বিশিষ্ট ক্ইলে ভাগেকে স্থকার ক্রেই।

আম পূপে (বোণ) অতীদাব, কফ, পিন, প্রমেহ ও রক্তনোষ নাশ করে, ইহা শানল, রুচি কারক, গ্রাহী ও বাহু জনক। কচি আমফল কষার, জয়, রোচক ও বাত শ্লেম নাশক। তরুণ আম (রুহৎ কিন্তু জপক) অতিশর অমবদ বিশিষ্ট, রুক্ল, ধোষ প্রকোপক ও রক্ত দূষক। কাঁচা

আন ছাড়াইয়া রোডে সম্যক রূপে শুদ করিলে উহার ভেদকতা শক্তি জন্মে, তাহার অন্ন সাসু, কধার ও বাত প্লেম নাশক। পরু আন্র মধুব, শুক্ত জনক, निक्ष, रल्था, ज्थि जनक, छक्र, वार् नानक, क्रमा, वर्धित डेरक्ट्रेका मण्णामक. भोजल, श्रेषद कषात्र द्रम, खिश्र कांद्रक, শ্রেম জনক ও ভক্ত বর্দ্ধক; উহা পিত জনক নহে। বুকা প্রক্ আমু গুরু, অভি-শ্য বায়ু নাশক, জন্ম মধুর ও কিঞ্ছিৎ পিত্ত প্রকোপক। কৃত্তিম পক্ আয় পিও নাশক, কারণ উহার আধ্রুদ আল হইয়া सन्द त्रम अतम शास्त्र। উषिक जाम (বাসি অর্থাং বৃক্ষ হইতে পাড়িয়া হুই এক দিন গুহে স্থিত আম) বোচক, বলকারক, বীর্যাকর, লঘু, শীতল, বাত পিত্ত নাশক ও দর, ইহা শান্ত জাবিষ। আন্নের নিছাসিত রম বলকারক, তারু, বায়, নাশক, সর, অস্ত্রা, স্প্রিকর, অভিশয় পুষ্টিকারক ও কফ বন্ধ ক। আমের খণ্ড গুরু অভিশয় রোচক বিলয়ে জীর্ণ হয়, মধুৰ, পৃষ্টিকারক, বলবদ্ধকি, শীতল ও বাযু নাশক। তুগ্ধের সহিত আম্র ভোত্নন করিলে বাত পিত্ত নাশ, রুচি রন্ধি, দে-হের পুষ্টি, বল বৃদ্ধি, শুক্র সঞ্চয়, ও বর্ণের উৎক্ষ্টক। হইবা থাকে। তুপ্তাম অভিসয় সাজু, গুরুও শীত্র।

অধিক আদ্র ভোজনে অগ্নিমান্য, বি-ধম জর, রক্তদোধ, অভিশব কোষ্টরোধ অথবা চক্তরাগ উপস্থিত হইতে পারে। অতএব অধিক আদ্র ভক্ষণ অবিহিত।

আমের যে সকল দোষ লিখিত হইল তাহা অমুরদ বিশিষ্ট আমের জানিবে, মধুর আম ভক্ষণে ঐ সকল দোষ উৎপন্ন হর না। অধিক আমু ভোজন করিলে পশ্চাতে শুঠীর জল পান অথবা জীরক ও দৌষষ্ঠল শবণ শুক্ষণ করা উচিত।

व्याभावं छ।

প্ৰদাস নহকারস্য পটে বিভারিভোরসং। ঘৰ্মযুকো মুহুদির আমাবর্ত ইভিন্স, বং । আনুবার্ত ভূষাক্ষি বাঙলিভ হর: সরং। ফুচ্যুদের্য্যান্ত\ভিঃ পাকাল্লযু ক্ষ সহি ফার্টিডঃ ॥

আম্সত।

পক আমের রস বস্তে বিস্তারিত করিয়। ক্রমণঃ রৌডে শুক্ক করিলে আমাবর্ত প্রস্তুত হয়। সূর্য্য কিরণে পাক হওবংছে ইহা শবু হয়, ভক্ষণ করিলে জ্ঞা, বমি, বায়ু ও পিত্ত উপশমিত হয় এবং কোঠালত বায়ু প্রভৃতি সরল হয়া নিংসারিত হয়।

নবপল্লবঃ ।

আত্রদা পল্লব ক্লচা কঞ্চলিত বিনাশনম্। আথের নবপল্লব ।

আথ্যে নৰপল্লৰ জুচি কাৰক, কফ্ম ও পিত্তনাশক।

त्राकायः ।

রাজাত্রউচ্চ আত্রাত কাষাঝো রাজপুত্রকঃ। রাজাত্রভবর৲ বাচু নিশ্বঃ শীতস৲ ওরু । প্রাহিকক্ষ৲ বিবভাগু বাততুৎ ক্ষণিতনুৎ।

লভাআম।

প্রয়ার। রাজানু, টহ, আয়াত, কা-মাহর ও রাজপ্ত্রক। গুণ। ক্ষার, স্বান্ন, বিশাদ, শীতাল, গুরু, গ্রাহী ও ক্লা। ইহা বিবন্ধ, আ-গ্রান ও বার, রন্ধি করে। ইহা ডক্ষণে শিক্তরেয়া নাই হয়।

व्यव्याः ।

পণনাং কটেলিফরং প্রবাহতিবৃহৎকরঃ।
পণনাং শতিকাং পকাং স্থিম পিরামিলাপছম্ ॥
তর্পনাং বৃংহণা স্বাদু মাংসলাং স্পোলাং ভূপন্।
বল্যাং স্কেমাণ ছতি রক্তাপিত ক্ষত রণাস্থ ॥
আমাং তলের বিক্তি রাজলাং তুবরং প্রশ্ন।
পাহতুং মধুরং বল্যাং কহমেদো বিবর্জমন্ ॥
পানশোদ্ভ ত রাজানি স্থাবি মধুরাবি চঃ
প্রকৃতি বন্ধানি ই স্কাবি সংবদেং ॥
অন্যাত। মক্তাপনালো বৃদ্যা বাভিপিত্ত
ক্ষাপ্রঃ।

বিশেষাৎ পণলো বৰ্জাঃ প্ৰাল্পিড্যক্ষবাহ্ছিঃ র কাঁঠাল।

প্রায়। প্রশ, প্রশ, ক্রণ্টকি ফল ও অভিবৃহৎধল।

পি । পক কল, শীতল, দিয়, বার্
পিত্র নাশক, তৃপ্তি জনক, পৃষ্টিকারক, পালু
অভিশীয় মাংল বর্দ্ধক ও শ্লেয় জনক, বল
কারক, শুক্রপ্রদ। কাঁঠাল ভক্ষণে রক্তেল্পিত ক্ষত ও প্রণ নষ্ট হর। কাঁচা কাঁঠাল (ইচোর) বিষ্টুন্তী, বারু জনক, কষার,
স্তর্ম, দাহকর, মধ্র, বলকারক, কম জনক
ও মেদোবদ্ধক। কাঁঠালের বীজ শুক্র
জনক, মধ্র, স্তর্ম, কোষ্ঠ রোধক ও মূত্র
নিংসারক। কাঠালের মজ্যা শুক্র জনক
ও ব্রেঘোষ নাশক, মলাগ্রি ও প্রস্ররোগীদের পক্ষে কাঁঠাল অত্যক্ত অনিষ্টুকর।

लक्5ः।

লক্চঃ ক্ষুদ্র পথলো লকুচোহত কিছাপ।
আমিৎ লক্চ মৃত্তক প্রকৃ বিটক কৃতথা।
মধুর্থ তলামুক দোহতিত্ব রক্তকৃৎ।
শাক্তাগ্রি নালনং বাপি নেজবো রহিতং আত্ম।
সূপক্তক্ মধুরুস্মঞানিল পিবজং।
ক্ষেত্তি ক্রুৎ স্চাং ব্যাং বিক্তান্ত তং!

मापात्र।

প্রায় । লকুচ, ফ্রপ্ণ্দ, লক্চ ও ডহু।

গুণ। ত্মপকু সাবস্থাস, উঞ, গুরু, বিষ্টন্তী, মধ্র, অম, ত্রিদোস জনক, রক্ত দৃষক, শুক্ত নাশক, অগ্নিমান্দ্যকর ও চক্ষের অনিষ্টকর। সৃপক্ষেত্রাস মধ্ব, অম, বায়্পিত নাশক, কফ জনক, অধি-বর্দ্ধক, স্লুচি কারক, বল কারক ও বিষ্টন্তী।

কোশামু কোশন্ত ইতি চ।

কোৰাম উক্ত: কুডামঃ কোনিদুক্দং সুকোলক:। কোলামঃ কুঠ দীতাজ পিতত্ত্বণ কফাপনঃ। তৎকলং আহি বাডয় মনেু:আং গুকু পিত্সমৃ। পঞ্চ দীপনং কুচাং লঘুআং কফবাতনুহ।

কেওড়াফল।

পর্যার। কোশামু, ক্ল্ডামু, তিনি বৃক্ষ ও স্কোশক।

ত্তণ। ইহা কৃষ্ঠ, শোণ, রক্তদোষ শৈষ্টিক ত্রণ ও কফ নষ্ট করে, ইহার কল গ্রাহী, বাবু নাশক, অন্ত্র, উষ্ণ, গুরু ও পিত জনক, পকৃ ফল অগ্নি দীপক, ক্রচি কারক গ্রুম্ব, উষ্ণ ও বাতশ্লেম নাশক।

ক।লিশম্।

কাজিন্দা হৈ অধী স্থাপন কালিন্দক সুৰ্বস্থুলন্। কালিন্দা গ্ৰাহিদুক্পিন্ত স্তক্তক্তিকা এই । প্ৰস্তু ১৯ ক্ষা স্কারা পিন্তস্থ কক্ষবাস্তব্যিত।

ভরমুজ।

নৰ্গ্যায় । কালিক, কৃষ্ণবীজ, কালিক ও সুবৰ্তুল ।

তা। আহী, শীতল ও ওফ্র ইহার হারা দৃষ্টিশক্তি, পির ও ওক্ত ফর হব। প্রবিদ্ধার ইহা উষ্ণ, ক্লার তা বিশিপ্তি, প্রিজনক ভ বাত শ্রেম নাশক হব।

थर्मा, जम्।

দ্বাস্থ্য ধর্ম করাতে তদ্ধবা অর্থ। ধর্ম জং মৃত্তং বলাং কেটেছভিকরং গৃকু॥ মিজং খাদুতরং লাভং বৃদ্যংশিতানিলাপদম্। তেমু যজামু মধুরং সক্ষারক রণাদ্ভবেং॥ রজশিতকরং তরু মৃত্যুক্ত করং পরন্।

ধ্রমুকা।

পর্যায়। দশাসুল ও ধর্ম জ ।
তথা মৃত্ব কারক, বলকব, কোষ্ঠ
ভিক্তিকর, গুরু, স্থিম, ছাতিশয় স্থাচ, শীতল,
ব্যাও বাত পিত্ত নাশক। ইহার রস
হউত্তে জ্ঞার গুণবিশিষ্ট, তাম মধুণ এক
প্রকার পদার্থ উৎপন্ন হয়, ভাহা রক্ত পেত্ত
জনক ও অতিশর মৃত্রক্ত কারক।

ত্রপুসম্।

ত্রপুদং কটেকিক্সং সুধাবাদঃ সুশীতলন্।
অপুদং কয়নীলভ নবংতৃট্কেশ্বাছলিং।
বাদু পিডাপহং শীতং রুক্পিডহরং পরন্।
ভংশক মন্ত্রুজং স্যাৎ পিডলং কক্বাডনুং।
ভদ্বীজং মুবলং শীতংকুক্ পিডাস্ক্রু

मना ।

পর্যায়। অপুষ, কণ্টকীফল, ত্থা-বাস ও ত্থীজল।

ত্ব। তরুণ অবস্থার নীলবর্ণ, লঘু.
সাত্, পিত্ত নাশক ও শীতল; ইহা ভক্ষণ
করিলে তৃষ্ণা, রুজি, দাহ ও রক্তপিত
উপামতি হয়। প্র হইলে, অয়, উষ্ণ,
পিত্তজনক ও বাতরেশ্ব নাশক হয়।
ইহার বীজা মৃত্র কারক, শীতল, রুক্ষা, বাত
পিত্র শাভিকর ও মৃত্রক্ত নাশক হয়।

क्षिण्डिय_।

চিভিট \ হেনু বুজত হল: গোরক্ষ কর্মী।
চিভিট \ মন্ত্র \ এক \ এক পিত : কাপ্তন ।
অনুষ্ঠ (এ) হা বিইন্ধি পক্ষ ভূষক পিতগ্ৰ।
কাঁকুড়।

পর্যার। তিভিট, ধেরত্ব ও গোরক-কর্মটী।

জন। মধুর, কৃফা, তাফা, কফাপিও নাশক, অনুষ্ণ, গ্রাহী ও বিষ্টুট্টী, এই ফল প্রকৃহইলে (ফুটী) উষ্ণ ও পিও জনক হয়।

क्षत्राकः।

যোরন্টঃ পূপী পূর্বাণ্ড প্রবাকঃ ক্রমুন্টোঃস, তু।
ফল৲পূর্যা ফল৲প্রোক্ত মুন্ত্রাঞ্চ ত্রান্তিতন্ ।
পূর্বাণ্ড ক্র হিমানকক্ষা ক্রায়ান কঞ্পপর্যক্রি।
মোহনান মাপনান হচ।
আর্ভার্য তন্ত্রান্তির)শি ব্লক্তি বর্বান্তন্ ।
ব্লিশ্বালি ক্রম্নেডিব)শি বৃত্যান গুনুন্দ্র্য

স্থপারি।

পর্যার। ছোরত, পুগী, পূগ, গুরাক ও ক্রেমুক এইগুলি ইহার পর্যার। ইহার ফলকে পুগীফল ও উদ্বেগ করে। তা। তার, শতিল, রুক্ষ, কথার, কফপিত নাশক, মোহকারক, রুচিকর, মবের বৈরস্য নাশক। কাঁচাম্পারি তারু, অভিযান্দা, অগ্নিমান্দাকর ও দৃষ্টিশন্তির থকাতাকারক; যে স্পারি সিদ্ধ করা হই-রাছে ও যাহার মধ্যভাগ দৃঢ় তাহাই উত্তম।

তাল:।

তালন্ত লেখপত্রগাৎ তুলরাজোমছোছজঃ
পক্তাল কুল শিশুরক্লেছাযিবর্দ্ধন্য
দ্ব্বির বহুমুবক তস্ত্রাভিব)ক অক্রথম্ ।
তাগমকা তৃত্তর কিজিল্লাক্ররোল্যু ;
গ্রেহালা বাতশিবাল্য সন্দ্রেছী মধুর সরঃ।

1 14 16

পর্যার। তাল, লেখ্যপত্ত, তৃশরাজ্ঞ ও মহে:রত।

থা। প্রকাশকল সহজে জীব ছর নাড়কাণ কবিলে রাজপিত ও প্রেরাবার্দ্ধি ক হাা, অবিক মৃত্হর। ইচা আভিষ্যাকী ও গুরুজনক, ভালভক্ষণে তন্তা উপভিত হয় নান ভালগাক। কিঞ্ছিৎ মাদক, লঘু শ্লেম জনক, বা্তপিতায়, রিশ্ব, মধুব ও লর।

ভালকভোয়ম্।

ठानकः ७४५६ (डाग्र मडीन यम्यूष्टम् । व्यक्षी: ५७६ ७माकुमारि लिस्क्रवाडःसायक्षः ॥

তালের রম বা তাড়ী!

ত'লের ন্তন (উটি্কা) শ্ল'গডিশর মদক উহা অধ্বস হইলে পিভল্নক ওবংচুনাশক হয়।

কপিখম্ ৷

কলিখন্ত দ্বিখ্যস্যাৎ তথা পৃষ্ণাকল ন্তুত। কলিখনো দ্বিফল খুখা দ্বংশঠোহলি চ চ কলিখ নাম\ স\গ্লাহি কবার\ লগুলেখনন্। পক্ ধক্তৃয়া হিকা প্রদা\ বাঙলিবলিং এ স্যাদ্পা\ তুরর\ কঠলোখন\ গ্লাহি দুর্ল্ভরন্।

कटेश्रद्दल ।

পর্য্যার। কপিথ, দর্বিথ, পুশাদল, কপিপ্রিয়, দ্বিফল ও দন্তপঠ।

তাণ। অপেক অবস্থান, দংগাহী, কৰার পঘু ও লেখন। পক হইলেগুরু, বারু পিত নাশক, অল কৰার, কঠ শোধক, গ্রাহী ও ভূজার হয়, ইহা ভক্ষণ করিলে ভূষণ ও হিকার উপশ্ম হব।

खग्र ।

কুমজহুঃ খুলপতা নাৰেয়ী জলজহুকা। জহুঃ স\মাহিণী কুকা কফলিতান্ত দাহজিং ॥

জাম।

প্রাার। কুদ্রুষ, সুল্পারা, না-দেমী ও জলজন্কা।

গুণ। সংগ্রাহা, রুক্ষ, নৈমিক রক্ত পিত নাশক ও দঃহ শান্তিকর।

রাজকয় ।

কলেজা কৰিবা দক্ষী রাজজগুৰ্মহাকলা। তথা সূত্ৰতি পজা চ মহাজগুৰ্গিক্তা। রাজজগুকলং খাদু বিক্তি গুরুরোচনন্।

(भागाभक्षम ।

পর্যার। ফলেন্দ্রা, আনস্পা, রাজ-তত্ত্ব, মহাফলা, সুরভিত্তত্ব মহাজনু। ওণ। রাজজন্ম সাখাত, বিষ্টিছী ওক্ও রোচক।

वस्त्रः ।

পু৲সিভিয়াঞ্চ,কর্মপু বদরী কোল নিভাগি। ফেনিল৲ কুবল৲ ঘোটা দৌবীর৲ বদর৲ নহৎ । অম্বান্সেরা কুবা কোলী বিখমোভয়ক্টকা।

কুল।

পর্যাব। কর্কন্ধু, বদরী, কোল, ফেনিল, ক্বল, ঘোটা ও সৌবীর এই ওলি কুলের নাম। কুল বৃহৎ হইলে সৌবার কহে। কুলের অন্যান্য নাম এই গুলি যথা অজ-প্রিরা, কুহা, কোলী, বিষম ও ভরকণ্টক।

তত্ত্বদর বিশেষাণাং লক্ষণানি জনাশ্চ।

প্রচ্নন্দ সুমধুরং সৌবীরং বদ্ধং মহৎ।
সোলীরং বদ্ধং শতিং ভেদনং গুরুং শাক্ষপ্র
কুংহনং পিতাদাহাক্র ক্ষমুড্রা মিবারনম্।
সে বীরং লঘু সম্পারং মধুরং কোলমুচাডে ই
কোলভ বদ্ধং গ্রাহি কুচামুক্তক বাতলম্।
কম্পের কর্মানি গ্রুল সারক নীরিতম্ ই
কক্ষ্ণ ক্ষমবদ্ধং ক্রিডং পৃথি পৃথি সুরিভিঃ।
অস্ত্রং স্থান ক্ষমবদ্ধং ক্রিডং পৃথি সুরিভিঃ।
অস্ত্রং ক্রেডিং ক্রিডং স্থানিতাদাহং স্কুত্র ভ্রুণ ব্রিভিং ।
শ্রেজং ভর্নার কুহ স্থানিতাদাহং স্কুত্র রুণ ব্রেভিং ই

বিশেষ বিশেষ কুলের লক্ষণ ও গুল।

যে কুল বৃহৎ ও পাকিলে কুমিষ্ট হর, ভাহাকে দৌবীর অর্থাৎ নারিকিলে কুল কহে। দৌবীর দীকল, ভেছক, ওয়া, ভক্রজনক ও পৃষ্টিকর, ইহা পিও জন্য দাহ, রক্তদোৰ, ক্ষর ও তৃঞা নিবারণ করে। যে কুল ক্ষর ও পরিপক্ হইলে স্থিত হর, ভাহাকে কোল কহে, কোল গ্রাহী, রোচক, উষ্ণ, বারুজনক, কফ পিত্তকর ওক্ষ ও লারক। ক্ষুত্র ক্ষুত্র কুলকে কর্মন্দু বলে, ইহা আন্ত্র, ক্ষার. আন্নিষ্ট, সিদ্ধ, গুরু, তিক্ত ও বারু পিত্ত নাশক। কুল মাত্রেই শুক্ক হইলে ভেদক, আমি কারক, লঘু, তৃষ্ণা নিবারক, শ্রম শা-ভিকর ও রক্তদোব নাশক হর।

लवनी ।

সুগত মুলা লবলী পাতৃঃ কোমলবন্দলা। লবলীকল মন্যাৰ্লঃ কঞ্চিত্ত হয়ং গ্ৰন্থ । বিশ্বং রোচনং ক্লমং মাহস্কত্রং রবে।

(द्वात्राष्ट्र)

পর্যায়। স্থান্ত্রা, লবলী, পাত্র ও কোমলবহলা।

তাণ। শবলী কল বোচক, বিশদ, কুক্ম, তাক, উত্তম স্বাত্ত ও অমুরদ। ইহা অশারী, অর্শা: ও কফপিত উপশমিত করে।

कत्रमर्भः ।

করবর্দাঃ সূবেবাং স্যাৎ কুজপাক কলভা।।
ভন্দালয় কলারান্ধ সাজ্জেয়। করবন্দিকা ।
করবর্দা হয় আন বল্ল এল. তৃষাহরণ।
উক্ত ক্রতিকর ১ প্রোক্ত রক্তপির কক্ষপ্রন্দ ।
ভংশক্ত বর্তুর স্কর্চ সমূ পিরস্থীর্জিং।

▼ 4451 1

পর্যার। করমর্ম, সুবেশ ও কৃষ্ণপাক ফল। এই জাতার আর এক প্রকার दृष्ण আছে তাरात सन क्ष्य देशारक कत्रमिक्ति करर।

তা। উভর জাতীর করমর্শ্বের ফল জগকাবস্থার আর, তারু, তৃফ্লানাশক, উঞ্চ, রোচক, রক্তপিত জনক ও কফবুদ্ধিকর। ইহা পকাবস্থার মধুর, রোচক, লঘু ও বারু শিত্ত লাশক।

পিয়ালম্।

পিয়ালন্ত খরন্ডন্ধ ভারো বন্ধনসকলঃ। রাজাধন ভাপনেতঃ সন্ধক্ষর্জনুস্টাঃ । চারঃ পিতককামন্ত্র শুং কলং বধুরং প্রক্ল। ক্রিডাং সরং মন্ত্রংপিত দাহ জার ভূষাপহন্ । পিয়াল মতা মর্গুরো সুষ্যাং পিতামিলাপহা। হুবোহতি দুক্তরং বিজ্ঞোবিউভী চামবর্জনঃ ।

পির।ল, উহার মক্তা চিরোজী। পর্যার। পিরাল, ধরক্ক, চার, বত্ন বল্কল, রাজাদন, ভাপনেষ্ট, সম্বক্ত ও ধমুপাট।

গুণ। পিত্ত, কফ ও রক্তদোষ নিবা-রণ করে, ইহার ফল মধুর, তক্স, দিশ্ব ও দর, এই ফল ভক্ষণে বাসু, পিত্ত, দাহ, জ্বর ও তৃষ্ণা নিবারণ হর। পিরালের মজ্জা, মধুর, ভক্র বন্ধ কি, বাত পিত্ত নাশক, জ্বা, অভিশর তৃজ্জ্বি, স্বিশ্ব, বিষ্টকী ও আম বন্ধ কি।

द्राक्षापनः ।

রাজাবনঃ ফলাখ্যজো রাজন)। ক্ষীরেকাপি চ। ক্ষীরিকায়াঃ কল৲তৃত্যু৲ বজ্যাৎ স্থিত্য হিব\প্রস্ল র তৃত্যবৃদ্ধ । বছরাধি ক্ষয়দাবরগারাজিব। A. .

দ্ৰব্ৰান্ম_1

कौत्र(थङ्क्र ।

श्रीात । ब्राङापन, फनाश्राक, জন্যা ও শ্লীবিকা।

গুণ। ইহার ফল শুক্রেজনক, বল-কারক, স্থিম, শীতল ও গুরু, ইহ। ভ্যা, मुक्री, भूम, जुम, क्षत्र, तकरमाय ७ जिरमाय নাশ করে।

[444.5]

विकश्च अत्रातृतका शक्तः सापूर्वन्तेकः। म्बनम्कृष्टक कर्गेटका व्याप्रभाव भा विकश्च कथार्भकर प्रयुत्र मन्द्रदश्चितः।

15/21

পर्यात्र । विकक्षण, यानातृका, धारिया, आष्ट्र कर्षेक, मक्षत्रम, कर्षकी छ माध्रतार। ৩৭। ইহার পক্ষণ মধূর ও দর্ম-(नाय नामक।

মধুকঃ।

यमुरको अङ्गुलाः मान् यसुनुरल्भी यसुख्यः। रामधारका मधुकीत्मा क्रमाकात मधुनकः । यमुक्षाण्यार यसुसर मोठलर छङ्ग द्राह्मस्। रजमाळकहर (आस्तिर वार्ड लव 'वस मनम् । क्षत्र मोडर एक बादू खक्षत्रर वाङ्गिवर्युः । অহণ্য হ'ওতৃভাক্ষ দাহ খাস ক্ষত ক্য়ান্।।

(योल, मह्या; जनस्मीन ।

ल्ह्याह्य । सर्क, एड्लूल, सर्ल्लू, মধ্যাব, বানপ্রস্থ ও মধ্ষ্ঠিল এই গুলি মোলের নাম। এই স্বাভীর আর এক প্রকার বৃক্ষ আছে ভাষ। জলে উৎপত্র रहेता थाटक, खेराव नाम मधुलक ।

তাণ। ইহার পুষ্প মধ্ব, শীতল, থাক, পৃত্তিশারক বলকর, শুক্তজনক ও বাতপিত নাশক। ইহার ফল শীতল, গুরু, স্বাতু, শুক্রজনক, বাসু পিত্র নাশক **७** व्यञ्जा। देश कृष्णा, त्रकटमाय, मार, খাদ, ক্ষত ও ক্ষয় রোগ নিবারণ করে।

ध्यायकम् ।

প্ৰদেশকৰ প্ৰায় মুন্দোলি চ প্ৰায়েশ্। প্রধকা, কৰাগাল মাম। পিরকরা, লগু ॥ ७६ शकः मधुतः भारक मीखः तिकेषः तुरुद्वम् । क्षमास भित्र को इंदिय स्वत्रक्षय मनो तक्षर ह

किन्ना।

পর্যাব। পরষক, পরব, অরাছি ও 의리[연취]

জান। ভাপকু আংস্টায় কধার, আসু, ণিরকর ४৪ লঘু। পকাবভার মধ্র, শীকল, প् छिकातक, रिष्ठेष्टो 'छ क्रमा । हेटा शिख জন্য দাহ, রক্তদে। হ জর, ক্ষররোগ ও বায়ু নাশ করে।

कुर: ।

তুড়: স্কুলন্চ পুগন্ত জ্রুকো ওক্ষর ক্লেচ। **कुडः भक्कः छक्षयापू विषः भिकामिकाशह्य ।** ওদেবামা ওক সর মস্লোক্ষা রক্তপিতকুৎ।

ভূত।

পর্যায়। ড্ত, ছুল, পুগ, ক্রম্ক **७** उन्नाहि ।

তা। পর হৃত তক, স্ব. শীতল, বারু পিত্তনাশক, অপকু অবস্থার গুরু, শর, অম, উষ্ণ ও রক্তপিত্ত শান্তিকর।

माडियः।

ষাভিদঃ করকো দ্ববীকো লোবিভগুপ্টকঃ।
তৎফলং ত্রিবাং থাদু খাবল কেবলায়কদ্ ॥
ততু বাদু ত্রিবোবায়ং তৃড্ দাইজর নাপন্।
হংকও মুখবোবায়ং তপাণ অফলং স্যু ॥
কৰায়ানু রুসং এ হি স্পেৎমেণা বসাবহদ্।
যাদ্যায়ং দীপনং ফচাং কি তং পিত্তকরং স্যু ॥
অয়ন্ত পিত্তজনক মুদ্ধ বাতক্ষ প্রদ।

P क्या

প্রায়ে। দাহিম, কমক, দস্তবাস, । বারশ্বের ভর লাভি মধুর ব্যর এক। ও লোহি মপুলপ্র।

• গুণ। দা'ত্য ফশ হিন প্রকা, হথা মধুব আর মধুব দে লার, হরাবে।
নিষ্ট দাড়িস তিদেশে নাশক, ত'পেনক
গুলুবৃদ্ধিকর শ্ব ঈদং ক্ষাবেস, প্রাণ্ট রিশ্ব, আরণশাস্তবদ্ধ ক দ বশক বক
ইতা ভ্রা, দাত, জ্বর, তাদ গ কগুবেশ
ও নুখবোগ নিবাৰণ কবে। লার মধুব
দাড়িম আলি দাবিশ্ব, বেডক কিধিং
পিত ভনক। কেশে অম্বন বিশিপ্ত
দাড়িম পিত্ত ভনক ও শ্বু শ্বানাশক।

737 KE 1

ষ্ট্রেক্ত শীত সাকুল লো স্থান কৰা।
শোলা প্রেক্ত কেন্দ্র ক্রিকারের বিষয়েকে ট ব্রন্থ সাপ ক্রন্থ।
মনুব ন্ত্রেকার ক্রিকারে কেন্দ্রালাক ক্রেপ্ত করা
ক্রেকান্ত্রিকারিকার ক্রেকার্থ শিক্ত ক্রেকার্থ শিক্ত ক্রেকার ক্রিকার্থ শিক্ত ক্রেকার শিক্ত ক্রেকার শিক্ত ক্রেকার শিক্ত শাত্রিকার ক্রেকার প্রা

পর্যায়। বছবার, শীঙ ইদাল, বজ-বারক, শেলু, শেলাস্তক, শিক্ষিপ ও ভূত বুফাক।

গুণ। মনুর, কঘার, তিক্ত, কেলের সৌন্দর্য্য জনক ও কফপির নালক, ইহা বিষ, ক্ষোটক, ত্রৰ, বীদর্প ও কুষ্ঠ রোগ নাশকবে। হৃহার কাঁচা ফল কখা, বিষ্টান্তী, পিত নাশক, কফশান্তি কর ও রক্তনোষ নিবাবক, পক্ষল মধুব, ক্লিয়া, শ্লেয় বন্ধ কি, শাতল ও গুকু।

ማንኛ

। প্যপ্রসাদি কডক\ কডক\ ডংফলভ ডং।
কডকস: ফল' নেএ)\ স্কল নিম্পতা কর্ম্।
বাংগ্রেম্যা হর\ শ'ড\ মধুর\ তৃররা ওঞ্চ।

[পর্যায়]।

কদক । প্য প্রসাদি ভার্থাই কজাকে
নিমেশ কবে, ইহার ফশের নামও কতক
এ ফশ নেতের সাম্বাকর, তালের মশাশ সারচ, ব ভাগ্নে নাশক, শাহল, মধুব, ক্যাস ২০ ১০ই । •

क्ष्म्पर्भा ी, िष्ठय के ्ी काशा।

কুত্র থজাঁর পিওখজাঁর, সোচারা।
ভূমি থক্ষাঁবিকা, স্বাহী, ভুরারোহা, মূড়-চ্চদা, স্বন্ধকা, কাক কর্কটী, ও স্বাদ্ধন্যকা এই গুলি ক্র বঞ্চ র অর্থাৎ দেশী বজ্জ রের নাম, পিওবর্জ্ র পাশ্চমদেশে জন্ম,
ছোহার। নামক এক প্রকার বজ্জ র
আছে, তাহার আকৃতি গোস্তনে রন্যার
উহা পাশ্চাত্য দ্বীপ অর্থাৎ আরব প্রস্তৃতি
দেশ হইতে আনাত হর।

তা। এই তিন প্রকার ধরুর দীতল, মধ্র, স্থিয়, ক্ষতিকারক, হালা, তারু, তৃপ্তিকারক, বিষ্টুণ্ডী, তারুজানক, বলকারক, বমন নিবারক ও বাত্দ্রেয় নাশক। ইহা ক্ষত, ক্ষর, রক্তালিত, কোঠাপ্রিত বায়ু, জ্বাতিসার, কাস, খাস, মদ, মৃচ্ছা, মদাপান ক্ষনিত রোগ এবং ক্ষ্ধা ও তৃষ্ণা নিবারণ করে বৃহৎ থক্ষুর হয় অপেক্ষা, ক্ষুত্র থক্ষ্ণ্

ধৰ্জ্বী তোর (থেজুর রস) মাদক, পিত্তকর, বাভগ্নেয় নাশক, রোচক, অগ্নিবন্ধকি, বলকারক ও শুক্তক্রনক।

च्यानभानी (निश्चवर्क्तती स्वप्तः)। मूलवानी जु मृद्गा प्रवश्निक्ता ह मा। मूलवानी खबकादि पाष्ट्रम्काळ निवक्रः।

स्तमानी (शिलवर्क्तृत वित्नव)।

পর্যায়। সুলেমানী, মৃত্লা ও দলহীন ফলা।

গুণ। স্থলেমানী ব্রিম, ভাস্তি দাহ, মুর্ছা ও হক্তপিত রোগ নিবারণ করে।

स्वामा ।

ত্ৰাকা বাৰ্কনা প্ৰোক্তা ভৱা বৰুৱসালি হ । মৃত্যি হারহুৱা চংগান্তনী চালি কীৰ্টিভা হ নাকা পৰা সরা শীতা চকুষ্যা বুংহণী গুলু:।
বাদুপাক রবা ব্ৰুয়া কুবরা সূত্যুত্রবিট্ র
কোঠ বালত কুব্বীয়া ককপুটি লডিএবাঃ
হতি তৃতা অরখান বাত বাতাক কাষলাঃ র
কুক্তু ল পিরসংখীহ বাহ শৌব ধবাভায়ানু ।
আমা বৃশ্প এবা একী নৈবাদ্যা একপিবকৃৎ র
বুব্যান্যান্ বোজনী ভালা একী চুক্তবিশনুৎ ।
অবীকান্যাং বুশ্পভরা বোজনী নদুলী এবৈং র
ভাকা পর্যভ্যা বাদুক্তাদুলী কুরুমনিকা।

গোন্তমী বুমকা ইভি লোকে। অবীজা ইংহাজা কিলিমিল ইভি লোকে। প্রক্তজা বহারী ইভি লেকে। কর্ম্বিকা করৌহী ইভি লোকে।

किम्भिम्, भनका।

পর্যার। স্থাত্কলা, জাহ্মা, মধুরসা, মৃদ্বীকা, হারত্রা ও গোন্তনী।

তা। পর জাকা, শীতল, সর, চক্ষের হিতকর, পুষ্টিকারক, গুরু, পাকে স্বাস্ত্র, স্বর বিশুদ্ধ কারক, কধার, বুষ্য, ভে-দক, মৃত্র কারক, কফ বদ্ধকি, পুষ্টিকর, রোচক, কোষ্টে বায় ৎপাদক, ইহা তৃষ্ণা জর, খাস, বায়ু প্রধান বাতরক্ত, কামলা, কঠিন রক্তপিত্ত, মেহ, দাহ, শোষ 😉 মদাত্যর রোগ নষ্ট করে। অপক জাকা তার শক্তি বিশিষ্ট, ইহা ওকু, অন্ন, রক্ত-পিত্ত রোগেৎপাদক। গোন্তনী দ্রাক্ষা অর্থাৎ মনেকা, গুক্তজনক গুরুও কফ-পিত্ত নাশক। ক্ষুদ্ৰ বীজ বিশিষ্ট জাক্ষা (किन्मिन्) मत्नकात नाात कार्या कदत। পর্বাতকা ভাকার (বহাবীর) গুণ কর-यक्ति (क्रावीय) नाव । देशकिन्यिन् হইতে হীন ৩৭ বিশিষ্ট।

অনুভক্ষন্ :

ৰং বদক্ৰান কাবিল প্ৰভৃতিয়ু বেশেষু নান-পাড়ীতি প্ৰান্তঃ। অনুভক্ষক সমু বৃষ্য সুয়াদুৱীন্ হরেংবোৰান্ বেশেষু বৃদ্ধকাশ ১ বছল ওল্লভাতে লোকৈঃ।

নাদপাতি।

অমৃত ফুল লঘু, রুষা, সৃষাত্, তিলোষ নাশক খোরাসান দেশে বহু পরিমাণে পাওয়া যায়।

८भदम् ।

মৃক্টিপ্রমাণ্ড বদর্থ দেবং নিবিভিক: ফল্ম্। নেবং স্থীর পিরস্থাৎ বৃহণ্ড কন্দ্র ক্লের রুকে পাকে চুয়মুর্থ শিশির্থ ক্রিড শুজকুং।

भिष्ठे विली (मा)।

পর্যাাগ। মৃষ্টিপ্রমাণ, বদর, দেব ৩৪ সিবিভিক। ফল।

গুণ। বাসু পিত্র নাশক, পুষ্টিকারক, কন্ধ জনক, গুরু, আস্বাদ ও পাকে মধুর, শীতল, রুচি কারক ও গুরু জনক।

প্রাচীনামলকম্।

প্রঃচীনামলকৎ লোকে পানীয়ামলকৎ ক্ষুদ্রয় প্র চীনামলকৎ হোষত্রয়জিদ্ অর্থাতি চয়

পানিআমুলা।

প্রয়ায়। প্রাচীনান্দক ও পানীয়াম-দক।

৩৭। ইহা ত্রিদোৰ নাশক ৩ অবস্থা,

वाकामः।

বাভাবো বাভবৈরী স্যাহেরোপ্যফলভ্রা। বাভাব উচ্চা সুন্ধিটো বাভন্না প্রক্রুত্ প্রস্লা । বাভাবদক্ষা সধুরো সুখ্যা পিরানিলাপছা। নিজেকা কফকুমেটো রক্তুপিস্তবিকারিবাদ ॥

भिष्ठे वामाम।

পর্যার। বাজাদ, বাতবৈরী ও নেত্রো-পম ফল।

্ গুণ। বাদাম উষ্ণ, ক্স্ত্রিন্ধ, বাতস, গুলুজনক ও গুরু। ইহার মঙ্গু মধুব রুষ, বায়পিত নাশক, স্থিয়েয়েও ও কঞ্চ বন্ধ ক, রাজপিতবেগৌরপক্ষেইহা নিষিদ্ধ।

श्रीश्री : 1

পাল্য সক্ষম অংশী তথা শীতকলোছপি চ। পালু: যোগ স্থীরশ্বং শিক্ষমং ভেদি এগ্রনুৎ ঃ স্বাধু ভিক্তক তংপীপু ভয়াসু,অং তিলোমস্কং।

পিলু।

কোকন দেশজাত আকরট জাতীয় এক প্রকার বৃক্ষ।

প্রায়ে। পীলু, গুলফল, জ্রংদী ও শীতফল।

কাণ। বাতপ্লেম নাশক, পিত জনক, ভেদক '৪ থালা নাশক। যে পীলুৱ আস্বাদ স্বাহ্ 'ও তিক্ত ভাষা ত্রিদোষ নাশক এবং অনিক উষ্ণ নহে।

ष्यदक्षा है: ।

পীলুঃ শৈলভবোহুজোটঃ কর্ণরালন্ড কীর্ন্তিয়। অক্ষোট কোহশি বাডার সদৃশঃ কক্ষণিস্কৃত ঃ

व्याचदत्राहे ।

পর্যার। শৈলভব পীলু, অক্ষোট, ও কর্পরাল। ইহার গুণ বাদামের ন্যার, ইহা কফপিত বছ ক।

नियू।

নিৰ্কী নিৰুক্ কীবে নিৰ্ক্ষণ কীঠিওন।
নিৰ্ক্ষ্প বাত্ত্ব দীপন্ পাচন্ প্য ॥
অন্যান্ত। নিৰ্ক্ কিনি সংমূহ নাশন্
তীক্ষ্ম মুদ্রগ্রহাগ্রন্।
বাতপিত কফ শুলিনে হিতৎ
ক্ত নত কৈচি বোচন্ প্রম্॥
ভিলোধ বহ্ছিল বাতরোগ
নিপীড়িভানা বিধবিজ্ঞানান্
মশানলে বদ্ধাহে প্রেম্

পাতিলেরু।

বিস্ঠিকায়া৲ যুনয়ে। বৰ্ভি।

প্র্যায়। নিম্,নিম্ক ও নিস্ক। তাণ। আম, বাতম, অগ্রিদীপক, পাচক ও লঘু।

অপিচ। নিষ্ক ক্রিমি নাশক, ভীক্ষ অন্ন, উদর বেদনা নিবারক, নিভান্ত অক্লচি থাকিলেও ইহার হার। উপকার⁴সভাবনা, ইহা শূলাদি রোগে উপকারক। অভিশর মন্দাঝি, ক্ষমরোন, বাতব্যাদি, বিধবিকার, কোষ্টরোধ ও বিস্চিকা বোগে ইহা ব্যবস্থের।

भिष्ठेनिय ।

মিউ নিযু কলং বাদু এরনারত শিবনুথ। পরতোপ বিষধানলৈ ককোংকুশি চ রক্ত হুৎ। শ্রেষায়তি ভূবান্তানি বরুং বলাক বুংহবহু।

कमलारमञ् ।

ইহা স্বাস্থ্য, গুরু, বাতপিত্ত নাশক, বিষ-রোগ নাশক, বিষয়, কফনিঃসারক, রজ-দোস নাশক, বল কারক ৬ পৃষ্টিকর। ইহার দ্বারা শোষ, অক্লচি, তৃষ্ণা ও বমি নিবারণ হয়।

वीखश्रह।

বীঅপুরো বাতুলজো ক্রচকং ফলপুরকং । বীঅপুর ফল৲ খাদু রলেহয়৲ দীপন৲ লঘু ॥ রজপিত হর৲ কঠ ভিজা ভ্রদ্য শোধনন্। শাস কাসাক্রচি হর৲ ভ্রদ্য ভ্রাহর৲ সাভ্রদ্য।

টাবালের :

প্র্যার। বীজপুর, মাতুলুক, কুচক ও ফলপুরক।

ত্যণ। এই ফল স্থাতু, স্মান, অধি দীপ্তি কারক, লঘু, জ্বা ও তৃষ্ণ। নাশক। ইহার মারা স্থাস, কাস, অফুচি ও রক্ত-পিত্ত রোগ উপশমিত এবং কঠ, জিহ্বা ও জ্বা বিশুদ্ধ হয়।

মধুকর্কটিকা।

(दोट अंदोडिक मधुकाकि)

বীলপুরেছপর: প্রোকো বধুরে। বধুকত সী। বধুককটিকা বাছী রোচনী পতিল: গ্রন্থ ॥ রক্তপির ক্ষমখাস কাস ভিত্ত প্রথাপর। বাভাবিলেপু।

> মধুক্রকটী ইহাও এক প্রকার বীজ-পূরক।

পর্যার। মধুর ও মধুক্কটী।
থা। স্বাচ্চ, রোচক শীতল ও গুরু,
ইহা রক্তপিত ক্ষররোগ, খাস, কাস, হিকা
ও ভন রোগ উপশম করে।

ं समीद दश्या

স্যাক্ষরীরো দ্রশঠো ক্ষত্রকীর ক্ষপাং। ক্ষরীর মুক্ত প্রস্কারত বাতরেছা বিবস্থনুও। শূলকাস কফোৎক্লেশ ক্ষক্ষি তৃত্যানদোর জিৎ। আস্যবৈরস্য ক্ষৎপীকা বাত্যান্দ্য ক্রিমীন্

€C㢠[

युक्त अपीतिका उपः ज्ञाक मिनियात्रेगी ।

নোঁড়ালের ও কাগঞীলের।

পর্যায়। জম্বীর, দন্তশঠ, জন্ত, জন্তার ও জন্তুপ।

তা। উষ্ণ, তার, আয়, বাত শ্লেম নাশক ও বিবন্ধ নিবারক। ইহা শূল, কাস, কফ, উপস্থিত বমন, বমি, কৃষণা আমনোস, মুববৈরসা, কৃৎণীড়া, আমিন্মানাও ক্রিমিনই করে। এইরপ ক্ষান্ত জন্মীরিকা অর্থাৎ কাগজিলেব ড্রুলা ও বমন নিবারণ করে।

वृक्षाम्रम् ।

বৃক্ষাল্প তিছিড়ীকক চুক্সং স্যাধল্ল/ক্ষকণ্। বৃক্ষাল্প মাম্মবালাক্ষ্য বাঙগ্নাং কমপান্তনন্। পঞ্জ এক সংখাহি কটুকজ্বরং করু। অল্লোকং রোচনং ক্লক্ষ্য দ্বীপনাং কমনাত কুৎ । ভুজার্নো এহনী শুলু ক্সন্তোগ ক্ষমিৎ।

हिनी महाना।

পর্যার। রক্ষার,° তিস্তিড়ীক, চ্ক্র ও অনুরক্ষক।

ত্তা। অপ্রকাবদ্বার ইহা অনু, উঞ্চ, বাজর ও কফপিত বর্জক; প্রকাবদ্বার তক্ত, সংগ্রাহী, কটু, কবার, লঘু, অর, উঞ্চ, রোচক, রুক্ত, অরিকারক ও বাত- শ্লেম জনক। ইহা ভক্ষণ করিলে তৃষ্ণা, অর্শঃ, গ্রহণী, গুলা, শূলা, হুডোগ ও কীটাদি বিনষ্ট করে।

আনুবৈত্তসঃ।

স্যাদ্মবেতসদচ্জৎ পত্তথে সহস্কর্ত।
আরবেতস মত্যারৎ ভেদনং সপুদীপনন্ ।
জন্মোগ শূলপ্রসূত্র পিষলং সোন্দর্ভন ।
ফক্ষং বিন্দুত্র লোবস্থা সীদোন্তর নালনন্ ।
কিফনালাক্র খাস কাসাজীর বাধ অনুহ।
কিফবাতাময় ধ্বংসি ছাগ্রাংগ ক্রবস্তুত্ব ।
চনকার এবং জেয়ং লোহসূচী রবস্তুক্ত ।

जञ्जदरकम, हिन्मा टेबकल ।

পৰ্যায়। অমৰেতস, চূক্ত, **শভ**ৰেধি ও সহস্ৰহুৎ।

তাৰ। অভিশর আয়, তেদঙ, লঘু, অথিবদ্ধ ক, পিতজনক, রোমাঞ্চ কারক ও কৃষ্ণ। ইহা দেবনে ক্রেলাগ, শূল, তাল, মৃত্রেদাগ, মলদোষ, প্লীহা, উদাবর্ত্ত, হিরা, আনাহ, অফুচি, খাস, কাস, অজীব, বিমি, কফ্জুরোগ ও বাতব্যাধি নিবারিত হর। ইহার দ্বারা ভাগ মাংস অবীভূত হর এবং যে রূপ চপ্রকাম দ্বারা লোহ ফুচী দ্রব হর, ইহার দ্বারা ভাগ মাংস অবীভূত হর এবং যে রূপ চপ্রকাম দ্বারা লোহ ফুচী দ্রব হর, ইহার দ্বারাও সেই রূপ হইরাথাকে।

চত্রর পঞ্চাররে।ককিণম্। অনুবেতন গুলার বৃহক্ষদীর নিধ্কৈঃ। চতুরবুংহি পঞ্চারুং দীকপুর মুকৈউবেং॥ চতুরবু ও পঞ্চায়ুঃ।

অরবেডগ,, রুফার, রুহৎ ঋণীর ও নিখুক এই চারিচীকে একজে চতুরার

দ্ৰব্যস্থানম্।

বলে, উহার পথিত বীজপুরক মিলিত হইলে পঞ্চাল কহাযায়।

ভিডিন্টা।

অমূকা চুক্তিকামীত চুক্তা দ্বলীপি চ। অমূচ বিচিকা চিকা তিবিভীকা চ তিবিভী॥ অমূকামূা ওক্তবিত্তরী পিত্তক্তাব্রকৃৎ। প্রকার দীপনী ক্লডা সংরোজা ক্রবতেনুৎ।

তেঁকুল।

প্রায়া অনিকা, চুক্তিকা, অনী, চুক্তা, দত্তশ্রী, আনা, বিচিকা, চিথা, তিজিড়ীকা ও ভিজিড়ী।

ত্তা। তাম, তাক, বাত নাশক, পিত্ত জনক, কফ বছ কি ও রক্তদোষ শিবারক। ইহা পকাবভাষ তাখি দাপ্তি কারক, কুল্ফ, শুর, উষ্ঠ ও বাত্তশ্রেষ নাশক।

কর্ম্বপ্রম।

কর্মার সং হিমাং গ্রাহি বাহুমুং কক্ষরাতকৃৎ। কামরাসা।

ইহা শীতল, গ্রাহী, স্বাতু, অম ও বাক শ্লেম কারক।

ষ ড় বিংশতিতমোধ্যায়:।

भाकरर्गः ।

শ!কম্।

পত্রং পূলাং ফলং মালং কদাং সংবেদছং তথা।
লাকং বড়বিধ্যুদ্দিউং প্রকৃ বিদ্যাদ্যথোক্তর্ম্ ।
প্রায় লাকানি সকানি বিক্তপ্তীন প্রকৃতি চ।
কুন্ধাবি বধ্বজাংশি সুক্তবিন্ শাক্তানি চ ॥
লাকং ক্লিবভি বপুর্দিং নিহুদ্ধি নেকৃষ্ ।

বর্গৎ বিনাশয়তি রক্তমধাশি শুক্তন্ ।
প্রাক্রমক কুরুতে গণিতঞ্চ নুনস্ ।
হঙি ক্তিৎ গাঁডমৈতি প্রবদ্ধি ভক্জা: ।
শাকেনু সক্রেয়ু বসঙি রোগাভেছেডবো দেহ বিনাশনায় ।
ডক্ষান্ রুধং শাক্ বিবর্জনন্দ কুর্যাগভানেনু স এব দোষং ।
এডানি শাক্ষিপক।নি বচনানি সামান্যামি ।
অর্থ শাক্রম্ব বিশিক্তানি বচনানি ॥

শাক ৷

পত্র, পুষ্প, ফল, নাল, কন্দ ও শংস্থেদর এই ছ্ম প্রকার শাক, ইহাদের মধ্যে পূর্ব পূর্ববী অনুভর। প্র পরবী অনুভর। প্র মান্ত শাক্ট বিস্টুড়ী, প্রকা, রক্ষ, বছানাক জনক এবং পূরীয় ও বায়ু নিংসারক। শাক জোজনে দেহ, আছি, নেত্র, বর্ণ, রক্ত, প্রজা, প্রজা, স্থাত ও গতি এই সম্বারই নপ্ত হয় এবং কেশাদি পুরু হয়। শাক সম্বায় রোগের আবাদ ছান, শাক দেহ ধ্বেণার হেডুভ্ত অভএব শাক ভোজন প্রিকাণ করিবে, অয় ভোজনেও এইরপ্প দেশে জানিবে।

শামান।তঃ শ'কের এই সমুদার দোষ বণিত হইল, কিন্তু বিশেষ বিশেষ শাকের বিশেষ বিশেষ গুণ আছে জানিবে। নিয়ে তদু বিষয় লিখিত হইতেছে।

शडना*।**नि**।

ব ব্রুক ধ্রুম্।

বাসুকং বাস্তকদ্যোৎ ক্ষারপত্রক্ষ পাকর।ই। ভবেবতু ঠুইং পত্রং রক্তং সা।ং গৌডবাস্তকমৃ । প্রায়ণো যবনধ্যে সা।ন্যবশাক ষভ্য স্মৃভ্যু। বাস্তুক দ্বিত্যং বাদুক্ষারং পাক্ষে কটুদ্ভন্ । দ্বীপনাং পাচনাং ক্লচাং ক্রিয়া প্রক্র বলপ্রদৃষ্ । সরং প্রীহান্ত পিতার্লং ক্রিনি দ্বোবত্রয়া প্রস্ ।

বেতুয়া ও খেত বেতুয়া শাক।

বাজুক, বাস্তক, ক্ষারপত্র ও শাকরাট্ এই গুলি ইহার পর্যার। যে বাজুক রক্তবর্ণ ও বৃহৎ পত্র বিশিষ্ট ভাহাকে গৌড় বাজুক কহে। বাজুক শাক প্রায় মবের মধ্যে হইরা থাকে এই নিমিত্ত ইহাকে যব-শাকও বলে।

খ্যা। বাস্তৃক দর খাত, মার, পাকে কটু, অগ্নিদীপ্তি কারক, পাচক, রোচক, লঘু, শুক্তা জনক, বলকর, সর ও ত্রিদোষ নাশক, ইহা ভক্ষণ করিলে প্রীহা, পৈতিক অর্শঃ ও ক্রিমি নষ্ট হয়।

পোত্রী।

পোডক্)পোণিক। সাতৃ মালবামৃতবল্লরী। পোডকা শীভদা শ্রিকা শ্লেরলা বাতপেগুনুৎ । অকঠা। পিচ্ছিলা নিম্রা শুক্তদা রক্ষপিক্তিব। বলম্য ক্লচিকৃৎ পথা) বৃৎহণী তৃপ্রিকারিণী। পুইশাক।

পোত শী, উপোদিক। মালবা ও অনুভবল্লবী এই গুলি ইহার প্রয়ার।

গুণ। ইহা শীতল, প্লিম্ন, শ্লেম জনক, বার্পিত্ত নাশক, কঠের পক্ষে অপকারক, পিছিল, নিদ্মাকারক, শুক্ত জনক, রজ-পিত্ত শান্তিকর, বলকারক, রোচক, পথ্য, পুষ্টকর ও ভৃথিকারী।

মারিষ:

বারিষো বান্সকো মার্ব্য মেজো রক্তন্য সন্মৃত্য। মারিষো মধুরা দীজো বিক্তি পিতানুৎ প্রক্রাঃ বাজরেম করো রক্তপিন্তনুৎ বিষমাগ্রিমিৎ। রক্তমার্বো প্রক্রমাতি সক্ষারো মরুরা সরা । রেম্বান্য কটুকা পাকে স্থাপারোর ক্রীরিজা। শ্বেত কাঁটানটে ও শাল কাঁটানটে।

মারিষ, বাম্পক ও মার্য এই গুলি ইহার পর্য্যায়। খেড ও লোহিত এই তুই বর্ণের মারিষ দৃষ্ট হয়।

থাব। খেত কাঁটানটে মধুর, শীতল, বিষ্টিটী, পিত নাশক, গুরু, বাত দ্লেমকারী, রক্তপিত নিবাবক ও আগ্ন বৈষম্য নাশক। লাল কাঁটানটে অধিক গুরু নহে, ইহুং ক্ষার গুণ বিশিষ্ট, মধুর, সর, কফ ক্ষন্ক, পাকে কটু ও স্বল্প দোৰ বিশিষ্ট।

ङ्क्षोयः ।

তওঁ সীয়ো মেঘনাদ্য কাণ্ডের ভঙ্গেরকঃ। ভঙীর ভঙ্গী সীয়ো বিষয় শ্চাম্প মারিষয়। তঙ্গীয়ো সম্মানীতো ক্লক্ষা শিক্তক্ষাক্রায় ক্লিয় সৃষ্টমূত্র মধ্যো রুচেগা দীপনো বিষয়ারকঃ।

नद्वेशक ।

তত্নীয়, মেঘনাদ, কাতের, তত্নে-রক, ওতার, ততুশী বীজ, বিষয় ও অল মারিষ এই গুলি ইছার পর্যায়।

গুণ। ইহা লঘু দীতল রক্ষ, পিত শ্লেম নাশক, রক্তদোষ নিবারক, মল মৃত্র নি-সারক, রোচক, অগ্নি কারক ও বিষয়।

পল্কা||

পলক্যা বান্ধকাকারা চ্ছ রিকা চীকিডজ্বা। পলক্যা বাতলা শীষ্টা প্লেল্ললা ভেবিনী প্রকৃত্ত । বিউচ্চিণী মন্বাস পিঙরক্ত ক্ষাপ্রাঃ।

위**리쿠비가 |**

ইহা দেখিতে ৰাজূক খাকের ন্যার, ইহার অপর নাম ছুরিকাও চীরিভজ্গ। থা। ৰাষ্ট্ৰনক শাজল, কদবৰ্জক, ভেদক. গুৰু ও বিষ্টুণ্ডী। ইহা মদবোগ, শ্বাস, রক্তপিত ও কফনাশ করে।

মাড়িকমু।

নাষ্ট্ৰিক কালপাকক আত্মণাকক কালক। কালপাক সাম ক্লচা বাত্তিক ককপোৰ হব ।
বলান ক্লিকুম বেধাৰ হকপেৰ হয়ৰ হিমন্।

নালিতা শাক। ভিক্ত পাটশাক।

নাড়িক, কাল্পাক, প্রাদ্ধিশাক ও কাল্ক এই গুলি ইহার পর্য্যার ।

তাণ। ইহা সর, কচা, বার্জনক, কফজ শোধ নাশক, বলকর, কুচিকারক, শারণশক্তিবর্দ্ধক, রক্তপিত নাশক ও শীজল।

পট্টপাকঃ ৷

পট্টশাকন্ত নাড়ীকো নাড়ীপাকল্চ সন্মৃতঃ। নাড়িকোর জপিরত্বো বিউডী বাডকোপনঃ॥

मिष्ठे शाहेमाक।

ি পট্টশাক, নাড়ীক ও নাড়ীশাক এই গুলি ইহার পর্যায় ।

তা। ইহা রক্তপিত নালক বিষ্টট্টা ও বাছু প্রকোপক।

कमशै।

समरी मजनमी ह क्वाद्रक क्षूत्रवा बद । समर्थे क्यारा व्याका प्रमुख खलकातिको ॥

कन्धा नाक।

ইহার অপের নাম শতপ্রবী। গুণ। স্তব্যে চ্ডোৎপাদক মধুর ও গুক্তক্তনক।

त्मानि द्रह्द्यानी।

লোনা লোনী ৪ ক'ব' ও বৃহত্ত্বোনী তু ছোটিকা।
লোনী ককা ক'ব' ও একী বাতলেয়ছাৰী পটুঃ ৪
অন্ত্ৰা নিপনী চামা কলা'গ্ৰ বিষমা'লনী।
ঘোটিকামা সৱা ১৮ কা বাতকৃৎ কফাপিল হব ৪
বাগ্ৰেণৰ এন অনুত্ৰী খাস কাস এনেছনুও।
লোৱে লোচন রোগে ৮ বিহতা ভক্ত আকু দুণ হতা।

हिनो बावडी, वड़ बावडा।

লোনীর অপর নাম লোনা, বৃহৎ লোণি ও ঘোটিকা কহে।

থা। কৃষ্ণ, গুরু, বাতপ্রেম্ম নাশক, লবণাখাদ, অর্শোদ্ধ, অধিকারক অমু, অধিমাল্য নিবারক ও বিষয়। বোটকা (বৃহৎলোণি) অমুরদ, দর, উষ্ণু, বায়ু- জনক ও কফ পিত্তনাশক। ইহা বাক্য দোব, ত্রণ, গুলুম, খাদ, কাদ, প্রমেহ শোধ ও চক্ষুরোগ নিবারণ করে।

তুক্তিক।।

চুক্তিকাৰ্যাৎ তু প্ৰাদ্ধা রোচনী শশুবোধনী।
চুক্তা তুল্ল ভৱা ৰাখী বাভল্লী কৰ্মপ্ৰকৃৎ ।
ক্লচ্যা লম্বুৱা পাকে কট্টাচ নাভি রোচনী।

চুকাপালক।

চুক্তিকা, প্রায়, রোচিনী ও প্র বোধিনী এই ওলি ইহার সংস্কৃত নার। থা। ইহা অভিশার অন্ন, সাত্, বারু নাশক, কফপিত্তকারক, ক্লচা, অভিশার লঘু ও পাকে কটু ইহা অধিক রোচক নহে।

किया। नाभी वर्ष

চিঞা চঞ্চ শুচঞ্জ কী চ দাখপত্ৰা সহিক্ষক। । চুঞ্গ দীতা সহ: ক্লচ্যা স্বাদ্ধী দোৰত্ৰয়াপহা । ধাতু পুঞ্চিকত্ৰী বল্যা বেধ্যা পিচ্ছিলকা চ সা ।

হিশী চেবুনা।

চিঞা, চঞ্চু, চঞ্চী, দীর্ঘপতা ও স্তিক্তকা এই তালি ইহার পর্যায়।

গুণ। ইহা শীতল, সর, রুচ্য, স্বার্, ত্রিদোষ নাশক ধাতু পুষ্টিকারক, বল কর, মেধা বর্দ্ধিক ও পিচ্ছিল।

হিলমোচিক।।

ত্রাক্ষী শঞ্চধর। চারী ত্রাক্ষী চ ছিলমোচিকা । শোর্থ কুইৎ কফ্ছ পিন্তৎ ছঙ্গতে ছিলমোচিকা ॥

হিঞ্চাপাক।

ব্ৰান্ধী, শৃষ্ধরা, চারী, ব্ৰান্ধী ও হিল-মোচিকা এইগুলি ইহার পর্যার।

তা। ইহা শোধ, কুন্ঠ, কফ ও পিন্ত নাশকরে।

শিভিবাবঃ ৷

শিভিবারং শিভিবর যুক্তিকং সুনিবরকং।

বীবারকং সুচিপারং পর্ণক কুড্টালেখা ।
চাক্ষেরী সদৃশ পরেশ্চতুর্মল ইতীরিভং।
শাকোজনাহিতে কেশে চড়ুপানীভি চোচাতে ।
সুনিবলো হিবোপানী বোহ বোহবছা পহং।
অবিহানী লয়ং ভান্তুং কবাছো রক্ষরীপানং ।
বুবো কুডের অন্ত শান বেহনুষ্ঠান প্রবং।

শুশুনি পাক।

শিভিবার, শিভিবর, খডিক, শুনি-বরক, জীবারক, স্চিপত্র, পর্বক, কুকুট-শিবী, চতুর্কল ও চতুঃপত্রী এই ওলি শুন্দির সংকৃত নাম। ইহা সঞ্জল ভূমিতে জন্মিরা বাজে। ইহার পত্র আমরুল শাকের পত্তের ন্যার।

তাণ। ইহা শীতপ, গ্রাহী, বোহনাশক, ত্রিদোষয়, অবিদাহী, পঘু, স্বাচ্ত্র,
কষার, কৃষ্ণ, অগ্নিবর্জক, বুষা ও রোচক।
ইহা জ্বর, শ্বাস, মেহ, কৃষ্ঠ ও ভ্রমরোগ
নিবারণ করে।

मृलक शख्या।

পাচনৎ সহা ক্রচে)াজং পাএৎ যুসকজং নবস্। ডেছ লিক্ষৎ বিহোষত্ব সনিক্ষৎ ক্ষণিত কৃৎ ঃ মুলার লাকে।

নূতন মূলক শাক পাচক, লঘু, রুচ্য ও উষ্ণ, ইহা স্বেহ অর্থাৎ কৈলাদির সহিত নিশ্ধ হইংল ত্রিদোষ নালক হর, অনিদ্ধ অব্দার কঞ্চলিত কারক।

্ দ্রোপপুস্পী পত্তম্।

ভোৰণুক্ষীদলং ৰাষু ক্লম প্ৰক্ল চ পিছৰুৎ। ভেষমং কাষদা লোপ দেহম্মৰ হয়ং কটু ৪

ঘলঘদিয়া শাক।

ইহা স্বাতু, ক্লক্ষ, গুলু, পিত্তকারক কটু ও ভেদক, কামলা, শোব, মেহ ও জনবোদে ইহা বাবস্থের।

यवानी शतम्।

ববাণী পাক বালেয়েও ক্লচ্চাৎ বাভককপ্ৰাপুৎ। উভাৎ কটু চ ডিভাৎ চ পিতালং লয় পুলম্বৎ চ

দ্ৰবাস্থানম্।

গোরানের পত্র।

যবানীশাক আগ্নের, কুচা, বাতশ্রের-নাশক, উঞ্চ, কটু, তিক্তন, পিত্তকারক, লঘু ও শূলরোগ নিবারক।

ठळ्मकः।

দক্তপুপত্ৰ\ দোৰপু মনবাতকফাপ হয়। কণ্ডুকাৰ ক্ৰিমি শাৰ দক্ষ কুট প্ৰবৃল্লয়।

চাকুন্দার পত্র।

চকুলার পত্ত দোষত্ব, আন, লঘু ও বাতভাত্ম নাশক ইহা কণ্ডু, কাস, তিথি, খাস, দক্ষ ও কুঠরোগ নাশকরে।

(मह्धा

সেক্ত সা দ্বা ভীক্ষা দ্বীপনা ব্লোচনা হয়েছ। আগ্নানাভীবিকা গুলু শৃল শোলোদ্যানি চ॥

মনশাসজের পত্র।

সেত্তপত্ত জীক্ষা, অগ্নিবর্দ্ধক ও রোচক। ইহা আথান, অন্তীলিকা, গুল্ম, শূল, শোথ ও উদর রোগ শান্তিকরে।

শপ্ত টঃ।

পূপাটো মঙি শিষাজ্ঞ কর তৃতা কক্জমান্। সংগ্রাহী শীতন ভিজো দাহনুদাওলো লয়ুঃ ঃ

কেতপাপড়া পাক।

ইহা সংগ্রাহী শীতল, তিজ, দাহ নাশক, বাযুজনক ও শঘু; রক্তপিত্ত, জ্বর, ভূফা, কফ ও ভ্রমনোগে ইহা প্ররোজ্য।

গোজিহ্বা।

त्यांविक्यां कुठे त्यराक्ष कृष्यु वह रहीनवाः।

रिमी পোজিয়া भाक।

গেজিহবা শাক শঘু ইহা কুঠ, মেহ, রক্তদোষ ও কঠিন জর নিবারণ করে।

পটোলপত্রম্।

পটোলপত্র৲ পিছন্ন৲ দীপন্ন৲ পাচন্সস্থ । বিধ্বন সুদ্যান তলোভঞ্জুর কাস ক্রিমিপ্রপূৎ ।

পটোল পত্র, পল্তা।

পটোলের পত্ত পিত্তর, অগ্নিকারক, পাচক, লবু, স্থিয়া, শুক্তজনক, উষ্ণ, ভ্রবয়, কাসনিবারক ও ক্রিমি নাশক।

গুড়্চীপত্রম্।

গুড়্চী পথ মার্যেয়াৎ সর্বাহ্মর হরৎ কছু। ক্যায়। কটুতিক্রণ স্থাদুপাক্ৎ রসায়নমূ ॥ বল্যযুক্তক্ষংগ্রাহি ছন্যাৎবেষ্ত্রয়ৎত্রাম্ । দাহপ্রধেহ বাভাসূক্কামলা কুঠ পাড়ুভাষ্ ॥

তালফর পাতা।

গুড়্চীপত্র আর্থেয় দর্কজ্বর নাশক, লঘ্, কষার, কটু, তিক্ত, রদারণ, পাকে সাছু, বলকারক, উষ্ণ, সংগ্রাহী, ভৃষণ নিবারক ও ত্রিদোষয়। ইহ। দাহ, প্রমেহ, বাজরক্ত, কামলা, কুই ও পাতু-রোগ শান্তি করে।

कामगर्भः।

কাসনর্গোহরিমর্মণত কাসারিঃ কর্কণ বরা । । কাসমর্গরকং ক্লচ্যং বৃষ্যং কাস বিধান্তপুৎ । মধুরং ক্ষরতিমুং পাচনাং কঠপোরন্থ। বিশেষতঃ কাসহরং পিঞ্জুং প্রাহকং স্থু ।

কাল কামুদের পাত।।

কাসমর্দ, অরিমর্দ্ধ, কাসারি ও কর্কশ এই থালি কাল কাস্থলের সংফ্তে নাম। ইহার পত্র রোচক, বলকারক, বিষয়, রক্তদোষ নিবারক, মধ্র, বাতশ্রেয়, নাশক, পাচক, কুষ্ঠ বিশোধক, পিওয়, গ্রাহক, লঘু ও উৎকৃষ্ট কাস্য।

চনকপত্রম্।

ক্চ)ঞ্ৰক শাক্ৎস)াদ্ দুৰ্করং কফৰাডকুং। অস্ত্ৰ বিক্তিজনকং শিক্ষুদ্দৰশোধ্ভং ॥

(छ लात माक।

ইহা কুচা, সহজে জীৰ্ণ হয়না, বাজ-শ্লেম বৰ্দ্ধ কৈ, অমু, বিপ্তন্তী, পিত নাশক ও দ্বস্তুশোণ নিবারক।

" কলার গতাম ।

কলায় শাক্ত ভেনি স্যাল্লয়ু ডিক্রণ বিদেশ্য ছিং। মটর শাক্ষা

মটর শাক ভেদক, শঘু, তিক ও ত্রিদোষ নাশক।

মধ্পণত্রম্।

কটুকং সার্গণং শাকং বজমূত্র মলংগ্রন্থ। অন্নপাকং বিহাতি সাতৃষ্কাং ক্রমেং ক্রিমেংযালিং । সঞ্জারং লবনং ভীক্কাং স্বানু শাকেয়ু নিশিত্য।

मदिवाभाक् ।

দর্শিশাক কটু, বহু পরিমাণে মল মৃত্র নিঃদারক, গুরু, পাকে অমু, বিদাহী, উষ্ণ, কুক্ষ, ত্রিদোষ নাশক, ক্ষার গুণযুক্ত, লবণাস্থায়, ভীক্ষ ও স্থান্ত। শাকের মধ্যো ইহা নিক্ষী।

তাথ পুস্পাদ।নি।

व्यवस्थिपुर्णम् ।

অগভি কৃষুদ্ধ শীক্ত চাতুর্যকলিবারণম্। নক্ষাকানাশন্য ডিক্তা ক্ষায়ত কটুপাকি চ । পীনস রোল্প শিক্ষাত বাডয়ত মুমিডিম্ডদ্।

रकस्त्र ।

বকফুল শীকল, চাডুর্থক জর নিবা-রক, রাত্রাাজ্য নিবারক, ভিজ্ঞ, ক্যার ও পাকে কটু। ইহা শীনস, শ্লেষ্মা, পিজ ও বারু মাশকরে।

কদশীপুষ্পম্।

ক্রন। কুসুমা বিজ্ঞাৎ মধুর তুসর ও এর। বাতপির হরা পাতং রক্তপিয়ক্ষ্য প্রবৃৎ । বছসুমাপদা ক্রম্য ক্ষক্ত্রলবর্জনম্। মোচা ।

ইহা লিয়া, মধুর, ক্ষার, শুরু, শীজল, ভক্রেজনক, বলকারক ও জ্লা। ইহার হারা বায়ু, পিতে, রক্তণিক, ক্ষয় রোগ ও বহুমুত্র উপশ্যিত হয়।

(भाजाक्षम भूष्णम ।

লিপ্রোং পুলান্ত কটুক্ৎ ডীক্ষোভৎ যায়ু-লোবল্ডং :

তিনিছৎ কক্ষাভয়া বিশ্ববি দীৰ্থনীকিৎ । মধুনিপ্ৰা ভূজিভিড\ রক্ষণিক প্রশাহনণ ।

मिक्किनामृग ।

শোভাল্পন পূস্প কটু, ভীক্ষ, উষ্ণ, ক্রিমির ও বাভারের নাশক। ইহা রায়ু-শোধ, বিজ্ঞপি, প্লীগা ও গুলা রোগ দমন করে। মধুশিতাপুস্প চক্ষের সাম্বা কর ও রক্তপিত নিবারক।

অধ ফলশাকানি।

कृषा ७ म् ।

কুমারে স্যাংপুন্পা ফলং পীতপুন্পং বৃহৎকলম্। কুমারুং বৃংহনং বৃহাং প্রক্ল পিপ্তাস্ত্র যাতনুং । বালং লিতাপহং লীতং মধ্যমং কফকারকম্। বৃদ্ধং নাতি হিমং খাদু সক্ষারং দীপনং লগু॥ বঙ্জিন্তরিকরং চেতোরোমছং সঞ্চনেম্ভিছ।

কুখাত, দাচি কুমুড়া।

পর্যার। কুমাণ, পুস্ফল, পীত-পুস্প ও ইহৎ ফল।

ওপ। কুমাও পৃষ্টিকারক, রুষা, গুরু পৈত্তিক বাজরক নাশক। কচিকুমড় শীতল ও পিত্ত নাশক, মধ্যমাবস্থায় কফ বর্দ্ধক, পরুকুমাও অধিক শীতল নহে, স্থাতু, ক্ষারগুণ বিশিষ্ট, অগ্নিবর্দ্ধক, লঘু ও বস্তি শুদ্ধি কারক, মান্সিক রোগ নাশক ও সর্বাধেয়।

क्याडी।

কুমাও তু ভূশংস্মী কর্কান্তরপি কার্তিত। কর্কার গ্রাহিণী দীতা রঙ্গশিত হয় ওরং । পঞাতিকাগ্রি জননী সঞ্চারা ক্ষণতনুহ।

গে!ল মাডিকুমড়া।

কুরাতীয় অপর নাম কর্কারু।

তাণ। ইহা অভিশয় লঘু, গ্রাহী, শীতল, রজপিত্ত শান্তিকর ও ওঞ্ প্রকাবস্থায় তিজ, অগ্নিকারক, ক্ষারত্তণ বিশিষ্ট ও বাতশ্লেম নাশক।

পীতক্মাওম্।

অপর৲ পাতকুমাওং গুলু পিতৃকরং পরস্ব। অগ্রিমান্যা করা খাবু লেয়ন্ত্রণ বাত্তকোশনস্ব

বিলাতিক ্মড়া।

অপর প্রকার ক্রাও অর্থাৎ বিলাতি ক্রাও গুরু, সাতু, পিত ও অগ্নিমান্দ্য-কারক, প্রেশ্ন নাশক ও বারু প্রকোপক:

जानातुः ।

অল'বুং কলিতা উথী বিধা দীঘা চ বর্ত্তপা। নিউডুদী ফল\ জদা\ প্রশ্নেম্বার্পহ\ গুরু ছ তুমাং ক্লচিকর\ প্রোজ্ঞ ধাতুপুঞ্চি বিবর্ত্তনম্।

लाडे।

ইহার সংস্কৃত নাম অলাব্ও ভুণী। ইহা তুই প্রকার দীল্ভি বর্জুল মিষ্ট অলাব্ জন্য, পিত্তগ্রেম নাশক, ওক্স, রুষা, ক্রচিকারক, ধাত্তপাধক ও পুষ্টকর।

ইক্ষাকঃ।

ইজুকৃঃ কটুতুদী স্যাৎ সাড়দী চ মহাফসা। কটুতুদী হিমা হ্রণা শিত্তকাস বিষ পহা । ডিকা কটুর্লিশকে চ ব'ডশিব হুর'ও কৃৎ।

जिल्लाडे।

ইহার সংস্কৃত নাম ইক্ষাকু ৩৪ কটু-ভূমী, ইহার কল গতি রুহং ।

ভিতৰাট শাতৰ, জ্বা, বিষয়, ভিক্ত ও পাকে কটু। ইহা গৈভিক কান ও বংত গৈভিক জব দমন করে।

अर्राङ्गः ।

এন্নাক্ত কৰ্মী প্ৰোক্তা কৰাতে তদ্ধণা পৰ । কৰ্মী শীতদা ক্লক। প্ৰাছিণী মহুবা ধক্তঃ । ক্লচ্যা পিকহুৱা দাধা পৰা তুকাল্লি শিকত্

कं किए

কাকুড়ের সংস্ত নাম একাকেও কর্তী।

শুণ। অপক কাঁকুড় শীতল, রক্ষ, গ্রাহী, মধুর, শুরু, রুচা ও পিওয়, প্রকাবছার তৃষ্ণা, অগ্নি ও পিওবদ্ধনি করে।

f5/5 33 1

চিচিডঃ খেডরাজিঃ সাং সৃদীর্ঘো গৃহকুজকঃ !
চিচিডেঃ বাড'পর্যায়ে বজাঃ প্রোট্রা ফ্রচিপ্রদঃ র
পোর্বাহিতি হিডঃ কিঞ্ছি গুলৈ মূলিঃ
প্রেটালডঃ ।

रिहिना।

পর্যায়। চিডিও কোতরাজি, সুদীর্ঘ ৩ গৃহ ক্লক ।

গুণ। চিচিও বাসু পিত নংশক, বলকারক, পথা ও ক্রচি প্রদ, ইবা শোথ রোগীর পক্ষে অভিশয় উপকারক, পটোল অপেকা উভার গুণ ক্ষিকিৎ করা।

कारदरद्वाः कावदरद्वीः ५ ।

কারবেলাৎ কঠি বং স্যাথ কারবেলা তত্যে পয়ুং। কারবেলাৎ ছিন্ম ছেদি লয়ুডিক নবাতলন্ । অবশিক কফাল্রন্ত্র পাঞ্নের ফ্রিমীন্ ছরেছ। ভদ্যবাশিকারবেলা স্যাদ্বিধা দ্বীপনী লয়ুং ।

कारतच्च करवानः ও कारत्वज्ञा উচ্চ।

কাণবেরের অপর নাম কঠিল্ল ইহা অপেকা কারবেলী ক্ষুদ্র ।

গুণ। কারবেল শীতল, ভেদক, লঘু, তিল্ড, বাহু বন্ধ কি নংখ, ইহা হুব, পিত্ত, কন্দ, রক্তদোধ, পাতু, মেহ এ ক্রিমি নাল করে। কারবেলী অর্থাৎ উচ্ছার তবও ঐ রূপ, অধিকন্ত উল্লেখ্যবন্ধ ক ও স্থা।

মহাকোষ ভকী ৷

মহাকে'ৰাজকী শ্লোক্ষা ইন্তিয়োখা মহাকলা। চামাৰ্গলো যোৰকক ইভিপৰ্ক সংস্কৃতঃ ঃ মহাকোৰাডকী বিজ্ঞা **হস্কশিতানিলাপ**হা।

ध्भुन ।

পর্যাষ। মহাকোষ্য কনী, হস্তিবোষা, মহাকলা, ধামার্গর, বোষক ও হস্তিপুর্ণ। তথ্য মহাকোষ্য কনী ক্লিয়া, রক্ত পিত্ত শাক্তিকর ও বাব নাশক।

त्राकटकामाखको ।

ধানাবার প্রিপুস্পী ক্লালেনী কুডবেধনা। রাজকোষাত্তকী চেতি তবোক্ষা রাজিমংফ্লা ঃ রাজকোষাত্তকী পীতা সধুয়া কক্ষয়তলা। পিত্রী দীপনী খাস অনুকাস জিমি অনুং॥

বিশা।

প্রায়ে। ধামার্ব, পাতপুশ্প, জালিনা, কৃতবেধনা, রাজকোষাতকা ও রাজিমৎফলা।

গুণ। রাজকোষাতকী শীকল, মধুর, বাতপ্রেয় বর্জক, পিত্তম ও অধিদীধি কারক, ইহা খাল, জ্বর, কাল ও জিনি নিধারণ কবে।

भारकेलाः ।

পটোরং বুলকভিক্তং পাতৃক্তং কর্ত্তপাছ হয়। রাজীফলং পাতৃক্ষো রাজেয় ভাষ্তাক্ষন । বীজগভঃ রাজীকভ কুঠ্ছা কাসভক্ষনং। পটোলং পাচনং ছ্ছাং বৃহাং লখ্রিদীপনন্ । স্থিক্ষাকং ছব্ধি কাসাল্ল ক্ষার বেশান্ । পটোলসা ভবেলালং বিরেচন করং স্থাৎ । ন'লং স্লেল হরং প্রাং পিত্তারি ফলং পুনঃ। দে'ব্রমু হরং প্রোক্তং ভব্বিকা পটোলিকা।

भटोग ।

পর্যায়। পটোল, কুলক, তিক্ত, পাতৃক, কর্কশচ্চদ, রাজীফল, পাতৃফল, রাজের, অমৃতাফল, বীজগর্হ, প্রতীক, কুঠহা ও কাদভঞ্জন।

র্পণ। পটোল পাচক, গুন্য, রুষা, লঘু, অমিদীপ্রিকারক, লিম্ক ও উষ্ণ। ইহা কাস, রক্তদোষ, জ্বর, ক্রিমি ও বি-দোষ নস্ত করে। পটোলের মূল উংকৃষ্ট বিরেচক, নাল (ডাঁটা) কফত্ব, পজ পিত্তনাশক, ভিক্ত পটোলিকাও এই রূপ।

বিশী।

বিধী রক্তকা তুড়ী তুজিকেরী চ বিধিকা।, অঠোপমাকলা প্রোক্তা পালুপনী চ কথাতে । বিধাকল\ ঝাবু পতি\ ধরু পিভাজ বাত সং। ক্তম্ম কেথম্ম প্রচাম বিবস্ধাধ্যামকারকণ্।

কুশকুকা।

পর্যার। বিশ্বী, রক্তফলা, তৃতী, তৃতিকেরী, বিশ্বিকা, ওচোঁপম ফলা ও পীলুপনী ।

গুণ। বিদ্বীকল স্বান্ত্র, শীকল, গুরু, রক্তপিত্ত শান্তিকর, বার্নাশক, ক্তন্তন, শেখন, রুচা এবং বিবন্ধ ও আধান কারক।

भिन्नी प्रत्रम् ।

লিহিং লিহা পুশ্ধলিহাতথা পুস্তকলিহিকা। পিহা হয়ক বধুসং ক্লাস পাকে হিন্দ গ্ৰন্ত ছ বল্যাৎ হাইকরং প্রোক্তাৎ হোরালং হাতলিস্তানিক ছ

বেতশিম ও মোগলাই শিম। শিধী তুই প্রকার প্তাশিধী ও পৃত্তক শিধিকা।

তাণ। শিশারর আখাদেও পাকে মধুর, শীভল, তারু, বলকারক, দাহকর, কফজনকও বাব্পিত্তনাশক।

कामिशिः।

কোল শিবিঃ কৃষ্ণকলা ওলা পর্যাছপটিকা। কোলশিখ্য সমীরশ্বী এরু)আ কফপিলসূৎ ॥ ব্যক্ষাগ্রি সাধকুৎ বুষ্যা ক্লচিকুৎ বন্ধবিভ্ঞক্তঃ।

कुश्चिम । हिन्ही स्वत्रादमधी।

পর্যার। কোলশিন্তি, কৃষ্ণফলা ও পর্যারপট্টিকা।

গুণ। কোলশিম্ব বারুনাশক, গুরু, উষ্ণ, কফপিত্ত কারক, শুক্তকু,নকারী, অগ্নিমান্দ্য কারক, হুষা, রুচি কারক, মল-রোধক ও গুরু।

শেভাষনফলম্।

সোভাঞন কলং যায়ু কৰায়ং ককপিভনুৎ। শৃত্য সুঠকয় খাল গুলু হুদ্দীলনং পরুষ্ ৪৯

শক্তিনার ডাটা।

ইহা খাত্, কবার, পিড্ডপ্রেম্ম নাশক ও অভিশর অয়িদীপ্তি কারক, শূল, কুঠ, ক্ষরোগ, খাস ও ওঅ্রোগে ইহা প্রারেজ্য।

বাৰ্ত্তাকুঃ।

বুধাক স্থা জু বার্ত্তান্ত্রান্তানী ভান্টিকালি।।
বুধাক বাবু ওীজ্ঞাক কটুপাক বলিভলন ।
করবাত বলাশন্ত হিলন কলক সম্ব ।
ভরাল কললিবল্প হুডা পিনকর নত্ত্বা
কুথাক পিনত কি ভবলার পরিপাচিতন্।
কলদেলোনিলাবল্প বতার্তা লঘুনীপনন্।
ভবেবহি প্রক্রিকা সভৈল লববালিভন্।
ভবলা দ্বা বিধান কুলু টাও সম্ভাতবেং।
ভব্লা সুবিবেবেব হিডা হামক পুর্বা ।

বার্জাকু, বেগুৰ।

বৃস্তাক, বার্ডাকু, ডণ্টাকী ও ভণ্টিকা এই গুলি ইহার শংস্কৃত নাম।

ত্তণ। স্বাদ্ধ, তীক্ষ্ণ, উষ্ণং, পাকে কট্, জরন্ন, বার্ নাশক, কদন্ধ, অন্নিদীপ্তিকারক, তক্তজনক ও লবু, ইহা পিত্ত জনক নহে। কচি বেতান কদপিত্তনাশক, পকাবস্থার পিত্তকারক ও লঘু, দগ্ধ করিলে কিঞিৎ পিত্তকার, কদন্ধ, মেদোকান কারক, বারু ও আম নাশক, অতিশর লঘু ও সার্ধ বর্ধিক হর। দগ্ধবার্ত্তাকু লবণ কৈলের সহিত্ত লংযুক্ত করিলে তক্তম ও লিগ্ধ হর। অপর একপ্রকার বেতান সাহত্ত তাহা থেতা বর্ণ ও ক্ষুক্তির অতের নাার, ঐ বেতান অর্শো রোনে বিশেষ উপকারক, কিন্তু জন্যান্য বিষয়ে পুর্বেষ্ঠিক বার্ত্তাক্ হইতে হীন তাণ।

ডিভিশঃ।

তি বিশো রোমশ কলো মুনিনির্মিত ইতাপি। তিবিশো রুচিকুছেবা পিবস্কেরাপহঃ কৃতঃ। সুশীতো বাতলো রুকো মুরলুকাগারী হরঃ।

कंदबान विस्नव।

শর্যার : ^{1ভতিশ}, রোমলফল ও মুনিনিশ্বিষ্ক।

ত্ব। ইহা ফ্রিকারক, ভেলক, কফ্-পিত নাশক, ভূপীতল, বারু জনক, রুক্ষ, দ্বেল ও অশ্বরী নাশক।

পিতারম্।

(यम नाम विदल्वः।)

लिकाम् भीक्रमः तकाः निषयः स्विकानकेम् । भारतः मधु विदर्भदयनं वियमीचि कतः माज्य ॥

শিতার।

ইহা শান্তল, বলকারক, পিত্তনাশক, ফুচি কারক, শ্রুপাক ও অভিশয় পিত্তসঃ

करक किया।

ককোঁটিকা পীঙপুজ্পা মধাকাণীতি catalice । কৰ্কোটি মগজৎ কঠজলাগাক্তিনাগেনী । খাস কাস অন্তানু হঙি কটুপাকা চ দাপনী।

काकद्याल्।

পর্যায় ৷ কর্কোটকা, পীতপুশা ও মহাজালী ৷

গুণ। ইহা মলবাশক, পাকে কটু ও অধিনীপ্তি করেক। ইহা কুঠ, জ্লাস, অফুচি, খাস, কাম ও জর নিবারণ করে।

ट्यांडिका।

ভোতিকা বিষয়ুক্তিক ভোতীতাপি সুমুক্তিকা। ভোতিকা পুতিবা ব্ৰহা ক্লচা বহিংমবান্দ্ৰঃ ছ বঙি পিল ক্ষাৰ্লাপলি ক্লিবি প্ৰসু বিবাহয়ান্। हिनी विष्राहि, करवक्त्रा।

পর্যার। ডোডিকা, বিষমুষ্টি, ডোডী ও সুমুষ্টিকা।

গুণ। ডোডিকা পৃষ্টিকারক, বল-প্রাদ, রোচক, আগ্নিগ্রিক ও লঘু। ইহা গৈতিক ও গ্লৈগ্রিক অর্শঃ, ক্রিমি, গুলা ও বিষক্ত পাঁড়া বিবারণ করে।

क फिलाबी कलम्।

करोजात्री कनः डिक्कः कृष्टिनः वोश्नः वयः। सरकामः यानकानम् चत्रानिम क्यानिम्

কণ্টকারীব ফল।

কণ্টকারী ফল জিজ, কট্, আগ্ন-কারক, লখ্, রূক্ষ ও উষ্ণ। ইং। খাস, কাস,,ভ্রের, বারু ও কফ দমন করে।

ख्य नाने भाकानि।

मर्यभगासम् ।

की (क्यांकार मार्चनार मानार वाल्डाक्कक उनानवस्। कृष्टीस बद्दा एक क्षेत्रा स्टिकाहरूम्॥

मिबबाद छाँछ। ।

সর্যপ নাল ভীক্ষেত্রে, বমন নিবারক ও রুচি কারক। ইহা বারু, লেমা, এগ, কপু, দক্ষ ও কুষ্ঠ রোগ নাশ করে।

कलनाका न ।

क्ष्रवः।

সূরণঃ কল ওলণ্ড কললোংলোগ্র ইও/ল। সূরণো দীপনো জজঃ কথাগ্য: কৃঙ্কু কটু: । বিক্টভী বিশ্বো জড়াঃ ককার্ণ: কৃঙ্বো লয়ঃ। বিশেষ। দুর্গদে পশ্চাঃ প্লীছ প্রান্ন বিনাশনঃ । সুর্বোধাৎ কন্দশাকানাৎ সূর্বঃ স্লেক উচ্চতে। দক্ষনাৎ রক্তপিকানাৎ কৃষ্টিনাৎ ন ছিতো হৈ সং । সন্ধান যোগৎ সম্প্রান্তঃ সূর্বো গ্রবস্করঃ।

연취 1

পর্যার। শ্বণ, কল, ওল, কলল ও অর্ণোল্ল।

ত্ত্বণ অন্নিন্তি,কারক, রক্ষ, কষার, কণ্ডুকারক, কটু, বিস্তৃত্তী, বিশাদ, রোচক, কফার্শোনাশক, লঘু, অর্শো-রোগীর অভি ছুপথা এবং প্লাহা ও ওলানাশক। সমুদার কন্দশাকের মধ্যে সুর্ব শ্রেষ্ঠ, দক্ষিত সূরণ অধিক ওপ কর। দল্ল, রক্তপিত ও কুঠ রোগ দত্তে সূরণ ভক্ষণ নিষ্ক্তি।

ण ज्रम्।

(আক্রকমপালুকং ওৎ কবিওম্ ।
ক'ঠাপুক পঞ্চালুক হস্তাালুকানি কবাতে।
পিশালুক সপ্তালুক রক্ষালুকানি চোজানি ॥
আলক পীতপং লক্ষং বিউদ্দি মধুরং এক।
সৃত্যুত্ব মলং ক্লেং পূর্জ্জারং রক্ষণিকনুৎ ॥
কক্ষানিক কয়ং বলাং বুৰাং মুন্দাগ্রিবর্দ্ধন্দ্

আশু !

আলুব সংস্কৃত নাম আকৃত ও আলুক। আলু ছর প্রকার যথা কাঠালুক, শমালুক, হস্ত্যালুক, পিঞানুক, সন্থালুক ও রক্তা-লুক।

কাঠালুক (কাঠ আলু হিন্দী কঠালু) কঠিন শঙ্খালুক (দাঁথ আলু হিন্দী শঙ্খারু) স্বেড়বর্ণ, হস্ত্যালুক দীর্ঘ ও মূল, পিঙালুক গোলাকার, সপ্তালুক, মিষ্ট ও রোম বিশিষ্ট এবং রজালু (লাল-আলু) লালব ।

গুণ। সমুদাব আসু শীকল, বিষ্টণ্টা মধ্ব, গুরু, মলদত্ত নিংসারক, ক্লফ্ল, ভূজ্জির, রক্তপিত শা'স্তকর, বাভপ্লের বর্ধক বসকারক, গুক্ত জনক ও কিঞ্ছিৎ স্মায়ি বর্দ্ধক।

खाःभू भी।

রক্ত'লুক ভেলে প'টিং। তম্বী চ প্রনিতালকী। আল্ক' ললকং 'মধ্য গুদ্ধী হৃৎকক্ষমাশিনী। বিক্টান্তকারিনী তৈলে লালিডাতি ক্রচিপ্রদা।

লাপ আবু বিদেয়। হিকামকুই। ইহার অন্য নাম পাটিয়া ও ভবী।

তাণ। ইহা বলকারক, স্নিগ্ধ, তারু ও বক্ষংশ্বলের কফনাশক ও বিষ্টিষ্টী, ইহা তৈলের সহিত পাক করিলে অতি-শ্যু ক্রচিকারক হয়।

न्छनः।

লগনন্দ রনোনং স্য'পুথানী মহৌষধ্য।

অরিটো ল্লেক্ড কল্চ ববনেটো রনোনকং ।

পঞ্জিত রনৈর্জা রনোনালেন বজ্জিতঃ ।

ডল্মান্তনান ইত্যুকো ন্যানা গুল্বেশ্বং ।

কটুকতালি মুলেমু ডিকং পরেমু সংক্ষিঃ ।

নালে কথায় উদ্দিটো নালাথে লবনান্দ্রং ।

রলেকু মধুরং প্রোকো রসন্ধন্ধণ বেশিভা ।

রলোনে। বুংছনো বুখা দিয়োল্ফা পাচনা সরং ।

রলে পাকে চ কটুক স্তীক্ষো মধুরকো মতঃ ।

ভগ্যভান কৃৎকটো প্রক্ষা শিবাল বুনিদঃ ।

যলবর্ণকরে বেবা হিতো নেকো রসায়নং ।

ছজোগ জীৰ্মত ক্ষিপুল বিৰম্ভ একুড়িচি কাল শোকানু। পূর্নাম কৃষ্ঠানজ্ঞান কল্প সমীরণ স্থাস কল্পাৎশু হাঁছে। মধ্যং মাংসং ওপ্রাক্ত হিতং জ্বল সেবিনাম। ব্যাহামাতপং রোব মধিনীরং প্রো প্রভম্॥ হসোন স্থান্দ্রক্ত ক্রামের্ড্ডামির্ড্ডমূ।

ब्रष्ट्रन ।

ललन, द्रामान, जेशानक, मरहोषध, অরিষ্ট, রেচ্ছকন্দ, যবনেষ্ট ও রসোনক এইগুলি ইহার পর্যায়। ইহাতে ছয় রদের মধ্যে পাঁচ রস অবস্থিত আছে। কেবল একমাত্র অল্লর্ম নাই এইজন্য वेशारक बर्दमान (এदकन ब्रह्मन जेनः) करह। টগার মূলে কটুরস, পত্তে জিক্ত রস, নালে क्यात्र, नालाद्धा लदन ७ वीटक मधुत्र तम বিদামান আছে। রত্বন পুষ্টিকারক, ক্ষক্র জনক, স্নিখ্যোফ্চ, পাচক, সর (কোষ্টশ্ব বায় ও মলাদির নিঃসারক), ভীক্ষ কটু त्रम विभिष्ठे, शांटक शश्रुत्र, कश्च शांटनत मश्रयाञ्चक, कर्श्र शतिकात्र कात्रक, तर्शत छेद-উৎকৰ্মাধক, আমৰ শক্তি বন্ধকি ও চকুর হিউকর ৷ রত্ন कदिला श्रासात्र, जीर्य स्वत्र, कृष्मिमृत, विवक्त (मनानि वक्त इंदेश शाका), खना, অক্তি, কাশ, শোগ, অৰ্শঃ, ক্ষ্ঠ, অখি-भान्ता, क्रिमि প্রভৃতি জন্ত, বারু, খান ও कण महे एवं। याष्ट्रा ब्रष्ट्रम स्मान करब, काशारम्य भएक ममामाश्म भ जज्ञ भथा। बाह्याम, द्यो घटनवा, द्वकांश, जानिक कल-পান, তথ্য শুড় এই গুলি রসোন ভোজী-দিলের একবারে বক্সনীয়।

প্ৰাণ্: ৷

नजाः वृत्तरमञ्ज्ञ पूर्वरका मूचवृत्तकः। नजाः कृषः स्टेनरक्षाः स्टाम्म ममृत्नाः स्टेनः ॥ यानूम्लीरक तरमञ्जूषाः कषक्षीति लिखनः। इतरक रकरमः वातः यनयोगः करता सङ्गः।

পেঁয়াজ।

পলাত যথনেষ্ট, তুর্গ ও মুখদ্যক এই ওলি পলাতুর পর্যার। পলাতু রস্থনের ন্যার ওগ বিশিষ্ট, পাকে মিষ্ট, কফবদ্ধ কি, অধিক পিত্তজনক নহে, গুরু, বলকারক, বীর্ঘাৎপাদক ও বার নাশক।

मृलक्या।

যুগক\ বিবিশ প্রাক্ত উঠিক গ্রু মৃগকন্।
লালমকটক প্রিক লালের সক্ষেত্রন্থ
চালফান্সক উজু তেরা যুগক পোডিকা।
নেপাল মুগক চানাং জন্তনে গাজদেওবং ।
লাম্যুল কট্জা সাাজচা লালু চ পাচনন্।
লোম্যুল হিন স্থাপ কর খাস বিমাশনন্।
মাসিকা কঠবোগল ময়নাময় নালনন্।
মহন্তনের ক্লেক্স গ্রুক লোক্যর প্রম্ন শ্রুক বিমাশনম্।
সেই বিক্তা ওক্ষেত্র সাালু লোক্যর বিমাশনম্।

मुला।

গ্লক চুই প্রকার তন্মধ্যে প্রথম প্রকারের পর্যার এই গুলি ষথা লঘুমূলক, দালমকটক, বিজ্ঞা, দালের, মরুসম্ভব, চাণকামূলক, ভীক্ষ ও মূলকপোতিকা অপর জাতীর মূলককে নেগাল মূলক কহে তাহার আকৃতি হতিদন্তের ন্যার।

তা। লঘুম্লক কট্, উষ্ণ, রোচক,
লঘু, পাচক, ত্রিদোর নালক ও সর
বিলোধক, ইহা জন, খাস, নাসিকা রোগ,
কঠ পীড়া ও চক্রোগ নাল করে।
রহৎমূলক রক্ষ, উঞ্চ, তারু ও ত্রিদোর
জনক। তৈলাহিতে সিদ্ধ করিলে ইহা
বিদোধ নষ্ট করে।

পাক্রম্।

গাজরং গৃগ্ধনং প্রোক্তং তথানারজ বর্ণকন্। গাজরং নধুরং উক্তিং ভিকোজং দীপনং লয় । সংগ্রাহি রজপিকার্ণো গ্রহণী কক্যাভন্তিং।

পাত্রর।

পর্য্যার ! গাজর, গৃঞ্জন ও নার্ম-বর্ণক।

গুণ। গাজর মধ্র, তীক্ষ, ভিক্ত, উফ, অগ্নিবদ্ধ ক, লঘু ও সংগ্রাহী। ইহা রক্তপিত্ত, অর্দঃ, গ্রহণী ও বাতপ্রেয়া নাশ করে।

कमल्लेकन्द्रः।

শীতলং কদ্লী কন্দো বল্যং কেশ্যেছমুপিস্বান্ধিং। বহ্নিকৃদাহ ছান্নী চু মধুরো ক্রচিকারকঃ।

কলাঃমূল (এটে)।

কদলীকন্দ শীতল, বলকারক, কেশের সোষ্ঠব কারক, অমূপিত্ত নাশক, অগ্রি দীপ্তিকর,দাহ নাশক,মধুর ও ক্রচিকারক।

মানকঃ।

मामकः माम् महानवः कवादव छन्छवा व्यवः । मानकः (नावक्षक्षेत्रः निवतक हरता नवृः ॥

মানকচু।

ইহার পর্যার মানক ও মহাপত্ত i

গুণ। শোক নাশক, শীক্তন, রস্ক-পিত্ত শান্তিকর ও লবু।

वाबादीकमः।

वाहीयी निसमा बना। कहें। विका हमाहमी । बाह्य संस्थाति क्युत्वर कक कृष्टीमिनानदा ह

চুবজি আলু।

তা। ইহা পিত্তজনক, বলকর, কটু, তিক্ত, রদায়ন, আরু কর, শুক্তজনক ও অগ্নিবদ্ধ ক। ইহা মেহ, কফ, কৃষ্ঠ ও বারু নাশ করে।

, হঞ্জিকর্ণা।

গঞ্চনগাঁতু ভীক্ষোখা ভৱা বাস্তক্ষাৰয়েং।
লীডজন্ত্ৰী স্বান্ধু পাকে স্বসাস্ত কক্ষক ন পাডুপোল ক্ৰিম প্লীছ লুসানাহোহরাপইং। গ্লহণালা বিকারশ্বী বনসূত্রৰ কক্ষবং ন

मानकरू ।

গজকর্না তীক্ষ্ণ, উষ্ণং, বাক্তপ্লেখ্ন নাশক, শীক জ্বর নিবারক ও পাকে স্বাচ্ছ, ইছার কন্দ পাতৃ, শোহং, ক্রিমি, প্লীহা, গুলা, জ্বানাহ, উদ্ধা রোগ, গ্রহণী ও অর্থোরোগ দমন করে। বন্য ওলের কল্পের গুণও এই প্রকার।

(क्यूकम्।

কেছুক^ কটুক^ পাকে ডিক্ক^ গ্ৰাহি হিষ^ সন্থু। দীপন< পাচন< ক্ৰদা> ক্ষপিক অৱপ্ৰযু ঃ কুঙকাগ প্ৰযেহান্ত নাপন< বাতল< কটু।

(कंडेम्ड।

কেম্ক পাকে কটু, তিক্ত, গ্রাহী, শীকল, লবু, অন্তিমীপি কাবক, পাচক, জ্ব্য, বায়ুঞ্জক ও কটু। ইহা পিত্ত-গ্রৈশ্বিক ফ্র-, কুঠ, কাস, প্রমেহ ও রক্তন-দোহ নিবারণ করে।

कश्मक्रश्वत्रम्।

কংসক ছিবিখা ওকু বছজাজকংসকক।
মুন্তাকৃতি লখু সাধ্যতভিচোড মিতি ক্তন্ ॥
কংসকক্ষম পীতা মনুষা তুবরা গুলা।
পিতশোধিত হাহমু মন্নামল নাশন্ ।
গাহি শ্কামিল ভোহাতি ভ্ৰাক্ষম কাত্ৰ।

ভূট প্রকার কেন্দ্র।

কদের তুই প্রকার যথা রাজ কদের ও চিচোড় কদের, রুহৎ কদেরতক রাজ কদের বলে, আর মাহার আকার মুস্তার ন্যার ও বাহা প্রবৃ তাহার নাম চিচোড়।

থাবা। কলেরছের শীতল, মধুর, কথার, গুরু, প্রাহী, শুজেন্থেবাদক, বাতপ্রেম কারক, রোচক ও স্তনে ভূড়োৎ-পাদক। ইহা রক্তপিত, দাহ ও নেত্র-রোগ বিনাশ করে।

州京(日本研:1

পত্যাধিকদাং শাস্কৎ কর্মাটন্চ কল্যতে।
মূলাল মূলৎ ভিজ্ঞাওৎ পাশ্কৎ তথ প্রকল্যতে।
শাশ্কৎ অভিলৎ বৃদ্যৎ পিত্ত মাধ্যপ্রন্ত লাল্কং আছু পাকক ভ্রন্যানিল কম্প্রন্ত দ্বাধ্য মূল্বং ক্রম্পত ভিজ্ঞাও ম্পি তদ্যাল্য।
বাসং অনার্ত্তবং আর্লং ব্যাধিতং ক্রিমি ভজ্জিতন্।
কন্দেৎ বিব্যাহরেথ সর্কাৎ যদ্বাধ্যালি বিদ্ধিতন্।
অভিনি মকালোখাৎ ক্রমৎ সিভ্যমেণ্ডমন্।
কর্মাণ ক্রমেণ্ডমন্ লাভি ব্যালালি দ্বিভ্যন্।
সংক্রম্ণ সকলং লাভং নাত্যায়ান্ মূলকং বিনা।

भन्न **१८ छे**९भनाभित्र मृत्र ।

পদা প্রভৃতির কলকে শালুক ও করকাট বলে। মৃণাল মূলের নাম ভিন্মাও ও শালুক। গুর। মৃণাপ নীতল, সুণা, গৈরিক দাহ নিবারক, রক্ত দেন নাশক, গুরু, ভুরুর, সাতু পাক, গুনে ভুরোং পাদক, বায়ুক্সনক, কফ্নর্কত, সংগ্রাহী, মধুর ও রক্ষ। মৃণালের ম্লেরও এই রূপ গুণ জানিবে। আতি কোমল, অসমধ্যাং- গন্ন, জীন, কাটাদি বারা ভ্যাত্তএবং অগ্নি দ্য় মৃণাল ভক্ষণ রোগীর পক্ষে অকর্ত্র।

অভিশর জীন, অকালে ৎ শর্ম, রক্ষসির (মাহা কৈলাদি ঘারা সিদ্ধ নহে) কুৎ গিত ছান্ে উংপ্লা, কর্কণ, অভিকোমণ, শীক-বিক্লত, ব্যালাদি (সর্পাদি) ঘাঁবা দৃষিত শাকভোজন নিধিদ্ধ এবং মূলক বাইীত আর কোন শাক শুক্ক শুক্ষণ কবিবেনা, শুক্ষ মূলক উপকারী।

गः दश्रमञ्जभ् ।

केर गर्धकार नाकर कृतिकार । निनीक् कप्।

ক্ষিতি গোময় কাঠেষু বৃক্ষাদিষু অবুদ্ভবেছ।
সংগ্র সংঘদদা: শীড়া দোষপাঃ পিচ্ছলান্চ ডে গুরবন্দর্শ) হীসার করেয়েয়াময় প্রদান।
খেডাঃ শুক্রমণী কাঠবংশগৈ ব্রদ্ধ সক্ষরাঃ।
মাডিদোষ করা ডেসুঃ শেষাশ্রেভা বিগাছভাঃ।

কোড়কছ(তা, ব্যালের চাকা :

ইহাকে ভূমিছেত ও শিলাক্ষ করে, মৃত্তিকা, গোমন্ত্র, কাঠ ও রুফ্টান্তে ইহা উৎপন্ন হইয়া থাকে।

গুণ : সংস্বেদক শাক মাত্রেই শীতল, দোৰ জনক, পিচ্ছিল ও গুৰু, ভক্ষণ করিলে ব্যা, অতিসার, জ্বর ৬ শৈলিক রোগ উৎপন্ন হয় ! যে সকল ছত্র শ্লেড-বর্ণ ও যাহারা প্রিষ্ট স্থানে, কাঠে বাঁশে বা গোচরণ স্থানে উৎপন্ন হর, তাহারে অধিক লোযাবহ নহে, কিয় অন্য ছত্র অভি জগন্য।

সপ্তবিংশতিত্তমোহধ্যায়:।

धानावर्गः ।

ত্ত ধানানাছ ভেষা: 4
শালিধানাছ ব্ৰিগিধানাছ বুলিকান্ত প্ৰজ্ঞাকৰ ।
শিল্পীধানাছ ক্ষুত্ৰধানা মিঠু। কছ ধানা পঞ্চন্ত্ৰ
শালয়ে রক্ষ শাল্যাদ্য। ব্ৰিষ্য ঘটিকাদ্য: ।
ধ্বাদিকছ শ্ৰুধানাছ মুদ্গাদ্যছ শিশ্বধান্যকষ্ ॥
কল্পাদিকছ ক্ষুত্ৰধানাছ তুল ধানাঞ্জ ডং স্মৃত্যু ।

श्वा ।

ধানা পাঁচ প্রকার যথা শালিধানা, ঐহিধানা, শৃক্ধানা, শিধিধানা ও ক্ষুদ্ধানা।
ক্যাধ্যে এক্তালি প্রভৃতিকে শালিধানা,
যটক প্রভৃতিকে আহিধানা, যথাদিকে
শৃক্ধানা, মুকা প্রভৃতিকে শিধিধানা ও
কল্পুগ্রভৃতিকে ক্ষুদ্ধানা বা ভ্রধানা
বলে।

তত্র শালি ধানাসা লক্ষণ ধানাস।
কওনেন বিনা প্রক্লা হৈছবাং শাল্যং অত্যং ।
তত্র শালীনা নাবানি।
রক্ষণানিং সকলমং পাত্রং শক্নাহতঃ।
সুগডকং কর্মনকো মহাশালিক মুখকং ।
পুজাতকং পুত্রীক হপ্তা মহিব মন্তকং।
দ্বাহানুকং ভাজনকো,হায়নো লোপু পুজাকঃ ।
ইত্যাল্যাং শাল্যং সভি বহবো বছবেশকঃ।
তাহ বিজয় ভাজেরে সমন্তা নাত্র ভাষেতাঃ ।

नालिशना ।

কণ্ডন (কাড়া) ব্যতিরেকেও বাহা শুক্রবর্ণ হর, ভাষাকে শালি বা হৈমতিক বান্য বলে। রক্তশালি, কলম, পাওুক, শক্তনাহত ভ্রন্তক, কর্দমক, মহাশালি, দ্বক, পৃশাওক, পৃত্রাক, মহিষ মন্তক দার্থ পূক, কাঞ্চনক; হারন ও লোগু-পৃশ্পক ইত্যাদি নানাংধ শালি ধন্য নানা দেশে জন্মিব: থাকে, গ্রন্থ বিস্তার ভরে সম্দার উল্লিখিত হইল না।

CEषाः काः।

লালয়ে। মধুরাং মিছা বলা। বছাপো বছা নিঃ।
কৰায়া স্থানে কোনা হাত্যা হাত্যা ব্ৰহাপে বুংহনাঃ ই
অপোনিল কৰাং পাঁডাঃ পিবছা মুক্তগঞ্জা।
পাংশয়ে দ্বা মুক্তাতাং কৰায়া লগুপাকিনাঃ ই
সৃষ্টাপুত্ৰ পুৱীৰাণ্ড কুক্ষা স্লেয়া,পান্যনাঃ।
কৈলায়া অপ্পাৰ্ক ছা মেখালিচৰ কলাকোন।
ফলজাঃ (২) বাদনঃ পিজ ক্ষ্যা বাত্পিৰ্দাঃ ই
কিকিং ডিকা কৰা য়াণ্ড বিপাকে কটুকা অপি।
বাপিনা মধুৱা বৃদ্যা বলা।ঃ পিল্লালানাঃ ই
ড্যোলা স্চাপ্পা বুজ ছাঃ কহায়া গ্ৰহেবা হিৰাং।
বাপিনেভোগ (৩) গুলিং কি'গ্ৰহানাঃ পোডা

রোপিতান্ত নবা ব্যাঃ পুরান্ সমবং ক্ষ্তাঃ। তেজ)ন্ত রোপিত। ভূয়ং শীমুপাকং গুণাধিকাঃ ॥ ক্ষিত্রকৃঢ়া হিনা কৃষ্ণা বস্তাং পিতৃক্ষণপ্রীঃ। বন্ধবিট্নাঃ ক্ষায়াণ্ড ক্ষবণ্ডাপ্যে ডিক্সং।

- () रेकबाहा कृष्ट व्यक्ति का खेला ।
- (২) বা শভাঃ কুউক্ষেত্রে অকুউক্ষেত্রে চ।
- () कृषे (कार व व कृषी कार व दा।

ना हिल्ल

শালিবলো মধুর, ত্রিন্ধ, বলকারক, ত্রন্ধারিমাণে বন্ধনার নি দারক ক্ষার, লবু, রোচক, ত্বর বিশুদ্ধিকারক, শুক্তভানক, পৃষ্টিকারক, আন্ধা বাতপ্রোয় জনক। যে ধান্য কৃষ্টি (চনা) ভূমিতে উৎপন্ন হর,

তাহা বাষুপিত নাশক, থাকু, কফবদ্ধক, एक्कनक, क्यात ध्रहामन নিঃসারক, ऋत्रामस्यि दर्कक ४३ दशकत्र। অকৃষ্ট ভূমিতে সরং উৎপন্ন হর তাহা স্বাহু, পিরভ্রেয় নাশক, বায়ুপিত বর্জক, কিঞ্চিৎ তিব্ৰুসাদ, ক্যায় ও পাকে কটু। কট বা অক্ট্র ক্ষেত্রে বাশিত ধানা মধুর, বুষ্য, নলকারক, পিতনাশক, কফবদ্ধকি, অল্লমল নিঃথারক, কষায়, গুরু 🗷 শীক্তল। বপন করী ধান্য অংশেকা অবাপিত পালোর গুণ আহ। ,রোগিত নৃতনুধানা एकजनके, भूदाकन एहेरल अध्य हता। অন্যান্য পান্য অবেকা ব্রোপিত পানা তাণ-কর ও শান্ত ভার্ব হয়, ছিন্নরচ্ধান্য ক্ষম্ম, বলকারক, পিওল্লেয়,-নাশক, মল রোধক, ক্ষায়, লখ্ ও জন হিজে।

दक्तमः शिः।

(प्राप्त्रपानि)

সমত ধানোর মধ্যে রক্তশালি লেন্ঠ, ইহা বলকারক, লাবণ্য জনক ত্রিদোষ নশক, চলের স্থায়ারক্ষক, মূহকারক, পর বিশুদ্ধি কারক, শুক্তকারক, ত্রানাশক, নাম্মির্কিক, পুষ্টিকারক ও জ্বরু। ইহা বিষ, ত্রণ, স্বাস, কাস ও দাহ নিধারণ করে। মহাশালি প্রস্থৃতির ক্রন ইহা অপেকা জার।

जीदि भागाम्।

বার্ষিকার কভিতার স্বস্ত্রা ব্রাইয় শ্চির পাকিনর।
কৃষ্ণারীছিং পাটলশ্চ মুক্ট টাঙক ইন্ডাপে ৪ শ
লাল্যুখো স্পত্নুব ইন্ডাদ্যা ব্রাইয় ক্ষ্ডার।
কৃষ্ণারীছিং সাবিজ্ঞেয়ে যং কৃষ্ণ ভূষণ্ডসূক্তর ৪
লালার্থা স্ক্রপুক ইন্ডাদ্যা বাহিয়ের।
ক্রমুটাঙাকৃতিবীছিং বুকুটাগক উচ্যতে ৪
লালার্থা স্ক্রপুকর কৃষ্ণভুল উচ্যতে ।
লালার্থা স্ক্রপুকর কৃষ্ণভুল উচ্যতে ।
লালার্থা মুখিমসা ভেয়ো অনুমুখক সং ৪
ব্রাইয়র কলিডার পাকে মধুরা বাহাটো বিষাং।
অংশাভিষ্যদিনো বন্ধ সভাজার ব্রিকৈর স্থান ৪
কৃষ্ণারীরির্বরন্ধনে ভ্রাণ ভ্রাণেশ প্রবার পরে।

जीविशाना।

वीरियान। वर्षाकारल श्रीशक वर्षेत्रा থাকে, এই ধান্য কণ্ডিত (র্কাড়।) হইলে শুক্রবর্ণ হয়। ত্রীহিধান্য অনেক প্রকার गथा कृक्ष्योति, लाउँल, कूक्टांखक, माला-भूत '७ ज इभूत हेल्यामि। भारात प्य ও তত্ত্ব কৃষ্ণবর্ণ, ভাহার নাম কৃষ্ণরীহি, য,হার বর্ণ পাটলা পুস্পের নাার ভাহাকে পাটনব্রীতি, ঘাহার আকার কুরুটেব ভিবের ন্যায় কাহাকে কুক্টাও, যাহার मृत (मृं श) ७ ए पूल क्रश्न वर्ग काशास्क শালামুধ ও যাহার মুখের বর্ণ লাক্ষার নাার ভাহাকে অভুমুধ ত্রীহি কংহ। बीहि मकल जीर्न इहेरा मध्यकार छ হিতকারক হয়। বীহি দানা অল্ল অভি-यानो ७ मल द्राधक, उहि धारमात महभा कृष्ठ बीहि डेब्क्सडे. श्रमामा बौदि ममन् হল তণ বিশিষ্ট।

শ'প্তকা।

গৰ্জহা এব যে পাক\ যাত্তিক বভিকা নতা: । খণ্ডিকা শঙ্পুপাশ্চ প্ৰযোগক বৃত্তুপকে । মহাৰ্থিক ইডাৰ্গাঃ বৰ্জিকাঃ সৰুষ্যান্তভাঃ।
এতেহ'প প্ৰীৰয়ং প্ৰোক্ষা প্ৰী'ৰ্জক্ষণ দুৰ্লনাৰ ।
হতিকা মধুৱাং লীজা লখনো বৰ্জনৈত ল:।
বাউপিক প্ৰশন্মাঃ লাকিকিং সদূলা গুলৈঃ ও
ৰফিকা প্ৰবেঃ ভেৰাৎ ক্ষ্মী বিন্ধা বিদ্যোধাৰত ।
বাদ্যী মুকা প্ৰাহিনী চ বলদা আৰু হাবিনী ।
রক্তলালি গ্ল'ন ভলা ততঃ ৰূপে গ্লাং পরে।
হতিকা ব'ল উভা লোকে।

णास्थाना ।

গর্ভন্থ অবদ্ধাতেই যে ধানা পদ্ধ হর, কাহাকে বৃদ্ধিক কহে। খনপুপ্প, প্রমোদ্দক, মুকুক্ষক, মহাবৃদ্ধিক ইজাদি নানাবিধ ষৃত্তিক আছে। ত্রীহির লক্ষণ থাকাতে উল্লিখিত ধানা সকলকে ত্রীহি প্রেণীভূক্ত বলিয়া গণ্য করা যায়। ষৃত্তিকা ধানা সকল মধুর, শীজল, লগ্, মল বোধক, বাযু পিত্র শান্তিকারক, সমুদার ত্রীহি ধানোর মধ্যে যা জকা জাহু, হতু, প্রাহী, বলকারক ও জ্বদ্ধ, ইহার ওপ্রকশালির ন্যায়। অন্যান্য ধান্য ইহা জংপেক্ষা শক্তিহীন।

क्ष्मित नाम्।

কুজ ধানা \ কুধানাক ত্পধানা নিজি কাতৃণ্। কুজ ধনা মনুল \ কাগি কমায় \ কায়ু কেধনন্। মধুহ \ কটুক \ পাকে একজ ক্লেদ্শোঘকন্। বাত্তৃণ্ বন্ধবিট্ডভ প্ৰত্যুক কফাপ্ছন্।

ক্ষুদ্র ধানা, কুধানা ও ভূণধানা এই গুলি ইহার পর্যায়ে।

তা। ক্ষুদ্ধ ধান্য সকল মধ্র, পাকে কটু, রক্ষ, ক্লেদ শোষক, বায় ক্ষনক, মলরোধক, রক্তাশিক্ত শাক্ষিকর ও কফার। বিশেষ বিশেষ ক্ত ধানে।র বিষয় লিখিত হউতেছে।

কলঃ।

ব্ৰিয়াৎ কৰু প্ৰিয়ৰ্ছে কুৰা রক্ষা সভা ভৱা। পাতা চতুৰ্বিধা কৰু স্থাসাৎ পাতা বরা ক্তা। কৰুছ ভৱা সভান বাতকুদ্বুৎছণী প্ৰক্ষ। কুৰা কোনহাতীৰ বাজিনাৎ প্ৰশ্কুৰ্য্ধ

शिकी कश्रुनी।

কমু ও প্রিরম্পু এই বুইটা শব্দ ইহার পর্যার। কমু চারি প্রকার মধা ক্লয়, রক্ত, শুভ্র ও পীত। তর্মধ্যে শীভ্রবর্ণ কমু শ্রেষ্ঠ।

গুণ। কন্ধ ভাষে স্থানের সংযোগ কারক, বার্জনক, পৃষ্টিকর, গুরু, রুক্ষ, অভিশর কফন্ন ও অর্থগণের পক্ষে বিশেষ উপকারক।

ठीनकः।

চীনাকা কল্ডেদোহতি স জেয়া কল্সদ্**ও**ৰৈ। হিন্দী চ,না।

ইহাএক প্রকার কলু, ইহার গুণ কলুর ন্যায় ৷

শ্যমাক:।

শ্যামাকঃ পৌষণো ক্লফো বাডলং কফলির ছৎ।

भागा चाटमत दीख ।

শ্যামাক শোষক, রক্ষ, বার্জনক ও কৃষ্ণ পিত্ত নাশক।

दकात्म् १**३** ।

কোজবঃ কোরদুক্ষ স্যাধুক্ষালো বনকোজবঃ। কোজবো বাতকো প্রাহী ছিছা পিন্ত ক্ষকাশহং র উদ্যাসক কবেপুক্ষা প্রাহী বাতকরো ভূপায়।

दकान शाना ।

কোড়েবের অপর নাম কোরদূর, বনজ কোড়াবকে উদাল করে।

তা। কোডাৰ বাগুজনক, গ্ৰাহী, শীতল, পিত্তনাশক ও কছায়। উদ্ধাশ উষ্ণ, গ্ৰাহী ও অভিশয় বাযুজনক।

51377:1

চাক্ৰকঃ শায়ৰীক্ষৎ স্যাৎ কৰাছেও ভদ্ধণা অৱ। চাত্ৰকো মধুৰো হৈক্ষো হক্ষণিত কাফণৰ: s শীন্তলো সমূদ্যাশ্য কৰাৱো বাডকোপনঃ।

भद्रवीच ।

চারুক ও শর্মী**জ** এই ভূটটী ইহার প্রাার।

ত্যণ। চাহ্নক মধ্যু, রক্ষা, রক্তপিত শান্তিকর, কফন্ন, শীন্তল, লগ্ন, শুক্রা-জনক, কধান্ত ধান্ধ প্রবান্ধ

वः नेतीसम् ।

যবা বংশ ভবা ক্লাঃ কৰায়াঃ কটুপাকিনঃ। বন্ধসুতাঃ ক্ষয়াশ্চ ব'তপিত করাঃ সরাং ঃ

देव:८क रश्मापद । कश्या पःटक।

ত্ত্ব। ইহা রক্ষ, ক্যায়, পাকে কট্ট, মূত্ররোধক, ক্ষয়, বাসূপিত বন্ধ ক ও নর।

(শুক ধান্য .)

य्वः ।

যায় দিতশুকং স্যাগিঃশৃকেছি বি বাং ক্ষৃতঃ ।
ভোক)স্তৰৎ স্বাধিতস্তিতঃ স্বংশাক কীৰ্তিতঃ ॥
যবং কথায়ো মধুরং লীউলো লেখনো মৃদুং।
প্রবেরু ভিলবং পলো)। কুন্দো দেধাগ্রি বর্জনং ॥
কটুপাকোছনভিছাকী স্বর্খা বলকরে। ওকং।
সন্তবাতমলো বর্গাং হৈছয়কারী চ শিচ্ছিলঃ ॥
কঠনুগামর প্রেল্ম পিরমেন্য প্রবাশিনঃ।
পামস খাসকংসোহসক্তপোহিত তৃট্ প্রবৃৎ ॥
ভ্রম্মান্তর্ভাত্য।

य 48 ।

মাহার শুক (ভ্রা) গুরু বর্ণ, ভাগার নাম ধব, শুক শুনা মবকে অজিদব বলে, হরিত বর্ণ যবকে ভোকা ও সামান্য মবকে সল্লয়ব বলা বার।

তাণ। কষার, মধুর, শীতল, লেখন,
মূত্র, বাবেরালে তিলের নারে উপকারক,
রুক্ষ, মেধাবন্ধ ক, অগ্নিকারক, পাকে কটু,
প্রেমাপদাবক, স্বর বিশোধক, বলকর,
তরু, লাবণ্য ক্রনক, ধাতুর দমলা রক্ষক,
বহুপরিমাণে বায়ু ও মূর নিঃদারক ও
পিজিল। ইহার দারা কর্তুরোগ, ত্বকের
পীড়া, শ্রেমা, পিত্ত, মেদ, পীনদ, শ্বাদ,
কাদ, উরুত্তভু, রক্তদোষ ও জ্ফা নিবারণ
হয়। ইহা অপেকা অভিযবের তাপ
অর, তোক্যের গণ ভাহা অপেকাও হয়।

(খুক ধান্যঃ)

গোধুমা সুমনোহলি স্যাথ ত্রিবিধঃ স চ কীর্তিতঃ।
মহাগোধুম উড়াখ্যং পশ্চাদেশীৎ স্যাগতঃ র
মধুলী তু ততঃ কিভিন্নপা সা মধ্যেরপক্ষা।
মিঃপুরেন দ্বিগোধুমা কচিয়পীমুখাভিধঃ র
মোধুমো মধুরা লীতো বাতলিত ঘরো প্রয়াঃ

কফ প্রক্রেথনে বলাং বিজ্ঞান সভামকৃৎ সন্থঃ।
জীবনো বুংবনো বর্নো ব্রেণা ক্রেন্ট্রকৃৎ।
কফপ্রান্থে নিনান মতু পুরাবং পুরাব বব-গোধুম ক্ষেত্র জালল দালাজুগিতি বাগ্ডটেন বসঙ্গে গৃহীতজ্বাধ।
মধুলা দাজলা বিজ্ঞা পিত্যী মধুলা লঘুঃ।
ব্যক্ষা বুংহনী পথ্যা ভয়স্থাযুধ্য লাভুঃ।

গোধুম।

বোপুথের অপর নাম কুমন। বোধুম তিন প্রকার যথা মহাবোধুম, মধুলা ও দীর্ঘিগাঙ্ম। মহাবোধেম পশ্চিম প্রদেশ হইতে আনীত হস, মবুলা গোধুম দুহো অপেকা। কুছ, মবা প্রদেশে জবো, দীর্ঘ গোধুম শুক বিহীন, ইহা কোথাও কোথাও নকামুখ বলিয়া উক্ত হয়।

গুল। গোধ্ম মধুর, শীতল, বাদু পিতনাশক,
গুরু, ককবছ ক, শুক্র জনক, বলকারক,
লক্ষ্য, ন্দ্রখানাদি সংযোগ কারক, সার্ব্য জনক, ত্রগরোগে হিছু করেক, ব্যাচক ও ইছার্যা কারক। কফ বছ্ষনি গুল ন্তন গোধ্মই ভানিবে, পুরাতন গোধ্ম কফবছিক নতে, গে হেছু বাগ্ডট বসন্ত কালে পুরাতন যব, পুরাতন গোধ্ম ও শুলা জাল্প মাংস জ্জাবের বিধি লিখিবাছেন।

মধূলী গোধুম শাত্তল, লিগ্র, পিতত নাশক, মধুব, লগু, শুক্র জনক, পু'টকর ও অপথা; নন্দীমুখ গোধুমের গুড়ও ইহার নাাহ জ: নবে।

निषीशामाम्।

नमीकाः निविकाः निवीक्टाः मृग्रीक रेवहनाः । रेवहना मधुदा क्रकाः क्वात्राः कट्टेनाविकाः ॥

বাঙলাঃ কফ পিড্যা বজাযু মমলা হিমাং। श्रुट्ड यून्त यमुहाकामत्या ज्ञोष्ट्राम काहिनः ह

मुन्ता मन्दरमा द्राश्चान कादिञ्च मन्द्र देवनजा পেক্ষয় মতু সাধাৰা এডছো রাপ কিভিদায়ান কারিত্বাহ।

শমীজা, শিষজ, শিগীভব, স্বাও देवप्रल खरे छालि रेरात शर्याप्त ।

था। सपूत्र, क्रेक्स, क्यात्र, शाटक কটু, বায়ুবৰ্ষক, কফপিত নাশক, মলমূত্ৰ - রোধক, শীকল ও আধানকারী। ইহা-দিবের মধ্যে মুদ্র ও মস্বের আখান ক।রিতা শক্তি অতি দামানা।

मून्तः।

यूरमता क्रदका अधुधार्थ। कफलिख हर,। हिय:। यापुरम्पानिस्मा (भटन)। स्वत्रस्था वनऋस्था । यूरमहा वस्तिमः मा)। (यः इतिहासी उक्त क्षता । বেতো রজশ্চ তেয়ান্ত পুরাঃ পুরো লঘুং সাভঃ ঃ मुख्यादान यूनः व्यादका व ब्राउन् कर्दावा स्ट्रांच हब्रकांविकि इंपुश्क वम कर छन्।धिकः ।

मुश ।

युन्ग क्या, नपू. धाःशी, क्याणिख নাপক, শীতল, স্বাত্, অল্লবার্ জনক, खाउ এই প্রকার। মুদ্র বহুবিধ ঘ্রা শাষ মুদ্গ, হরিত মুদ্র, গীভমুদর, খেত मून्त्र १६ त्लाहिक युम्त्र, हेटारमञ्ज्ञ शत्र शत টী ংইতে পূর্বে পূর্বে টী শবু। সুঞ্ত হয়িত बुएमटकरे ट्यांके विनिवादस्य, छत्रकामि क्षि भग्ध এই ज्ञाश वरमन।

म्।यः।

यात्यां श्रक्तः बाजुभाकः विद्यां क्रक्ताश्रीमभाभवः । অ৲দন শুর্পবে। বঞ্জাঃ স্বক্রালো বু৲ছবঃ পরঃ 🛊 श्चित्रपुर्वे प्रशास्त्र । (यहः विकास समित्र । सक्तेजामिङ चाम **न**िक्त मूजानि मा**न्यः ।** কফাপির করা যায়া: কঞ্চপিরকর৲ দ্বি। ककश्चित्रकत्र। मध्या। तुक्षांक् १ कथ्यिक्षकु १ 🛊

बाध कनाहै।

भाष अक्ष, कीर्न इटेटल शाहुबम दत्र, ত্রিয়া, রোচক, বারুনাশক, জংসন, তৃথি ক্লক, বলকারক, শুক্রবর্জক, অভিশ্র পুষ্টিকর, মৃত্র, মূশ 😉 छना निःসারক, ८भम, शिख '७ कक्क्क्क्क, देश जार्यः, कार्किक, वाक्यांति, चाम ও পরিণাম मूल नान करता यात्र, मधि, यदमा ७ दृष्ठाक (বেজ্ঞা) কফপিতে বৰ্দ্ধক।

व्याक भाषः।

(ব্রজা যদ্য চ বৈরাজয়া লোবিয়া विकाम्स्या ८७ म्हि ।)

द्रोक्त माटका बद्धावाय मध्येल मध्येल आहुछ। ब्रोक बाटका क्षक्रा खामू चानव सर्गनः नदा ह क्राप्का बाक करता क्रमा खनापुनि रजधारः। **(यट्डा इस्टक्टर) कृष्ण क्रिरिया म अने**विका । (य। यहो९८७ मु खर्गाठ म ब्दरास्का सर्गाधकः।

व्राक्षम् व, म्हाभाष, ह्रण्य । ६ ठ्रण এই কলি ইহার লর্যায়।

था। ब्राक्याम थाक्र, माठू, कवाब, তৃপ্রিকর, সর, ক্লে, বার্বদ্ধ ক, রোচক, ন্তনে ভূমোৎপাদক ও বলকারক। বেভ, লোহিত ও কৃষ্ণ এই ভিন বর্ণের রাজমায ष्ठे इत्र, हेर!ब मत्भा तृर्भाषहे व्यक्षिक 139 7 F

मिल्ली वह ।

(স ডুরান্ধ লিবী বীন্ধ\ ভেটবাসু ইতি লোকে।)
নিন্দাবো রাজলিবিং ব্যাদ্ বল্লকং খেন্ত লিখিকং।
নিন্দাবো দধুরো ক্লো বিপাদেস্চল্লো গুরুঃ সরং ই
ক্ষায়ঃ শুনা পিতান্ত বৃদ্ধবাত বিবছকুং।
বিদাহ, খ্যো বিবল্লেয় লোগক্যক্ত কালালনঃ।

প্য্যায়। নিষ্পাব, রাজশিষী, বল্লক ও খ্যেত শিদ্ধিক এই গুলি ইহার নাম।

তা। ইহা মধুর, কুক্ষ, পাকে অস, তারু, সর, কধার, তারা, পিন্ত, রক্ত, মূত্র ও বাব হাস কারক, বিদাহী, উষ্ণ, বিষয়, শ্লেগ্যনাশক, তাক্রেক্ষর কারক ও শোধ নিবারক।

मक्षेकः।

মনুটো নন্মুদ্রং সাায়াকুটক মুকুটকো।
মনুটো বাডলো এটো কঞ্পিত হরো স্থুঃ ।
বাছিন্দিন্ মধুরং পাকে কুনিক জ্ঞানাশনঃ।
তথা ক্যায়ত্ব\ ইঞ্জিত হয়ত্ব\ পথাত্বভাপাস্য
ধানাঃ ।

वनमून । रिम्माटम है।

মক্ঠ, বন্যুদ্ধ, মকুটক ও মৃকুটক এই ওপি ইহার নাম।

তা। বার্জনক, প্রাহী, কফপিও নাশক, লঘু, অঘিমান্দাকর, পাকে মধ্ব, ক্রিমিনাশক, জরগ্ন, কঘান, রক্তপিত-নাশক ও পথা।

सङ्बः ।

सम्भारका पन्दाः मान् यक्षमा । पन्दिका । धन्दाः पद्दाः भारक मान्द्रां भीखाः अधः । क्षमितासाम्बद्धाः वाखाः सद्दानियः ।

रिन्दी मण्डी।

মন্দল্যক, মন্থর, মন্ধ্রদায়, ও মন্থরিকা এইগুলি ইহার পর্যায়ে !

ওণ। ইহা পাকে মধুর, সংগ্রাহী, শাতল, লঘু, কফপিত্ত নিবারক, রক্ত দে।ছ নাশক, রুঞ, বারুজনক ও জর্ম।

व्यापृकी।

আঢ়को छुरहो छाणि मा (श्राक्ता नवणूष्णका । आঢ़को छुरहा क्रका यपूत्रा नीवमा मधूर ॥ आहियो राउक्तममो सर्गा (शवककाश्राक्षर ।

रिको बरबी।

আ: ঢ়কী, তুবরী ও খণপুশ্পিকা এই ওলি ইহার ন্ম।

গুণ। কথার, ফল্ল, মধুর, শীতল, লঘু, গ্রাহী, বায়ুজনক, বর্ণকারক, পিন্ত-নাশক, কফ্মুপ্ত রক্তদোধ নিবারক।

চৰকো হরীমহা স্যাৎ সকল প্রিয় ইভাপি।
চৰকা শভিলো কৃষ্ণা পিতরক্ত কফাপহা ।
লয়ুং কহায়ো বিউদ্ধী বাতলো অর নাশনং।
ল চালারের স্পতৃতী ভৈলতৃতীত ভদ্ধবং ।
আন্তর্ভীত বলকরো রোচনশ্চ প্রকাশিক।
লক্ষ্পতীত্তি কৃষ্ণাত বাতকুই প্রকোপবা ।
লক্ষ্পতীত্তি কৃষ্ণাত বাতকুই প্রকোপবা ।
আন্তর্ভীতি কোমলো কুচাং পিরপ্তক হরো হিছা ।
ক্ষায়ো বাতলো প্রাহী ক্ষপির্ভ হরো লয়ুং।

59**4:** 1

চণক, হরিমস্থ ও দকল প্রির এই গুলি ছোলার নাম।

ত্তা। চণক শীতল, কৃক্ষ, রক্তপিত নাশক, কৃষ্ণ, লঘু, ক্যার, বিষ্ট্রন্থী, বারু জনক ও জরয়। ছোলা অয়ারে ড.জিলে

অথবা তৈলের সহিত ডাজিলে উক্তরণ

ওণ হয়। আজু করিয়া ভাজিলে বল
কারক ও বোচক হয়, শুক অবছায়
ভাজিলে ফুল্ল ও বাত কুঠ প্রকোপক হয়,

সিদ্ধ ছোলা কম্পান্ত নাশক, ইহার স্প্রপ্রেশিক রাজক, ভিজা ছোলা অতি কোমল,

রোচক, পিন্ত নাশক, শুক্র ক্লার কারক,
শীতল, ক্ষার, বারু বছ্কি, গ্রাহী, ক্লালক ও লঘুণ

কলায়: ।

कनारया वर्जुनः (श्रीकः मिन्नकः घरत्वकः। कनारया मधुतः सामृः श्रीटकः क्रककः गीउनः।

মটর।

কলায়, বর্জুল, ভিল ও হরেণুক এই গুলি ইহার পর্যায়।

প্রণ। ইহামধুর, পাকে খাতু, কুক ও শীতক।

ख्रिपूरेः।

ত্রিপুটঃ থতিকোছপৈ স্যাৎ কলাতে ভদ্ধণাশব। ত্রিপুটে। মধুর ডিক ব্রহরো কৃক্ণো ভূপন্ । ক্ষপেত হলো ক্রচ্যো প্র'ছকঃ লীতল তথা। ভিড খপ্তত্ব পল্পুকারী বাডাতি কোপনঃ।

ভেওড়া, খেদারি।

ত্তিপুট ও বভিক এই ছুইটী, বেস;বির সংক্ষত নাম।

তা। ইহা মধুর, ভিজ, কবার, অভিশয় কৃষ্ণণ, কম পিত নাশক, রোচক, গ্ৰাহী ও শীতস, কিন্ত ইহা অতিপন বার্ প্রকৃপিত করে। অধিক কাল ভক্ষণে ধন্ন ও পঞ্লু হইবার সম্ভাবনা।

কুল্খ।

কুলখিকা কুলখন্দ কটাতে তদ্ধণ অধা।
কুলখা কটুকা পাকে কথায়া পিবরজকুৎ ।
লখুকিবাথী বীখোজা খাসকাস ককানিলান্।
হঙি বিকাশারী শুক্র বাহানাহান্ সপীনসাম্।
ধেষ সংগ্রহকা বেখো জার ক্রিছিবরং প্রঃ।

• कूनच कनाहै।

কুলখিকা, কুলখ এই দুইটি ইহার প্র্যার।

ত্ব । ক্ষার, পাকে কটু, রস্তাপিত্ত জনক, লঘু, বিদাহী, উফ্চবীর্যা ও স্থেদ প্রতিরোধক। ইবা খাদ, কাদ, ক্ষা, বারু, হিক্কা, আশ্বরী, শুক্তে, দাহ, আনাহ, গীনদ, মেদ, ক্ষম ও ক্রিমিন্ট করে।

क्ष्यक्षवीकम्।

কসুত্ৰ বাঞ্চং বর্জী ইসৰ প্রোক্ষা বরজিকা। বর্জী বনুরা স্থিতা রক্তনিত ককাপদা ৫ কৰায়া শীতদা গুজী স্যান্ত্ৰ্যানিকাপদা ৫

कुक्मवीखा

কুমুন্তবীল, বরটাও বরট্টিকা এই তলি ইলার প্রাার।

থাণ। মণুর, স্বিধ্ব, রক্ষণিত শান্তিকর, কফর, কবার, শীক্তল, শুক্ল, বলনাশ্রু ও বাতর।

गदत्रुका ।

গবেধুকা ডু বিদ্বন্ধি গবেধুঃ কলিও৷ ক্রিয়াস্। গবেধুঃ কটুকা যাদ্বী কার্ল্যকৃৎ কক্ষালিনী॥

হিন্দাগরতে জ্যা

গণেপুকা 😉 গবেপু এই তুটটী শক্ষ ইহার পর্য্যায় ।

গুণ। ইহা কটু, স্বাহু, কুণভা কারক ও কফয়

जिलाः ।

जिनः वृष्यः गिर्छ। वृक्षः गर्गर्ग) विष्ण जिनः स्ट्रा जिला वर्ग कर्षे सिर्झा स्वर्दा ग्रहः । विश्वारक कर्षे कर सामूः सिर्द्धायः कर्षात् श्वन् । वनाः स्वर्णा। विश्वन्तां स्वार्धः स्वर्धाः वर्षाः । प्रद्धाः व्यम् स्वर्धः । वृष्यः स्थाने ज्यस्य स्वर्धाः स्वर्धः । स्वर्धः स्थाने ज्यस्य स्वर्धाः स्वर्धः व्यक्षः ।

ভিশ।

কৃষণ, ভল ও লোহিত এই তিন বর্ণের তিল আছে, কুম ভিলকে স্বর্ণ্য কহে।

গুণ। তিল কটু, তিক্ত, মর্ব, করাব, গুরু, পাকে কটু, মর্ব, স্থিরোফ, কফ পিত্ত নাশক, বলকাবক, কেশের পক্ষে হিজ কারক, পথেশিতিল, তুকের সংস্থা-রক্ষক, স্তনে সুয়োৎপাদক, ত্রণের পক্ষে উপকারক, দত্তের স্বাস্থারক্ষক, তাল মৃত্র-কারক, গ্রাহা, বায়ু নাশক, অগ্নিকারক, মতিপ্রদা। তিলের মধ্যে কৃষ্ণ তিল শ্রেষ্ঠ, তাল্ল কিল মধ্যম উহা শুক্ত জনক। জন্যানা তিল হান্ত্রণ।

অভগী।

ষ্মতদী দীল পুষ্পী চ পাৰ্মতী দ্যাপুষা কুষা। অতদী মধুয়া ডিক্তা হিন্দা পাকে কটুও হৈ' । উচ্চা দুক্ ব্যক্তবাডন্ত্ৰী কফপিব বিনাশিনা।

भिना, जिमी।

প্র্যার। অভ্নী, নীলপুস্পী, পর্ক্তী, উমাও কুমা এই তলি তিসীর সংস্কৃত নাম।

গণ। ইহা মধ্র, তিন্ত, রিগ্ন, পাকে কটু, গুরু, উষ্ণ, দৃষ্টিশক্তির থর্মত। কারক, শুক্র ও বাত নাশক এবং কদ পিন্তর।

मर्भेशः ।

সর্বপ: কটুকথেই ভড়ভাত ক্ষ্মক: !
গো; ভ স্বপু: প্রাজ্ঞা সিদ্ধার্থ ইতি ক্রান্তে ।
সর্বপদ্ধ রুসে পাকে কটু: নিদ্ধাং সভিক্কা ।
ভীক্ষোজ্ঞা ক্ষরাভয়োর ক্রপিভাগ্নি বর্দ্ধা ।
ক্লভ্জো ইরেছ্রণ্ড কড়্ছ কুঠ কোঠ ক্রিমিগ্রহান্ ।
বর্ধা রুক্তবর্ধা গৌরং কিন্তু গৌরে) বরের মতঃ ।

कृहे क्षकात्र स्विक नर्षण।

দর্মণ, কটুকলেহ, তুরুভ ও কম্বন্ধ এই গুলি ইহার পর্যায়। সৌর (ভুল্র) দর্মণকে দিকার্থ কহে।

তা। সর্বণ আন্বাদে ও পাকে
কট্, মিন্ধ, ভিন্ত, ভীক্ষ, উষ্ণ, বাভন্মেম
নাশক, রক্তপিত্ত বৰ্দ্ধক, আধিকারক ও
কক্ষ। ইহা এণ, কণ্ড, কুন্ঠ, কোঠছ
ক্রিমি ও গ্রহাদি শান্তি করে। রক্ত সর্বণ ও গৌর সর্বণ উভরের তার এক
প্রকার, কিন্তু গৌর সর্বপ্র উৎকৃষ্ট।

রাজিকা।

রালী তু রাজিকা ডীক্ষণখা কুথানিকাস্থী।
ক্ষা কুডাভি জনকং ক্রিমিল্ছ কুজ সৰপঃ ঃ
রাজিকা কক পিডল্লী ডাঁক্ষোক্ষা রক্তপিতকুছ।
কিভিজকাশ্বিদা কত্ত্বত কোঠ ক্রিমীন্ হরেছ ॥
অভিত্রীক্ষা বিশেষের ওদ্বহ কুজাপি রাজিকা।

वृष्टे প্রকার কৃষ্ণ महिषा।

পর্যায়। রাজী, রাজিকা, তীক্ষণদ্ধা, কৃঞ্জনিকা, আসুরী, ক্ষণ, ক্ষুভাভি জনক, ক্রিমিজং ও কৃষ্ণ সর্যপ।

গুণ। বাই সম্প কফপিত নাশক, জীকু, উষ্ণ, রক্তপিত জনক, কিঞিৎ রক্ষ ও অধিবন্ধক। ইহা কণু, কৃঠ, কোঠ (গাত্তে চক্রাকার চিহ্ন) ও ফ্রিম্মনষ্ট করে। কৃষণ (কাজনা) সম্পেরে গুণ ও এইরণ, অধিকত্ত উহা অভ্যন্ত তীক্ষ।

न्डन পুরাতন ধান্যানাং গুণাঃ।

ধানাং সাধং নবং মাধু ওক প্লেমকরং আ,তথা। তত্ত্ব বর্ষোবিভাগ পর্বাগ বতো লযুওরং বি তং । বর্ষোবিভাগ সাধ্যমানাগ পৌরবং পরিমুক্তি। নতু ভালতি বীধাগ মাগনান্ মুক্তাতঃ পরম্ । এতেরু যব মোর্ম ভিলমাধা নবা ভিডাং। পুরারা বিরুষা ক্লোন ভবা এব কারিবং ।

পূর'ণ। বর্গন্ধানুপরিক্ষিতা: । বরাদ্রো নবাং ক্ষান্ প্রতি হিত'ং। পর)'লিনাক্ষ পুর'ণা হিডাং।

ন্তন ধ না, সাতু 'গুরু ও কফজনক।
একবংশরের পুরাতন ধানা কঘু ও পথা
একবংশরের পুরাতন ধানোর গুরুতা নপ্ত
হর, কিন্তু বীহ্য নপ্ত হর না, ইহার পরে
যত অধিক দিন যার ততই ধানোর বীহ্য
ভাগ হইরা থাকে।

ধান্য সকলের মধ্যে হব, গোধ্য, ভিল ও মাব নৃতন অবস্থার উপকারী, তুই বংসারের অধিত কালের পুরাতন হইলে ক্লফ ও ওব হীণ হয়। কিন্তু প্রান্তনীর প্রকেইহারাও পুরাতন বাবস্থের।

नीवातः ।

প্রসাধিকা তু নীবার স্থণায় মিডি চ ব্যুত্র।
নীবার: পীওলো গ্রাহী পিরন্ত: কফবাডকুৎ ॥
হিন্দী জীনী ।

প্রসংধিকা, নীবার ও স্থান্ন এই ওলি ইহার পর্যায়।

- গুণ । শীতল, গ্রাহী, পিত্তর ও বাত শ্লেম বর্দ্ধ ।

भवमानः ।

প্রনালো হিষঃ স্বাদু লোঁহিত স্পেন্ন পিওলিং। অনুষ্য স্তবহো রক্ষা ক্লেমকুং কবিজো লগুং॥

ভিন্দী পুমেরা।

ইয়া শীক্ষ স্বান্ধ্য, লোহিত বর্ণ, পিত্ত শ্রেম নাশক, ক্যার, ফ্লা, বলনাশক, ক্লোকারী ও সত্ব।

레벨: 1

যেবাৎস্য ক্ষণুলা কানি বান্যানি সতুষানি চ।
ভূকানি কা টিভান্যাক লাজানিতি যনীবিশঃ এ
লজাংস্য মধুরাং লীভা লজবো দীপনাশ্চ তে।
ৰংশায়ুত্র মলা ক্লো বল্যা পিরকক্তিদঃ ॥
ছণ্যতীসার দাহাক্ষ দেহ মেদু ক্ষ্মা প্রাং।

षरे ।

যে দকল ধানোর ততুল হয়, সেই সকল ধান্য সতুৰ ভক্তন করিলে ক্ষুটিত হইর লাজ প্রস্তুত হর। লাজ মধুর, শীতল, লঘু, দীপন, অন্ন মলম্রকারক, কৃক্ষ, বলকর, পিড নাশক ও কক্ষ। লাজ ভক্ষণে বমি, অভিসার, দাহ, রক্ত দোব, মেহ, মেদোরোগ ও তৃ্ফা নিবা-রণ করে।

চিপিটকঃ।

লানয়ং সভুযা আপ্র ভৃঞা অক্ষুটিভাণ্ড ডং । কুটিভা শিচপিটাং প্রোকা তে অ্ভাং পুধুনা ঋণি । পুরুকা ধরবো বাত নালনাং প্লেম্বলা ঋণি । সঞ্চারা বৃংহলা বুয়া বন্ধাঃ সংগ্রাহিণ্ড তে ।

किए।

ত্য সহিত শালি ধান্য জলে ভিজা-ইয়া এরপে ভর্জন করিবে যেন ক্টিড না হয়, অনম্বর উহা কুট্টিত করিলেই চিপিট প্রস্তুত হয়, চিপিটের অপর নাম পৃথুক।

চিপিট ওক্ন, বার নাশক ও কফজনক, ত্থা সংস্কুত চিপিট বৃংহণ, বুবা, বলকর ও মল রোধক।

অন্তাবিংশতিতমোহধ্যায়:।

बारमन्त्रीः ।

यारजरकु निर्मिष्ठर क्रम्य मानिष्ठर निर्मार निर्मा । यारजर गोष्ट्रप्तर गर्बर दूरस्वर क्रम्युष्टिक्ट ॥ धीनमर सक्र समुद्रम प्रमुख्य द्वन नोक्टपाः।

পর্যার। মাংস, পিশিক, ক্রব্য, আমিব, পুলন ও পল।

-৩৭। মাংস মাত্রেই বান্ধ নাশক,

বৃংহণ, বলপ্রদ, পৃষ্টিকর, তৃথিকারক, শুরু, হাদ্য এবং আখাদে ও পাকে মধুর।

व्यव कम् एक्षाः ।

মাৎস বৰ্গো ছিবা জ্ঞেছো আজলানুপ ভেৰতঃ।

মাংশ দক্ষ ছুই প্রকার, জাঙ্গল ও আনুপ।

काश्रम : ।

যাৎস বর্গোহত্ত অভানী বিলক্ষাত গ্রহান্যাঃ।
তথাপথ মুখা ভেয়া বিভিন্ন প্রত্বদাহণি চ র
প্রসহা অথ চ প্রায়া অটো আজল জাতরঃ।
আজলা ববুরা রুক্ষা অবরা লখবন্ধা র
বল্যান্তে বৃৎছবা বুখা দীপনা বোব হারিবঃ।
মুক্তাৎ বিন্দিনত্বং চ পদ্পর্ভানিতে তথার
বাবিষ্য মুক্তি জেনি প্রমেষ্থ মুখন্নান্যান্ত্র
রাপর্থ সক্ষত দাব্যক্ত।নিলাম্যান্ত্র

ক্তাকুল।

আদল ভাতি আট প্রকার যথা জালল, বিলম্ব, গুংগশর, পর্ণমৃথ, বিভিন্ন, প্রতুদ, প্রদহ ও গ্রাম্য।

গুণ। জাক্ষণ মাংস মধ্র, রক্ষ, ক্ষার, লঘু, বলকারক, পৃষ্টিকারক, গুক্ত জনক, আরু বন্ধ ক ও দোষ নাপক। জাক্ষণ বাংস জক্ষণ করিলে মৃকত্ব, মিন্মিন বচন, গদ্গদ্ধ বাকা, অন্ধিতাব্য বাত ব্যাধি, ববিরতা, অক্তি, বমি প্রমেহ, মুখরোগ, প্লাপদ, গলগত ও বাত ব্যাধি নিবারণ করে।

ष्यान्याः ।

क्रमहन्नाः सर्वाणाणि कावकाः भाष्मस्याः । वर्षमाः वर्षस्याः मक्षाम्भ सास्त्रः । वामुभा मनुताः विश्वा सत्तर्वा यक्षिमावनाः । क्षित्रमा शिष्यम् कार्ति वाष्त्र शूक्तिवरा कृतेन् । स्वोक्तिकार्तमम् स्व वि स्वात्रश्वात्रमः मृख्यः।

ष्यानुष मारम ।

কুলেচর, প্লব, কোষন্থ, পাদী ও মংস্য এই পাঁচ প্রকার অসুপ জাতি।

আমূপ মাংস মধুর, দ্বিত্ব, গুরু, জরি-মান্যাকর কফজনক, পিচ্চিল, অভিশর মাংস বর্ত্বক, জতাত্ত পুঠিকারক, অভি-মান্দী ও সুপধ্য।

জা**ঙ্গলা**ঃ।

হরিবৈন কুরক্ষী পৃষ্টনামু সংগ্রা: ।
রাজাবোহণি চ যুত্তা চেড্যাকা জন্যন
সংক্ষকার ।
হৈরিণ ভাত্রহর্ণ: স্যাব্রেণ: কুক্স: প্রক্রীভিডঃ ।
কুরল এব ভাত্রং স্যাব্রেণ ভূকা।কুভিন্নান্ ।
মব্যো নীলাবকো লোকে সংগ্রন্থতাক নাম

ক্ষমত বাৰ ভাষা গায়ৰে বুলাকুলে বাৰ জিলা ।
প্ৰভক্ষাৰিক্ষ স্থানিবিধ কিনিক্ষাক্তি ।
বাজীবন্ধ মুগা জেয়ো ব্যক্তি পরিভাবত ।
যো মুগা পুলহীনা স্যাৎ স মুখীতি নিগদাতে ।
ক্ষালাঃ প্রায়শ্: সংক্ষা পিৰম্পেত হরাংমা্ডাঃ ॥
কিনিক্ষ্ বাভকরা ভাগি ক্ষাব্য বলবর্জনাঃ ।

অপাল।

বরিণ, এণ, ক্রন্ধ, ঝবা, পৃষভ, নান্ধু, নম্বর, রাজীব ও মুত্রী ইত্যাদিকে জন্মান কহে।

হরিণ ভাদ্রবর্ণ, এবঁ কৃষ্ণবর্ণ, ক্রঞ্চ ক্রবং ভাদ্রবর্ণ ও বৃহৎ ইহার আকৃতি এবের ন্যার, প্রধা ইহার অপর নাম নীলাত, ইহা বৌট বলিছা প্রদিদ্ধ, পৃষড হরিণ অপেকা কিছু ক্লুল, ইহার অপর নাম চক্রবিশ্ব, ন্যঙ্গুবহু শৃক্ষ বিলিষ্ট, সম্ব দেবিতে বনগের (গবর শব্দে গো
সম্ব পশু বিশেষ) নাার, রাজীবারা
মুবের গাত্তে ডোরা ডোরা চিক্ল আছে
এবং মুণ্ডী শৃষ্থীন। আছাল মাংল
প্রার পিত গ্লেম মাশক, কিঞ্ছিৎ বার্বস্কুক,
লম্ব ও বলকারক।

विटलामहाः ।

গোধা শশ ভূজকাৰু শলক।ছা। বিলেশরাং । বিলেশয়া বাজহাা সধুরা হল পাকয়োঃ । বুংখনা বন্ধবিশুকুমা বীৰ্থোঞ্চাক একটিডাঞা

বিলেশস্।

গোধা, শশ, নর্গ, মৃষিক ও শরকী প্রভৃতিকে বিলেশর কহে অর্থাৎ যাহারা গর্জেবাস করে ভাষাবিদকে বিলেশর বলে।

ইহাদের মাংস বায়ুমাশক, আখাদে ও পাকে মধুর পৃষ্টিকারক, মলম্ত্র রোধক ও উষ্ণেইখি।

भागामा ।

নিংখ্যাপ্ত রুক্ষা থক্ক ভরকু দ্বীশেন কথা।
বস্ত্রস্বাদ্ধ নাক্ষ্যান্ত ইড়াদ্যান মুক্ত হালায়ান দ দুল পুলেন্ত রুক্তনেনে বস্তুক্ষেদ্ধ সন্যকুলন। গুলাপ্যা বাতবয়া গুলাক্ষ্য সন্ত্রাক্ষ ভে ন বিখ্যা বল্যা হিডা নিকাং নেত্র গুলাক্ষারিশান।

खरान्त्र ।

নিংহ, ব্যান্ত, বৃক, প্রক্ষ, জরস্থা, দ্বীপী, বন্দ্র, জন্ম ক ও মাক্ষারি ইত্যাদিকে গুহা-পর করে। (ভরস্থা আর্থাৎ মূপভোজী, দ্বীপী চিভাবাদ, বাহাদের পুদ্ধ হাল, A STATE OF THE STA

ठक्क् प्रस्कर्ग छ। हा प्रिनंदक वस कटह, दश्यम मक्ना।

ইহাদের মাংস বারু নাশক, গুরু, উষ্ণ, মধুর, স্নিগ্ধ, বলকর এবং নেত্ররোগী ও গুহা রোগীর পক্ষে উপকারক।

शर्वमृजाः ।

বনৌকো বৃক্ষ মার্ক্তার বৃক্ষমকটি কাদরঃ। এতে পর্বমুগাঃ প্রোক্তাং সূক্ষ্যভাগৈ মহর্বিভিঃ । রাজাপের্ব মুগা বৃষ্যা শুকুষ্যা: পোবিলে হিডাঃ। স্বাস্থিতি কাস প্রমাত সৃতীমুক্ত পুরীয়কাঃ॥

পূৰ্মগ !

বাশর, বশবিদ্যাল ও বৃক্ষমক্টিক। প্রভৃতিকে পূর্ণ মূগ কছে।

ইহাদের মাংস শুক্রজনক, চক্সুর উপ-কারক ও শোষ রোগীর পণ্য। এই মাংস খাস, আর্দঃ ও কাস নিবারণ এবং মলমূত্র নিঃদারণ করে।

विकिताः ।

বউজালাব বস্তীর কপিঞ্জক ভিজিরাং।
কুলিল কুকু ট্রাম্ম বিজিরাং সম্পাদ্ধতাং ।
বিকীষ্য ভক্ষবন্ধেতে বন্ধান্তনাজি বিজিরাং।
কপিঞ্জল ইতি প্রাক্তিয় কবিজো গৌর ডিজিরং।
বিজিরা মধুরাং পীডাং ক্যায়াং কটুপাকিনং।
বন্ধা বৃত্যান্তিবোদস্থাং পর্যান্তে ল্যবং ক্রাডাঃ।

विक्रित ।

বর্তকা, লাব, বত্তীর, কণিঞ্চলক, তিরিএ, কলিক্স ও কুকুটাদি পদ্মী সকল বিকার্ণ করিয়া ভক্ষণ করে বলিরা ইছা দিগকে বিদ্বির করে। কপিঞ্চলের অন্য নাম গৌর তিঞ্জির, কুলিক্স গবরৈরা ইহাদের মাংস মধুর শীতল, ক্যার, পাকে কটু, বলকারক, রুষ্য, ত্রিদোব্ছ, পথ্য ও লবু।

প্রভূম।

হারীতো ধবলং পাঙ্ শিক্ত পক্ষো সুহজ্জুকং। পারবেতং থক্সটিং পিকাদ্যাং প্রত্নাং স্কৃতাং । প্রতুদ্য ক্ষরহোতে তুঁতেন প্রতুদা হতে। প্রতুদা মধুরাং শিকক্ষমান্তবর। হিনাং । লহবো বদ্ধবক্তকা কিঞ্চিন্ত করাং স্কৃতাং ।

প্রভূদ।

হারিত, ধ্বল, পাতৃ, চিত্রণক্ষ, রহৎ শুক, পারাবত, ধ্রুরীট ও কোকিল প্রভৃতিকে প্রভুদ কহে। ইহারা অত্রে তৃত্রারা ধাদা বস্তু প্রভৃদিত অর্থাৎ ভয় করিয়া পরে ভক্ষণ করে।

ইহাদের মাংস মধুর, কফপিত নালক, ফুলীতল, লঘু, মল রোধক ও কিঞিৎ বারু জনক।

প্রসহ!ः।

কাকো গৃধু উপ্কণ্ড চিল্লন্ড পাণযাতকঃ।
চাসে: ভাসন্ড কুরব ইউ)াদ্যা: প্রসংগ কুডাঃ।
প্রসংগ কাডিডা এচে প্রসংগাজিদ্য ভক্ষণাং।
প্রসংগ ধলু বীর্য্যোক্ত ক্র্যাৎসং ভক্ষণতি যে।
ভে পোষ ভব্মকে।দ্রাদ্য ক্রমক্ষীবা তরভি হি।

প্রসহ।

কাক, গৃগ, পেচক, চিল, ধনদাত্তক (বাজ), চাষ, ভাগ, (গৃব্বিশেষ) ও কুরব প্রভৃতিকে প্রসহ বলে। প্রসহ শব্দের অর্থ বাহার। বলপুর্বক ছিনিরা শইষা ভক্ষৰ করে। (প্রসহা আচ্চিদ্যা ভক্ষরভিবে।)

श्रामाः ।

ছাগ্ৰেৰ বৃষাশ্চাখা গ্ৰাম্যাঃ প্ৰোক্তা মহৰ্ছিছে। গ্ৰাম্যা বাতহর্যাং সৰ্বে দীপনা কক্ষণিজ্ঞাং ॥ মধুরা রূপ পাকাছ্যাৎ বৃৎছণা বলবর্জমায়।

গ্রাম্য।

ছাগ, মেষ, বৃষ ও অধাদি গ্রামা জন্ধ। গ্রামা মাংস বাত নাশক, অধি দীপ্তিকারক, কফপিওজনক রবে ও পাকে মধুর, পৃষ্টিকর ও বশবর্দ্ধক।

क्रलप्रयाः।

সুলাপ গড় বারাছ চমরী বারপাছয়ঃ। এতে কুসচরাং প্রোকাং যতং কুলে চরভাপান্। কুলেচরা মরুৎ পিত হরা সুহা বজাবহাঃ। ধুরাং শীতলাং নিজা মুখলাঃ জোমবর্জনাং ।

क्रणहब ।

মহিদ, গণার, বরাদ, চমরী ও হস্তী প্রভৃতি ভিত্ত দকল কুলে বিচরণ করে বুলিরা ইহাদিগকে কুলেচর কহে।

ইহাদের মাংস বার পিজনাশক, ত্বমা, বলকারক মধ্র, শীতপ, স্বিশ্ব, মূত্রকারক ও কফবন্ধ কি।

위413 1

হ' স সারস কারত বককে ক পরারিকার।
নন্দীমুখী সকাহথ বলাকাখ্যার প্রবাহ আছোর ॥
প্রবাহ সলিলে বলাদেতে তলাধ প্রবাহ আছার।
প্রলা কঠোর বুখা চ খস্যাল্ডক, পরিন্দিতা ॥
ধ্রটিকা জগু সদৃশী প্রোকা মন্দীমুখীভি সাঃ।
প্রবাহ পিরবরা রিখ্যা মরুরা ব্যবনা হিষার য়
বাভয়েশ্য প্রহালালি বলভাককরার সরাহ;

M1 1

হংস, সারস, কারও, বক, জেঞ্জ (কোচবক), শ্রারিকা, নন্দীমুণী, কল-হংস ও বলাকা প্রভৃতি পন্দীকে প্লব কহে। প্লবন অর্থাং সম্ভরণ করে বলিয়া ইহাদের লাম প্লব। বাহার চঞ্চুর উপর স্থূল, কঠোর, গোলাকার ও অস্কু ফলের ন্যার ফুটিকা থাকে, তাহার নাম নশীর্থী।

ইহালের নাংস পিত্তনাশক; বিশ্ব, বঁধুর, ত্রু, শীতল, বাতলের বন্ধ ও সর।

(क।वश्वाः।

শক্ষা: শক্ষানৰ শচাপি শুক্তি শধুক কৰ্টটাঃ। জীবা এন-বিধা শ্চামো কোৰ্ফাঃ পরিকীর্বিটাঃ। কোৰ্মা মধুরাঃ স্নিকা বান্তপিত হয়। হিনাঃ। বুংছবা বন্ধবৰ্টকা ব্ৰাণ্ড ব্ৰস্ক্ষাঃ॥

(काषच् ।

শব্দ, শব্দেব (ফুড শব্দ), ওঞি (বিমুক), শব্দ (শান্ক) ও কর্মট প্রভৃতি জীবকে কোষস্থ করে।

ইহাদিগের মাংস মধুর, স্থিয়, বারু পিতনাশক, শীতল, পুট্টকারক, বত্ত প্রিমাণে মল নিংলারক, শুক্রেজনক ও বলবর্জক।

शामिनः।

কৃষীর কুর্মনক্রাশ্চ গোধা যকর শস্তবঃ। ঘটিকংশিক বারশেচভাষরঃ পাবিনং স্ফুডা: । পাবিনোংশি চ ক্ষেত্রে জু কোষদ্মানাৎ রাবৈঃ সমাঃ।

शामी।

কুন্তীর, কৃর্ম, নজে, গোধা, মকর, লঙ্কু, খণ্টিক (বড়িয়াল) ও শিশুমার (শুশুক) প্রভৃতিকে পাদী ক্ষহে।

ইহাদের মাংদের গুণ কোষ্ছ দিগের ম্যার।

भ९माः।

বংক্রো বীনো বিসারত ক্রবো ইবলারিবেহি কর্মন।
লক্লো পূর্বেনা চ স স্বর্গন ইতালি ।
ব্যোহিতাদাক্ষ যে জীবাস্তে মংস্যাং পরিকীর্তিটাঃ।
মংস্যাং স্থিতাক্ষ মধুরা প্ররবঃ কক্ষণিতলাঃ ।
বাড্রা ব্ংহণা ব্যাংগ্রেছকা বলবর্জনাঃ।
মহ্য ব্যবার সকানাং দীপ্রাম্নাক্ষ পৃক্ষিতাঃ ।

म९म})

মৎস্যা, মীন, বিসার, ধ্বা, বৈসারিণ, অওজ, শকুল, পূণুলোমা ও সুদর্শন এটগুলি ইছার পর্যায়। রোহিত প্রভৃতি নানা প্রকার মৎস্য আছে।

ত্থা। মৎস্য সকল লিগ্র, উঞ্চ, মধুর, তারু, কফ পিওজনক, রাজয়, পৃষ্টিকর, ব্যা, রোচক ও বলবর্জক। মদ্যপারী ও সভত স্ত্রীপ্রসঙ্গীদ্বিধের এবং দীপ্রাধি লোকদিবের পক্ষেমৎস্য অতিশন্ধ উপ-কারক।

> অৱ স্থাপলাদীনাৎ নামানি ধ্বৰাক। হবিশঃ।

वृद्धिः भोडरम् वस्त्रियुरम् होनरम् सप्तः। ब्रद्धः नारकः वस्त्रः यूर्वादः नविनास्याः॥

ष्ट्रिय ।

হরিণ মাংস শীতল, মলমূত্র রোধক, অরিকারক, লঘু, রসে ও পাকে মধুর। মুগন্ধি ও সরিপাত নাশক।

अगः ।

এবঃ কৰায়ে; মধুরঃ শিকাসৃক্কবাতহং। সংগ্ৰাছী রোচনো বল্যো অৱ প্ৰশাসন ক্ডঃ ।

এ। हिल्लोकश्रीमाहेल इति ।

এণ মাংস কবার, মধুর, রক্তপিত শান্তিকর, বাতল্লেম নাশক, সংগ্রাহী, রোচক, বলকর ও জর নাশক।

क्रमः ।

कृत्रका त्रवर्षा वजाः लोडनः शिवसम् धंतरः। सपुरता राउसम् आहो किकिए कफकतः स्वारः।

क् द्रन ।

কৃরন্ধাংস বৃংহণ, বলকারক, শীতল, পিত্ত নাশক, শুক্ল, মধ্র, বারুনাশক, গ্রাহী ও কিঞ্ছিৎ কফজনক।

क्षशुः ।

ধ্বব্যে নীলাডকভাপি ব্যবহা হোট ইত্যপি। ব্যৱহা মধুহো বল্যা ছেঞ্চেন্ডা কঞ্পিভলঃ ৪

शिकी दबोडे।

নীলাওক, গরর ও রোউ ইহার পর্যার। ইহার মাংস মধুর, বলকারক, শ্বিক, উষ্ণ ও কফশিকজনক।

शृषकः ।

পুৰত্বস্থ ভবেৎ স্বাস্থ ঐতিহল করে। দ্বীপনো স্বোচনং পাস অন্তর্জের কয়জালং হ

विनी विकति।

পুৰত ভাতু, গ্ৰাহক, শীকল, লঘু, দীপন, হোচক, খাদ নিবাহক, অৱস্থ, ত্ৰিদোৰ শাভিকয় ও মঞ্জদোৰ নাৰ্লক।

मास्रा

नःकः कानूजीयूर्वरका। कृत्यक्ष त्यावस्थानयः ।

रिनी वाबारभिषा।

ইচা স্বাচ্চ লঘু, বলকারক, বৃষ্য ও ব্রিদোধ নাশক।

मावब्रम् ।

সাবরং পললং। প্রকং শারুসং এর ৪ স্থান্। রলে পালে ৪ মধুরং কক্ষা রক্তপিছরং ৪

माया ।

সাবর মাংস স্থিপ্প, শীক্ষন, গুরু, রসে ও পাকে মধুর, কক্ষনক ও রক্ষণিত নাশক।

द्राष्ट्रीयः ।

हाक्षीतक बरेनाक्ष्यंत्रः शृक्तक्ष्य मामा बरेमः।

हेराव छ। शृष्टक महाव ।

मुजी।

वृक्षी कु कात्र कामांखकत चामांगरका दिनशः

मुजी। दिन्नीगार्गे।

মৃতী শীষ্টল, ইবা অন্ত, কাস, রক্তকর ও খাদ রোগ নিবানৰ করে।

विद्यानकाः । जन्मः ।

मयमन्द्रः मन्द्रानुष्टे । सायस्त्रदर्शः विद्यमन्द्रतः । ननः भौत्कां सम् अवि सम्मः योष्ट्रः मदाविकः ॥ योषञ्चन कमः गिर्वतिक्षां वीक गांवाप्तनः मत्वाः । सञ्जािक गांत्र कृतिकः सामानसः सम्भः सः ॥

चंत्रणम ।

লয়কৰ্ণ, দাশ, দুলী, লোমকৰ্ণ ও বিলেন দায় এই ওলি ইহার প্রায়য়।

তা। শশক্ষাংস শীতল, ল্ডু, গ্রাহী, কল, খানু, সভত খালুরক্ষক, অধিকারত, পিরপ্রেম নাশক ও বারু সামাকারক। ইহা জয়, অভিসার, রক্তাহোর ও খাস রোগ নিবারণ করে।

मन्।कः।

त्मवा कू मेमाकः चाविष कवादंव छन्तना चर् । मेमाकः चाम कामाकः स्मीवदनाच बन्नासंबरः॥

भनाक। दिलोगाही।

দেবা, শশ্রুক ও খাবিৎ এইওলি ইবার পর্ব্যায়। ইবা খান, কান, রক্ত বোন, লোববোন ও ব্রিদোব নষ্ট করে।

অৱ পশ্চিনাৎ নাবানি ব্যাপঃ। পদ্মী হবো বিহলত বিহুপ্ত বিহুল্যঃ। পদ্মিবিং প্ৰতী চ বিকিলো বিকিলোহকাঃ। বান্য ক্ষেত্ৰয় যেচত্ত্ৰ কোৎ বাংলং সম্ক্ৰম্। আমুলং বসভুম্বাংগং বিভং ব্যাপ্তাং আ কুয়

शकी।

পর্যার। পর্নী, ধন, বিহন্ন, বিহন, বিহুলন, পাকৃনি, বি, পজাত্তী, বিভিন্ন, বিক্তিন ও ুঅওল এই ওলি ইহার পরিয়া। ধান্যক্ষেত্র চারা পক্ষীর মাংস লঘু ও স্থাপথা এবং আন্দা পক্ষীর মাংস বল-ফারক, রিশ্ব ও ওক্তর।

বর্দ্তকঃ।

বন্তীকো বৰ্ত্তক শিত্ৰ স্কডোহস্পা বৰ্ত্তকা স্মৃতা। বৰ্ত্তকোচগাক্ষয় লীতো স্বায় ছোগৰয়াপহঃ । কুমুচ্যঃ স্বায়ুল্য বংল্যা বৰ্ত্তকাস্পা এগংডভঃ।

বর্ত্তক ।

ইহার অন্য ন'ম বতী কি, ক্ষুদ্র জাতীর বর্ত্তককে বর্ত্তক। করে।

থাণ। বর্ত্তক অগ্নিকারক, শীকল, জ্বার, ত্রিদোষ মাশক, দ্রুম রোচক, শুক্রবর্ত্বক জ বলকারক। বার্ত্তকার থাণ ইয়া অপেক্ষা সার।

लावः।

লাবা বিভিন্ন বর্মেরু তে চুর্থা মন্তা বুলৈ।
পাংখালো গৌরকোঠনান্ত পোগুকো ঘটরগুরা।
লাবা বহ্দিকরাঃ 'সুন্ধা গরন্ধা আছিলা হিতাই।
গৌরো লযুক্তরো ক্রন্দো বন্দিকারী ত্রিঘোষ ক্রিং।
পোগুকুই পিশুকুই কিঞ্জিন্ন বান্ত ক্ষ্মপুরঃ।
দক্তরো বন্ধাপিতলো ক্র্যাব্য হতো হিন্তঃ

न्।व।

বিভিন্ন বর্ণের মধ্যে লাব চারি প্রকার যশা পাংক্তল, গৌরক, পৌগুক ও মর্ক্তর।

লাব পক্ষীর মাংস অধিকারক, লিঘ্র বিষয়, প্রাহী ও হুপথ্য। পাংশুল লাবের মাংস শ্লেমজনক, উষ্ণবীর্ষা ও বাবুনাশক। নৌরলাবেব মাংস অভিশার লাযু, ক্লক, আধিকারক ও ত্রিফোব্যু। পৌতুকের মাংস পিত্তকারক কিঞিং, লাযু ও বাত- প্রেয় নাশক। দর্ভর মাংল রক্তপিত্ত শাক্তিকর, হুয়োগ নাশক ও দীতল।

वर्षित्रहेकः।

ব'লীকো বর্ষিচটকো বান্ধীকলৈত স ব্দৃতঃ। বালীকো ধধুরঃ লীডো ক্রম্বাচ কম্পন্তমুৎ ঃ

शिक्षीयभागाः।

বাপীক, বর্ত্তিচটক, ও বত্তীক এই বুলি ইহার পর্যায়।

থাণ। মধুর শীতণ, রক্ষ, কফর ও শিতনংশকঃ

কৃষ্ণতি নিরি, গৌরভি নিরী।
ভিত্তির কৃষ্ণবর্ণ স্যাজিনোহনে)। গৌর ভিভিনি।
ভিত্তিরিবলৈয়ে নামী হিলা দোব হয়। পদ।
খাস কাসজ্ঞারর ক্ষান্থানাহাধিকে। এইবং

বৃষ্ণ ভিতির ও খেত ভিতির।

কৃষ্ণ পুচ শুভ এই দুইংর্নেব ভিত্তিরি আছে, ভন্মধো গোর ভিত্তিরিকে চিত্ত কহে।

তি তিরি বলকারক, গ্রাহী ও ত্রিদোষ নাশক। ইহা হিকা, খাস, কাল ও জব নাশ করে। গোর তি^বতরির মাংস ইহা অলেকা থাকর।

চটকঃ।

চটকং কলবিভা স্যাৎ কুলিকং কালক ঠকং। কুলিকং লীচলং সিূঝং খাবু অঞ্চক্ষ প্রদে । স্থিপাত ইয়ো যেখা চটক স্থাপি অঞ্চনং।

ठफु है।

চটক, কলবিছ, কুলিছ ও কাল-কঠক এইওলি ইছার পর্যায় ! থা। চটকমাংক শীভল, ছিব্ব, খাচ্: শুক্তক্ষনক, কল্পপ্রস্থ-স'দ্বপাত নাপক, গৃহ চটক অভিশন্ন শুক্তক্ষনক।

कुक् हे वुसक्क दुरेश ।

कृष हैः क्ष्याकः गार क्षधणत्रवाञ्चवः।

छात्र हृष्टवी वृष्टः व्यक्तिवी निर्धादकः ।

कृष्ट्रा वृष्ट्रः तृत्वी दीर्द्यात्कः श्रिकः कृष्टः ।

कृष्ट्रा कृष्ट्रः तृत्वी दीर्द्यात्कः ।

क्ष्याः सक्तककृष् रत्याः वृषाः कवात्रकः ।

क्षाद्रवाः कृष्ट्रः तृत्वा वृष्ट्रः स्वत्रत्या स्वर्धः ।

वाद्यन्तिकृष्ट्रः विषय स्वत्र सन्तरः ।

कुक् हे ५ वनकुक है।

কুকুট, কৃকবাকু, কলন্ধ, চরণার্ব, ভাত্রচ্ছ, দক্ষ, প্রাক্তণীয়ী ও লিবতিক এইগুলি ইহার প্রধার।

গুণ। কুকুটমাংশ বুংহণ, লিগ্ধ, উফ্লব্যা, বংবুনাপক, গুফ, চলুবা, শুলোৎপাদক, কফবছ কি, বলকারক, বুবা ও ক্বাব। বনা কুরুটের মাংশ লিগ্ধ, বুংহণ, শ্লেমকর ও গুফ, ইহা ভক্ষণে বামুপিত ক্ষররোগ, বমি ও বিবম ক্ষর নিবারণ হর।

श्रद्धकाः ।

হারীতো রক্ত কর্মসাঃ ছারীতোহণি ধ কর্মত। হারীতো রক্ত উক্তণ রক্তাণত ক্যাণহঃ । বেহ বর্মরা শ্রোঞ্জ ইবন্ বাতক্যণ সাঃ।

विन्ती शबील्।

হারীত, রক্তকঠ ও হরিত এইওলি ইহার পর্যার। ইহার মাংল রক্ষ, উষ্ণ, রক্তলিত্ত লাজ্ঞিকর, ক্ষম, যক্ষ্কারক, স্থর বিভঙ্কি কারক ও কিঞ্জিৎ যায়ুজনক।

পাত্ৰবলপাত,।

পাতৃত্ব বিবিধা জের শিক্তপক্ষা কলন্ত্রি। বিভীয়ো ধবলং প্রোক্তর ল কপোন্ত: স্ফুটবলং । পিএপক্ষা কক্ষরে। বাব্যস্ত্রা এইবী প্রাণ্ড । ধবলং পাকু রু'ক্ষেটা ইকপির্ছয়ে। হিয়া ॥

পাতু ও ধরদপাত।

পাত তুই প্রকার এক প্রকারকে চিত্র পক্ষ (বিং, পিউরোষা) ও কলখন করে, অপর প্রকারকে ধ্বলপাতু বা ক্রেণাজ বলে। চিত্রপক্ষ ক্ষম, বার্মাশক ও গ্রহণীবোগ নিববিক। ক্রেণাভ মাংস শীত্র ও রক্ষণিত্র নাশক।

मह अः।

ময়ুর শচজানী কেকী মেশ্বরাথী কৃষ্ণস্কুক্। লিখী লিখায়নো সহী লিখনী মীলকঠকঃ হ স্বক্লোশাস্থ্য কলাশী চ মেখনাথানুলাস্যলি। রুসে লাকৈ চ মধুরঃ সংগ্রাহী যাভশাবিকুৎ হ

मत्त्र ।

মন্ব, চন্দ্ৰকী, কেকী, মেখরাবী, ভূতসভূত্ব, শিৰী, শিৰাবল, বহাঁ, শিৰণা, নীলকঠক, ডক্লোণাক, কলাণীও মেখনাদামূলাণী এই সম্বায় ইহান প্ৰায়

মব্র মাংশ আছাত ও পাকে মধুর, শংগ্রাহী ও বারু ত্মন কামক।

खबाकानम्।

श्रीवायकः।

পান্নাৰজ্ঞ কল্পন্তঃ কংশালোর ক্ষণন্ত্রনঃ। পান্ধানজ্যে প্রক্রুনন্তিকো রক্ষাপত্য বিভাগনঃ । সংগ্রাহী শীতল ভক্তিকং করিতো হার্য্য বর্ত্তনঃ।

शात्रवा ।

পারাবত, কলমব, কপোত ও রক্ত বর্জন এই ওলি ইহার পর্যার।

তা। পাররার মাংস তক্ত, লিগ্ধ, রক্তাপিত শান্তিকারক, বারুনাশক, সং-গ্রাহী, শীতল ও বীর্য্য বর্ম ক।

পক্ষাওদ্য গুণা:।

নাঙি স্বিধানি বৃষ্যানি স্বাস্পাক রলানি চ। বাতস্থান্যতি অফানি ওয়েন্যকানি পকিনাৰ ।

পক্ষীর ডিব।

পঞ্চীর ডিম্ব আধিক লিগ্ধ নহে, পাকে নিষ্টরল হয়, ইহা বুয়া, বায়্বাপক, অভিশয় শুক্তেমনক ও ওয়া।

आयाः।

ছাগঃ।

वांगला यर्के फांलो राखेक्स (फ्लकः क्याः । च्यां कांगी च्यां कोल (क्यांक्रिकः व गंवकते । वांगांश्यः संगू विक्यः वांगुणाकः विद्यायम् । सांगांशिक वशादि सांग वांगुणीसम नानमम् । नंतः रावकतः क्रांशः पुरुषेशः वींशायक्षमम् । च्यांकां च्यांगुणाता मार्गाः लीमम नानमम् । च्यांगां च्यांगुणाता मार्गाः लीमम नानमम् । च्यांगुणमा वांगांगां मार्गाः च्यांग्यः व व्याः । व्याःग्याः (व्यांशः क्यांग्यः क्यांग्यः । व्याःग्याः (व्यंशः व्याःग्यः) क्यांग्यः व व्यांग्यः । द्यांकां स्विकतः वांगाः मार्गाः वक्ष्यं व्याः । वृष्टमा योषम् । ज्ञष्टः स्थाः साथि श्रृष्टमा ४ । वैक्षेत्रक विकासक्षः शोपपुरः । अस्य । सक्याः वृष्टरंगयोः सूत्र वृष्ट्य (असरिकः १७५ ।

छाभयार त्मन खन ।

শ্বার। ছাগল, বর্ত্তর, ছার, বন্ত,
অঞ্চ, ছেলক ও স্থান্ত এই ওলি ছারলের
পর্বার এবং অফা, ছার্নী, গুলা, ছেলিকা
ও বলন্তনী এই নাম সঞ্চল ছারীবাচক।

ছাগমাংস গলু, বিশ্ব, 'দাকু পাক, ত্রিদোষর, অনভি পাঙ্কস, অবিদাহী, ভাতু, শীনস নাশক, অভিশন্ন বলকর, গ্লোচন্চ, বংহণ ও বীর্দ্যোৎপাদক।

অপ্রস্ত হানীর বাংল অগ্নিদীপ্তি কারক, ইবা শীনন, ভঙ্কান, অক্রচি ও শোষ রে গে উলকারক।

ছাগ শিশুর মাংস অভিশর পছ্, হাদা, উত্তম জনম, স্বাস্থাপ্রদাপ অভিশর বন্ধারক।

নিড়াশিকাণ্ড (ধাসী) ছাগলের বাংন কফজনক, ওয়া, ভ্রোজ্ঞা শোধক, বলকর, নাংন বর্ত্তক, বায়নাশক ও নিত্তম।

বৃদ্ধ অধবা কোন বোধে মৃত ছাধলের
মাংস বাহুজনত ও জজ। ছাগমুও উদ্ধজক্রবোগ নাশত ও ক্লচিপ্রদ। ইবাদিনের
মৃত্রপ্রছি ও অপুকোষ শুক্রবৰ্দ্ধ এবং
যক্তব বা মেটিলী চক্ষুর কো।'জ বৃদ্ধান।

C45 4

त्वरहा स्वरम् **स्था त्वय वैश्वरताहर**मान-स्वाह^{र्}ण इ ।

चावर्षि संस्थित्यः क्वार्य छन्त्वा चर्य । सम्बन्धः वीरमर पूर्वति मार्थः निवस्त्रम्भवत् सम् चरेनासंव विद्यानमः बारमर विकासम्बन्धः कृत्वत् ।

C44 1

ৰেচ, বেচ, বড়, বেচ, ইরণ, এড়ক, অবি, বৃষ্টি ও উপির এই ওলি ইহার প্রায়।

বেষবাংশ পৃষ্টিকর, পিডপ্লেয় জনক ও ওক্স। অওবিহীন (ধানী) নেধের মাংস কিঞিৎ শবু।

司企业:

একজঃ পূর্ভূত: স্যাজ্যেত্ব পুদ্দক সুৰ্বঃ ; এক্ষন্য পালং ক্ষেত্ৰং বেবাদিবসমং থালৈঃ ; বেবংপুচেছাদ্ভবং বাংসং অধ্যং বুবাং অবাপায়ন্ ; পিশু স্বোক্ষরং কিভিত্যাত ব্যাধি বিবাশনম্ ;

रिया ह्या।

ওড়কের অগর নাম পৃথুন্থ, মেখা-পুদ্ধ বেশকে গুগক করে।

এড়ক মাংলের ওণ মেব মাংলের ন্যার। ছব নেবের মাংল জন্য, রুবা, ভ্রম শান্তিকর, কিকিৎপিত্তপ্লেরজনক ও বাত-ব্যাধিনাশক।

यमीयम् ।

यनोवर्णं द्वा श्वाकः छता द्वा । काणृत्यु (गोत्ररक्षां च योत्रका कत्र येकानि । मूर्वाकः (गोत्ररक्षो च वार्रको (योत्रवास्का । रयोवोश्यक्ष बद्धाविकः निक रक्षा विवर्कत्यु । सुर्वत् योक्सन् वका यनकार जीवन्य सनुर ।

वृष् ।

বলীংৰ্ম, ব্ৰহম, ব্ৰহ, অনজ্বান্, লৌৱ-ভেয়, গো, উক্ষা ও ভার এইওলি ইবার পর্যার। এবং ছবভি, দৌরভেরী, নাবেরী ও বোং এই তাল গালির নাম। লোমাংল ওরু, রিয়া, কললির বছ ভি, রুংহণ, বাহুদার্শক, বলকর, আপবা জ শীনল নাগক।

द्वाडेकः ।

त्याष्ट्रेत्व शीखिकुत्रथ कृत्रकाणः कृत्रकताः। याजियायान्तं संबद्धं तत्त देनकत् नश्चनः इ वर्षं वारमञ्ज कृत्रतेर वश्चिकृत कक्षं निक्रमत्। वर्षावस्तु दुर्श्वतर संगार अकुत्रार संबूत्तर सर्वः इ

514 1

বোটক, পীজি, জুরন্ন, জুরন্ধ, জুর- '
দম, বান্ধি, বাহ, অর্কা, গন্ধর্ম, হঃ,
দৈন্ধব ও সারি এই স্মুদার ইবার নাম।
জার্থনাংস করার, অন্ধিকারক, কফপিড় জনক, বায়ুনানক, বুংছণ, বলকারক,
চক্ষের স্বাস্থাকর, মধুর ও লঘু।

कृटलाइय वर्षः ।

मश्चिः।

वरित्या त्यांचे वाहिः गावि सामग्रेण प्रस्नवाः । भीषकत्यः कृषकात्या सुमारणा यय वादमः । वरियमानियः साषु विश्वांकः वादमानंत्रवः । निजासका साषः रागः समुगोडी स्वर्धाः । वृषाक मुकेतियुगुतः वाद्यांकास्य मानमम् ।

यश्च ।

পর্যার। মহিদ, বেটকারি, জানর, রজস্বল, শীনক্ষ, ভূঞ্করে, সূলাপ ও ব্যবহার এইতালি ইয়ার পর্যার।

তা। মহিব মাংল খাছ, প্লিপ্ক, উফ্চ, বারুবালক, নিজাভায়ক, গুজোৎপায়ক, বলকর, শরীরের মৃঢ়চাকারক, ওরু, রুষা, মশন্ত্র নিঃসারক, বাতর ও রক্তণিত নাশক।

मश्रुकः ।

মঞ্কঃ প্রবেশ। কেকো বর্গাভূর্তুরো ছবিঃ। মঞ্কঃ স্লেখনো নাতি শিকলো বলকারকঃ।

(公事!

পৃষ্যার। মৃত্ক, প্লব্ব, ভেক, বর্ণভ্, দর্জনুর ও হরি।

৩৭। কফলনক ও বলকারক, ইহা অধিক পিতকনক নৰে।

本版句: 1

कष्ट्रत्था शृष्ट्रभाव कृत्यः कयर्था मृष्ट्रपृष्टेकः। कष्ट्रत्था रमस्या राजनिकम्ब गुरुक्ताहरूः।

本屋り!

কচ্ছণ, গৃত্থাৎ, কৃশ্ব, কমঠ ও দৃত্ পৃষ্ঠক এইওলি ইহার পর্যায়। কচ্ছণ মাংস বলকারক, বার্ণির নাশক ও ধ্বস্থ-ভক্ষ নিধারক।

भटनारकमा भारमम्।

সংখ্যাহতস্য বাৎসৎ স্যাৎ হ্যবিহাতি বৰ্ণামূওদ্। বয়স্যৎ বুংহৰৎ সাক্ষ্য দল্যবা তদ্ বিবহ্নবহৈছে ঃ

পছো। মারিড জীবের মাংশ অর্ড সমূশ, ব্যাধিনাশক, বরঃ স্থাধক, বুংহণ ৩ প্রা: অন্যবিধ মাংশ পরিত্যাক্ষ্য।

সরংমৃতস্য মাংসম্।

बग्न- मृष्ठना शंबना मधीनात्रका- क्षत्र ।

স্বরং মৃক্ত জীবের মাংস বল হাসক, তারু ও অতীসার রোগ জনক।

दुष्कवान माध्यम्।

दृष्ठीया रहायम राजन राजामा रजहर वर्ष्

বৃদ্ধজীবের মাংস ভোজন করা অবি-ধের, কারণ ভাহা রোগেৎপাদক। বাল জীবের মাংস লছু ও বলকারক।

विषः मि महना मारमम्।

সপ দক্ষা মাংসক স্বক্ষ মাংসং ত্রিদ্বোধ কুং। বাল দক্ষক দুক্ত স্বক্ষং শূলকরং পর্য ; বিধাব,কড নৃত্তৈ,তন্ মৃত্যু দোধ ক্ষাকর্য। ক্রিমুংক্রেশ জনকং কুশং ব ভ প্রকোপন্য । ভোর পূর্ণশারা জালং মৃত্যপ্য ত্রিদোধ কৃং।

দর্গদন্ত নৌবের মাংসাও শুক্ত মাংসা ভোজন করিলে বাজা'দ দোষ এব প্রকৃ-পিজ হর, হিংজ্ঞ ফর্মদন্ত মাংসা আভিশর দোষাবহ, শুক মাংসা ভোজনে শুলরোগ উৎপত্র হউতে পাবে। বিষ ও রোগ-ঘারা আথবা জল মন্যে মুহু জীবের মাংসা ভোজন করলে দোষাবেব প্রকোপ, নানাবির রোগ অথবা মুহু স্থান্তিও হইছে পারে। পচা মাংগ ভোজন করিলে বম-নের বেন হর, শীর্ব মাংসা বারু প্রকোপক। জলমধো মরিলে এবং উহার শিরা শক্ত জলে প্রিপূর্ব হইলে ঐ মাংসা ভক্ষণে ভিরোধ কুপিত হর। विवरमञ् भूषाय् त्वकं को ठलूनाव कारुव् । भन्नाक्षर नष् भूरतार नप्तर कोवार भूकार्क वामानर ।

दश्यमः । स्वत्रधाः । गर्वायाः आंशानाः म्हान् ।
लक्ष्यम् विष्वायाः स्वत्यं अयं कवाः ।
स्वत्रश्रात्रं वाद्यं । स्वत्रं अवा । लक्ष्याम् ।
स्वत्र स्वत्रं । स्वत्रं अवा । स्वत्रं स्वाः ।
लुके स्वा् यस्प्रां । स्वत्रं संवास्त्रम् ।
लण् वास्त्र सार्णाः स्वत्रात्राः । स्वत्रं स्वाः ।
स्वाः । लिसकतः । वास्त्रः स्वाः स्वस् ।
स्वाः । स्वाः स्वः स्वः स्वः । स्वः स्वः ।
स्वः सार्णाः । स्वः स्वः । स्वः स्वः स्वः ।
स्वः सार्णाः । स्वः स्वः । स्वः स्वः स्वः ।
स्वः सार्णाः । स्वः स्वः । स्वः स्वः ।

পক্ষিনণের মধ্যে পুরুষ জাতির মাংস त्लके, हर्ष्याम धार्गामरात्र मर्या छो জাতির মাংসই প্রশস্ত। পুরুষ ভাতির দেহের নিয়াত্ম লঘু এবং স্ত্রী জাতির छेक्।श्रम लघु, श्राप्त अमुनाव श्रामीद দেহের ম্ব্যভাগ গ্রু, কিন্তু বিহল্পণের দেহের ঐ অংশ সর্বদ। পক্ষ প্রক্ষেপ হেতু লঘু হটবা থাকে। পক্ষিগণের জণ্ ও গ্রীবা ওক। প্রাণীদিলের বক্ষান্থল, वक, डेबर, कृत्रि, शाम, दख, नहीं, शृहे. ত্বক্, যকুং ও অন্ন এইকালি ক্রেমণঃ অধিক গুরু। ধান্য ভোজী পক্ষীদিগের माःन लघ् । दाय कनक, मर्भा (छाको পক্ষীর মাংস পিত্তকারক, বাচ্ নাশক ও ওরু, ফলভোজী পক্ষীর মাংস কর্ম क्षनक, नपु 🗢 कक्ष, मारमाणी शक्तीव নাংশ বুংহণ, গুরু ও বাতল্প। বুহৎকার लानी मक्टलब मरश ख्याकीत्र नष्ट्र প্রাণীর মাংস হিককর এবং লঘুদেহ कीरमत्पत्र मत्या त्य है। यू मकात्र, छारात मारम ध्रमख ।

यएगावर्गः ।

द्राश्किः ।

রজেণ্যরে রক্তযুগো রক্তাক্ষো রক্তপক্ষকিঃ : কৃত্যপুদেরা ক্ষত্রেকেঃ গ্রোক্তিঃ কবিজে৷ বুবৈঃ ৪ রোক্তিঃ সন্ধাৰৎস্যানা৲ বরো মুখ্যোহন্দি-

616 ac 1

क्यामान् इतः साङ्क्षीक्षश्चा माकिनिसङ्ग् ॥ উक्षमकः गठात्मामाम् वन्मात्मापक मुक्कन् ।

द्याश्चिम्दमा ।

রেছিত মৎলোর উদর, মুধ, চক্ষুও পক্ষ রক্তবর্গ এবং প্রক ক্ষেত্রর্গ। মংলোর মধো রোহিতই প্রেষ্ঠ, ইহা অধিক পিত্ত-কলক নহে, রোহিত মৎলা স্টবৎ ক্যাস, স্বান্ধ, ব্যা, বাত নাশক ও অর্ফিনাধা বাত ব্যাধি শান্তিকর, ইহার মন্ত্রক ওক্তবে উর্ফ লুগত রোগ নিবারিক হয়।

ामनी**क**ः।

শিলীক : ক্লেম্বল্যে ব্লেয়া বিপাকে ব্রুৱো প্রজঃ । বাতশিক্ষরে ১ ক্য আবর্ষক কর্মত সংগ্র

मानभरमा ।

শিলীকা, মৎশা কফবছ ক, বলকারক বার পিওঁ নাশক, জ্বা ও আমবাত রোগোৎপাদক। ইহা ভক্ষণ করিলে উদবস্থ হইরা মধুরাখাদ্ হয়।

चकुत्र यदमाः

ভক্রো খবুরঃ দীতো রুখ্যা রোপ্ত করোরঞ্চ: । বিউক্ত জনক শ্চাপি রক্তপিরবরং ক্ষুত্র রু

বেশিশা মহস্য।

ভজুরমংশ্য মধুর, শীতল, বুষা, কম্বন্দ তনক, ওজ, বিষ্টিই ও রক্তাশিত নাশক।

त्याहिका।

स्विष्ठिकः चायक्तन्त्रम्या ३९वनी मधुत्रा खद्रमः । शिक्कवः कम्प्रकृष्टम्या नुष्या विश्वश्चित्वः विचा ॥

ক্তিলা।

মোচিকামৎস্য বার্নাশক, বলকর, বৃংহণ, মধুর, শুরু, পিন্তু নাশক, প্রের বর্দ্ধক, রোচক, বুষ্য ও দীপুামি ব্যক্তির প্রেফ হিককারক।

भाष्ठीकः।

পাঠীনঃ দ্বেছলো বংগ্যা বিস্তাপু: পিলিন্ডা পনঃ। দুৰয়ে ক্ষরিং পিন্ত কুঠছোগং কল্লোভি চ ॥

(वाद्रानम्बद्रम् ।

পর্যার। পাঠীন, ক্লেছল, বল্য, নিদ্রাপু ও পিশিতাশন এই ওলি বোরাল মাছের সংস্কৃত নাম। ইলা ভক্ষণ করিলে রক্ত বিকৃত্ হটরা পৈত্রিক কুঠরোগ প্রকাশ পাইতে পারে।

मुन्नी।

পুলী জু যাত শ্ৰমী জিত্তা হোল প্ৰকোপণী। রলে ডিক্সা কথারা চ কন্মী রচ্চা ক্ষ্যুতা বুলৈঃ চ

भ् श्रीमरमा ।

পৃত্তী মৎস্য বারু পান্তিকর, রিয়া, ভেম প্রকোপক, ডিজ, কবারাদার, লঘু ও ফাচ্য।

Emil .

वैज्ञित्मा बबूदः विस्का त्त्राव्यमा वनवर्षमः । कर्कानसम्बद्धाः पूर्वतः कृषिनानवः ।

ইলিশ মংলা মধুর, রিশ্ব, রোচক, বুলবর্ত্তক, পিজ প্রেয় ক্ষমক, রুব্য, সুব-লাচ্য ও বারুনাশক।

मक्ना ।

लक्ष्मी अविभी क्षमा बहुता कृतका क्षमा ।

मक्त बर्मा ।

वाही, क्रमा, मनुब ७ क्यात्राचार ।

नर्नद्रः ।

থৰ্গরঃ শিত্তলঃ কিস্তিছাত জিৎকককোপন্নঃ।

ব্যর্গ।

গর্গর মংস্য কিঞ্চিৎ পিত্তল্পনক, বারু নাশক ও কফ্বর্ফ ।

ক্বিকা।

कविका बनुद्र। चिका कक्या क्रिकेविनी । विश्विद लिखको वाध्यालिमी वस्टिवर्डिमी ।

कहे।

মধুর, রিশ্ব, কফস্প, ক্রচিকারক, কি-কিৎপিত্তক্ষক বাসুনাশক ও অল্লিবদ্ধ কি।

ব'য় মৎসাঃ।

ধর্মিনংস্যে ব্রেচ্যাড়া শিকা ক্রচিকরো সমুন। চিক্ষতী।

हेरा व:त लिख नानक, क्रिकंब 😵 नच्।

I PACA!

ष्ठ वश्रामा इतम विकार निवासक्त करूर श्राहर । बाह्य माधात्रका त्यांक्रिय स्वत्यांका वनवर्षक्रमा ह

यामयद्मा ।

ইহা তিজখাৰ, রফণিত শাতিকর, কলম, বাব্র অবিরোধী, ভজ্জলক ও বলবর্ক । 4 : F & D

बद्रामा मधुद्रः शिष्ठा विकेषा मोख्या मधुरः।

(हक्षादमा ।

এরক মংসা মধুব লিয়া, বিউন্থী শীতল ৩ লয়।

भग्रंभक्षो ।

মধাসকর সংজ্ঞন্ধ ডিকঃ পিকক্ষাপরং। * লি'লিরো মধুরো কচেন্ন শঙ্স ধারণ: ঝুডঃ ঃ

गवन भू हि

ইচা কিন্তু, পিন্তন'শক, কফ্স, শী্ত্র, মধুর ক্চা ও বসুস ক্বিবেরী।

STA IT

त्रक्षच्च सम्ब्राहिका (तृतरः, ताक्ष्णिकक्षः कक्षचा स्रिक्तिक प्रमुख्या स्थानी तस्त्र ये सुध्या

ইহা মর্র, কিন, কদ'স, ওসু পির নাশক, কফর শ'চকাবক, লঘু, আমি দাপ্রকারক ৪ বল্ব'ফোহি পাদক।

मन्धः ।

মদগুরো শাতকন্ বলেয়া রুখ্য কমকবেং লঘুং।

মদ্তার ব'ল্নাশাকু, বলকারক, রুধা,
কফাকনক ও লাবু।

म्पाष्ट्रम् ।

সপায় বংলে)। বেধারুন্ বেষ: কয়করণ্ড স: । বাতণিকরণ্ডাণি ক্লডিকুৎ পরমো বড: ॥ (हेक्जा

ইহাকে সংস্কৃত ভাষাৰ সপাদ মৎসা বলে।

ইছা মেধাকারক, মেলঃ ক্ষমকর, বায প্রিফনক ও বিশক্ষণ কৃচিকারক ।

गरुवी।

প্রোষ্ঠ ডিকা কটিং স্বাদৃ, ন্যান্ত্রী ক্ষরান্ত্রিন । মিঞ্চানা কঠার গন্ত্রী রোচনী ৮ লগুঃ স্মৃতঃ ॥

र्षिभदगा।

ইহার সাস্ক জ নাম সফরী ও পোষ্টা। ইহা কিফ, কটু খাজু, গুল্লেনাশক, বাছ-শ্বেম নিধাবক, স্থিয়া, রোদক, শমু এবং মুখবোগ ও কপ্তরোগ নাশক।

क्षभरमा'ः।

কুনা মংস্যাং স্বাসুরস স্থাস্তর বিনাশনাং। সম্পাকা ক্রিকরং বল্পানে হিন্তা মডাং র

क्ष्मधदमाः।

কুদ্রমৎস্য স্বাচ্বস, ত্রিদোস নালক, লঘু পাক, ফ্চিকারক, বলপ্রদ ও স্থাবা।

का कि कुष्प्रस्माह।

चित्रकार पुरुषु वडा क्रशांश्वामामिनानवाः।

অতি কুদ্ৰংশ।

অতিশব ক্ষমংগা সকল পুণস্তু-নাশক, রুচা, কাস শাস্তিকর ও বায়ু নাশক।

भ्रा १३१

बर्जानार्डा कुन्य न्याः मृत्यः पृष्टिकरदा नयुः। कक्ष्मायः श्राप्ता राजाः श्लोक्ष्म्यस्य सान्त्रः॥

मश्ताद जिए।

মৎসা ডিম্ব আতিশর র্ষা, স্লিগ্ধকর, লঘু, কফজনক, মেদোবদ্ধক, বলকারক, গ্লানিকর ও মেহ নাশক।

एक मद्रमाः।

ন্ধক্ষং স্যাহিতান স্থা পূর্মরা বিজ্বিকতিনঃ।
ত্তক্র মংসা উপকাবক নতে, ইহা
সূজ্জ্বি ও মলবোধক।

प्रमार्गाः।

वक्षप्रत्मा। स्रोतः (अकः भूषिक्षण्यक्षांनः।

সন্ধ মৎশা বিশেষ গুণকর, ইহা বল প্রায় ও পৃষ্টিকারক।

कनवामि मर्माकानाः।

কৌপ্ৰংস্যাং শুক্ৰমুত্ৰ কুঠ শ্লেষ্ম বিবৰ্জন'ং।
সংবাজা মধুৱাং শ্লিকা বল্যা বাত বিনাশনাং ।
নাদেয়া ব্ৰহণা দংগ্ৰা গুৱংগাংশিল নাশনাং।
ব্ৰহণিভক্ষঃ ব্ৰয়াং শ্লিকোনাং গ্ৰণ্ণাবক্ত'নং ।
চৌড্যাং পিঙক্ৰঃ বিশ্লা শ্লুৱং স্থাবো বিনাং।
ডাড়াগা গ্লাবো ব্ৰয়ং শীজনা বন্দুবনাং ।
ডাড়াগাৰ্থিয়েশ্লা বন্দুবিভি দুক্লাং।

কৃপজ প্রভৃতি মংশা।

কৃপজাত মংস্য ভক্ষণ করিলে শুক্র, মৃত্র, কৃষ্ঠ ও ক্লেজা বৃদ্ধি হব। পৃত্ধিণী-জাত মংসা মধুর, লিগ্র, বলকারক ও বানুনাশক। নদী ভাত মংসা বংহণ, প্ তার, বাব্ নাশক, রক্তাপিত জনক, ব্যা,
রিশ্ব, উষ্ণ, অল্ল প্রীধ জনক। চৌডা
মংসা পিতকারক, রিশ্ব, মধুর, লবু ও
লীকল। তড়াগ জাত মংসা ওক্র, ব্যা,
লীকল, বলপ্রদ ও মৃত্তকারক। নির্মার
ভাত মংস্য সকল তড়াগ জাত মংসোর
নাার ওগ বিশিষ্ট, অধিকত্ত ইহারা বল,
আারু, সৃদ্ধি ও দৃষ্টি শক্তি বর্দ্ধন করে।

अञ्बद्धिया स्था विष्यकः।

চেমৰে কুপজা মহস্যাং শিলিরে সারসা ছিডাং। বসংখ তে তু নাংদ্যা গ্রীবো চৌডা সমুদ্ভবাং ॥ ওড়ামজাতা বর্ষাসু তার্পল্যা নদীজবাং। নৈর্মিয়া শ্রদি শ্রেষ্ঠা বিশেষোহ্যমুদ্ধভঙঃ ॥

নহমন্ত কালে কৃপজাত মংস্যা, শীত কালে শরোবর কাক, বসস্ত কালে নদী-কাক, গ্রীয়ে চৌডাজাক, বর্ষা কালে ডড়াগ জাত ও শরংকালে নির্মার জাত মংসা উপকারী, ব্যাকালে নদীল্লাত মংসা ভক্ষণ নির্মিদ্ধ।

উনতিংশভমোহধ্যায়:।

कृषदर्शः ।

পুন্দং ক্ষারং প্রাণ ক্ষমাং বাল্কীবন বিতাপি।

পুনং সুমধুরং সিক্ষং বাতপিত হরং সরম্ ।

সদাং শুক্রকরং পাতং সাজ্যাং সন্মানীরিবান্।

ক্ষামনং বুংহবং বল্যং মধ্যং বাজকরং পরম্ ।

বিরেল বাজি বন্ধীনাং তুলা মোক্ষো বিবর্জনম্ ।

রিরেল বাজি বন্ধীনাং তুলা মোক্ষো বিবর্জনম্ ।

মার্লিয়াং পাত্ রোগে ভ দাহে তুলি ক্ষাময়ে ।

মার্লিয়াং পাত্ রোগে ভ দাহে তুলি ক্ষাময়ে ।

মার্লিয়াং বিরেশ্ব বিরেশ্ব প্রাণ্ডির ।

রক্ষণিকেংভিসারের যোলিরোগে প্রাণ্ডির ।

রক্ষণিকেংভিসারের যোলিরোগে প্রাণ্ডির ।

বিক্রাবে ভ সভতং হিতাং মুলিবরৈর ক্ষুত্র ।

रामदृष्क कड कीवाः कुम्दाराष दृगाक व्यः एककाः महादिनविष्ठः विरुप्तकृष्ण क्रुपः

সুদ্ধ, ক্ষার, পরঃ, গুলাও বালজীবন এই গুলি সু:শ্বর নাম।

তুল্প পুষধুর, প্রিন্ধ, বায় শিত নাশক, मत्र, महाः एक्ट्रन्क, नौक्न, गकन लानींत्र मास्रा, कीवनी मंक्ति लाम, दृश्र्य, বলকারক, মেধাইছাক, উৎকৃষ্ট বাজী-कदन, दश्रष्ट्रांशक, जाश्रुषा, स्म्रष्ट्रश्रमार्थ সকলের সংশ্লেষ কারক ও রসায়ন। ইহা विद्युहन, वमन ७ देख क्रियात छेल्याती ७ ७८ छावर्षक । छीनछ द, भानमिक द्रांग, (नाय, मृह्यू।, खम, গ্রহণী, পাভূরোগ काए, कृष्ठा, ऋत्यात, मृल, डेगारखं, खन्म, रेखि-রোগ, অর্শ্য, রক্তপিক, অভিযার, ঘোনি-(दान, अम, क्रम, नर्डव्यर এই সকল ম্বলে চুগ্ৰ সৰ্ভ হিড্ডন্ক। বালক, রুদ্ধ, আত, জীণ, জুধাতেডু ভাগবা জী मटछात्र अपूक्त दन देशास्त्र भटक हुत्र অভিশয় উপকাবক।

গে পুর্বসা গুণ ।

গবা) দুজা বিশেষণ মধুর রল প'ক্ষো। লীতদা স্তনাকুছ মিন্দা বাতশিভাজ নালনৰ্ । দোৰবাতু মল প্রোভা কিজিছ ক্লেদ কর গুরু। স্তরা সমস্ত কোগানা শাভিকুছ সেবিনাৎ সদা দ

(जारुक्र ।

গবাহন্দ্র স্থান্তর, শীতল, তন্যবর্দ্ধক, দ্বিদ্ধ, বার্প্রশাসক, রক্ত পিতনাশক, দেখে, ধাতৃ ও মল সম্বন্ধীর স্রোত্তে কিঞিৎ ক্লেদ করিক, গুরু, জরা নিশারক ও সমস্ত রোগের শান্তিকারক। বর্ণ বিলেষের তার বিলেসাঃ।
কুজায়া গোর্ডকেমু এ১ বাতহারি প্রবাধকমু।
পীডায়া হরতে পিতাও ওলা বাতহরৎ ভবেৎ ॥
সোলাও ওল জুলারা রক্ষ পিতাক্র বাতহৃৎ।
সাভী ন বর্গ বিলোকে চুয়েরে তার বিশেষ।

কৃষ্ণবর্গ গাড়ীর তৃত্ব বার্মাশক ও বিশেষ গুণকারক, পাঁতবর্গ গাড়ীর তৃত্ব বার্ পিত্তনাশক, গুক্লবর্গ গাড়ীর তৃত্ব গুক্ল, কফজনক এবং রক্তপিত্র ও বাত-রস্ত রোগে উপকারক।

দেনো বালবংশারা বিবংশারাশ্চ গুণা।
বালবংশা বিবংশানাং প্রধাং মুখ্যং বিবংশান্ত্র গুলুও।
বালবংশা ও বিবংশা গাড়ীর গুলুও।
বালবংশা ও বিবংশা গাড়ীর গুলুও
ক্রিদোর জনক।

বছরিনী।

दक्षप्रमा (क्षर्यावश्चर धर्मन्र वसकृत लग्नः ।

বন্ধর শব্দের অর্থ বক্ন। বাছুরে, এক বংসরের বাছুরে। যাহার বাছুরের বয়ঃক্রেম এক বংসর ভাহাকে বন্ধরিনী গো কংগ। বন্ধরিনী গভৌর ভুগ্ধ জিলে,ব নাশক, তুপ্তি জনক ও বলকারক।

দেশ বিশেষ চরণাদ্ধাণ বিশেষ:। জনসমূল শৈলেষু চরতীনাৎ যধেকারন্। পথে। গুরুত্রৎ সেবো ধরাহারৎ প্রয়ত্ত ॥

দেশ বিশেষে জুগেব্র ৩৫ ভেদ।
জন্সল, জন্প ৩৪ শৈলে বিচরণ
কারিনী গঞী শকলেব জুগ্ধ যথে।-

তার আধিক গুলু জানিবে, ইছার কারণ কত্তৎ স্থানের আহারীণ বস্তার গুণের তারকমা।

আহার নিশোসেণ গুণ বিশেষঃ। রক্ষান ভক্ষণাভাতৎ জীরং গুরু ক্তপ্রন্থ। তলুবলাৎ পরং বৃষ্যং স্থানাং গুন্ধায়কম্। পলাল তৃণকার্শাস বীমস্তাতং গুণ্ডিব্যু।

গাভার আহার বিশেষে খ্যা বিশেষ।

স্থাতার তাত তুগ্ব গুরু ও কফজনক ঐ তুগ্ধ বলকারক, অতান্ত বুধী ও ফুড বাজির বিশেষ উপকারক। বঙ, তুগ ও কার্পাদবীক প্রভৃতি ভক্ষণে যে তুগ্ধ উৎপন্ন হব বাচা ফুগ্রা।

মহিধী ছুগ্ধম্।

মাহিত্র৲ মধুর৲ গব্যাৎ প্রিক্ষণ স্তক্রকরণ ওরু। মিল্লাকর মভিত্যান্দ স্কুধাধিক্য কর্ম 'হম্ম্ ঃ

मदियो कुम।

মহিষী তুগ্ধ গৰা তুগ্ধ অপেক্ষা মধুব, শ্বিগ্ধ, শুক্রকারক, শুস্ক, নিজাকারক, অভিযানী, কুশাইন্ধিকারক ও শীক্ষা।

छाती कृत्रम्।

ছাম কৰাৰ মধুর গাঁও এটাৰ অন্য লয়। বক্তপিকাভিসাংগ্ৰহ ক্ষমকাস অ্রাপহন্ । অজ্ঞানা সম্পাকারতাহ কটুভিক্ত নিবেববাহ। ভোকায় পানাদ্ ব্যায়ামাহ সম্বরেঃমাপহণ পথংক

চাগ হুৰ্ধ।

ছাগত্রর ধ কথাব, মধুব, শীতল, আহক ভালমু। ইহা মক্তপিত, অভীসার, ক্ষমকাস ও ভারবোরে পথা। ছাগলের দেহ কুদ্র ও ইহার। কটু ও ক্তিক্ত বস্ত আহার করে ও অল্ল জল থান ও ব্যারাম করে বলিরা হুহাছের দুল্ধ সর্ববোগনাশক।

मना कुन्रम्।

মুগান'ৎ অঙ্গলোখানামজাক্ষীর ওবং প্রঃ।

मृगीव ईन्ध ।

জন্পশেৎ শল্প ন্থার ভূগ্ধ ছ গ জুগেবুর নাটে তা বিশিষ্ট।

स्या प्रत्या।

আ'বকৎ লবনং খাদু থিডোঅকাশারা প্রন্থ। অহন, তপনং বৃদ্যং শুরুপত কফপ্রন্ম। অধ ক সেধনিলে দৃড়েওে কেবলে চানিলে বরুম্।

মেষ তুগ্ধ।

মেমত্র্ধ লবনাসাদ, স্ব তু, 'লুর্ধোফ্র, অশানী বোল নাশক, অন্তদ্য, তৃথিকনক, ব্যা, তাঞ্জনক, পিতৃবদ্ধি, লোগোৎ-পাদক, তারু, বাষ্ শান্তিকর ও বাত্ত কান বোলে উপকারক।

(च'डेकी मृत्र्यम्।

কুকোজা বঙৰাক্ট্র বলাগ লোবানিলাপদ্দ : অন্তৰ্গ পটু এয়ু হাদু স্বাদেকপক্ষ ওলা ঃ

(च, हर्ने हुन्स्।

খোটক দুগ্ধ রুক্ষ, উষ্ণ, বলকারক, শোষে রেগ শান্তিকর, বাগু নাশক, অস্ত্র, লবণাস্থায়, লঘু ও স্থাদু। অব্ধতিত ক্র বিশিষ্ট সমুদার প্রাণীর দুগ্ধ এই রূপ।

डेही जून शम्।

উউ । দুখা সন্ম খাদু স্বৰণ দীপনা তথা। জিবি কুঠ কজানাহ পোধোদর হয়। সরব ঃ

डेड्डीड्रग्स ।

উত্তীতুগ্ধ লঘু, স্বাদু, লবণাস্বাদ ও দীপন। ইহা পান করিলে ক্রেন, কুন্ঠ, কফ, আনাহ, শোধ ও উদর রোগ নিবারিত হয়।

दिख्नी दुग्धम्।

ব্৲ছণ ছবিনী দুখা মধুরা তুবরা গুরু। ব্যাৎ বলাং ছিনা স্নিখা চকুষা বিরকারকণ্ ॥

रिखनी दुग्ध।

হস্তিনীতৃগ্ধ রংহণ, মধুর, কধান, ওরে, রুষ্য, বলকারক, শীদল, স্নিগ্ধ, চফের স্বাহ্য কর ৩৪ সৈহব্যকরেক।

नाबं जुग्रम्।

নাৰ্য্যা সমু পয়ং শীতৎ দীপন্ৎ বাঙলিতজিৎ। চকুং শূলাভিয়াতল্পৎ নস্যান্ধোতনয়োবঃন্।

नाबीम्ग्रा

নারাত্রগুধ পর্, শীতল, দীপন, বাসু পিক নাশক এবং চক্ষুঃশূল ও অভিযাত নাশক। ইহা নস্য ও আন্চোতন ক্রিয়ার শ্রেষ্ঠ উপযোগী।

श्टब्रीक्कामि मृग्ध खनाः।

ধারোজৎ খোপয়ে। বলাৎ সমূপীড়ং সুধাসৰ । বীপনক ত্রিহোবস্থা জন্ধারালিলিরং ভাজেৎ র ধারোজং শস্যকে বব্যং ধারালীভদ্ধ বাধিবন । শুভোজ মাবিকং পর্বাং শুক্তপীত বলাপরঃ ঃ

शादतास्थानि क्दन्यत छन।

বারোফ্র বোচ্গ্র বলকারক, শঘু, শীকল, অমৃস্তুলা, দীপন ও ত্রিদোষ ন.শক। ধারাশীকল দুগ্র (দোহুনাজে কিবং অ'ণ থাকিয়া শীকলত। প্রাপ্ত ।

গোলুগ্ধগারোফাই প্রশন্ত, মাতিষ্কুগ্ধ
ধারাশীতল উপকারী, মেন্তুগ্ধ শৃতোঞ্চ
(শৃতশব্দের অর্থ নিজ) ও ছাগতলধ্
শৃতশীতল প্রশন্ত। গরা ও মাহিষ তুগ্ধ
ভিল্ল আনা সকল তুগ্ধ অপক অবভার অভিযানা, গুরু, শ্লেল জনক, আমবর্জক ও
অপথা। মহুষা তুগ্ধ কাঁচাই হিতকর,
ইহা উত্তপ করিনে অপকারক হর।

শৃতোফ তুগ্ধ বাতলেয় নাশক, শৃত শীতল তুগ্ধ পিন্তনাশক, দৃদ্ধ অধ্বেক জল দিবা অধি সন্তাপে জলভাগ মারিরা দৃগ্ধ মাত্র অবশিষ্ট রাখিলে ঐ দৃগ্ধ অপক দৃগ্ধাণৈকা লঘুতর হয়। নির্দ্ধ দৃগ্ধ জালাদিরা যত অধিক ঘন করিবে, উলা তত্ত গুরুত্র, দ্বিগ্ধ, প্রা ও বলবদ্ধ ক হইবে।

পেরু ব বিলাট ক্ষীরশাক ডক্রেগিও মোরটানাং লক্ষণানি গুগাঁশট। ক্ষীরং ভংকাল স্কারা বয়ং পেতৃর বুড়াডে। মুক্ত দুগুরা প্রসা পিঞা ব্যোগ্রা বিদ্যারক। অপ্রমেব বয়কী আছিলাক হি তথ পয়ং।
মুখা তজ্ঞেব বা নকী পূর্ব বন্ধ পুবাসনা ।
অবভাগেন র'ছত ভক্রাপ্ত স উচ্যতে।
নকীপূর্ব ভবমীর মোরউজ্জেত্য হত্তবি ।
পেয়ুবঞ্চ কিলাউন্চ জীরলাক ভবৈব চ।
ভক্রাপ্ত ইবে ব্যা সুমুহবা বলবর্জনাই ।
ভারবং স্থোলা হ্বা বার্ড প্র বিনালনাই।
ভীরাধীনা মিনিজানা বিজ্ঞান হব প্রত্যা হ
মুখলোৰ ভ্যান্ত রক্তান হব প্রত্যা হ
মুখলোৰ ভ্যান্ত রক্তান হব প্রত্যা ।
স্মুর্বাক্তরে ক্রচ্যো মোরউঃ স্যাংনিভানুভঃ ।

পের্য, কিলাট, ক্ষীরশাক, তক্রপিও ও মোরট ।

অচির প্রস্ত গাভীর ঘদ চুগ্ধকে পেষ্য বলে। নষ্ট চুগ্ধ জ্বাল দিয়া পিও কারলে তাহাকে কিলাট কছে। অপক মষ্ট ছুগেধর নাম ক্ষীরশাক। দুধি বা ভক্ত দ্বার। বিকৃত চুগ্ধ বন্ধে বন্ধ করিয়া তাহার দ্ৰব ভাগ নিৰ্গত হইয়া যাহা অবশিষ্ট থাকে, ভাহাকে ডক্রেপিও বলে। নষ্ট তুগ্রেখৎপল্ল জলীয় ভাগকে মোরট বলে। পেষ্য, কিলাট, কারশাক ও ডক্রেপিও **এই नकल ख**रा द्रशा, दुःश्व, रलरफ क, প্ৰক্ল, শ্লেম জনক, হৃদ্য ও বাব্'ণিভ নাশক। এই সকল জবা দীপ্তামি ও নিজাহীন ব্যক্তির পক্ষে এবং বিছ'ধ द्यारम विष्यंत्र केलकावक । हिनि मः युक মোরট লঘু, বলকারক ও রুচা। ইহা खाकरन म्यरमाय, कृष्का, मार, त्रकिशिव ও জন্ম নিবারণ হর।

সম্ভানিকা।

मञ्जातिका चंत्रः नीता वृष्णा नितास वास्तृः। धुर्नेदी कुष्यती विष्या समाग यम खल्ला ह সর

সন্তানিকা অর্থাৎ সর ওফ, শীন্তল, বুষা, ভৃথিজনক, বৃংহণ, শ্বিপ্থ, বলকারক, কফজনক, শুল্লোৎপাদক, বার্প্রশমক ও রক্তপিত নাশক।

থ গাদি সুক্ত দুগ্ধ গুণাঃ। থডেন সহিত দুগ্ধ কৰিছিং প্ৰমাণহন্। সিডা সিডোপলাযুক শুক্ত শিকাপহন্। সঙ্ভ মুক্ত মুখ শিক্তমে কর পরন্।

थ शामित्रुक्त कुरन् भन्न छन ।

থতের (খাঁড়ের) দহিত ছুগ্ধ পান করিলে কফ বৃদ্ধি ও বায়ুনাশ হয়। চিনি বা মিছরি সংযুক্ত ছুগ্ধ শুক্তকলক ও ত্রিদোষ নাশক। গুড়ের সহিত পান করিলে মৃত্রকচ্ছুরোগ নিবারণ ও শিস্ত-শ্লেয়াব বৃদ্ধি হয়।

প্রভাগে দিভবং হুগ্ধম্।

ছাত্রী চক্র গুণাধিক) দ্বায়ামাকরণার্থা। প্রাডাতিক ১ ওদাপ্রায়ং প্রাদোব দ্বকু দীতসমূ । দিবকের করাঘাতাৎ ব্যায়ামানল সেবমাৎ। প্রাডাতিকালু প্রাদে ম১ লঘুবাত কফাপহম্য

ममन्न विरमस्य हुन् रभन्न थान रक्त ।

বাত্তিকালে স্থিপ্তা হেতৃ ও শারী-রিক শ্রমাদি বক্ষানহেতৃ প্রাক্তনালীন চুগ্ধ সন্ধ্যাকালের চুগ্ধ অন্যেকা গুরু ও শীকল এবং স্থ্য কিরপ ও বারোম সেবনাদি হেতু প্রদোষ কালের চুগ্ধ প্রাঞ্জিক চুগ্ধ অপেক্ষা পদু ও বাজ প্রেয় নাশক। দুগ্ধ গোধন সময় বিশেধেণ গুণমাত।
বৃষ্যাং বৃংহৰ ৰাম দীপানকয়ং পূৰ্ব্যাহ্মকালে
পৰো
ধৰ্যাকে তু ধ্যাধহং কক্ষয়ং শিক্ষাপহং দীপদন্।
বালে বৃদ্ধিকএং ক্ষয় কর করং বৃংগ্রু

রাজৌ পথ্য দমেক দ্যোৰ প্রমণ ক্ষারণ সহা পেব্যার ॥

রম্বন্ধ পেরং থিলি কেবলং পর্যা ভোজাং ন তেনেছ সংঘাদ্দন্য। ভবভাজীর্নে ন লরীত সক্ষরা জীরসা পীউসা ন শেষ যুৎসূজেং । বিহাছীনাম পাশানি দ্বা জুংজে ছি যমরং। ভিশ্বিলাছ প্রশান্তার্থাং জীরং সন্ধা পিবেং । দ্বীপ্রান্দল কুলে পুংসি বালে বৃদ্ধে প্রথপ্রয়ে। যতং ছিত্তমং প্রথং সন্ধা: স্তজ্ঞকরং যতঃ ।

मभन्न विद्यास्य मृत्य तमवदनन्न छन्।

প্রাক্তঃকালীন দুপ্র ব্যা, বৃংছণ ও অধিদীপ্রিকর, মধ্যাহেক বলকারক, কফ পিত নাশক ও দীপানু, রাত্তি কালের দুগ্র পথা ও অনেক দোষ নিবারক। দুগ্র বালকের দেখ বৃদ্ধি, বৃদ্ধের ভাঞে বৃদ্ধি ও ক্ষরবোগ শান্তি করে।

আনেকে বলেন রাত্তিতে কেবল মাত্র
দুগ্ধ পান করিবে, দুগ্ধের সহিত
ভোজা জবা আগার করিবে না, অজীর্ণ
হইলে কিবং জণ শরন করিবে না। দুগ্ধ
পান করির। ভাগার অবশিষ্ট রাধা উচিত
নহে। দিবলে মে দকল বিদাহী অন্নপান সেবন করা যায়, ভাগাদের বিদাহ
শান্তির নিমিত রাত্তিতে দুগ্ধ পান করা
উচিত। দীপ্তাধি, কুশ, বালক, বৃদ্ধ ও
দুগ্ধ প্রির ব্যক্তির প্রেক্ষ দুগ্ধ আত
হিতকারী প্রা, কারণ ইহা সদ্যা শুক্তেজনক।

মধিতিস্য সূর্গ্রস্য গুণা। ।
ক্ষীরংগব্য মধাজংবা কোজং দঙাহতং লিবেং।
লয়ু ব্যাং জয়হয়ং বাত পিন্ধ কঞালহয়্।

मिकि मृग्द्धत्र 🐠 ।

मिश्च क्रियम् क्षान्त्र वा छात्र मृग्ध भव्, द्वा ७ जिल्लाव नामक ।

मृत्र्यक्तस्थाः।

त्वामूच शक्य किश्या क्याचीमूक्षममूम्क्यम्। कृत्य रक्षम विद्याचन्न द्वावम रक्षम्ब । वस्त्रिक्षम वृष्य मानुक्षिम् । वश्यक्षम् । कृतिमाद्वर्श्वभाष्टम् व स्वद्य सीद्वं श्रम्माद्व ॥

स्य (१८कन ।

নোদৃগ্ধ বা ছাগদৃগ্ধের ফেন বিদোষয়, রোচক, বলবদ্ধক ক, আমিবৃদ্ধি কারক, বুষা, সদাঃ তৃদ্যিকর ও লঘু। দৃগ্ধফেন অভিসার, অধিমান্দ্য ও ফীর্ণ-জরে বিশেষ উপকারক।

मिलिक ए भूग्रम्।

विवर्गः विवर्गः श्रीकः पूर्वकः अभिकः श्रीः । वर्ष्कदम् प्रमानवन् मूकः पूक्तानिकन्छः ॥

নিশিত দুগ্ধ।

বিবর্ণ, বিরস, সমা, দুর্মন্ধ, প্রবিত (ছেঁড়া) ও অম স্বশ্যুক্ত দুগ ধ বক্তনীয়, কারণ উহা পান করিলে বুদ্ধি প্রভৃতি নষ্ট হয়।

ত্রিংশন্তমোহধ্যার:।

मधियर्गः।

प्रदेश श्वनाः ।

বযা,শাং দীপনং বিশাং কৰার্যনুরসং শুরু। পাকেংরাং খান পিথান্ত পোরে বেঁশুকেক রাধ্য। षुज्ञकूटम्ब् अस्तिन)रिप्र मीक्टम विवटम कटा । व्यक्तिमारहः क्रटो कटिनी मन)रक वसस्यक्रक्. ॥

स्थ ।

দ্ধি উষ্ণা, দীপন, শ্লিণ্ব, ঈষং
ক্ষার রস, গ্রন্থ ও পাকে অসন। দ্ধি
ভোজনে বাস, রক্তপিন, শোগ, মেদঃ
ও কফ জালিয়া থাকে। কিন্তু মৃত্রনুচ্ছু,
প্রভিশ্যায়, শীভসংযুক্ত বিষমত্বর, অভিদার, জাকুচি ও কার্শ্য রোগে দ্ধি বলকারক
ও শুক্ত কনক হটবা উপকাব করে।

मिश्रिक्षाः ।

चारके मन्त्र उत्तर सावू सावज्ञक उत्तर शहरू। चज्ञर ठळूर्व गडाज्ञर शकरण वरि शकरा॥

मनिर्छम ।

মন্দ, স্বাদু, স্বাহন, আন ও আত্যর এই পাঁচ প্রকার দবি।

सन्तानीनाः लाकानांन छन्। मन्द्र ।
सन्दर्भ नृष्णे विन्तु ४९ (मायक्ष दिपादक्ष ॥
सन्दर्भ नृष्णे विन्तु ४९ (मायक्ष दिपादक्ष ॥
सरम्यान् सम्बार्ग राज्य गानु निर्मायक्ष विपादक्ष ॥
सरम्यान् सम्बार्ग राज्य गानु निर्मायक्ष ।
सान्न मायक्ष सम्बार्ग निर्मायक्ष सम्बार्ग ।
सान्न मायक्ष मधुर्य न्यायानुस्तर छत्यः ।
साम्ममा अना (क्याम मायाना मनियक्ष न्या ।
साम्ममा अना (क्याम मायाना मनियक्ष न्या ।
साम्ममा अना (क्याम न्यायान्सम् ।
साम्ममा अना (क्याम न्यायान्सम् ।
साम्ममा अना (क्याम न्यायान्सम् ।
साम्ममा साम्ममा नियक्ष मायक्ष निर्मायक्ष ।
साम्ममा साममा साम्ममा साम्ममा साममा साम्ममा साममा साम

मक्षि अञ्चित्र चन ।

.मंत्रवित प्रविद्या थात पृत्रवत सिंह्य, अंत्राक्तापार ७ विकिश्यनः सम मिर मनम्ब धार्वक, बिस्याय कनकं अ रिमाही।

ষাহা সম্যুক রূপে ক্ষম ইইরাছে, স্পাঞ্চ আবুরস উৎপন্ন ইইরাছে ও অন্তর্ম বিশেষ বে,ঝ; মার না ভাহাকে স্থাদৃদ্ধি কহে। স্থাদু দ্ধি অভিশন্ন অভিযাদা, বৃষ্য, মেদোবদ্ধ ক, কফজনক, বংযুনাশক, পাকে মধুর ও রক্তপিত শান্তিকর।

সাচর দ্ধি ঘন, মধুর, ঈষৎ ক্ষার বদ, ইহার ওণ সাধারণ দ্ধির ন্যার জা'নবে। যাহার মিষ্টরস তিরোহিত হুইবাছে ও ব্যক্তরণ অমুরদ উৎপদ্ধ হুইবাছে ভাহাকে অমু দ্ধি কহে। ক্লম্ম দ্ধি দীপন, রক্তপিত বর্দ ক ও ক্ষর্মন্ধি কারক। ভাতার দ্ধি ভোতন ক্রিলে দ্ভহর্ষ, রোমাঞ্চ ও ক্রাদ্ধি দীপন, অতিশ্বত হব। এই রপ দ্ধি দীপন, অতিশ্বত রক্তপিত ক্রক ও বাত রক্তোৎ পাদক।

त्नामिति खनाः।

त्रवार वर्ष (राणरवन वावनूक क्रकिशवम् । भागवर वीभागः कवार शक्किर भरमानवम् ॥ केकर वक्षा माणवानार यस्या भवार सनाविकम् ॥

त्शावरि ।

গব্য দধি উত্তম স্বাদ্, অন্ন, ক্ষৃতিপ্রদ্, পবিবে, দীপন, জ্বা, পৃষ্টকারক ও বারু-নাশক। সকল প্রকার দধির মধ্যে পব্য দধি উৎক্ষী।

मार्थिष्यि स्थाः।

বাধ্যি পৰি সুলিও। মেলসং বাৰণিকৰুও। খাৰ্ পাক বভিষ্যাব্যুক্ত ওৰ্মজ দূৰকৰু।

" यदिव पवि ।

ধাৰিং দ্বি শ্বিথ, ককজনক, বার্-নিত দাশক, স্বাস্থ্য পাক, অভিব্যক্ষী, র্ব্য, কদ ও রক্তদূবক।

ছानीवरि ।

আস্ত্রং প্রয়ন্ত্রণ প্রাক্তি করু বোরত্ররীপাচন । প্রস্তুতে স্থাস কাসার্লঃ কয়কার্ল্যেমু দীপানন্ ।

कागम्ब ।

ছাগদ্ধি উত্তম গ্রাহী, লঘু, দীপন ও ত্রিদোৰ নাশক। খাস, কাস, অর্শ্য, ক্ষারোগ ও কার্শ্যরোগ ইহা প্রশস্ত।

প্রকৃত্বধার্থ।

প্র দুর্বভ্রণ রচ্চাৎ করিছিল। ধ্রণোভ্যন্। শিক্তানিলাপহৎ সর্ক্ষ ধাত্রাহা বলবর্জনন্ত্র

शक्तुरस्त्र पशि।

প্রকৃত্ব জাত দ্বি স্কচ্য, স্বিত্ব, উৎ-কৃষ্ট গুণবিশিষ্ট, বার্পিত্তনাশক সমুদার ধাতু পৃষ্টিকর, অমিকারক ও বশবর্ত্বক।

निःगत चुक्क मर्वि ।

समाहर इति मरश्रादि भीकतर राजनर स्यूत्र विकेषि होनवर क्षत्रार अवनी स्तावनानस्त

मबरीम कृटबंब परि।

निःगत वृति नः शार्टी, भीकन, तातु-सन्दर्भ, नयू. विक्रेकी, वोगन, क्रवा ७ शहरी द्वान नामकः

शानिक वृषि।

থালিক। বাব বুলিক। বাকস্থা কক্ষুৰ্ ৰঞ। বলপুতিকর। প্ৰচাৎ বধুমং বাতি শিল স্থুণ ৪

शामिक वृथि।

গালিত দৰি ভুন্নির, বাতস, ক্ষ-কারক, গুরু, বলকারক প্রিকর, স্নতঃ শুমধুর ইহা অধিক পিত জনক নহে।

শৰ্করায়ি সহিত মধি। সপক্ষিৎ মুখি জেওঁৎ ভূজা পিছাক্স হাইজিও। সঞ্জত বাতমুক বুযাৎ বুংহৰৎ কৰ্পৰৎ গ্ৰন্থ ৪

भक्ताणि नश्युक पश्चि ।

চিনির সহিত দবি সেবলে ভ্ষা, রক্তপিত ও দাহ নিবারণ হর। ৩ড় সংসূক্ত দবি বার্নাশক, রুবা, রুংহণ, ভ্যিকর ও ওয়া।

त्रारको स्विष्टाक्षम् मिरवर्षः।

म मकः परिकृषोकं महानाः स्वन्यस्यः ।

मात्र्वप्रदेशः मा क्ष्मेकः साक्ष्मायस्य सिर्माः ॥

कवा हः नागःक स्विरमा त्रारको नक्षकाः

स्वाद्वित् ।

स्वन्नितं सरकारचत्रु विकारतन् क्रू देनरकः ॥

রাত্রিতে দধি ভোজন করিবেশা যদি ভোজন করিতে হন্ন ভাহা হইলে মুদ্দা যুব, মধুবা আমলভেদ্দ লহিভ ভোজন করিবে, উফ্ল করিয়া ভোজন করা নিবিশ্ব।

অনাস্থলেও এই রূপ উক্ত আছে, যথা নাত্রিতে যথি কোজন বিহিন্ধ, কিছ অল ১৪ বুক নংগুক ক্ষিয়া ভোলন, कतित्न त्याचावर रत्र मा। त्रक्तिशत । क्रमक द्वांत्र थाकित्न यदि अदक्वाद्र निविद्य।

अङ्ग वित्मत्य विति नित्यत ।

বেম্স, শ'ত ও বর্ষাকালে দরি ভোজন প্রশন্ত এবং শরৎ, গ্রীম ও বদস্ত কালে দরি ভোজন প্রথা নিষিদ্ধ।

অবিধিনা দ্বি সেবনে দোৰম'হ। আয়াসূক্ শিশুবীসৰ্প কৃষ্ঠ পাঙ্গনয়ত্ৰমান্। এবাধায়াৰ কামলাকোনা১ বিধি১ ছিড্ৰা দ্ধিনিয়া।

> বিধি লভ্যন করিষ। দধি ভোজনের ফল।

আৰিধি মতে দধি ভোজন কবিলে, জার, রক্তপিত, বীসর্পা, কুঠ, পাণ্ডুবোন, ভাম ও উৎকট কামণা রোগ উপান্থত হয়।

नत्र म्खा

বস্ত্ৰপত্নি যোভাগো খনং ছেছ সমস্থিত।
সংগাৰে সহ ইতু তে। বঙ্গো মঙক মঙ্গৈত।
সৱং বাণ্ডাকুর যো বাতবাল প্রণালন।
সাম্মেরতি প্রশ্নমং পিরস্প্রেল বিষ্কৃত।
স্থোত্তা বিশোধন আ'দ ক্ষত্ভানিলাপহণ।
অনুযাহ প্রথমন শীয়া ভিনত্ত ক্ষ্যকর্ম।

मद्र 😢 सम्बा

ষ্থির উপরিভাবে হন ও ক্লেহ প্রার্থ সংযুক্ত যে অংশ থাকে ভাহাকে দৃধির সর এবং মতকে মন্ত বলে।

দবিব সর স্বাতৃ, গুরু, বুবু, বাবুনাশক অনিন্দ্যকারক, অমুবস বিশিষ্ট, বৃদ্ধি শেষক ও কফ পিতৃৎদ্ধ ক। দ্ধির মস্ত (মাত) ক্লাজি নাশ্যু, বলকর, লঘু, অল্লে ফ্চি প্রান, স্লোভো বিশেষক, আইলাদ জনক, কফনাশক, তৃফানিবারক, বারু-নশক, বলহাস কাণী ও তৃপ্তি ক্লনক। ইহা শীঘ্র মল সংঘাত ভেদ করে।

ত্রকরিংশন্তমে। ২ধ্যায়: ।

তক্রবর্গ । তক্রম্ ।

যোগত ৰথিত তক্ৰ মুদ্ধিক্ত জিকাপি চ।
সসয় শৈৰ্জি যোগ ৰ প্ৰত বুসৱোৰকৰ্ ।
তক্ৰ পাৰ জগ প্ৰাক্ত মুদ্ধিন্ত ক্ৰ বাহিকৰ্।
ছজিকো সাগ্ৰইণা স্যাহ ধজা প্ৰচুৱ বাহিকা ।
যোগজ শক্ষা মুক্ত গৌনজে মি রসালবহ।
বাতপিক ৰয় হলাপ মধিক কফপিতমুহ ।
তক্ষ্ম মাত্ৰ কৰায়ায় যাদুপাক রসা লক্ষা।
বাহিচাক্ষা দিশন বুবা প্রাক্ত মি বাভনাশনৰ্ ।
বাহনাদি মতা প্রা ভবেহ সংগ্রাহ লাহবাহ।
কিক্তবাদু বিপাকিত্রায় দিত প্রকোশনৰ্ ।
ক্রায়োক্ষ বিপাকিত্রা ভৌক্ষাক্ত শিক্তাপ্রন্

নতক্রনেরী ব্যথতে কছাটিৎ
নতক্র হুজাঃ প্রস্তর্বভারে ।
যথা সুরাণাৎ অনুতৎ সূর্বণর
তথা নরাণাৎ ভূষিতক্রম হুঃ ঃ
উর্বাধি কফকুছসাৎ আনমুৎ পর্যাহরী ঃ
বাতমুৎ কফকুৎ সাতু ধীপণী স্ববাহ্নিঃ ।
সমুষ্ঠ্ ভংযুত্ত ডক্রাৎ পরাৎ স্থা বিশেষতঃ ঃ

(सारकास्वयुक्त क्यांच् क्षेत्र युवा) कर्यायवत् । स्त्रू क्षूक्त आस्त्र क्ष्यू कृषि कर्यायव् ॥ सारक्ष्यात्र गिलायुक्त गरवात्र मंश्रक करण्य ॥ क्ष्य्यायः क्ष्यः (कारके स्विकरके करवाल् ॥ भीयमं भाग कार्यारमे लेक्स्य अर्थुकारः । स्टब्स्कीय व्यक्ष सर्वारकोगात्र २० वरम् ॥ स्रृष्ठमः भूकिए। वस्त्रु वश्चिम् विसाणसम् । मृजक्रम् कु महक्ता भाव द्वारा गठिक्रकन् ॥

(नाम।

त्यान, विषक, कत्क, डेमियर छ ছ'চ্ছুকা এই তালি ইহার পর্যায়। সর नः पुक्क निर्श्वल परित न म रणान, नवशीन निक्क ल मधित नाम मधिक, प्रकृषीरभ অলসংযুক্ত দধির নাম তাল, আক্রেক कल विभिष्ठे प्रतित सम डेन चर, मात्रीन ष्रित माग एकिना थार श्राप्त कल সংস্কুত দৰির নাম স্বাচ্চা। শর্করা মি শব ঘোল রসালবৎ গুণকাটা ও বাধ পিত নাশক ও আজনাদ জনক। মণিত কফ পিত নাশক। ভক্তগ্ৰাহী কৰাৰ ও অস্ত্ৰ-द्रम, कीर्न इहेश अह द्रम रुव, हुँदा ण्यू, উक्षवीधा, मीणन दूषा, खे, हिस्रनक বাৰু নাশক, প্ৰহণী প্ৰভৃতি বোলে প্ৰা লবুত্ব হেতু সংগ্রাহী, ভাগ হট্যা পাতু ক্ষার 😮 উষ্ণ হর বলিয়া এবং রুমাল। হেতৃ পিত প্রকৃপিত করে না এবং কফ निव'द्रव करत्र ।

ভক্ত দেবী ব্যক্তি কপুন ব্যথিত হণ না, ভক্ত দেবনে রোগ দকল প্রবল হইতে পারেনা, অমৃত যে রূপ দেবতা-গণের হ্ব জনক, পৃথিবীতে ভক্তও দেই রূপ মুখ্যা দিলের উপকারী। উত্থাৰ কঞ্জায়ক, বলকর ও উত্তর্ম আবদ্ধ। ছবিকা শীতল, লগু, শির্তন্ত প্রান্তি নাশক, তৃফা নিবাংক, বাযু দাশক ও কফ জনক। লবং মিপ্রিত করিয়া ডক্রে সেবন কবিলে অগ্নি দীথি হব।

তক্র হটতে সম্পুরিপ ঘৃত উদ্ধ্ কিবিয়া লইলে তাতা অদিশব লঘু ও কুণ্ডা হয়, অল পরিমাণে উদ্ভ করিলে উহা ওচ, বৃহাও কফ জনক হুম এবং ঘৃত উদ্ধাব না করিলে খন ওক্ন পুষ্টিকর ও প্রোয়ার্কিক হুম।

বয় রাশ্ধ হটলে শুঠী ও নৈশার
লিম্বের সঞ্চিত তারু সেবন উপকারী, পিতা
প্রবল হটলে স্থান্ত চিনিব সহিত এবং
কফাবিকো শুঠী, পিপুলা ও মরিচ
চুর্নের সহিত তারু স্পাধা। ছিলু,
ভাবক ও নৈশার সংস্কু ঘোলা ক্রচি
কাবক, পৃষ্টিকর, বলাস্কু আদিও অভিনার
বাহর এবং বস্তিপুল আদিও অভিনার
রোগে স্থাধা। মৃত্রকুরোগে শুড়ের
নাহত ও পাপুরোগে চিতার মুলের
সহিত মেবনীয়।

আশক হতে কোঠের কফনাশ ও কঠে কফশ্লঞ্য করে। পীনস, খাস ও কা-সাদি রোগে থক্ হতে প্রশস্ত ।

कक्रायन विधिः।

লী চকালেছ প্রন'দেশ চ তলাগাতাবংগ্রন্থ চ ।
আনতো ক্রোভগাং রোধে হজাংসাালমুক্তেপেনন্থ ।
ভঙ্গুতি প্রস্তুমি প্রস্কে 'বৰ্ষজ্ঞান্ন ।
লাভ বেখো এলন,লোঁ সুক্রমন্থ ভবাদ্যান্থ ।
মেছা এল্ বভীসালং শূল প্লীব্যেদ্যাক্ষরী । "
বিত্রকোঠ প্রবীধীন্ কুঠলোক ভ্রাক্ষিমীন্থ ঃ

रेमबक्कः करक म्याध्याककारम म् पूर्वरम । मयुक्तः अम्योदयम् म द्वारण त्रकणिवदस ॥ सामुक्तामि मथीमारका कम्सन् कक्कमान्दिन ।

ভক্ত দেবন বিধি।

শীতকালে, মন্দারিতে বাতরোগে,
অক্লচিতে ও প্রোভঃ ক্রছ হইলে তক্রে
অমৃত্রের ন্যার হিতকারী। তক্র নেবনে
বিষ, বমি, প্রনেদক, বিষমজ্ঞর, পাতু, মেদের
রোগ, গ্রহণী, অর্শঃ, মৃত্রগ্রহ, ভগন্দর,
মেহ, ওলা, অতিসার, শৃল, প্লীহা, উদর
রোগ, অফ্লচি, খিত্র, কোন্ঠ গত ব্যাধি,
কুঠ, শোণ, তৃষ্ণা ও ক্রিমি রোগ
নিবারিত হয়। হ্মত, দৌর্বল্যা, মৃচ্ছা,
ল্রম, দাহ ও রক্তাণিত বিকাইর এবং
উষ্ণকালে তক্রে অব্যবহাত্ত্ব। যে কণ
সব্যাদি অন্ত প্রকার দ্বি লিখিত হইরাছে
ভাহাদের তংক্রেরও সেই সেই গুণ
জানিবে।

षाजिदमंखत्मारशाय ।

नवनीक्वत्र : ।

नवनोष्ठम् ।

মৃক্তবং সরজং হৈছেকানং নবনীতকৰ ।

সংস্থাতি হৈতে থ্যাং বৃত্যাং বৰ্ণবলাগ্রিকং ।

সংস্থাতি বাজপিভাসূক্ ক্ষয়াপোহিত্য কাসভং ।
ভাজিতং বাজকে বৃত্তে বিশোধাসমূতং বিশোধা ।

भरामयमीख ।

মৃক্ষণ, সরফ্ষ হৈরশ্বীন ও নবনীত এই ওলি ইহার প্র্যার।

्र_{क्र}भरा मरमीच शिख्यनक, तृशा, लार-भ्यांश्लाहक, समस्रातक, खेलिकत ७ শংগ্রাহী। শবনীত ভক্ষণে বাভিক রঞ্জপিত্ত, ক্ষররোগ, আর্শ্য, আর্থিত ও কাল
রোগে উপকার দর্শে, ইহা বালক ও
র্ছের পক্ষে উপকারক, বিশেষতঃ শিশুর
পক্ষে অমৃত সমৃদা।

माहित नवनी छक्म।

নগনীত\ মহিব্যাক্ত বাতপ্লেক্স কয়\ প্রক । দার্ঘণিত আমহর\ নেবং প্রক বিবর্তন্দ্র

माहिष नवनीछ।

নাহিষ নবনীত বাতপ্লেম জনক ও গুরু। ইহা জন্মণ করিলে দাহ, পিতা ও আই নিবারিত এবং মেদঃ ও ভক্ত বিদ্ধিত হয়।

পরদোনবনী তক্ষ্।

দুখোখাৎ নবনীতাং তু চমুখাৎ রঞ্জণি**ভ**দুৎ। বুখাৎ বল্য দতি স্বিঋণ মধুরং প্রাহী লীভন্য র

मृत्क्षायमञ्ज नवनीक ।

দুয়োথ নবনীত চকুর স্বাচ্যকর, রক্তেপিত নাশক, বৃহা, বলকারক, অভি-শব সিগ্ধ, মধুর, গ্রাহী ও শীতল।

नगःनम्ब क नश्मीकम्।

নবনীতভ সদ্যত্ত\ ৰাধুপ্ৰাধি হিন্দং সমৃ। বেধাং কিঞিৎ কৰায়াল্ল নীৰচক্ৰাংক সংক্ৰমাৎ ট্ৰ

महा डेड्ड नवनीक ।

নদ্যোজাত নগনীত স্বাদ্ প্রাহী, শীতল, লঘু, শ্বরণশক্তি বর্ত্ত এবং আর পরিমাণে তক্তে সংযোগ হেতু কিঞিৎ অয় ও ক্যায়াস্থায়। हित्रसम् नदमीसम् । मकान्न क्ष्ट्रिकालक्षा व्यक्तानाः कृषेकालकम् । रक्षसम् बाल्यवस्त्राभ नदमीक्ष क्षित्रसम् ।

চিत्रक्षम मदमीक।

আহিক দিবলের ন্বনীত প্রেম জনক, গুরু, মেদো বর্জক এবং উহাতে জারগুণ কটু ও অর্রস থাকাতে, দেবন করিলে বমি, অর্শ ও কুঁইরোগ উৎপন্ন হইতে পারে।

जञ्जिः भंखरमार्थाप्रः।

দ্বত বর্মঃ।

ছুতম্।

মূড ৰাজ্য হ'বিং সপিং কঠাৰে ভদ্ধৰ। অৰ্থ। ঘূঠৎ বসায়ৰ্থ ৰাষ্টু চকুষ্য হ'ব ছীপনৰ ঃ খীতবাৰ্য্য বিৰালক্ষী পাপপিতানিদাপহৰ্। অংলাভিয়াকি কাৰ্যোক্তং ডেকো নাবৰ) বৃক্তিকৃৎকঃ

বরন্ধ ডিকর । বেখা বার্যাৎ বলক্ষ্ওর। উহায়ও অরোমার শ্লানার রণান্ হরেও। বিশ্বং কৃষ্ণরং কুষ্ণ কর বীন্প রক্তন্ও।

चुक ।

ন্বত, আজ্ঞা, হবিঃ ও সর্পিঃ এই গুলি ইহার পর্যায়।

দ্বভ রসারন, খাড়, চক্ষা, অমিদীপ্তিকারক, শীতল বীর্ঘা, বিষয়, দারিত্র
নাশক, পাণধুংনী, শিক্ত নাশক, বার্
শান্তি কারক, অর অভিযাশী, লাবণা
অনক, প্রভাবর্ত্তক, ডেজবর, কাভি
ভারক, বুডিউৎপায়ক, খার বিশোধক,
শ্বরণশক্তি বছ ক, বারু বুডিকর, বলকারক,

ওল, বিশ্ব ও প্রের জনক, মুক্ত প্রির্কি করিলে উয়াবর্ত্ত, জর, উন্মায়, শুন, আনাহ, ত্রণ, উরঃক্ষত, বীদর্শ ও রক্তবোর উপশমিত হয়।

स्या चुक्रम् ।

খন্য সূত্ৰ বিশেষের চকুষ্য বৃষ্য মন্ত্রিকৃই । বাদুপাক রসং পীতং বাতপির ককাপখন্ । নেধা লাবন্যকারেয়া জরেজাে বৃদ্ধিকরং পারন্ । অলক্ষমি পাপরক্ষােপ্র ব্যাসঃ ক্ষাপকং গ্রন্থ । বল্যং পবিত্র মান্ত্রখাং সুক্ষলাং রসামুখন্ । সুক্ষাং ব্যাচনং চাক্ল স্থাাজােমু গ্রনাধিকন্ ।

পব্যস্থত।

গবায়ত চক্ষুর বিশেষ উপকারক, বৃষ্য, অধিকারক, স্বাদুপাক, শীতল ও বিদোষদাশক। ইহা মেধা,লাবণ্য, কল্পি, ওজ: ও তেজ: বদ্ধনি করে, অলক্ষ্মী, পাণ ও রাক্ষণ ভব নিবারণ করে, গব্য স্থত ব্যংস্থাপক, ওক্ষে, বলকারক, পবিত্র, আর্ষ্য, স্থশন কনক, রনারন, স্থগন্ধ, রোচক ও মনোহর। গবায়ত সকল হৃত অপেক্ষা শ্রেষ্ট।

মাহিব গুতম্।

যাহিবত যুগ্ধ বাদু শিবজ্ঞা নিমাপমৰ। পাঁজদাং সেৱদাং মুখ্যং জলবাদু বিপায়কে।

मारिय चुका

মাহিব ঘৃত খাদু, মক্তপিত্ত শান্তিকর, বারুনাশক, শীতল প্রেমকারক, বৃষ্য ও ওল্ল, ইহা জীর্ণ হইলে খাদু হয়।

ছাগী মৃত্যু।

আজ্ঞাজ্ঞাৎ করে।ভঃশ্বিৎ চক্ষুবাৎ বলবর্জনম্। কালে আলে করে চাপি বিভং পাকে ভবেৎকটু।

ছাগন্বত।

ছাগদ্ধি উত্তম গ্রাহী, লঘু, দীপন ও ব্রিদোষ নাশক। খাস, কাস, অর্শঃ ফ্রবরোগ ও কার্শ্য রো.গ ইহা প্রশস্ত।

उँद्वी मृष्ट्यू।

क्षेत्र ९ कर्ष्ट्रिगृष्ठ९ भारक (नांचिकाम विद्यालस्य । मीभन९ कथनारुद्वर कुठे उत्तासक्रालस्य ॥

ভট্টা মূত।

উট্রী ঘৃত দাপন ও ব তথেল্ল নাশক তা হিইয়া কটুরস প্রাপ্ত হয়, ইহা পান করিলে শোষ, ক্রি'ম, বিষ, বুই, ওার ও উদর্রোগ নষ্ট হয়।

আ। বিক হ্ৰম্।

পাকে জয়াবিক৲ সপি সর্বরে গ কিনাশনম। কুন্ধি৲ করে।ভি চান্ধানামখারা শক্রা প্রয়ঃ চক্ষুয় মগ্নিধাবণ বাড্ডে,ব 'নবার্নম।

८५४ मूह।

মেষ ছত লঘু পাক, সর্করেণা নাশক, অস্থিত্ব কি, চকুষা ও অগ্নিশ্ব কি। মেষ ছত পান ক'রলে, অশ্মনী, লকরা ও বাত দোষ নিবারণ হয়।

নারী হুত্র্।

भीटक्श्निरण व्यामित्योदय भिरत इटक्क ए जिल्म । इक्षुया बोकार कोनार द। गर्भिः म । स्मृत्कानसम् ॥

मात्री द्वार ।

কমাধিক্যা, বাৰুবৃদ্ধি, ঘোনিদোৰ, পিও প্ৰকোপ ও রক্তদোৰে মনুষ্য ছত বিশেষ উপকাষক। ইহা চক্ষুষ্য ও অমৃত সদৃশ; অন্য হুতও এই সকল ছলে উপকাষক।

অধী ঘূত্ম।

বৃদ্ধি করেটিভ দেহতগ্রহার তাকে বিবাশবন্। তপন নেএরোগন্ন দাবনুদ্বস্বা মৃতন্ত্ত

অখী ঘৃত।

আখন্ত লঘুণাক, দেহ পুষ্টিকাবক, অগিবৰ্দিক, বিষয়, সু'প্ত জনক, চক্ষরোগ নাশক ও দহ নিবাবক।

इक्ष प्रम्।

যুক্ত দুজভাৰ এ'ছি দীতলং নেত্ৰোগছৎ। নিছ'ও পিৱৰাছাত্ৰ মণ্মুছি অমানিলান্ত ডুগুভাৰ ঘুত।

তৃত্ধ ক্লাত ঘৃত গ্ৰহী ও শীকল, পানকৰিলে নেৱবোগ, হৈ তিক দ হ, বজদেষ মান মৃহছা, ভানবোগ ও বানু
নষ্ট হয়।

ह्यास्त्र प्रश्व प्रवाहित प्रवाहित प्रश्व प्रवाहित प्रश्व प्रवाहित प्रश्व प्रवाहित प्रश्व है स्वाहित

পূর্ব দিবদার দধিজাত অর্থাৎ সংদ্যালাত মৃত।

সদ্যোজ হৈ ছাতকে হৈবন্ধবীন বলে। হৈবন্ধবীন চকুষা, দীপন, অভিশয় ক্লচি-কাবক, বলকায়ক, বুংহণ, বৃষ্য ও বিশেষ

পুরাণ ছতম্।

वर्षामुक्तः खरदशकाः भागानः छित्रायस्य । पृष्ठां कुर्वः विरवाकाशानाभक्षात्रं खिन्नः। सम्य ॥ यथा यथाश्रीकाः मार्गः भूतान मधिकः छरवः । ख्या ख्या खरेनः देशः देश त्रस्किः छनूशक्षस्य ॥

পুরাঁতন মৃত।

প্রস্তুত হইবার প্র একবংশর অতীত হইলেই স্তকে শুপুরাতন কহা যায়।
প্রাতন স্ত তিদে, য নশিক। ইহা
ব্যবহার করিলে মৃক্রি, কুঠ, বিষ, উলাদ,
অপ্রার ও ভ্রমবোগ নত্ত হয়। ঘৃত সম্দাব যত প্রাতন হইবে, ততই তাহাদেব
গুণ বৃদ্ধি হয়।

न्छन च्छमा विषयाः।

যৌষ্ণাচেষ্ট্র যেবাষ্ণা৲ ভোষনে ভর্পনে প্রয়ে। বলক্ষয়ে পাঙ্গুর গে কামলানে এরোগয়ে। ঃ

मृत्रम पृत्र (गैरन प्रनः।

ভোজন বা শেতা করণার্থ এবং শ্রাম, বলকার, পাতুবোগ, কামলা ও চকুবোগে নৃতন দ্বত ব্যবদের।

चुक द्धारानमा विषयः।

রাজ্যক্ষা প্রাক্তে চ কৃত্তে প্রেমাকৃতে গবে। রোগে স'মে বিস্কৃতাক বিবক্তে চ নদাভারে । অরে চ ফ্রনে সম্পে ন স্পিক্ত্যনাতে।

श्रुक व्यवदारभव विवत्र।

রাক্ষয়র্না রোগে, বালক বা রুদ্ধের পক্ষে, কফজ রোগে, তরুপ রোগে, বিস্থ-চীতে, মণাদি রোধে, মদাতার রোগে, জ্ঞারে ও অধি মান্দ্যে মৃত প্রশস্ত নহে।

ह्युद्धिः गखरमा २ था। यः ।

रेक्यूवर्गः।

हेक्द्र ।

ইকু দাৰ্থজন প্ৰোক্ত ৰধাড়নি রসোহপি ছ। এড় মুগোহনিপৰণ্চ তথা মধুড়াঃ ক্ষ্যে ঃ ইক্ষবো এড়াপিবলা বল্যা ব্যা ক্ষপ্ৰাণাঃ। স্বাদু পাক রসাং বিভা গুৱবো মুৰলা বিমাঃ।

हेक् ।

পর্যাব। ইক্ষু, দীর্ঘছদ, ভূমিরদ, তঃমৃল, অসিণাত্ত ও মধুস্থ।

তা। ইক্রফাপিত নাশক, বল-কারক, বৃধ্য, কফজনক, খাতু পাক, স্থিত, তারু, মৃত্কারক ও শীতল।

हेका एक मः।

পৌণ্টো ডীরকেশাপি বংশকং শউপোরকং। কাথার খাপদেক্ত কাডেকুং সূচিপত্রকং । নৈপালো দার্জন এচ নালপোরেহির কোলকং। ইতে)তা ছাত্যাঃ - এখাং কর্ত্যাবি প্রবানশি ।

देक्क रूख्य ।

পোত্রক, ভীরুক, বংশক, শতপোর কান্তার, তাপনেক্ষু, কাতেক্ষু, স্চিপত্রক, নৈগাল, দার্ঘপত্র, নীলপোর ও কোশক এই করেক ফাতার ইক্ষু আছে।

পৌ সুক ভীকুকশ্চ।

বাঙলিভ প্ৰশংলো নধুরো রস পাকরোই। সুলীতো বুংহলো বলেয় পোগু কো জী**রক তথা** ৪

भागमामा ७ माडि रेक ।

পোগুক ও ভীক্ত এই উভন বিব

ইক্ষু মধুরাখাদ খাতুপাক, বার পিত শাক্তিকর, ভুশীতল, রংহণ ও বলকারক।

কোশকারঃ।

কোপকারে। গ্রন্থ পীতো রক্ষপিত ক্ষয়াপত:।

कुछहै।

কোণকার ইক্ষু গুরু, দীতল, রক্তপিন্ত নাশক ৩ ক্ষর রোগ শান্তিকর।

কান্তার।

काषात्त्रकृ श्रंक वृष्): (अश्रामा वृष्यनः गहः ॥

कृष्ध**रेग**्र।

কান্তারেকা, ওয়ে, র্য্য, শ্লেমল, রংহণ ও পর ৷

मीर्चटलात वः मकण ।

बीर्चरभातः मुक्ठिमः मकारता राभकः माखः।

मीर्चटलात्र ७ वश्मक ।

দীর্ঘণোর হৃকঠিন ও বংশক ইক্ষ্ ক্ষার বিশিষ্ট। ইহাদিগকে ব্যাই ইক্ষ্ করে।

मंक्ट्याहः।

প্তপ্রা তবেং কিঞ্ছিৎ কোপকার রণাছিত।। বিশেষাং কিঞ্চি মুক্তক সঞ্চারং প্রমাণহং ॥

बद्दाव्यावकः।

শতপোরক অল পরিমাণে কোবকার ইক্ষুদ্র ন্যায় গুণ বিশিষ্ট অধিকন্ত ইহা কিঞ্চিৎ উষ্ণু, ক্ষার বিশিষ্ট ও বারু নাশক। ভাগদেশু।

ভাপনেকু ভবেম্ মূছী সধুৱা স্বেছকোপৰী ৷ ভপৰী ক্লভিক্লাপি বৃষ্যা চ বলকারিবী ॥

हिटनब्रद्याषाई ।

ভাপদেক্ মৃত্, মর্ব, প্রের প্রকো-পক, ভৃথিকারক ফুচিপ্রেদ, ব্বয় ও বলকারক।

कार अक्यू ।

बर् बरेन्ड कार्ट्यः मृत् वाज्याकानमः।

কাতেকা।

কাতের ওপ তাপদেক্র ন্যার কিছ ইহা বার্থকোপক।

> স্চীপত্রনৈপাল দীর্ঘণত্র মীল পোরকান্তাং গুলাঃ।

স্চীপত্রো নীলপোরে: নৈপালো দ্বীর্ঘপত্রকঃ র বাতলা: কক্ষণিকন্নাঃ সক্ষায়া বিদাহিনঃ :

> স্চীপত্ত, নৈপাল, দীর্ঘপত্ত, নীলপোরক ইক্ষু।

ইহার। বাবু জননক, পিতলেম নাশক, ক্যার ও বিদাহী।

बरमाख्या ।

মনোগ্ৰপ্তা বাৰুছয়ী তৃত্তাবদ্ধ বিমালিকী। সুলীভা বধুৱাভীব ব্ৰক্তালিক প্ৰকালিকী ।

मत्माश्वधा हेक्यू।

মনোকপ্তা, ৰাসু নাশক, জ্ফারোগ নাশক, হুলীভল, অভি নধুর ও হক্ত শিস্ত , নিধারক। वाल प्रा दृष्क्य छन ।

ষাল ইচ্ছুঃ কফ্ কুন্) লোছে নেছকরণ্ড সং । যুবা ডু বাবজং যাসুরী ঘতীক্ষশ্চ শিতলুং । রঞ্জাব্দ হরী বৃদ্ধঃ ক্ষতভ্যল্থা হা ঠুং।

खावशारखरम हेन्स्य छन ।

বাল ইকু প্রেমেংগাদক, মেনেবিদ্ধ পি সেহ রোগ জনক। সুবা ইক্ষু বাষু নাশক, স্বাচু, স্বাধং ভীক্ষ ও পিবেয়।
বৃদ্ধ ইক্ষু রক্ত নাশক, মতে নিবারক, বল-প্রাব্যাৎশাদক।

जान्द्ररक्ष्ट्रान ८ ५५०।

ষুলেতু মধুরোহতাথ (মধোহণি মধুরং আ ডঃ। অথ্য গ্রন্থিয় বিজেয় উন্নং পট্রমো জনৈঃ ॥

व्यक्षरकरम् राग ।

ইক্ষুর মূলে অভিশ্ব মধুর রস, মধ্যে । মধুর ও অগ্রন্থিত এফিতে লবণ গদ । বিদ্যমান থাকে।

দস্তলীড়িতেক্ষ্রস্দা প্রণ।

पত নিজ্ঞীড়িত সেঃক্ষেরেষ পিতাজ নাশনঃ।
শক্রান্যবাধ্য নাদ্বিদাহা কফপ্রবংঃ

দস্ত নিশাভিত ইক্রস।

মন্ত চকিতে ইখার রস রক্তিতি নাশক, শক্রার ন্যায বীধ্য বিশিষ্ট, অি-মাহী ও শ্লেম জনক।

গন্ধনিপ্সী ডিতেকুংসসা গুণী। পুৰুষ কন্ধ ক্ষয়াদি পীড়নান্ নগসভ্যাং। কিঞিং কাল বিষ্ঠা চ বিকৃতিং বাতি বাজিকা। গুলাছিল্টা বিউচা প্ৰক্লা স্যাদ্ বাজিকোরসা। यत्र निष्णोष्टिक देशून बन ।

ইক্ষুব মৃপ ও অগ্রন্থিত জন্ধ এবং প্রতি সকল নিজেপ্রিত হওবাতে ও মৃণ, নিশ্রিক থাচাতে এবং কিছু জানক কল ।।।পিনা অবিভাত থাক তে ।।গিন রম বির্ত হইনা উঠে। সেই হেরু উক্ত কপ রস বিদাহী, বিপ্ততী ও অফ।

श्या (श्रक्षं त्रम्या १३१ : ।

। রসঃ পয়ু বিভো কেন্টোছালো দাডালাছা প্রকঃ। কফালিও করং লোখী েম্নলচাতি যুবলাঃ।

০স। খিক (বামি) ইক্ষু রস।

ব নি তইলে ইক্ষুবস বিব্রুত হইব। ইংঠ, ত'দুশ রম তামাধাদ, বায়ুনাশক গুঞ্, শিত্তশ্বে কারক, শোষক, ভেদক গুঝ্তিশ্র মৃহকারক।

राप माम्बरममाखनाः।

পকে। রুসে। গুরুঃ মিথ্য সুতীক্ষঃ ককবান্তনুৎ। গুণুন হ প্রাপমনঃ কিঞিং পিরকরণমূতঃ॥

शक हेक्क वम ।

টকারদ অগ্নিতে পাক করিলে গুরু, শ্রিয় স্থাকা, বাতভ্রেয় নাশক, গুলু নাশক ও কিংকং পিঞাকর হয়।

ইক্রসম্য বিকার শং গুণাঃ।

ইজোবিকারা ভূজ্ দাছ মৃক্ষ্য লিঙাক্ষমালনাঃ। ধরবো মধুর। যল্যাঃ স্থিকা যাড্ছরাঃ সরাঃ ৪ বুজ্যা যোহহরা- দীতা বুংছল্য বিষয়ারিকঃ।

ইক্ষুরদের বিকারের ক্ষর্থ ৎ গুড়াদির গুণ।

ইক্ষু বিকার প্রায়, মধুর, বলকারক, স্থিয়া, বাবু নাশক, সর, রুষা, মোহনাশক শীতশ, রুংহণ ও বিষয়, দেশন করিশে তৃষ্ণা, দাহ, মৃদ্ধা ও রক্তপিত রোগ নিবারিক হয়।

थ। विक्

ছকো রসভ্য পক্ষ কি ক্রিনগাতে। সভরেষ।
সএইসভা বিকারেগ্ থাত ফা নত সং জ্ঞা ॥
ফাবিত ওসভিষ্ঠ প্রতি ক্ষেত্র।
বাত্তির শুমান্ত ধুরবঙি বিশোধন্য।

त्वि (हेक्क तिकात विज्ञाय)।

কি থিং গাঢ ও বছ দ্ব বিশিপ্ত ংক ইক্ষুরদকে ফ। শিত বংশ

ফাণিত গুক্, অভিষ,দী সংহণ, কফজনক ও শুক্রে ৎপাদক। ইচা স্থু, পিত্ত, শুম, মৃত্তবিক্তি ও বস্তিদেশ নি-ৰারণ করে।

भ्रमाः)

ইক্ষোরস্যে মং সনসাসে ঘন কি কিংদ্ দ্রগায়িত। মুক্ষা মংস্কৃত্যতে তথ্যাৎ সমংস্কৃতি নিগদাতে র মংস্কৃতি ভেদিনী বঙ্গা অত্যু পিতানিগাপর। মধুরা কুংহণী ব্যা রক্ষদে ধাপহান্য,তা ঃ

মৎদ্যতিকা (মিছরি)।

কিঞ্চিৎ দ্ব বিশিষ্ঠ পক খন ইক্ষু রবের নাম মংগাড়ী (মিছরি), মক লাক্ষন অরণ হেড়ু ইছার নাম মংগাড়ী। মংশাতী ভেম্বর বলকর, শঘ্, বারু পিত্ত নাশক, মধুর, বৃংহণ, বৃষ্য ও রক্তদ্যেষ নিবারক।

43.**2**; 1

ইক্ষোরদো য' সক্ষাকা আহতে লোই বন্ধ চঃ। সগুড়ো গোড়দোশ তু মহস্যতে ব গুড়োমভঃ ॥ গুড়ো বয়ে, গুড়া ক্রিছো মুক্শোধন। নাতিশিক হলে মেদ্ ক্মার্থে বলপ্রায়।

1 5 CV

ইক্ষুবদ পাক করিষ। নোষ্টের নার দৃঢ় কবিলে ভাগকে গুড় বদাযায গৌড় দেশে মংশ্যালা অর্থং নিছবিকে গুড় বংশ।

ওড় রুষা, ওঝ, স্লিগ্ধ, বাজস্ন, মূত্র বিভাগ্ধিক বক, মেদোবগ্ধিক শ্লেমকারক, কি'মজনক ও বলকর, ইহা বিশেষ পিত্র নহে। •

स्यान्त छन्।

প্তরো জীবে পয়ু পলে/হনভিদান্স **পুঞ্চিত্ত।** পিওছো মধুছে। বৃষ্ধে, বা**ডগ্রোহস্তক্ প্রসাধন ।**

भ्दाह्म छछ।

জী- থিড় লঘু পথা, অনভিষানী, অগ্নিকারক পৃষ্টিকর, পিতার, মধ্র, র্যা, বায়ুনাশক ও রক্ত প্রসন্নতা কারক।

नवीन खड़ः।

ওতে'নবং ককৰাল' জি'যকরোংগিকুৎ।
স্থোগ মাজ বিনিহতি সহাজতৈক পিকং নিহ'ও চ তবেব হর্রাতকী ভিঃ। অঠ্যাদমৎ হর্নত হ'তমপের বিধাৎ বেশিকয় কর করার নবে। প্রকার ঃ

मृष्टम ७६।

নুষ্ঠন গুড় অধিকারক ইহা ভক্ষণ করিলে কল খাদ ও ক্রিমি উপস্থিত হয়।

নিত্য আছু কৈর সহিত ওড় ভক্ষণ করিলে শ্লেমা নষ্ট হয়, হরীতকীব সহিত ওড় ভক্ষণে পিত্রনাশ ও ক্ষরীর সহিত ভক্ষণে অশেষ ব্যুত্রোগ নাশ হয়, অত্থা হে ত্রিদোষ্ম ওড়া কোমাকে নম্বার করি।

य ५भू ।

ৰাডজ মধুর৲ রুষণে চ সুষ্য ১ বৃৎছণ ১ বিষম বাতপিৰ ছৱা 'লাকা বলাং বা'বছর ১ পারস্থ

गं'ॐछ5 ।

টছ। মধর রুষা, চক্ষা, রংহন, শীতল, বাষ্থিত নাশক, রিয়া, বশ-কারক ও বমন নিধাকে ১,

मिका ।

ধঙক্ত সিকতা এপং সূপেত " শর্কা সিতা। সিতা সুমধুনা রুচ্যা ব তপিত'লে দ হছৎ। মুক্ত্যিক্তি লগ্নান্ত বিশ্বানা সূত্রাক বিশী।

हिंद।

খণ্ডতে পাক ধারা বলধার ত করিলে ভাহাকে চান বলে চিনি ফুন্দব খেতবর্ চিনির সংস্কৃত নাম্পর্করা ও দিতা।

চিনি ত্মধ্য, কচা, বায় পিত নাশক ।

রক্তদোষ নিবারক, দাই শান্তিকর, তুলা ।
ভল ও শুক্তজনক ইহা ভল্গণ করিলে

মৃক্তি, বমন ও অর নিবারণ হব ।

শিভাখরম্।

ভবেৎ পূজানিকা লীডা রক্তপির হরী বলুঃ । সিডোপনা নরা কলী বাডপিবছরী হিমা ॥

हिनि ७ मिছ्ति ७१।

চিনি শাতল রক্ত পি**ত নাশক ও** লঘুমিছবি সর, লঘ্, বায়ুপিত **নাশক ও** শাতল

म्प्रान्य न न ।

मध्का ग्रन्ता क्रका क्ष्मित हती स्कः। ११ क्रि. १ गोत ५ १ साह बक्क क्रमा हिमा ।

भत् इहेएड शक्तक मक्ता।

মনুজাত শক্ষা কক্ষা, পিতত্মের নাশক,
তাক, ক্যাস ও শীতক। ইহা ভক্ষণ
ক্ষিপে ব্যি, আছাসাব, ভৃষ্ণা, দাহ ও
রক্ত দোষ নিবারণ হয়।
যদাযদৈখা নৈক্ষ্যাং শনুক্ত্মং ক্রাভ্রা।
ধেহ দ্যাব শৈতা দ্যায় ও ত্রা ভ্রা।

উরিনি শ উল্পানক।র সমস্ত মত নির্পাশ হইবে ত এই মধুর, স্লিগ্ধ, লঘু, শীতল ও সর হইবে।

পঞ্চারংশন্তমোহধ্যায়: ৷

यद् वर्णः ।

गर्

মধু মাক্ষ'ক মান্তাক ক্ষেত্ৰ সাহত্মির তথ্।

মধ্যক গ গওটাতু ক্ষা গঙে পুল্পরত্যান্তবন্ত্র

মধুলীত পতু ৰাদু ক্ষম গ্রাহি বিকেখনন্ত্র

চকুষ) ছীপনা স্থাৎ রবশোধন রোপনন্ত্র

গেশুনার্থ্য করং সূক্ষা পরং লোভোবিশোধন্ত্র।

ক্ষামানুৱসং কালি প্রসাদস্পকং পরম্ ।
বলাং মধাকরং বুৰাং বিশ্বং দীপনং ভরেং।
কৃষ্ঠার্পা কাল পিত্তাক্ত কফামহ ক্রমাক্রমীন ॥
বেদজ্জা বনিধা স হিভ'তাসার বিভ্এভ'ন্।
দ'হক্তক্তাং তত যোগবাহুপো বভিত্য।

মধু ৷

প্র্যাধ। মধু, মান্সিক, মাণুক ক্ষৌদ্ধ, সার্থক, মান্সিকাবান্ত, বর্টিবান্ত, ভূক্সবান্ত ও পুপেরসোদ্ধর।

গুণ। ইহা শাত্র, লঘ, স্বাচ, ফুক্স, গ্রহী, শেখন, চফুশুদ্ধি করিক, मोशन, प्रदूब डेंदनर्थ कावक वा भावक (রণ হইতে প্যাদি নির্গত করে), ত্রণ রোপণ (সপক ত্রণে সংলগ্ন করিলে রণ ব্রিয়া যায়), দেহের কেংনপ্র কারক, সন্ধা দৈহিক ভোকে সকলের अने सन्द का प्राप বিভাগ্ধ **ক**†ጳক, আহল,দ তনক, অদিশ্য (भ) भूडा কারক, বর্ণের উৎকর্ম সাধক, মেধা ष्ट्रनक, त्रुगा, विभाग, दशहक, वाशे ७ काझ वायु णनक। भ्रत (भ्रवन स्विद्रित्त तुष्ठे, धर्मा, क(म, एक े क, रक्ट-(भश्, क्रांखि, शिम, स्मम जन। वर्म भाग, रिका, कारिगांत, सभारतान, एट, ক্ষত ও ক্ষরবোগ উপশ্নি হয়।

म्पूर्वनाः ।

খা**ক্ষিক আ**নর ১০ কে'জ ১ গে বিক ১৯ র মিস্তাপ

व्यक्ति (संभानक भाज निख्यकी समुक्तालय ।

মধ্ব প্রকাব ভেদ।

মধুত ট প্রকার যথা মাজিক, ভামর কোল, পৌটিক, ছাত্র, আর্ঘ্য, উদ্দালক ও হাল।

माकिक्यू।

যাক্ষিকাং গিলবৰ্ণান্ত নধ্য নধ্য ক্ষিকাং ।
ভাজিঃ কৃত্ ৈ তৈলবৰ্ণ মাক্ষিক পরিকার্তিকন্ ॥
মাক্ষিক মধ্যু ভোজ নে নাম্য হর প্রাঃ
কাম্পার্শঃ ক্ষডবাস কাসক্ষয় বিনাশনম্ ॥

মাশ্বিক মধু।

পিশ্বল বর্গ বৃহৎ মক্সিকা বিশেষকে
মধুমশিকা কহে। মধু মক্সিকা কর্তৃক
লঞ্চিত মগুকে মাজিক বলে, ইহার বর্ণ
কৈলের নাম। মগুর মধ্যে মাক্সিক ভোষ্ঠ
ইহা লঘু। মাজিক মধু ব্যবহারে নেত্র
রোগ, কামলা, অর্জা, ক্ষাত্র, খাস, কাস
ও ক্ষম রোগ বিনষ্ট হয়।

जामवम् ।

বি জিং সুকৈন প্রসিকেড, চটপাদভোচনি-ভি শিচতন্। নিম্মলং ক্ষতিকাড়ং ঘ্রস্থু ভানরং স্মৃত্যু। এ ধরা রকাপ্রগু গুরু ছাড্যকরং অফু।

ल' व मध्।

খাৰুপ'ক ম ভয়, দি হৈপেছাৎ পিভিছেল\ বিষম্ ঃ

প্রদিক ভমর **অপেফা কিফিৎ স্ক** জনর কর্ক সঞ্চিক নি**র্থণ ও ফটিক** বন্মগুকে জন্মর মধুকহে।

ভ্রমর মধুরস্তে পিক নাশক, মৃত্তের বিকৃতি কাবক, গুরু, স্বান্থ পাক, অভি-যান্দী, অদিশার পিচ্ছিল ও শীতল।

(को प्रम्।

ৰজিকাং কণিলাঃ সুজাঃ কুজাগা ভংকত১ মধু। যুমিডি ক্ষৌজ বিত্যুক্ত১ ভগ্নীং কণিল১ ভংবং ঃ গুলৈ যান্তিক বংকৌজ১ বিশেষাল্লেছ নাল্নৰ্।

ब्कोख मर्गः

সৃদ্ধ, সৃদ্ধ কপিলবর্ণ মন্মিকাকে কুজাবলে, কুড়াদিনের দক্ষিত মণ্কে কৌত বলে। ইহার বর্ণ কপিল।

ইহার ৩০৭ মাহ্মিক মব্র ন্যাব, অবি-কল্প ইহা মেহ নাশক।

(भ्रोतिकम्।

কুল্পা যা মশকোপনা কথুতর। প্রাণ্যে নহ প্রাণ্ডক।

বঞ্চানা ভ্রুকোট্রাওর গতাং পুষ্পাসগং ক্রতে॥ ভাভজবৈপ্লবৈহ পূত্তিকা নিগবিত। ভাভিং ধৃ হং সাপ্যা

জুলা। যথ মণুবর্দ্ধনেচর জনেঃ সংক্রী ইতি । পে বিক্যু ॥

পে:'বকং সমু রুক্ষে'আং পিওদ হাত্র ব ডঃগ। বিদাহী মেহঞ্চছুস্থং এড ক্ষি ক্ষতশোধি ৮॥

(भी किक भर्।

মে সকল মশক সদৃশ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
মক্ষিকা ব্রক্ষ কোটরে মধু চাক্র প্রস্তান
করিবা মধু সঞ্চব করে তাহাদিগকে
পৃষ্টিকা কছে। ইহাদের কর্তৃক সাঞ্চত
ঘৃত সদৃশ মধুকে তদ্বন্বাসি লোকে
পৌতিক মধুবলে।

পৌতিক মধু রুক্ষ, উষ্ণ ও বিদ্বাহী। ইহা পৈতিক দাহ, বাতবক্ত, মেহ, মূত্রকুচ্ছু, প্রস্থা ও চফাুর ক্ষ্টে নিবারণ। করে।

PEN,

ষরটাঃ কপিলাঃ পীতাঃ প্রায়ো ব্যবড়ো বনে। কুর্মান্ধ ছত্ততাকারাৎ জন্মৎ ছাত্রৎ মধু ক্র্ডণ্ র ছাত্রৎ কপিল পীত্রৎব্যাৎ পিচ্ছিলৎ পীতলৎ वातूणीक्ष्य किर्मवत्य त्रकालक श्रामव किर ह कप्युन्ताव विवाहर कर्णनक श्रमीयक्ष्म ।

ছাত্র মধু।

কপিল ও পীতবৰ্ণ বৰটা সকল প্ৰায় হিমালয় পৰ্যবৈতের বনে ছজাকার চক্র প্রস্তুত করে, ততুৎপন্ন মধুকে ছাত্র 'মধুকহে।

ছত্র মধ্ক পিল ও পীতব পিছিল, শীতিশ, গুরু, স্বান্ত্র পাক, ক্রিনিম নাশক, গুপি জনক ও উৎকৃত্তী গুণ বিশিষ্ট ইহা বাবহারে রক্ত্রপিত্ত, প্রমেহ, জ্ম, ভৃষ্ণা মোহ ও বিষ নত্ত হব।

অর্থাম্।

মধুক্রক নিয়ালং জরৎকাবাপ্রশোদকবন্।
স্তান্ত লাকা ধানত কেতিকং নালবে পুনঃ ।
ত ক্ষুড় ক্ষম পাড়া মফিকা ঘটপদে প্যাঃ।
অ গাঙা ভংকত মনার্থনিড।পরে মঞ্জ ।
অ।গাং মন্ত্রিত চক্ষমাং ন্যেপিড ছরং পরম্।
কম্মাং ক্ট্রক পাকে ডিক্ড বলপ্তিক্ৎ ।

व्याचा मत्।

জনৎকারে মুনির আশুনে ২০ল মণুক রক্ষের (মউপ গাছের) নির্দাদকে প্রবৃত্তী ও অর্গুক্তে, মালব দেশে ইহা খেতক নামে প্রদিদ্ধ। অণ্টর এই কথা বলেন বে তীক্ষ তুও বিশিষ্ট পাজবর্ণ প্রমর মদৃশ মক্ষিকা গণকে আর্দা ও ভাহা-দের সঞ্জিত মধুকে আর্দা মধুকতে।

এই মধু চক্ষের অভিশয় হৈত কারী, ভোষ্ঠ কংপিত নাশক, ক্ষাব, কটু পাক, তিক্তা, বলপ্রদ ও পৃষ্টি কর।

अम्, नक्ष्।

প্রায়োবপুটক মধ্যক্ষাং কলিগাং যুপ্পেটিকাং।
কুরাতি কপিগ্রু যুপ্পে তংগ্যাদে দালিকং মধুঃ
ক্ষান্তকং ক্ল'চকর যুখ্যা সুক বিষাপ্তম্ ।
ক্ষায়ুখুখ মন্ত্রক কটুপাক্ক পিরকুৎ ॥

फिलामक भर्।

বলীক (উইএর মাটি ছিত কপিল বর্ণ জ্ব ছুদ্র কাট বিশেষে কণিল বর্ণ ও অল্প পরিমিত একপ্রকার মধু সঞ্জ করে ভাগ্র ন'ম উকাবক মধু।

গুদালক মধু, ক্ষতিকারক, স্বর পরি-ছার কারক, কুষ্ঠ নিবারক বিধান, ক্যায়, উষ্ণু, অমুরস কটু পাক ও নিত্ত কারক।

मालभ्।

সংস্কৃত। পভিতং পুস্পাদ্যকু প্রোপরিক্তিন্
মধুরায়ক্ষ যক জন্মালং মধুক উত্তন্ ॥
মালং মধু সন্মু প্রোক্ত দাপনা দং কফ প্রন্
কথায়ালু রসং ফ্লম্ড ১ ৯ জার্ল প্রথম ক্রিক্ট্রা

मान भन्।

যে মৃশ্ পুষ্প হইতে শোষাইর।
পারোপার সঞ্চিত হহমা থাকে এবং ঘন।
ক্ষাৰ, অন্ন ও মিট্ট রুশ বিশিপ্ত হাহাকে
দাল মধু কহে। দাল মধু লঘু পাক,
শালন, কফল্ল, ঈষৎ ক্ষাৰ রস, প্রুল, কুচ্চা
বন্ধ নিবারক, প্রমেহ নাশক, অভিশ্ব
শ্বমিষ্ট, স্থিম, বৃংহণ ও গুরুভার।

न्द्रान मर् खनाः।

নগংমধু ছবেং পুথিট) নাভি প্লেম্মছরং সরম্।
পরাণ\ গ্রাহকং রুক্ষং মেনোমু মভি জেখনম্ ।
মধুনঃ শর্কগঢ়াল্চ গুজস্যাপি বিশেষভঃ।
এক সম্বস্বেহত(১ পুরাধৃত্বং ক্ষ্যুতং বুবৈঃ ॥

নৃত্ন ও পুরাজন মব্র ৩ণ।

নতন মধৃ পুষ্টিকারক ও সর ইহ বিশেষ শ্রেম নাশক নতে। পুরাহন মধু গ্রাহক, রুক্ষ, নেদোর ও আভিশ্ব শেখন। মবু, শকরা ও গুড় এক বংসর অভীত হইলেই পুরাণ বলাগায়।

মবুন° শীত্যা গুণাবিকা মুক্ততায়া নিধেবন।

। বিষপুশ্পাদ্শি রূপ সাবিষা জমরাদ্য়ং। গৃহ'ল্বা মধু কুঠা'ও ওক্ত ওৈ ওপবন্মধু। বিষার্থান্তপুঞ্চ এবে। নোখেন বা সহ। উঞ্চিল্যাফ কালে ৮ আ ত১ বিষস্থ মধু।

मी छल ५६ डेक्स भन्द का ।

বিষ বিশিষ্ট ভ্ৰমরাদি বিষ পূপা হইকেও রস গ্রহণ কবিরা মধু প্রস্তক করে অভ্এব মনুশাহল হইলেই হিত-কব হং, বিষাংশ থাক তে উষ্ণ মনু অভি অধাকাবক এবং উষ্ণ কালে, স্থাবা উষ্ণ দ্ববোর সৃষ্টিত কিংবা উষ্ণান্ত ব্যক্তির প্রেক্ষ মনু বিষ্বাৎ।

मध्किहेय्।

যানক মধ্যক্ষি মধ্বেষক সিক্রকন্।

স্বন্ধ মুদ্ সূষিক্ষণ ভূতপ্পণ ব্রবরোপনন্।

তথা সভামতৃৎবাত কুঠ বীসপা ব্রক্তিং।

मध् फिष्ठे (साम)

ময়ন, মধুচিছাষ্ট, মধুৰেষ, সিক্থক, মন্ধাহার, মদনক ও মধুষিত এই ওালি মোনের সংস্কৃত নাম।

মণুচ্ছিষ্ট মৃনু, 'স্থানিশ্ব, ভৃতন্ন, ব্রণরোপন।

ষ্ট্তিংশত্তমোহধ্যায়ः।

বাবি বর্গঃ।

জেপম্।

পানীয়া সজিলা নীরং কালাজন্ত্রন মধু চ।
আপো বাজারি কল্যেত্র প্রথম পালভবে দক্ষ্ ।
জীবনা বন মডোহবো স্মৃত্র হনরসোহপি চ।
পানীয়া স্রানাশনা ক্রম্ভর্ম
ফুজেনি পিপান,শহন্।
ডক্সাছ্কি বিবদ্ধ ক্রম্ভর্ম
নি এত্তর্ম ছালি সমক্ষ্
নিত্রা ভিত্র শীভসন্।
জন্ম্ভর্ম কার্বা নিস্বিত্র

रगाः च्याः ।

পীযুৰ বজ্জীবন্যু

পানীয়ৎ মুদ্দিতি প্রোক্তৎ বিষয়ৎ ভৌষমিতিবিধা। বিষয়ৎ চাইন্দিয়েৎ প্রোক্তৎ ধ রাজৎ করকাভযন্ । তৌৰারক তথা বৈশবেধু ধারৎ **ত্**ণাধিকন্।

क्न ।

পর্যার। পানীর, সলিল, তোর, কীলাল, ফল, অসু, অপ্, বার, বারি, ক, ডোর, প্রঃ পাথঃ উদক, জাবন, বন, অস্তঃ অর্থি, অমৃত ও ধনরদ। জল ভাম, ক্লম. মৃক্ত্রি, পিপানা, তন্ত্রা, বমি, বিবন্ধ, নিড়া ও অজার্থী নিবারণ করে। ইহা বলকর, ডাগু জনক, ক্লমা, গুপুরস, সভত হিতকর, শীওল, লঘু, স্পদ্ধ, রসহেতু ও অমৃত সমূশ জীবনী শক্তি সম্পন্ন।

. জল ছুই প্রকার দিবা ও ভৌম, ভন্মবো দিবাজল চারি প্রকার যথা ধারাজ, করকাডব, কৌষার ও হৈম ইহাদের মধ্যে ধারাজ জল শর্কা শ্রেষ্ঠ।

ধার জলম্।

ধারাজিং পতিজৎ ভোগ্য গুনীতং ফ্রীতবালসা।
কিন্যাং বা সুধায়া বা দোতায়াং পভিজকত ॥
সে,ধর্ন রাজতে ভায়ে ফ্রাটিকে কাচনি র্মাডে।
ভাজনে মৃন্ময়ে বা প স্থাপত ধারমুচাতে॥
ধারং নীরং কিলোম্ম মনির্দেশ্যারসং সম্ম।
সোম্যং র্মায়মং বলাং ভপানং জালি জীবনম্॥
পাচনং মভিক্যাল্ড। ভকা ল ছ শ্রফ্রাম্য
তুষ্ণা করভিত পলাং বিশেষাং আরু বিশ্বেষ্

भार कलमारक्षा ।

ধারাজ্ঞলার ভিবিশ্ব গাল্প সাযুদ্ধ ভেদত।।

ত প্রগাস সামুদ্র জলান্।

গলামান্যকে মাল প্রাচ্যে গর্মত বারিদঃ।
সার্থা ডক্ত কান্দেহা তথেব চরকেবচঃ
আপিতে কৈনকে পাতে রালতে মুল্লারে পিবা।
লালারণ যেন স্থানক ভবেদকেন্দ্রন্থর ।
তন্তাগণ সার্থায়েশ জ্যোগ সায়েল মনারা।
তন্ত্র সালার প্রণণ ত ক্রন্তি বলাশন্ত্র ।
বিশ্রেও পোশনত ক্রিণ্ডি বলাল মনারিকের।
মান্তব্রাগনিন মালি প্রনির্বাদ্ধ মনারিকের।
বাভাগনভাগা নিবাবে ক্রন্তব্র ক্রান্তব্র প্রাক্তিশ্র ।
বিশ্রেণ নিবিবের বানু ক্রান্তব্র ক্রান্তব্র ক্রান্তব্র নিবিবের বানু ক্রান্তব্র ক্রান্তব্র ক্রান্তব্র নিবিবের বানু ক্রান্তব্য ক্রান্তব্য নিবিবের বানু ক্রান্তব্য ক্রান্ত

তাৰ্ব ওলগ্।

स्मार्थवः श्रमुक्षि वादि वादिमनास्य वरः। स्वरः जित्यावाद मत्यावः १ (मृश्वमाः भदिकीर्षि अम्। स्मार्थवः ८० वाशियामगुरुषेत्र विवसम्।

ধারাজল ।

রৃষ্টিকালে শিলা, নৌদ ইস্কাময় খান, অ্বর্ণ পাত্র, নৌপ্যপাত্র, ভামপাত্র আটিক পাত্র, কাচ নির্মিত পাত্র আথবা মৃশ্মব পাত্রর উার ক্লপ বর ধারণ করিলে ঐ বর হইকে বিগলিত হট্যা যে ফাল নিয়ম্ম পাত্র প্রতিত হ্য, ভাহাকে ধারাজল কহে।

শারাজল ত্রিদোষর জনিদেশ্য রস বিশিষ্ট, লঘু, গোয়, রসাযন, বলকাবক ভৃশ্যিকারক, অ'হলাদ জনক, জাবনী শক্তি সম্পান, পাচক ও বু'জ প্রদ। ইহা মুছ্ছা, তত্রা, দাহ শেম, ক্লান্তি ও গৃহ্চ। নিবারণ করে, ব্যাকালে ধারাজল বিশেষ উপকারক।

ধারাজল তুই প্রকার যথা গাল্প ও
লাম্দ্র, আখিন মানে যে বুটি ইয়, সেই
লল প্রারই গাল্প, চরক বলিযাছেন ঐ
লল প্রারই গাল্প, চরক বলিযাছেন ঐ
লল প্রারই গাল্প, চরক বলিযাছেন ঐ
লল প্রারই গাল্প, গাল্রে রাধিবা
ভাষােত লালি ত্ গুলেব অল্ল সংগিলু
করিলে ক্রেল বিলিপ্ত ও বিবর্গ হব না,
লোই লল প্রবিধা বলাক, ত্,লাব নাম
লাল্প, অনাধিব জলকে সামুদ্র বলে, সালল্প লাল্প লবে বিলিপ্ত, ভক্রেশাক,
লাল্প লিক্ত বলাক, ভীল
লাল্প লিক্ত আধিনমানে
লাল্প লিক্ত আধিনমানে

বিশিষ্ট হব কারণ তৎকালে অগন্তোলয় হৈতু সম্পাব জন, নির্মাল, স্বাস্থ্য, নির্মিষ, শুক্রজনক ও দে,ব রহিত হর। বর্ষা-কালের জল বিষাৎ। আকালে অর্থাৎ পোব, মাঘ, ফাল্গুল ও চৈত্রে মালে যে রুষ্টি হব শে জল সকল প্রাণীর পর্মেষ্
আন্ত কর তাহা ত্রিদোব জনক।

করকাজলম্।

দিব্যব যুগ্মসংযোগাৎ সংহতাঃ থাৎপততি যাঃ। পাষাল থানকাপস্তাং কারিকে)'হ্মৃতোপমাঃ ॥ কংকায়জ্জলাং কৃষ্ণ বিশ্বং গুড় ছ দিয়ন্। দানলং শাঙলং সাজং শিক্তহৎ ক্ষবাতকুৎ ॥

কঃক। জলা।

আকাশ মতকে শীতল বায় ও বিতাদরির সংঘোগে জল সকল সংহত হইর।
প্রস্তর বাতবং চাপ চাপ হইর। ভূমিতে
প্রতিত হব: উহাকে করকা বা শিল বলে, করকা সকল অমৃত সদৃশ। করকা
জাত জল কল, বিশদ, গুরু, ছির, দারুণ
শীতল, ঘন, পিত্রনাশক ও বাজপ্রেয়
জনক। কৃত্রিম করকা অর্থাৎ বরফ
জনের প্রাণ্ড এই কপ।

ভৌষারজলম্।

অপিনদ। প্ৰ্যাতে বজিরাপ ভদুত্বা।

ত্ব বহব নিমু ওকভ্ষার খ্যাভ্ডাং মা্ডাং ।
অপথা প্র বিনাৎ প্র হং ভুরুছ গান্ত নাহিডাং।
তুষারামু হিমৎ রক্ষৎ স্যাহাতল যদিওলম্ ।
ক্ষোরামুক্ত কঠাপ্লি দেহ প্রচাদি রোসনুহ।

আপ্নদ্যা: সধুলাতে বন্দিন্দ্রী বার্ডঃ সমুদ্র প্রতে বন্দিরাত্তে ভণুত্রাঃ। বন্দিত্রা পুনা-বর্ব নিমুকাঃ ধুয়াংশ রহিডাঃ। আপ্রতা-রাব্যাঃ। বিশির ইডি কেংকে। জুবার ইডি ছ ।

ভৌবার জল।

কি নদী कি সমুদ্র সর্ব্বভেই আরি
(তেজাং পদার্থ) বিদ্যাদান আছে, সেই
আরির তাপে উৎপদ্ধ ধৃমাংশ রহিত
ক্রপারাংশকে (বাস্পকে) ভ্রার বলে।
ভ্রার প্রার সমুদার প্রাণীর অপারক
ক্রেবন বুক্লাদির পক্ষে উপকারক

ভ্ৰার ফল দীঙল, কৃষ্ণ ও বাযুক্তনক পিত্তকারক নহে। ইছার ছার। কফ, উক্লপ্তস্ত, কণ্ঠরোগ, অমিদোব, মেহ ও ও গণ্ডাদি রোগ নিধারিত হর।

रेश्य खनम्।

হিনদ চি থরা বিভেগ জবী ভূমা ভিবর্ষতি।
যন্তবেব 'হ্ম' হৈম' জনমাত মনাবিনঃ ।
হিমামু ল'ডা পিডায়' গুরুবাত বিবর্জনম্।
হিমন্ত ল'ডাগ ক্রক্ম ফারুব্ম সূক্ষ্ম মিডাপি।
নঙক্ষুব্যতে বাডাম চাপিডাম বাকক্ষ্।

रेर्मवन ।

হিমালর শৃঙ্গাদি হইজে হিম সকল দ্ববীভূত হইরা জল কণার আকারে প্রভিত হব তাহাকে হৈম জল কহে। ইহাকে কোবালা বলে। এই জল শীতল পিত্ত নাশক ও বায়ুবর্দ্ধক হিম, শীতল দায়েশ রক্ষ ও স্কা। ইহা বাবু পিত্ত অধবা কয় কিছুই দূবিত করেনা।

क्षिमञ्जनम् ।

ভৌন নজে নিগদিত প্রধান ভিবিধ বুলৈ।
আফাল পদামুপত্ত সামান্ত ক্ষাৎ ।
আফাল পদামুগত গানিত কামান্তি।
আহনো সাহলো দেশক ড/বাচনা অনুন্।

वस्त्वस् कुक्क वाष्ट्रस्य महावितः ।

त्वल् श्यूण देवियोवः सायूण/ कहर्र सन्तृ ॥

विस्र विक्षः त्वा (कृषः महि माद शहर् सह्यः ।

विस्र विक्षः त्वा (कृषः महि माद शहर् स्वः ।

विस्र विक्षः त्वा (कृषः क्वा भागावः स्वः ।

विक्षः विक्षः विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

विक्षः विक्षः ।

ভৌমজন।

ভৌশজন প্রথমতঃ তিনপ্রকার, যুধ্য জাঙ্গন, অনুপ ও সাধারণ।

্য দেশ অল কলাশর ও অল বৃক্ষ বিশিষ্ট ও রক্তপিত রোগোৎপাদ্ধ, ভাগাকে আগল দেশ এবং তত্ততা জলকে জালল কল বলে। যে দেশে অনেক জলাশৰ অনেক বৃক্ষাদি অছে এবং লক্ষদ। বাক প্রৈলিক রোগ উৎপল্ল হইয়া থাকে গাওকে আনুপ দেশ ও ভল্লতা জনকে লানুপ জলকছে।

দে দেশে আঙ্গাল ও আনুপ উভর দেশের লক্ষণই বিদ্যানা থাকে, তাহাকে সাধারণ দেশ ও তত্রতা জলকে সাধারণ জল বলে।

ক লগ কল ক্রফ লনগালান, লঘু,
গাতলা, অধিকারক, করু নালক, প্রা ও
বল্পনা কনক। আনুপ জল অভিযানী,
ফ চু লিড, বন, ওল, আহি কারক, করু
কনক, লাগ ও বহুরোগ আনক।
বল বনুর, দীখন, শীক্ষা,
বনক, রোচক, ভুকা। ক্রমান্ত দিন্দ্রিয়া,
বক ও বিজ্ঞান ক্রমান্ত দিন্দ্রিয়া,
বক ও বিজ্ঞান ক্রমান্ত দিন্দ্রিয়া,
বক ও বিজ্ঞান ক্রমান্ত দিন্দ্রিয়া,

त्छोगानाटम्य नःत्मत्र मीनाः

লক্ষণানি ৩-11*চ। ভৌম জালোৱ আজগতি নাদেশ প্রস্তৃতি জালোৱে ভাগাদি লিখিক হইতেছে।

नाटकत्रम् ।

নদ্য নদ্য বা নীর নাদের 'মতি কাঠিওমু ।
নাদের মুদকং রুজং বাতলং লগু ধালনমু ॥
আনভিয়ান্দ বিশ্বং কটুকং কড় পিওনুহ ।
নদ্যং দীয় বহাঃ লগুঃ সারা যাল্চামলোদকাঃ ॥
ভূবাঃ গৈবল সংখ্যা মদ্যাং কলুমান্চ যাহ ।
ভূমবং প্রভাঃ সর্বাঃ নদ্যাংশাহত পাল্যং ॥
সালাভজ্ঞ সংযু যুশুনাদ্যা লগোওমাং । '
সহ্য শৈলভ্যা নদ্যা গোলাবরী মুদাং ॥
কুলাভি প্রায়ালং কৃষ্ঠ মীম্বাভি কফা বহাং ।
নদ্য সরস্ভাগতে কুপ প্রজ্ঞবন্তি ॥
উদকে দেশভেদেন গুনান্ দেয়াংনত লক্ষ্যেত ।

नाटमश कला

मन नहीत जनदक नाइना करहा नाटएश कल हाक, वागू कनक, लघ्, मीमन खना ७ मानी, विभाम, करूँ । अ भिष् শ্লেম নাশক যে সকল নৰা ক্ৰত গামিনী ও যাহাদের জল নিজাল ভাহারা লঘু खदः देनवामाध्यम् मन्त्र नामिनी । कन्त्र भक महोत जल श्रद्ध। (रामकल नहां रिया-লয় পর্বত হইতে উৎশন্ন হইয়।ছে कारात्मत्र कल श्रद्धार वार्क रक्षारक विष्पष উপकातक, এই निमन्न गनः শক্ত স, সরষু ও যমুন। প্রভৃতি নদার জল **उरकृष्टे ७१ मृ**ल्यम् । द्या द्याराजा **্রান্ত সংগ্র' পর্কডোৎ শ্র নরী**র জল পান প্রায় পুরুষোগ ক্রামা। থাকে ঐ প্রাক্তি নার কর্ম কিকিৎ বাতলের জনক। বুৰী, সংখ্যাৰ, ভড়াগ, কুপ ও क्षेत्रिक अध्यक्त दलने टक्टम विटनय Mar frent when

उँडिए क्लम्।

বিদার্থ ভূমিং নিম্নাং রন্ বহত্যা ধার্যা ক্রবেৎ। ওব্যেয় যে/ছেদ্ং নাম বছঙাতি মহর্যাঃ । ঔদ্ভেদ্ং নারি শিওল্ল মবিদাহতে শাতনম্। প্রাণন্থ মনুধাং বকা মাবছাতকরং সহা॥

देखिए कल।

নিয়ভূমি বিদার্শ করিরা প্রবলবেগে যে জল ধারা উথিত হয় তাহাকে উদ্ভিদ জল বলে।

ঔ! দ্রদ জল পিত্তম, অবিদাহী অতি শীতল, তৃপ্তিজনক, মধুব, বলকারক ঈষৎ বায়ুজনক ও লঘু।

নৈঝার জ্বসম্।

শৈগস:নুস্তাবদারি প্রকাষে নিকরে। করং। সতু প্রস্তাবন শ্চাপি ডএডা\ নৈকরে\ জানম্ ॥ নৈকর\ ফেচি কুমীর\ কফল্ল\ দীপন\ লয়ু। মধুর\ কটুপাকক বাডল\ শাাদ্পিরলম্॥

নিঝ'র জল।

পর্বতের সামুদেশ হইতে যে জল ধার। নিস্কৃত হয় তাহাকে নিঝার কহে নিঝারের অধার নাম ঝার ও প্রস্তাবন।

নিঝ রের জাল ক্ষতিকারক, কলম, দাপন, লঘু, মধুর, পাকে কটু ও বায়ু জনকঃ ইহা পিত জনক নহে।

मादम क्लम्।

নহাতে লৈকাধিক্ষক'য়া যত্ৰ সংস্কৃত। ভিঙ্তি। ভংগত্যে জগসঞ্জং ভদুভঃ সাত্ৰসং ক্ৰুড্ৰ গ্ৰহণ সাত্ৰসং,সলিলং বলাং ভূকাল্লং বধুৱং ক্ষুড় ভোচনজ্ঞানং ক্ৰুক্তং বছৰু ধৰণুং ক্ষুড্ৰ ঃ

সারস কল।

শৈলান্তি কৃত্ব শ্লী চইকে জলসংক্রত হটর। যে ছলে স্থাকিত থাকে ভাহাকে সর: কহে উহার জলের নাম সাবস কল। সারস জল বলকারক, ড্ফা নাশক, মধুর, লঘু, অভিশ্ব রোচক, রক্ষ ও মলমূত্র রোধক। ত

জাড়াগ জলম্।

প্ৰশাস্ত কুমি ভাগকো সভা সংসংসারে মিনং।
ভালাখা স্থানা সাধো ভাগে ব্যক্ত সং সা ওম ।
ভাজাগা মুদ্দ সাধু কথায় কটু পালি ছ।
গাত্স বিশ্ব ও মণ্ক্ পিতৃ কফাপ্ছম্॥

व्यक्ति क्रमा

পশস্থ ভৃত্তাণদ্বিত বহু সংশ্বের কলাশ্বকে কড়াগ কহে, তড়াগেব জলকৈ
তাড়াগ জল বলে। তড়াগেব জল সাহু
কমার, পাকে কটু, বায় জনক, মলমূহ
বোধক, রক্ত পিত শান্তি কর ও কফ
নাশক।

वःशाक्तमञ् ।

পাৰাই ব্যাক্ত কাজিল। বজ্পা হৃষণা। সংসোপানা ভনেছাপী ভজ্জন: বাপানুচাতে । বাপাং বার্থি জ্বাহা পিবকৃৎ কফ্লাভ্ছন। ভবেদ বিক্তা ক্ষ্যুৎ বার্তপ্র ছর্ম ভবেৎ ।

ব'গ্যকলু।

প্রস্তর বা ইউড়াদি বন্ধ সোপান বিশিপ্ত বৃহত্তর, কৃপবৎ জলাশসকে বাপী কহে বাপীর জলকে বাপা জল বলা দার। বাপীর জল ক্ষার গুণ বিশিষ্ট হউলে পিতৃকারক ও বাজপ্রেম নাশক হব এবং নিই হটলে কফ জনক ও বায়ু পিও নাশক হয়।

(कोशक्षमम्।

ভূমে খাজে:১৯প বিভারে গন্ধীরো মণ্ডলাকুজিঃ। বংক্ষাংসকঃ স কূপঃ স্যাধ্যম্ভঃ কৌপ যুচ্যতে। কোপৎ পালে! যদি খাদু তিলোবস্থা ছিত্ত লয়। তংক্ষারৎ কক্ষরাতমুৎ দাপন্ধ পিত্তক্ত পর্যু।

কৌপ জল।

জাঁর বিস্তৃত মণ্ডলাকৃতি (শুস্তাকার)
গড়ীর ধাক বন্ধ হা অবন্ধ ইউক জাহাকে
কৃপ বলা মাম। ক্পের জল সালু হইলে
বিশেষর, পথা ও লঘু হয় এবং সার বিশিষ্ট হুচলে বাক্রেম্ম নাশক, দীপন
ও কাকিশ্য পিরকাবক হয়।

ে বিজেপম্।

শিলাকীপ্ ৰয়ং খাল্লং নীলান্তন সংখ্যকষ্।
হাতাহিতান সংখ্যাং চেডাগিতানিধীহতে ।
ভাগাদিভিহ্নতাং যকচেটাডাগিতিচাপরে।
ভাহতাযুদকং চেডাগ্যাং ক্ষান্তিল্য ।
চেডায়ে কমিকাং নীয়ং ক্ষাং কম্বান্তল্য ।
মধুৱাং পিতান্তচাং পাচনাং বিশ্বাং স্থৃব্য

क्षीं जन।

লকানি হারা আছেল্প, নীলাঞ্চন সহুশ জল বিশিষ্ট শিলাকীৰ্ণ অক্তনিৰ গহাহতে চৌডাবলে কেহ কেহ বলেম বাংল ক্রম লানি হারা বন্ধ নহে, তাহাল নাম নোজৰ ভক্তবা জলকে চৌডা ক্রম

চৌডা **অল অভিনৰ বা** নাশক, পত্ন, **মধ্য, নিজ নাম্য** পাচক ও বিশ্ব ।

পালুল জলম্।

অস্পং সরঃ প্রজং স্যাদ্ বর চক্রফালেরবৌ। মাজিঠতি অলং কিভিত্ততাং বারি পার্থায় । পার্জাং বার্ডিব্যাল ওর বারু ক্রিদোবতুং।

পূল্ল কল।

সে কুন্দ্র কলাশবের সাগ্রহারণ মাসেই কল শুক্ষ হইরা যার হোহার নাম পলুল। পলুলের কল অভিযানী, গুরু, সভু ও তিনোষ কানক।

বিকির কলম।

নক্যাদি নিকটে ভূমিন। ভবেদাকুকানয়ী। উদ্ভাব্যতে ডভো যকু ডক্জল\ বিকির্থ বিদুঃ । বিকির্থ লীডল্থ হচ্ছেথ নির্দোদ্ধ লঘু চ ক্ষুড্যু। ভূবর্থ হাদু পিডল্লথ কারণ ডং পিডল্থ দ্বান্য।

বিক্রির জল।

নদী প্রভৃতির নিকটভ বালুক।মব ভূমিতে যে জল উদ্ভেহর ভাহ।র নাম বিকির।

বিকির জাল শীতল, স্কা, নির্দোষ, লম্ব্, ক্যার, স্বান্ধ্ ও পিত্তম ঐ কাল সক্ষার হ**ইলে কিঞ্**ৎ পিত্ত কারক হর:

देकपात कलम्।

কেছার**ং ক্ষেত্র যুক্ষিকং কৈছার**ং জ্ঞাসং নাতৃত্য **ইয়াধারং বার্থাতিখ**ান্দ সরুরং গুরু বোষকৃৎ ।

रेक्षांत कन ।

देशकारक ट्रक्साह ७ छ।कात जनाटक विशेष करते हैं इक्साह की काफिसाकी, मशुद्र, खड़र

বুষ্টি কলম্।

বাৰ্ষিক ওলগ্ৰ উৎ জুমিক মহিত জলন। তিয়াত্ৰ মুখিত ওলা প্ৰসন্থ মমুভোপমন্ত

বুষ্টি জল।

বর্ষা ঋতুতে জজিবসর্ট্ট ভূথিত জল অপকারক, ঐ ফল ভিন দিবস পরে নিশ্বল হইয়া অনুত সদুশ হয়।

হেমস্থাদি কাল বিশেষে বিহিত জল বিশেষঃ।

ৰেমতে সারসংখাবং ডাজাগং বা বিভং আন্তর্। ব্যবহ বিভিন্ন ডোবং বিশিয়েইবি প্রবস্তে । বসহ প্রীয়ায়োঃ কৌশং বাপাং বা নৈর্বং

নাদেয় বারি নাদেয় বসভ প্রীয়াঘো বু গৈঃ । বিষয়ন বুজাবাং পএটিয়া দু বিজং যতঃ। উদ্ভিশ বাঙরীকাং বা কোপাং বা প্রাবৃধি কাঙ্দ্ । লয়া রবিক্তরৈজ্ উৎ নিশি লীভ করাংখাছিঃ । জ্যে মংশাদক্ষান বিভাগ ঘোত্তরা পাছন্। ভারতিবাদি নির্দেশ যাঙরীক কলোপান্য। বলাং রসায়নং বেখাং পভিগ করু স্বাসনন্। বুজসুক্রতে । পোধে বারি সরোজাভং নাঘে ভারত ভারতিক।

কাল্পনে কুপসক্তেৎ হৈছে চোজ্যৎ হিন্তং বন্ধন্য । বৈশাৰে নৈৰ্যৱৎ নীয়ৎ ইয়াকে প্ৰভাবোদ্ভিষ্য । আঘাতে পদ্যতে কৌপৎ প্ৰাবৰে বিবা নেব চ । ভাৱে কোপং পৰা প্ৰথম আধিনে চৌজ্য নেব চ । কাজিকে বাৰ্যপিবে চ ক্ষমাত্ৰৎ প্ৰশাস্যতে ।

काल विरम्दर वावश्मा छल ।

হেমন্ত কালে সারদ বা তাড়াগ জল ব্যবহার্ঘ দীতকালেও ঐ জল হিডজনক। বদন্ত ও গ্রীয় কালে কৌপ, বাণ্য ও নৈর্বর জল প্রশন্ত, তৎকালে নদীর জল

वावश्वां नट्ट, काइन के ममरव वना दूर्या-দির পত্র পভিষ হওবাতে নদীর অংশ पृषिक इटेवा विषव इत्र । वर्षाकाला উদ্ভিদ, আন্তরীক্ষ, কৌপ ফল প্রশন্ত। भंतरकाटन सम्रोत कन काश्वा कः भृतक ব্যবহার্যা, অংশুদক এট রূপে প্রস্তৃত্ত করিছে হর যথা কোনপাত্তে জল রাখিলা সমস্ত দিবস রৌচের থেবং সমস্ত রাত্তি চলে কিরণে রাধিকে হওঁ (চন্দে পুর্ণিমা ভিন্ন কোম দিনেই সমস্ত রাত্রি উদিত থাকে নং, কিন্তু অংশুদক প্রস্তাত করিবার জনা জল সমস্ত রাত্রি শিশিরে রাখিলেই হটবে।) ইহার নাম অংশুদক। অংশুদক রিগ্ধ जित्माय नाभक, ज्यन्धियाना, निर्दाय, चाछुत्रीक कल महुन शुवनत, नलकादक, রদারন, মেধাবর্দ্ধক, শীতল, লঘু ও অমৃত তুল্য।

র্মস্থাত বলিয়াছেন যে পৌয মালে সরোবরের জল, মাল মালে জড়াগের, ফাল্গনে কুপের, চৈতের চৌড্যের, বৈশাধে নির্বরের, ক্যৈছে উন্থাইএর, আষাঢ়ে কুপের, গুাবনে অন্তরীক্ষের, ভাবে কুপের, এবং আধিনে চৌডোর জল প্রশস্ত, কার্ত্তিক ও অগ্রহারণ মালে সমুদার জলই ব্যবহার্য।

কল গ্রহণ কালঃ।

रकोशसः यक्तार शास्त्रा अवनर शास्त्रवास्त्र । भोडकुर सिर्मनकुक यस्टस्त्रार स्टब्स् सन्दर्भ

জল গ্রহণ কাব।

ভৌম কল প্রাভঃকাণে তুলিষা রাবা উচিত, কারণ তৎকালে কল লাভল ও মিক্সল থাকে। জলসা পান বি'ধ্যা

অভ্যন্ত পানাল বিপচ্চতেছল নিরমু পানাচ্চ ল এব ছে বং । ভক্ষালয়ে বক্ষি বিবর্জনায় মুক্ষু ক্ বারি পেবেশভূরি॥

কল পান নিধি।

অধিক জল পান করিলে আহার
পরিপাক হর মা, একবারে জল পাম
পরিখাগে করিলেও ঐ দোষ জানিবে,
অকএব অশ্বিদর্শনেব নিমিক মৃত্যুক্তঃ
কল্পরিমাণে জল পান করা উচ্ছিক।

নীকল কল পান্তল্য।

মজে) পিত্তেক খাছেসূ বিশে রক্ষে মহাভ্যার। প্রথম শ্রমে বিহুডেখনে জ্মকে সমলৌ জ্ঞা।। উদ্ধিয়ে রক্ষপিকে চালীলমন্থ প্রশাস।তে।

भीकन कन शास्त्रद्रम ।

মৃদ্ধ (, পিতৃপ্রকোপ, ইঞ্জা, দাহ, বিষ্বক দেকে মদাত্য, জম, জম, জমরের আনমাক্ পরিপাক, তমক খাস, বমন ও উর্দ্ধার ক্ষা পিতৃত্ব এই সকল ভ্রালে শীজন জল পান প্রশাস্ত।

দীতল জলস্য পান নিষেধঃ ।
পাশ দুলে প্রক্রিগায়ে যাত্রোমে সক্রয়ে ।
আগ্রামে ভিনিতে কোঠে সম্প্রয়ের সম্প্রয়ে ।
অক্ত প্রথম বাল্য খান কানেপু বিশ্বাহা ।
বিভারণ স্বেহ পানে হ শীকাছু প্রিয়ার ।

শীতদ কৰ শান বিজ্ঞান কৰ পাৰ পূল, কাজান গলএহ, আশান, কোজান কৰ অসুচি, এক্টি কৰ থিক। এই শক্ষ পত্তে এবং সদাঃ ব্যন বা বিবেচনের পর কিমা ক্লেহ্ পান করিলে শাহল জল পরিবজ্জনীয়।

জাল্লজল পানসা বিষয়াঃ। অবোচকে প্রতিশ্যায়ে সন্দেচগ্রী শ্বরথী করে। মুখ প্রসেকে ক্ষঠরে কুঠে নেত্রাময়ে করে। এনে চ মধুয়েকে চ পিবেৎ পানীয় মলপক্ষ।

पत्र क्रम शास्त्रप्रम ।

অরুচি, প্রতিশ্যাশ্য, মন্দায়ি, শো'প, কর রোগ, মুথ প্রদেক, জঠররোগ, কুষ্ঠ, চক্ষু-্ রোগ, জর, তাং ও মধুমের এই সকল সত্ত্বে অল্ল পরিমাণে জল পান করা বিহিত।

कम्प्रानम्। नभीक्षाः

জীবন ১ জাবিনা ১ জীবে। জবাৎ স্থান্ত ওয়ায্য্।
আ চোহত হৈ নিৰেধন ন কচি ছারি বাষ)তে ॥
ত এডি চ তৃষ্ণা গ্রীয়্দী ঘোরা স্থাব প্রাণিনী।
ত আ দেন্দ তৃষ্টাঘ পানীয় ১ প্রাণার্বিয়ুক্তি ॥
ত ত্বতে নেত্ব হায়তি নেত্ব ২ প্রাণান্বিয়ুক্তি ॥
আঙা দ্বি ধ্বত্বাসুন কচিছারি ব্যক্তিয়ে ।

জল পানের আবশ্যকতা।

জল সমস্ত প্রাণীর জীবন, সম্বার জগং জলাত্মক অভ এব কদ,চ জলের সম্পূর্ণ বিংবধ করা কর্ত্তব্য নহে।

হারীত বাল্যাহেন তৃষ্ণা অনি গুক কল জ জনতার ইবার হার৷ সদাং প্র-নিল্ট হাইছে পারে; অভ্যান তৃদার্ত কাইছে আনি সাম্যোপযুক্ত জল পান কোইছে কেন্দ্রী ভর্তবা; তৃষিত হইলে কাইছেক্ত কোইছেক্ত প্রাণ নষ্ট হইতে পারে। অতএব কোন অব-দ্বাতেইজন নিষেধ করা বিধের নহে।

প্রশস্তং জলম্।

আগন্ধ মৰ)জ্ঞ রসং সুদতিং ওর্বন।শমম্। আক্সং কামু চ হাধ্যক ডোয়ং ধাৰ্মদুচ:তে ॥

প্রদান্ত জল।

গদ্ধান, অংশক রস্বিশিষ্ট, সুশীতল, ডুফুগ নাশক, অফে, লবু ও ত্লা জল্ ডুগুকর।

নিকিক জলম্।

পৈতিচলং ক্রিনিলং ব্রিন্নং পর্ন শৈরণ কর্মটিন:।
বৈবর্ণ বৈরুপ সাজেং দুর্গল্প ন ভিত্ জলম্ ।
কর্ম ভ্রমডেজি পর্ন নিলা তুর্গাদিভিঃ।
দুর্দেশজমগংস্পৃতিং সৌর চাজ মরী চিটঃ।
জনাত্রং বার্সিকল প্রথমং ততে ড্রিগন:
ব্যাপথং পরিভত্তর)ং সাইদেশ প্রস্থানাম্য জরান্।
তংক্টাণংশ্বিন পানাভাগ ভূজাগ্রানোদ্র জরান্।
কালাগ্রানালাভিয়ান ক্র্যাদিকং ভলা।

নিশিত কল।

যে জল পিচ্ছিল যাহাতে নীট জন্মিরাছে যাহা পত্ত. শৈবাল ও কর্দম হাবা
ক্রেদ যুক্ত বিবর্ণ, বিরুশ, ঘন, তুর্গন্ধ, মলিন
যাতা পদ্ম, পত্ত, নী লকা ও ত্থাদির হারা
আছেল্ল, মাহাতে চক্ত ও স্থেটার কিরণ
পাজিত হর না যাহা স্পর্শ করিলে কপ্ত
বোধ হয়, অনুমরের ইন্টির জল, বর্ধাকালের বৃন্টির ভূমিম্ব প্রথম জল ও যে
জল নপ্ত ইরা বিবাছে এই রূপ জল
অভিশর অপকারক, অভিযুক্তী ও ত্রিদোষ
জনক, অভ এব উহা পরিক্যাজা। ঐ কলে

স্থান বা তাহা পান করিলে তৃষ্ণা সাধান, উদর রোগ, ভার কাদ আঘমান্য, কণ্ড বলগণাদি রোগ উৎপন্ন হয়।

কুষ্ট জলস্য নিদ্যোধী করণে।পাধ।
নিন্দিত থাপি পানীয়া কলিও স্থান্তা পত্ন।
সূৰ্বা ব্যান্তা কোন পাৰ্নি সিকভাষপি হ
ভূপা সভাপ, নিবাপ, মুন্তান স্বাধিত ভ্ৰা।
কপুরি ছাতি পুষ্যা পাটলাদি সুবাসিত্য।
ভূচি সাত্র পটকাবি কুমুগ্রহান বিব্যান্তাৰ,

ष्ट्रे कलत्क निर्द्धाय कतिवात डेलाव ।

দ্বিত জলকে প্রথমে অগ্নিতে উত্তপ্ত করিবে। অনন্তর প্রণ, রৌপা, লৌধ, প্রস্তর ও থালুক। এই গুলি একে একে অভিতপ্ত করিমা ঐ জলে কর্ত্তি পরে ঐ জলে কপুরি, জাতি, পুরাস ও পাট লাদি মুগন্ধি দ্বা মিলিত করিয়া গাঁৱছ ত ঘন বস্তে ছাকিয়া লাইবে এই রূপ করিবেশ জল নির্দেশ ও কাটাদি বিজ্ঞতি ইইবে।

পীতদ্য জনস্য পাককালঃ।
আমং কলং জীয়াতি যামণুগ্যাদ্
যামৈক মানেং শৃত্ত লীতগঞ্জ।
ভদ্ৰ মানেং শৃত্তং কদুক্তং
পদ্ম প্ৰপাকে এয় এব কালাঃ।

পীত জলের পরিপাক কাল।

কাঁচা জল পরিপাক হইতে দুই প্রহর লাবে, শৃতশতে শাতল (• সিদ্ধ করির। শাতলাকৃত) জল এক প্রহরে পরিপাক আদ্ধাবলিষ্ট হয়, সিদ্ধ জল ঈষৎউষ্ণ থাকেতে পান করিলে তাহা চারি মতের মধ্যেই পরিপাক পার।

আধুনিক জল পারভার

🕶 করণ প্রণালী।

্য মা । জালে কিজিৎ ফটকিরিও নির্মালী ফল অসিয়া শিকাইয়া লওয়া।

২ য় । একটা কাঠ নির্মান্ত ত্রিপরের উপরে ক্রমণ । ৫ টা মৃথিকার কলস দ্বাপন করিবে উপরের ২ টা ছির যুক্ত নিম্নটি ছির রহিত, উপরের কলসটিতে জল ধিবে তৎপরটিতে কাঠের দ্বলার চুর্ব এবং ভাষার নিছের টি বালুকা বা প্রস্তর খণ্ড ছারা পূর্ব করিবে। উপরের কলসটিতে কল ঢালিয়া থিলে উহা কলসটার তলম্ব দ্বারা পরিক্ত ছাইয়া তলম্ব কলসটিতে পাতত হাইবে তলম্ব কলসটার মুখে একখানি মুল ও পরিজ্ঞার বস্ত্র খন্ত বাভিয়া রাখিবে। অন্যে জল লিছ করিয়া এই কপ পরিক্তার বিরো আই কপ পরিক্তার বিরো বিরো আই কপ পরিক্তার বিরো বিরোর হিবলের হিবলের হিরা এই কপ পরিক্তার বিরোর হিবলের হিবলের হিরা এই কপ পরিক্তার বিরোর হিবলের হিরা এই কপ পরিক্তার বিরোর হিবলের হিরার হিরা বিরাধার বিরোর বিরোর বিরোর হিবলের হিরার হ

· প্র। বক্ষজ ছারা চুইয়া লওয়া। ইন। স্থাৎকৃত এবং ঔষধ প্রস্তুত করণারে ব)বহার কারেলে বিশেষ হিতক্র হয়।

দপ্ততিংশত্তমোহ ধ্যায়।

আর হৈছল বর্গঃ।

टिलम् ।

ভিলাদি রিও বস্থা৲ স্থেহ কৈল মুদাছত। তত্ত বাতৰঃ৲ সঞ্জা বিশেষাৎ জিল স্বাছৰমূ ঃ

रेक्न ।

তিল সম্বাধ প্রভৃতি বিশ্ব বৃত্ত ক্রিয়া পদার্থকে তৈল বাবে। ক্রিয়া বিশ্ব বাত, নালক বিশেষক্ষ ক্রিয়া ক্রিয়ার নালকতা শক্তি অধিক দ

ভিল ভৈলমু।

खिल देखन**् ध**क्र देखने। बुलवर्न केर्नु । सहस् । बुबार विकामि विषय मनुद्रश द्रम भाकरहा: ॥ সূক্ষ্মৎ ক্ষায়ানু রসং ডিক্রং বাত ক্ফাপছন্। वीरवारवाका विवा न्यान तुरस्वर ब्रक्टनिस्कृर । (अथमः) वस्त्री वृत्तः गर्डानेष्र विल्ली धन्य । मीलम् भूकिम् (यथ) र रातस्त्र उत्पद्धनु ॥ প্রোত্র যোনি শিরঃখুল নাশনং লহতাকরম্। जुरु। १ (कर्नाक रुक्य) यकारम (कासरम्बन)नी । ছিল ভিন্ন চুাভোহশিক মধিত। ক্ষত পিভিতে। ভগ্নস্টিভ বিদ্ধাগ্নি দঞ্চ'ব'শ্লেই দারিভে ॥ ভলাভিহত নিভু'লে মুগব)ান্তাদি বিক্ষতে। বভৌ পানেছম সংখারে নস্যে কর্নাচ্ছ পুরুৰে 🛊 সেকাভ)কাবগাহেরু ডিলাভৈল৲ প্রশাসাডে। यम् पुरुष (मर्थन(याः मायानाभिकत्व) 'यखाः । क्रमानि वृक्षेः भरतः (क्षांडः गरकाहरमन्यम्) । ब्रामाध्यमाक् बह्य क'नार कुर्याख कामा दर्जयन् । (**७४ श्रांतके ९ मह्ना (म**ेसक) विश्व द्वार्याकरिकः । रेजन क्या बन्द स्कुर क्नानार जिन तुरहवस्॥ व)वाधि मुक्तन छीटकांक महटेजु (संप्राः क्यम्। नोतः अकृत्य ७ रेखन (खन क्यान मोहिन्स् ॥ क्रकर भूत्रोयर तद्वांकि स्थिति छर अवर्त्तरप्रश আছক । সারক্ঞাসি তেন ভৈল মুদ্রারিডন্।।

किन रेकन।

তিল তৈল গুরু, ছৈর্য্য কারক, বলকর,
বর্ণের উৎকর্ম সাধক, সর, রুষা, বিকাশী,
বিশদ, আসাদে ও পাকে মধুর, হুল্ম,
ক্রম্ম কলার রুল, ভিজ, বাফ প্রেম নাশক,
ক্রম্মর লেক্স, বলকে বাফ রোধক, গর্ভাশর
ক্রম্মর রাশ্যুর রোধক, গর্ভাশর
ক্রম্মর রাশ্যুর রোধক, কর্মার রাশ্যুর রাশ্যুর বাহারক, কর্মার রাশ্যুর রাশ্যুর বাহারক, কর্মার রাশ্যুর রাশ্যুর বাহারক, কর্মার রাশ্যুর রাশ্যুর বাহারক, কেশের
ক্রম্মর রাশ্যুর বাহারক, কেশের
ক্রম্মর বাহারক, কেশের জনিবে, ভোজনে অন্য প্রকার হইরা থাকে। ছিল্ল ছিল্ল, চ্চান্ত, উৎপিষ্ট, মধিত, ক্ষত্ত, পিণ্ডিত, ভগ্ন, ক্ষ্টিত, বিদ্ধ, অগ্নি-দগ্ধ, বিশ্লিষ্ট, বিদাগিবতে অভিহত, নির্ভূগ এবং মৃগ ব্যাদ্রাদি কর্তৃক বিক্ষন্ত স্থানে, বস্তি ক্রিয়ার, পানে, অন্নসংস্কারে, নস্য কর্ণ্যে, কর্ণপুরনে, নেত্র পুরণে, সেচন ক্রিয়ার, মর্দ্ধনাদিতে ও অবগাহন কার্য্যে তিল তৈল প্রশস্ত।

রংহণ ও লেখন এই চুইটি গুণ প্র-স্পর বিরুদ্ধ, ভবে কিন্ধপে একাধারে বিরোধি গুণধ্য অবস্থিতি করিতে পারে ইহার মীমংশা এই।

क्रफाकामि कदरा वायु कुछ दहेत्र। यद-काल दिविक त्यांकः मकलरक मञ्ज्ञि करत, ज्यन तम मधाक अकारत अवाहिक বইতে ন। পরেতে রক্তাদি বর্দ্ধিত হয় ন। এই জন্য প্রীর কুশ হয়, সরতা, সুক্ষতা, ক্মিত্ব ও মৃতুচা গুণ পাকাতে তৈল সমস্ত সক্**চিত জ্রোতঃপথে প্রবেশ করি**তে সমর্থ হয়, তৈল প্রবিষ্ট হইলেই স্লোভঃ শকল ক্ষাত হওয়াতে উহাতে রস প্রবিষ্ট হইয়া, কুশ্চা দুব করে, 🗪 তএব তৈল द्रःश् वदः वादःश्री, सृत्त जीक्न, देश, मब এই मनल खन बारक क्रमणः स्माः क्रम कटत, এই निधिष्ठ ठेश लिथन वलागात्र निःमत्रवणील खरीजुक भृतीयत्क धन कटब ও কঠিন পুরাধকে খালত করিয়। নিঃদা-রিভ করে এই নিমিত্ত ইহা প্রাহক ও मात्रक ।

नव्ण देखनम्।

হীপনৎ সংহলিৎ তৈলং কটুলাক রসং গড়। লেখনং লাল হার্য্যাঞ্ছৎ ভীক্ষণ শিকাঞ গুৰুষ্ কখনেছে।হনিলাপোন্ত্র পিরং কর্মধাপ্তর । কণ্ডুক ক্রিনি বিত্র কোঠপুট ত্রণ প্রণ্ড ॥ ভয়নালিকয়ে। তৈলং বিশেষামূত্রকৃষ্ট্র কৃষ্

मर्भ रेखन।

সর্থ তৈল দীপন, কটু পাক, লঘু, লেখন, উফ্ল স্পর্ল, উফ্লবীর্যা, ভীক্ল ও রক্ত পিন্ত দূষক। কফ, মেদ, বাভার্লঃ, শিরো-রোগ, কর্ণ রোগ, কণ্ডু, কুঠ, ক্রিমি. খিত্র, কোঠ ও চুষ্ট রব্ণ প্রভৃতিতে সর্যপ্র ভৈল প্ররোজ্য।

ক্ষেত্রাই ও আরক্তরাই এই ছুই প্রকার সর্যুপ তৈলের গুণও এই রূপ।

कृवत्री टेक्टनम् ।

ভীক্ষোত্মণ ডুবরী তৈলণ লয় গ্রাহি ককাঞ্জারং। বন্দিকুদ্বিত্ত কণ্ঠ কুঠ কোঠ জিমিপ্রণুথ ধ্র মেদে। বোষাপহক্রাপ ত্রণপৌরবরণ পর্য।

বিলার বাজের তৈল।

তুবরী তৈল তীক্ষ, উষ্ণ, লঘু, গ্রাহী, ক্ষম, রক্তদোষ নিবারক, অধিকরিক ও বিষয়। ইহা ব্যবহারে ক্তৃ, কুঠ, কোঠ ক্রিনি, মেদোদোব, ত্রণ ও শোথ হোগ বিনষ্ট হয়।

करमी रेक्सम्।

অতদা তৈল থাপ্ৰেয় বিধোজন কফপিত্ত্ ।
কটুপাক সচকুখান বলান বাত হয় ওক ॥
বলকুজনতঃ বাবু প্ৰতি তুগ্ বোহন্ত্ৰন্থ ।
বক্তো পানে ভথাভাকে নগ্যে কুৰ্ন্য পুতৰে ॥
অনুপান বিধো চাপি প্ৰয়োজ্য বাভণাত্ৰে ।

मिनाव रेक्न।

মৃদ্দার তৈল আধের, রিগ্রেঞ্, ক্যুপত্তি নাশক, কটুপাক চক্ষের অপ- কারক, বল কর, বারু নাখক, ওয়া, মলোৎপায়ুক, স্বাচ্ রস, গ্রাহী, ডুকের দোব নাখক ও বন। বন্ধি ক্রিরার, পানে, মর্দনে, নস্যাধ্যে, কর্ণ পুরণে, অন্মুপানে ও বাত শান্তির জন্য মসিনার তৈল ব্যবস্থের।

क्रुष्ण रेक्टम्।

কুনুছ তৈল বন্ধৎন্যাৰুছৎ গুলু বিবাহি চ। চকুৰ্ড্যাদহিত্য বল্যাৎ বক্তশিক্ত কৃষ্ণগ্ৰহণ্ ।

. क्ल्मशैष्णत रेडल।

কুসুত্র হৈল অস্লাপাদ, উষ্ণ, থ্যকু, বিদাহী, চকুর অনিষ্ট কারক, বলকর, বক্পিত জনক ও কক্বৰ্জক।

খাখদ বীজ তৈল্ম।

কৈলং পু খনবীয়ানাং বলাং সুখাং গ্ৰহ ক্ষেত্ৰ। ব'তহুং কক্ষদ্ভিত ৰাজু পাক রুলং ছ তংঃ

েশস্তার তৈল।

এই তৈল বলকারক, র্য্য, গুরু,বাত-নাশক, কফ্ম, শীজল ও সঃত্ পাক।

এরত তৈলয়।

बहुत देखा। की त्यांका ही नाम हिर्मित है। इस) पुत्रा वस्त्रांकि त्यस काहित वहार क्यायान हम मुख्या त्यींक वस विकास विकास प्रकृति स्थाप विकास प्रकृति स्थाप विकास प्रकृति है। विकास वस्त्रांका व्याप

धवन रेकन ।

এরও তৈল তীকু, উল্প দীপন, পিছিল, ওল, ব্বা, ছকের খাছা জনক বরঃছাপক, থেধাবছ ক. কাজিপ্রদ, বল-কারক, ঈবং কবার রল, শৃন্ধ, যোনি-বিশোধক, ভজেদোষ নিবারক, আমগন্ধি, ভাত্তরল, ভাত্তপাক, তিকে, কটু ও ভেদক ইহা ব্যবহারে বিষম জর, লজোগ, পৃষ্ঠ-শূল, গুহ্য শূল, বাতোদর, আনাহ, গুন্ম অন্তিলা, কটিবেদনা, আমবাত ও বাতরক্ত এরও ভৈল দারা বিশেষ উপকার, দর্শে।

র।ল তৈলম্।

ভৈলৎ সৰ্জ্জ রনোন্ত্ত্ত্ৎ বিক্ষোষ্ট ত্ৰণ নাৰ্শন্। কুঠপাৰা জৈখিছৱৎ বাত প্লেয়াময়াপহন্।

ধুনার তৈল।

ধুনার তৈল মর্ছনে বিক্ষোটক, ত্রণ, কুষ্ঠ, পামা, ক্রিমি ও বাত হৈল্লিক রোগ নিবারণ হয়।

नीकारक देवनम्।

কপুর তৈলং হৈপেয়ং সৌগতিক মধৈলকন্। পাতাংখ্য কৈলং পর্বোধ্য পারেতেল দাপ জ্বন্। শ্রীতাংশ্য তৈল বাজেপ প্রমান বাস্থাপ্নন্। কিন্তু প্রমান্ত্রীয় স্বরম্ভা কক্ষুং পরন্। শ্রীতার ক্ষিত্রীয় ব্যক্ত স্থানিক্ষা গ্রেছ

प्रतिकार विराम त्नीविक, प्राप्तिकार क्षत्रीय छ न्याद-का स्टब्स केल्क्स विराम संस्थ छ

নাম: কাজুপুট তৈল আকেণ নাশক, বার্ণান্তি কর, স্বেদজনক, শৃলপ্রশমক, উপ্রবিধ্য, জরম্ন ও কফনাশক। আমবাত, উদরাধান, জর, শিরংগীড়া, মন্তমোগ ও ভগবোগে প্রবেশ্য। মাত্রা ৩ বিশ্ব।,

গঞ্জ ম ডৈলম্ ।

বক্ষ তৈলং ক্ষত্ৰং কুঠাময় বিনাশনন্।
কক্ষ্ লেখনং কঙ্বরং ক্ষ বিধাশনন্।
ক্সা নামা ৮ বিশ্বঃ।

शर्कन टेडन

গৰুনি তৈলের সংস্ত নাম সক্ষ তৈল বা সক্ষম তৈল। ইহা কাত-নাশক, কুঠম, কফশান্তি কারক, লেখন, কণ্ডম ও কীটাদির বিষনাশক। মাত্রা ৮ বিশু।

বাতাদ তৈলম্:

বাভাৰ তৈলং মৃদু রেচনং স্যান্ সাজীকরং মুর্ভগন প্রবন্ধ। পিতানিলয়ং থলু বাহনাপি লাবণ্যদং নেহত্তং সুশীতস্থ

वाषाटमत रेकन ।

ইহা মৃত্বিরেচক, বাজীকর, বার্পিত্ত প্রশাসক, দাহ নিবারক, লাবণাজনক ও লীতবীর্যা। মেহ ও শিরোরোপে সর্কদা ব্যবহৃত হইরা থাকে। সাজা ২ মারা।

নারিকেল তৈলমু।

নাহিংকুল ফলোস্কুত্ৰৎ হৈলৎ বাজীকরৎ গুরু। লোবনৎ কীনবাতুনাৎ বাতশিক প্রনাশনৰ ৪ कटक नटके अध्यक्ष इ चांटन कॉटन इ वकार्त । विश्वा (मार्टन इ विकट् कडोबकइन् डर्स ।

माब्रिटकन रेजन।

ন্দারিকেল তৈল বাজীকর, ওয়ং, দীপত। প্রাপ্ত ধাতৃ সন্হের পোষক, বার্পিত নাশক ও ক্ষত প্রশমক। ইহা ভক্তনাশ, প্রমেহ, খাল, কাল, ষদ্মা ও ক্ষরণ শক্তিলোপে প্রয়েজ্য। মাত্রা ২ সাধা।

কর্ম তৈলম্।

করঝ তৈলং ভাজোভং ক্রিবিছন্তক শিককৃৎ। নয়নাবয় বাভাতি কুঠকত ত্রন প্রদুধ। বায়ুনুধ শিককৃৎ ক্রিকিল্লেশনাক্রমাদোষ্টধ।

कद्र रिक्न।

ভহরকরজের তৈল তীক্ষ, উক্ষণীর্ব্য, জিমিনাশক, রক্ষণিত জনক, বাগুনাশক বিভিন্ন পিতৃত্ববিদ্যাল নেউরোগ, বাত ব্যাধি, কুন্ঠ, কণ্ডু, ক্ষত ও চর্ম্মদোধমাত্তে উপকারক। স্থপডেদে বিবেচনা মতে বাহা ও আভ্যক্তর প্রবেগ কর্তব্য। মাত্রা ও বিশ্ব।

াটনী তৈলম্।

বাষমৎ পাটলী তৈলৎ কৃষ্ঠ কণু বিষদ্ধন্য। বল্যক্ষিলং চক্ষণোৰ বন্ধু রুলায়নৰু ৪

চাটলম্প্রার তৈল।

চাউলমূগ্রার তৈল বঁমনকারক, কৃষ্ঠ নিবারক, কণ্ডুর, বলকর, আধের, চর্দ্ধ দোব প্রশমক ও রশায়ন। মাত্রা ১০বিন্দ্র।

चाकीमल रेकन्य ।

তৈল\ আন্তীকলোড্ড\ সমুক্ষেম নায়িংবৃ : অবিভিনাত পৰৰ বাস্থানাক্ষেপ স্থান্ত : আৰবাত হর\ বলা\ হত্তদেউত্তৰাৰ্ডিযুৎ :

कात्रकट्यत टेक्स ।

ইহা সরুভেক্তর, জ্মিকারক ও বল কারক। পুরাভন ুঅতিসার, আ্লান, আ্লেপ ও আম্বাত রোগে উপকার করে। দত্তবেপ্ত কভে ইহা লাগাইলে তৎক্ষণাৎ বর্ষা নিবারণ হর। মাত্রা ৫ বিক্ষা

लवन रेजनम् ।

দেবপুষ্পা ভবং তৈল মগ্রিকৃষ্ বাভনাপনত্ব। দৰবেট ভভারিল্লং গার্ভিব)। বন্দাপত্ম ॥

नवन रेकन।

লবন্ধ তৈল অগ্নিকারক ও বাধুনাশক। গর্ভাবস্থার বমন নিবারণার্থ ইহা বিশেষ উপদোগী। দন্তবেটক্ষতে লাগাইলে শীস্ত্র গন্তবার নির্ভি হয়। মাত্রা ৫ বিক্

ত্বাচ তৈল্য ।

বন্দিনাধানিক্তর দীগ্নানাক্ষেপ নালনদ্। বাকু)ংক্লো প্রশানন্দ সংগ্রাহি দলনাবিজ্ঞং। ভুচিৎ তৈলং রক্ষানাবি কোনোক্ষিক্ত নিম্মানি

मायितिय रेखन के के कि

দাক্তিনির বৈদ্যা হাছ লাগে ও বজা এবছিছ প্রতিষ্ঠান আবেশ, বিশি পরি প্রতি শীড়ার বাজনিকি ভৈশ ভারার্থন ক্ষ . 7

मीभाक रेडनम्।

मोलमारिकन् वारशेष्ठः मृनास्मर्शानमाडङ्ः। चाभानाकोनं मृनाम अवनी त्वायमाननम् ॥

যমানীর তৈল।

সমানীর তৈল অগ্নিকারক ও বাঃ নাশক। শূল, আক্ষেণ, আগ্নান, অজীব অর্শঃ ও এহনীদেংবে ইহার প্রয়োগে উপকার দশে।

मिधि टेड्नम् ।

रेखन् रेमटबम् मारसंग्रः गुनाम्नामानिन धन्रः

दमावीत टेडल ।

মোরীর টেল অগ্নিকারক ও বাসু-নাশক। শূল ও আগ্নান রোগে প্রয়োজ্য। মাতা । বিশ্ব।

জীৱক তৈলম্ :

विवि देशमधन् र जायू र देशमार को व्रक मध्यत्।

जीवात टेडन ।

জীরার টেংলের ৩৪ মোরীর তৈলের ন্যায়ঃ মাজা ব্যিক্ঃ

খুগাল কণ্টক তৈলম্।

সুগাল্**কটকোত্রত তৈল**ে তথ্যবশালবন্ আমুবা**ত প্রক্**ষ্মুত নির্মানোহল্যাকি রোগহাত ৮

শেরালকটোর তৈল।

প্রেণা কটিট বীক বইতে এক বাবার তেপ প্রেটা হার। ইংল ওয়-রোর, কর ও সাম্বরীতে উপকারক শ্বেমাশ ইটাই সামী চক্তর প্রকাম ব্যবহত করারীতে

निकुष्ठ रिज्ञम्।

তৈলং নিকৃত বাজে। অ মত্যুগ্ৰং বেচনং প্ৰদৃ ।
আনাহ সুদ্ধং হতি সংন্যাসক শিলোপদ্ ।
ধনুঃ ততং ভবোনাদং প্ৰবেকাল সংক্ষদ্ ।
আম্বাডক পোৱক স্পনাং কাল্পাভ্ৰম্ ।
শাহাডক বিলুঃ।

व्यवभागवीटकार देखना

অন্নপালের বীজকে নিপীত্ব করিলে এই তৈল নির্গতি হয়। ইহা অভিশর উগ্রবিগা ও অতি বিরেচক। আনাহ, উদরী, সংন্যাস, লির পীড়া, ধন্মন্তকার, উন্নাদ, পক্ষাহাল, আমবাত ও লোখ রোগে প্রয়োজ্য। কাসরোগে ইহা বক্ষের উপর মর্জন করিলে কাদের উগ্রহা নিবারণ হয়; ইহার দ্বায়া বক্ষের চন্ম আরক্রিম, উগ্রহাপন্ন ও পিড়কা ব্যাপ্ত হওরাতে ঐ অন্যাভিমুখিনী ক্রিরার বলে কাদের বেগের থকিতা হইয়া থাকে। মাত্রা ২ বিন্দু।

मर्क्टरेक्ट खाः।

रेलभा सरमानि संग्रृम् योगुक्त हेनाचित्राः स्वत् । स्रकः त्वत्रम् रेलनमा संग्रु (क्क्सः सरमानित्रः)

रेकल माटडेंब खन।

যে ভৈল যে বীজ হটতে উৎপন্ন হর, ভাহার খাণ সেই বীজের ন্যার, ইবা বাণ্ডট প্রিমাছেন। অভএব যে সকল তৈলের বিষয় উল্লিখিত হইল না তাহা-দের গুণ ভবুৎ বীজের ন্যার জানিবে।

অভাতিংশভ্যোহধ্যার:।

মূত্রবর্গঃ।

र्गामृख्य ।

গোষুত্র কটুভীজোজং জারং তিক ক্ষায়কন।
গল্পা দীপন বেখা পিজকুৎ কজ বাজহুৎ ঃ
শূল প্রপ্রেমানার কৰু কি মুখ রোমাজিং।
কিলান সদ বাতান বৃত্তিক কুঠ নাপনন্ ঃ
কাল খালাপর পোর কাবলা পাতুরোগছং।
আনাচ্চ । কৰু কিলান সদশূল মুখাজি রোগান্
প্রপ্রাতিলার নক্ষান্য মুক্রোধান্।
কালং সকুঠ কঠর কিনি পাওরোগ ন্
গোষুত্র নেক্ষপি পীতবপাকরোভি।
সক্ষেত্র কিন্তু গোষুত্র প্রবৃত্ত হধিকম্ ঃ
আভোহবিশেবাং কর্গনে মুত্র গোষ্ত্র মুক্র পোষ্ত্র মুক্র পোষ্ত্র মুক্র পোষ্ত্র মুক্র পোষ্ত্র মুক্র প্রাত্ত হিল্পায়
প্রক্রেমান্ প্রক্র প্রায়ত্ত্ব প্রায়ত্ত গ্রহাপর ।
প্রক্রমান্ প্রক্রিমান্য মুক্র পোষ্ত্র মুক্র প্রায়ত্ত গ্রহাপর ।

পুৰৱৰ্ত্তলানাৰ কামলা পাঙ্টোগকং। ক্ৰায়ং ডিজডীক্ষক পুৱবাং কৰিপুলনুং।

গোমৃত্র কটু, তীক্ষ, উষ্ণ, ক্ষার গুণষুক্ত.
তিক্ত, ক্ষায়, লঘু, অধিদা প্রিকারক, অরণ
শক্তি বর্ত্তক, পিত্তকর ও বাতশ্রেম নাশক।
গোমৃত্র ব্যবহারে শ্ল, গুলা, উদরবোগ, আনাহ, কণু, নেত্রবোগ, মুধরোগ, কিলাস, আমবাত, বস্তিরোগ, কুন্ঠ, কাস,
খাস আনাহ, শোধ, কামলাও পাণু,
রোগ উপশ্যিত হর।

অন্যত্ত্ব গোদুত্ত্বের এই দ্বপ গুণ বর্ণিত অ'ছে, যথা—পাণু, কিলাদ রোগ, শূল, ম্বরে'গ, চক্লুমোণ, গুল্ম, অটা দার, বাতব্যাধি, মৃত্ররেগ, কাদ, কুষ্ঠ, জঠররোগ, জিমি ও পাণ্ডুমোণ এই শমন্ত ব্যাধি কেবল গোদ্ত্র পানেই উপ-শমিত হর। শকল মূত্র অপেকা গোম্ত্রের তাপ অধিক। অভএব বিশেষ: স্টল্লেখ না বাকিলে মৃত্র শক্ষে গোম্ত্রই ব্রিভে হইবে)

গোম্ত্র সেবনে শ্লীহা, উদরবেরাগ, শ্বাদ, কাস, শোব, মলবোধ, শৃল, গুল্ম, আনাহ, কামলা ও পাণ্ডু-রোগ নিংাবিত হয়। গোম্ত্র ক্যায়, তিক্ত ও উষ্ণ। কর্ণেপুরণ ক্রিলে কর্ণ শূল নিং রিত হয়।

(स्थ्युक्यः ।

অবিষ্ত্রৎ সভিক্ষৎ স্যাৎ প্রিঞ্জৎ পিকাবিয়োবি চ।

নেষ্মূর ভিক্ত, স্লিগ্ধ ও পিত্তে আবি-রোদ (অর্থাৎ পিত্তবন্ধ ক নহে, পিত ব্যাধিকেও প্রয়োগাং)।

ভাগস্বস্

আজ্ঞ ক্যায় মধুরৎ পর্ব্যৎ দোষারিহ'র চ।

ছাগম্ব চ্যাব, মনুরী, পুণা ও তি-দোষ্মা

মাহিশ মুত্রম্।

वर्गः लात्यागरवृक्त मधार्थः महस्यः महस्

মাহিব মূত্র ক্ষায়খ্য বিশিষ্ট পূর্ব ক্ষেত্র । ইহা অপ:, পোব ও ইয়েব্রাধ্রে: প্রয়োগ্য ।

হতিমূত্র লবণাখাদ। ইহা ক্রিমি, কুঠ, মলমূত্র সোধ, বিষয় পাঁড়া, সৈমিক ব্যাধি ও আর্শ : বোগে হিতকর।

डेब्रे मृद्धम् ।

সভিক্তৎ খাদ কাদপ্ৰবৰ্গোন্ত্ৰ চৌকু মুচ্যতে।

উষ্ট্রমূত্র স্বাস, কাস ও অংশ।রোগে উপকারক।

व्यथम्बम् ।

বাজিনাৎ ভিক্তকটুকৎ কুঠবৰ বিৰাপহন্।

শেশুমূত্র কিন্তুচ ও কটু। ইহা কুঠ. ত্রণ ও বিষয় ব্যাদিতে প্রয়োজ্য ।°

পৰ্দভ মৃত্তম্।

খরস্ক মণাফারোআগ এল বিনাশন্।

গর্ভমূত্র অপস্থার, উন্মাদ ও গ্রহা ময়ে হিত্তপ্রদা

नत्र गृज्य ।

নরমূত্র৲ গর৲ ছব্তি সেবিভগুরসায়নম্। র কশাদা হর৲ ডাক্স৲ সক্ষার স্বরণ৲ ফা্ডেম্ ॥

भन्नभा मृत्।

নঃমূত্র বিষয়, সেবন করিলে রমায়ন ক্তরপ হয়। ইহা ছৌকু, ক্লার, গুণগৃক, প্রণাস্থা, ও রফ্রপামারেরার নিবারক।

क्ष्मीक्षां व व्यव्योक्षाः ज् ब्रीकः मूबर अनगः। वर्षक्षेत्रं क मक्षायामार नूरभार पृक्र विकर स्वत् । क्षित्रं क्षायं, समय क्षेत्रं स्वित करे नकन

हा है। जांग, त्या ७ वरिय धरे नकन सारीत डीकाकित युव शायक ध्यार गर्मक, कि. सारी, युवस क का देवारमा शुरुप सारिकारक विकास চরক ও সুক্রত ঋষি নরমূত্র ভাগ করিয়া অবশিষ্ট অষ্ট মৃত্তের বর্ণনা করিয়া-ছেন। ঐ ৮ টীকে অষ্ট মৃত্ত বলে।

উন্চত্তারিংশন্তমোহধ্যায়:।

লবণ কার বগ**ে**।

देगश्ववस् ।

সৈদ্ধবোহজী লীত পিবং মা'ব্যক্ত সিভুষ্। সৈত্তবং স্বৰ্ণ স্বাদু দীপন্য পাচন্য স্বয়ু । প্ৰিথ্য ক্লচ্য হিম্ম সুস্কা নেত্ৰাং ভিদোষ্ঠ্য ।

रेमकारलवन ।

দৈশ্ব, শীতশিব, মানিমন্ত ও দির্জ ইহার পর্যায়। দৈশ্ব লেবণ স্বাহ, অগ্নি দীপক, পাচন, লঘু, স্লিগ্ন, রোচক, শীতল, বলকারক, স্ক্ল, চক্লের উপকারক ও ত্রিদেশ্ব নাশক। এই লবন পঞ্চাব দেশের পাশিজীর বনিতে জন্ম।

(मो १६६ लम् ।

সৌকর্চন স্যাক্ষচক মঞ্চং পাক্যঞ্চ তন্মত্ত্ব। স্লচকং রোচনভেদি দীপনক্ষাচনকার্য ঃ সুমেছং বাতনুমাতি পিত্তলং বৈশ্বং লয়ু। উদ্যার শ্রজিবং সূক্ষাং বিবন্ধানার শুলজিব ঃ

महल लवा।

সৌবর্চল, ক্লচক, জক্ষ ও পাক্য এই গুলি ইহার পর্যার। এই লবন রোচক, ডেদক, জরিদীপ্রিকারক, উৎ-কৃষ্ট পাচক, ক্লেহ বিশিষ্ট, বারু নাশক, বিশম, লঘু, সৃক্ষ, উদ্পার শুক্ষিকারক, অধিক পিশু বর্জক নহে এবং বিষয়, আনাহ ও শূল রোগে উপকার করে। হিমালর প্রভৃতি পরিভের সক্ষার লবণোদক আবা প্রভাবন সমূহের জল হইতে এই লবন প্রভৃত হয়।

বিভ্যু ৷

বিজ্পাক্ত কতক তথা থাবিজ মাসুরম্। বিজ্পাক্ষার মুদ্ধাবং কঁকব ত নুলোমনম্। দ্বাপান কযু ভাজ্যোজ্য রক্ষা কচাগ বাংগায়িছ। বিব্যালাক বিক্টা হাঞ্জা গোরব শুলনুৎ।

विष्टे न वन ।

বিড, পাক, কতক, ছাবিড় ও আহ্বর এই গুলে বিট লবণের নাম। বিট লবণ কার গুণ বিশিষ্ট, দীপান, লঘু, তীক্ষ, উষ্ণ, কক্ষ রোচক ও ব্যবায়ী। ইহা কফ্ ও বায়ুর অন্যুলোমন অর্থাৎ কফুকে উর্দ্ধ দিকে ও বায়ুকে অপোদিকে নিঃসারণ করে এবং বিবন্ধ, তানাহ বিষ্টুড, সুন্দ্রোগ, শ্রীব্রের ভার নিবারণ করে।

मावखलवनम् ।

সাযুদ্ধং বজু সবণ মক্ষিবং বশিরও তথ।
সযুদ্ধাং সাগরজং সবংলাদবি সভন্ ।
সাযুদ্ধাং সাগরজং সবিকাশ নপুরং ওর :
মাউু)ভাং দীপনাং ভেদি সন্ধার সবিদাহি ।
সোদ্ধানাং বাতনুথ ভিক্ত সরকাশ মাতি লীভান্।

कद्रक्ठ न्दर ।

সামুদ্রিক লবণের অনাগন্য নাম অক্ষিব ৰশির, সাণ্ডক, সাগরক ও লবণোদ্ধি সম্ভব।

় সায়ন্ত্রিক শবণ পাকে মধুর অথবা ঈবং ভিক্তরস বিশিষ্ট, অবিদাহী, কফ বছ কি বারু নাশক, ভিক্তা, আরুক্ষা ও নাতি শীতোঞ্চ।

(द्रोधक्रम् ।

লাকভয়ার৲ কবিত৲ গুড়াখ্য৲ রৌমকঙরা। গুড়াখ্য৲ লঘু বাড়ন্ন মৃত্যুক্ত৲ ভেলিপিজলন্ । গুড়িশুক্তিলালি স্কাঞাভিয়)শি কটুলাকি চ।

সান্তার লবণ।

শাকস্ত্রীস, রৌমক, ও ওড়াখ্য ট্রুহার পর্যায়ন সভারী লগণ লঘু, বীষ্ট্রনাশক ও অভিশয় উষ্ণ, ভেদক, পিওজনক ভীক্ষোষ্ণ, স্কাও অভিষাদী, ইহা পাকে কটুরস হয়। এই লগণ রাজপ্তানার অন্তর্গত সমুর হুদ হইতে উৎপন্ন হয়।

संदिष्य ।

डेम'क्रम' लाग्मकरन्य यक्ताक्ष्य कृषिकः स्थम् । व्यक्ति स्त्रक्त कृष्टे स्थित् जीक्रकः वास्त्र जनम् ॥

भाषा लवन है

ইহা সমুদ্রতীরস্থ নৃত্তিকার জব্মে। ইহা কার গুণবিশিষ্ট, গুরু, কটু, লিয়া, শীতল ও বায়ু নাশক।

धादल वनम् ।

टेनउ:१९ कात्र व्यवस्य मुझक्त मंगरक्षेत्रम् । स्टब्स्य नुगर कात्रः शहर विश्वकासाम मार्गाहर्मः

বাড়ীলবণ লৈতালারক, স্ত্রত বিবেচক। সূল, আর বাং, বিল আধান রোলে ইহার জার। উপুন্তর ব

trest pres offer the regarded

উল্লিখিত লবণ সকলের মধ্যে দৈকব সৌবর্চল, বিট, সামুদ্র ও সাস্তার এই পাঁচটীকে পঞ্চ লবণ বলাঘার। এক লবণ বলিলে দৈক্রব, ছিলবণ বলিলে দৈক্রব ও সচল, তিলবণ বলিলে দৈক্রব, সচল ও বিট, চতুর্লবণ বলিলে দৈক্রব, সচল, বিট ও সামুদ্র ও পঞ্চলবণ বলিলে ঐ প চটীকে বুরিতে হইবে। চরক সান্তারকে পরিত্যা ও শুভাদকে গ্রহণ করিয়া পঞ্চলবণ বর্ণন করিয়াছেন। ম্পা—ধ্যাবর্চলং দৈক্রবন্ধ বিভ্নোভিদ-মেবচ। সামুদ্রেণ স্বৈভানি পঞ্চম্পর্ল-ব্ণানি চ ইতি।

हनकाञ्चम्।

চৰকায়ক মতু।কাং ধাপনং দক হবঁণন্ লগণানু রসং কচাং শূলাজীণ বিবদনুৎ ॥

हर्म्स्या हर्कत्सानी।

ইহার অপর নাম চনকায়। ইহা আকিশ্য উফা অগ্নিদীপক ও দক্ত হর্ণ। ইহার আখাদ অয় ও লবন। ইহা শূল অজীব ও বিবন্ধ দূর করে।

न्द्रभावः।

उच्चे १ वा वाहिक १ वरा० भूतीक १ वसाकः १ वडम् काहभी के विवादनम सुमानक निकादकारण । काहके मुक्ति निव्दानिक १००० काहके मुक्ति निव्दानिक । अस्ति काहके निव्दानिक के । अस्ति काहके निव्दानिक के । अस्ति काहके निव्दानिक मुक्ति के । अस्ति काहके निव्दानिक मुक्ति के । अस्ति काहके निव्दानिक मुक्ति के । अस्ति काहके निव्दानिक के । अस्ति काहके निव्दानिक के ।

निर्माप्तल ।

উষ্ট্র, মহিব অথবা বোজাতির বিষ্ঠা দথ্য করির। ঐ ভন্মকে ক্ষার পাকের নিয়মানুসারে পক্ত করিলে নিসাদল প্রস্থাত হয়।

প্রকারাস্তর। পাড়েরিরা করলা হইছে আনক বাহির করিরা লইলে দাহা অবশিষ্ট পাকে, তাহাকে লবণ দ্রাবকের সহিত মিপ্রিত ও শুদ্ধ করিরা উদ্ধপাতিত করিরা লইলে ননোর অর্থাৎ নিশাদল প্রস্তুত হর।

নিসাদ্বল লবণাসাদ। ইহা নির্গমন দীল শারীরিক পদার্থ সমূহের (কফ, পিন্ত, মল, মূত্র, স্বেদ ও রক্ষঃ প্রভৃতির) লাবক, শোধর ও শীতল। সক্দোধ, জর, প্রীহা, শির:শূল, অর্কাদ প্রভৃতি, তান রোগ, রক্তাপিত্র, কাস, ভর্মরোগ ও ঘোনিব্যাপৎ পীড়াব নিসাদল হিতকর। শোস্থার্থ ইহার বাহাপ্ররোগ ও অন্যত্র আভ্যন্তরিক প্রয়োগ কর্ত্তব্য।

धवक्तंद्रः ।

যবল্কভবে ভাবে ভিপ্ত_া প্রখোলিতে জলম্। স্তোগমান মধাভত্তৎ সভার**্**পূপুর্বাসসা । ত্রিঃসপ্তকৃত্ত্বে: বিজ্ঞাব) পচেৎ ভীত্রেশ ব'হুমা। নিঃপোষে স'ললে ভব্মিনু যবভারোহবলিয়াতে ।

ध्वक्ष व

যথের শ্রা, সকল দগ্ধ করিরা সেই ভক্ম ২ সের লইরা উহাতে ৬৪ সের অল দিরা মিশ্রিত করিবে এবং ঐ জল ২১ বার স্কৃল বস্ত্রহারা ছাঁকেরা লইরা অগ্নিতে চড়াইরা তাত্র অগ্নিহারা পাক করিবে। সমুদার জল নিংশেব হটলেই পাক পাত্তে যবকার অবশিষ্ট থাকিবে।

স্থিতি কাফারঃ।

যক্ষা হি বিষয়ে জুত নু সা ছিল্য আৰু বৃক্ষকান্।
দাপয়েদ বন্ধিনা সম ক ওদ্ধঃ দ্বাপত্তেদ্ ঘটান্ত্ত
আৰাজাৱনকৈ বুকি নু সুদ্ধান্ত্তিক সৰ্বিহিতঃ।
কুলানৌ আলৈতে ভৱ ক্ৰয়ভাৱ সৰ্বাম্ ক্ৰয়ান্ত্ত
দ্বেচ্চ ক্ৰমণাঃ 'ক্ৰপ্তা' তেন ভেডাঃ ক্ৰুডো রসঃ।
ঘটেয়ু 'নপভেং ভেরু স ভক্ষ ব্যক্তিকোচাতে ঃ

শাচিকার।

পঞ্জাব প্রভৃতি দেশে এক পেকাব

মার বৃক্ষ জন্ম। উহাদিগকৈ ছেদন
করিরা অবিহার। প্রজ'লত ও তরিত্রে

ক্ষা ছিদ্র মুক্ত অদাহ্য আবরণে আবৃত
কতিপর ঘটমাপন করিবে। ক্ষাপ্র প্রজলিভ হইলে তত্পরি পূনঃ পূনঃ ক্ষাপ্র
ক্ষাস্থান করিবে। ক্ষাপ্র ক্ষাপ্র
ক্ষাস্থান করিবে। ক্ষাপ্রক্ষাস্থান করিবে। এই প্রক্রিরার দেই কাঠ সকল

দল্প হইবে এবং ভল্লিংস্ত রস ঘট

সম্ভ মধ্যে সঞ্জিত হইবে। প্রার অবিভি
ভাপে তার করিবা লইলেই স্বজ্জি কালার
প্রস্তাভ হইল।

डेक्टबार्नामानि क्यान्छ।

পাকাং কারো ববক'রে বাবস্কে, যদাগ্রন্থ বর্ষিকাশি ক্তঃ কারং কাপোডঃ সুধবর্চকং ॥ কবিতঃ বর্জিকাভেলে বিশেব ভু সুব'র্চ্চকঃ। ববকারে। কয়ু'ব্যকা সুবুকো বকিদাপনঃ। বিহতি শূলবাভাব স্নেয় বাল বলাবয়ান্। পাত্বা প্রবী গুলামার মীত ম্বাবয়ান্। ব্যক্তিকা ব্যক্তিবং (ব.হুবা) গুবতো কবৈঃ।

স্ক্রিকাকার ও স্বক্ষারের নাম্ ১৪ ১৪ব ।

পাক্য, স্পার, যবক্ষার, যাবশুক ও যবাএক এইওপি ইহার প্র্যাব। সক্ষিকাও
এক প্রকার স্পার ভাহার অপর নাম
কাপোড ও স্ববর্চক। সার এক প্রকার
ক্ষার আছে ভাহার নাম স্বর্চিক
এই ক্ষার সক্ষিকাক্ষারেরই প্রকারান্তর
মাত্র। মবক্ষার লঘু, বিশ্ব, অভিস্কা,
অধিকর। ইহা শূল, বাব, আম, শ্লেমা,
বান, গ্লেমোর, পাও রোগ, অল ই, গ্রহণী
ওগ্ন, আনাহ, প্রীহা ও ক্রজোগ নিবারণ
করে।

সভিজির তাগ ইহা অপেক্ষা মৃত্ কিজ ইহা ওল্ম ও শূলরোগে বিশেষ উপকার করে। সুবর্জিকা সন্দিকার ন্যায় ওণ বিশিষ্ট।

कात्रवर कात्रज्ञकः।

বাকিক। যাবপুরুত কারবয় সুদাইবিদ্। টলনেন যুক্ত করু কারবয় সুদারিবদ্। যিলিককুকু এনভূদ্বিশেষাদ্ রাম্কত পরন।

ष्ट्रे अवः किन श्रकात कात्र ।

পর্জিকা ও সবক্ষার এই উভরকে ক্ষারশ্বর এবং নজিকা, সবক্ষার ও সোহাগা এই ভিনকে ক্ষারত্তর ক্ষেত্র। ইয়ারা একত্তর মিলিভ হইলে পুর্বোক্ত রূপ ক্রান্ত্রী বিলেশ উপুক্ষার্থী করে।

WINISTA.

mint at y interested the minute i

बरका विका (हिंड कांद्राकेक पुरास्त्रम् । কারা এডে১ব্রিনা তুল্যা ওলা শুল ধরা ভূপণ্।

তাটে প্রকার কারে।

ललान, नजी (अ.डी निरमय), जाना-মার্ব,, তিভিড়ী, আকন্দ ও তিগলাল हेष्ट्रांद्र क्यांब এवः मञ्जिका अ ववकांब धहे अक्टेम्या मिलिंड दहेरल कार्राष्ट्रक यत्न। व्यष्टिकात व्यक्ति मनुम, हेरा धन्म ७ मृल द्यांग नष्ठे कद्य ।

চিত্রারিংশভ্রমোহধ্যায়; ।

मकान वर्गः।

यमाम् ।

महा९ वस्तिश् । स्था क् ९ छवाम महिता सुता । বাক্লীরা মহানক্ষা অব্কারণ বানিকাং ৪ च्यमुच्छी माधवी सका मलनी त्यां विस्तो सधु। হলিথিয়া ব্ৰস্ক। কাৰিনা কলিশীত।পি 🛚

यमा ।

मित्रा, क्या, वाक्र्यो, हेबा, महानका, छच्, कावन, मानिका, जग्रहा, माध्वी, मठा, मननी, त्यानिमी, मधु, दलिश्रिश, तनद-স্ট্রা, কামিনী ও কপিশী ইত্যাদি শক্ষ मानाव भर्गाव। मना जात्नक क्षकाव, তন্মশ্যে নিমে কছক গুলির বিবরণ লিবিত इट्टिंडर्ड ।

क्षिकी क्षेत्रवृष्धि में रंगोकी ना मनिरम्गाहारछ । हिल्लुका नपुरा (बीकी राषश्ची रमलिकहर । क्ष क्षी तथा राष्ट्राप स्कोननी।

*(नोड़ी व*रम । উक्षशैर्घा, मधूब, वाब्रुमा**नक, शिखक**ब, বলপ্রদ, কান্তিবদ্ধকি, তৃপ্তিকর, পণা, वश्चितक क कारमानी भक।

নোড়ী মদিরা ভীক্ষ,

মাধ্বী :

मध्योषि विविद्धां म'णु म'श्र्यो मा महिरहाहारछ । बाडु)का वधूदा गामती लिखा'यल विन्यनी । कामना भाव खत्राणीः अदर्ब भीव चालिमी ।

মৃধু প্রভৃতি ছারা প্রকাত মদিরাকে मान्ती दलागाय। हेश अन्छि डेक्ट, মধুর, বাবুপিত নাশক এবং কামলা, পাতু, ত্তন্ম, অর্শ-, প্রমেছ ও প্রীকা বেংগে উপকারন।

कुछ। रष्ट्रिटेट थ'रेस,: रेलकी क मक्द्राहाएक। কটু লা বাভক্ষকৎ তীক্ষা গৌড়ী স্থা চ সাঃ

বছবিদ বান্য স্বারা প্রস্তুত মদিরাকে र्देशी वटल । देश करू, अम्राष्ट्राम, वाकटम्रम नानक, की करीका अ त्योकीय नाम खन विभिष्ठे।

कः इष्ट्री ।

कावस्त्री के कश्चिक्त माना जना करवे की ! काष्यदी मुबरुद्रा अवलिक अवार्णिनी ह

মানা ছবা কদ্ম ক্লন্ত মদিরার নাম हेहा स्मध्य, खाखिरव अ कामपत्री। পিন্তম ।

मार्की।

प्रशृक्त भूष्मकाखः वा बाह्को मा विश्ववार**क**ा बाबुको बादियो तन्त्रा पुनिङ्ग कोमवर्षियो ह মউল ফুল হইতে প্রস্তুত স্থাকে মাধ্রী গ বলে। ইহা মাদক, বলকর, পৃষ্টিকারক ও কাম বছকি।

टेमटब्रही।

ৰানুৱ মূল\ বধরী পার্করা চ ডবৈব চ। এখানেকর সভানালৈকেরী বধিরা মতার নৈরেয়ী বাভছদ্ বদ্যা অবস্থী বস্থিপিনী।

বিল্মল, কুল ও চিনি ইহাদের সন্ধান ক্রিরার হারা প্রস্তুত মদিবাকে মৈরেরী বলে। মৈরেরী সুরা বার্নাশক, বল-কর, ক্ররম ও অগ্নিপ্রদীশক।

মৃত্যঞ্জীবনী নামক ত্বা প্রেক্তর করিবার নিরম ও তাহার গুণ ভৈষ্ক্রা রতাংলিতে বর্ণিত হইরাছে।

সংক্ৰিং সুৱাৰাং সাৰান্য গুণাঃ।

(রোচনং দীপনং জ্বাং হ্রবর্ধ প্রসাধনম্।

প্রাৰনং বৃংহবং বল্যং জ্বালাং বাগ্রিবোধনম্।

দাপনং নক নিজালাং বিবজানাং বিবজন্থ।

বধবদ্ধ পরিক্লে দুখোনাঞাবনে হন্য।

পরং বালীকরং মদ্যং প্রতি সংখোগ বর্জনম্।

বিবলুগে জ্বায়ার পোকেনোপ্রত্যা চ।

বিব্যালে জীবলোকস্য ব্যাং মুক্তা নিবেবিজন্ধ।

বিব্যালে জীবলোকস্য ব্যাং মুক্তা নিবেবিজন্ধ।

বিব্যালে জীবলোকস্য ব্যাং মুক্তা নিবেবিজন্ধ।

मरमात्र माधादन खन ।

মদ্য হোচক, অগ্নি দীপক, জ্ন্য, পর পরিভারক, বর্ণ প্রশাদক, প্রীতিজনক, বৃংহণ, বলকর, জর শোক প্রান্তি নি-বারক, নষ্ট নিজ ব্যক্তিগণের নিজ্ঞা প্রদা-রক, বাক্শক্তি বিহীন দিগের বাক্য প্রবর্ত্তক, অভি নিজ্ঞাশীল ব্যক্তিগণের নিজ্ঞা নিবারক, মলাদিরোধ পীড়িত ব্যক্তিদিধের বিবন্ধনাশক, বধ,বন্ধ ও ক্রেশোৎপাদক কার্য্য হেডুক জুংবের বিশারক, অভিনর বাজীকর ও শ্রীতি সংযোগ বর্জ ন। বত্ত্বংশ ক্ষত্ত ও শো-কোপহত চিত্ত বাজিকর, যথাবিধি মিধে-বিত মদাই তত্তৎ কুংধের বিশারক ও কিরৎকাল বিশ্রাম প্রদা

नीय्यानम्। यथःमः विष्यक्ति।ऋत्वां यकाः । क्षान (या मध) (या १६) भक्त माम्बर्धिक मृ विष्या मृष्य श्रद्धाः श्रीक्षित्रहा भागाः स्वयुर्भकः। गार)गीड श्रदामामा र क्यामाक श्रवस्तुः न ह तुक्तिमा (७ वदा) विषयप्रभूम लेकिक्टिश जूर्य निक्षा क्षार्यायण क्षत्रवार मजुर्थ। प्रष्: । क्यित्कनात्र रहन। यरमुध्य श्राचीय मार्थ । खरमार्थिया अवस्त्रत किरियर म मुम्बाटक ह युस्र मा लियु स्टर्म:तवा राज्या नाकालि वा युस्र । बुक्का बुक्क श्रमां भन्त श्रम्भायम (बद्ध है। काम लाबाब माऽक(श) (याक्षमा मधिलय)या । शिकारमाण्डामि काभीशाक विरुक्ति मधारम महत्व ह **फुछोग्रन्ह मन् श्रामा कश्रमान्त्रन मिष्राम**्गः। मभरवाद'तुष्ड मन। कीनश्रीम शुरुष्ठाममः 🛊 द्रम्बीषाम् म विषयाम् म व्यक्ति म मुक्कान्यम्। यवर्षर भोग्रहर्द्ध मृत्र इष्टिर खीक म विक्षिति । कार्यमकार्याः सूचाः मृत्याः कारक यक বিভাৱিতম্।

যদকছো ন জানাতি কোহকথাৎ তাৎ ব্ৰজেদ্ ৰুধঃ ॥ মধ্যোপাহত বিজ্ঞানো বিষুক্তঃ সাজিকৈ গ্ৰহিণঃ। সামুখ্যং সৰ্বভূতনাৎ নিস্পান্চাগ্ৰাহ্য এব চ ॥

গীরমান মদাকত তিন প্রকার মদাবছ। দৃষ্ট হয়। আর উত্তেজনাবজাকে
প্রথম নদ, ভাষা অন্যেক্তা আবিক মৃত্যুবছাকে ন্যান বা বিক্তার মদ ও নাজান
বানি অবছাকে অভ্যা বা ভাইন না
বনাযার। শীয়নান মন্যোর বিক্তার
প্রভার মন্যের (শক্তার বিক্তার রাশের (শক্তার বিক্তার বিশিব বিশিব বিশেব

প্রথম মদ হবে থিপাদক, প্রীতিজনক পান ভোজনের সমাক ক্রিরা সাধক, বাদ্য গীত হাস্য ও বিবিধ কথার প্রব-র্ভক, ইহার হার। বৃদ্ধি ও স্কৃতিশক্তির কিছুমাত্র বৈলক্ষণা হর না এবং কার্য্য সম্পাদনাদিতেও শক্তির লোপ হর না। ফলতঃ প্রথম মদ অতিশর স্থপ্রদ। অধিক কি প্রথম মদে যে রূপ সুথ সম্ভাত হর, অগতে ভাহার তুলনা নাই।

দ্ভীর মদে মৃত্ মৃত্ শৃত্ ও মৃত্
গৃত্ত অর্থ টৈচতনাবেছা স্থাক্ ব্যক্
হইরা পুনকার দীন হইরা যার। সুক্

 অর্ক্ত প্রদাশ, অনিত ভাবে চলিয়া
বেড়ান এবং অবস্থান দান ভোজন ও
শরক্ষার দল্ভাবন বিষ্কে স্বিপ্র যোভলনা এই দক্ষা অবস্থা উপস্থিত হইরা
ধাকে।

তৃতীর মদ প্রাপ্ত ব্যক্তি ভয়কতের নাার নিভিন্ন থবং মোহারত চিত্ত হইরা জীবিক থাকিয়াও মৃত দলৃশ হইবা পড়ে দে ব্যক্তি রমণীর বিষর সমস্ত বা বজু-জন কিছুই জানিতে পারে না এবং যে উদ্রেশে মদ্যাপান করা যার, সেই রতিও লাভ করিতে সমর্থ হর না। সে অব্যার কার্যাকার্যা, হব ভূবে ও হিভাহিত জাবের নাল হর, কোন বৃদ্ধিমান বাজি প্রাপ্ত ব্যক্তি বিষ্তুক্ত বিষ্তুক্ত ব্যক্তি হ্বা, নিশ্দীর

Service States of the Control of the

विशेषा नारक

মুধরোগ, কর্ণরোগ, নেত্ররোগ, বেদনা, ন্তন বিজ্ঞধি, ত্রণরোগ ও ভর্মণীড়ার মন্যের বাহ্য প্রেরোগ করা যার।

मीर्द्धः ।

ইন্ধ্যে পকৈ রলৈং লিক্ষ: সীধুং প্রক্রমণ্ড সং।
আবৈ ভৈরেই যাং সীধুং স চ লীওরসং জ্বৃতঃ ৪
সীধুং প্রকরসং শ্রেউং যারাগ্রিস বর্গ কুই।
বাঙ্গিত করে। হল: মেছনো বোচনে হরেই ৪
বিবছায়ান লোফার্ল: প্রবেদান্ গ্রোগ্রনানদান্।
ভন্মাকৃণ্য এবং গ্রিক্স: প্রবিদ্ধ শ্রাণঃ ৪

সিক।।

পক ইকুনদ হার। প্রস্তুত সাধুকে পকরণ সাধু ও অপক রস হা । প্রস্তুত সাধুকে শীতরস সাধু বলাযার। এই ত্র-রের মধ্যে পকরম সাধুই শ্রেষ্ঠ। উহা পর পরিকারক, অগ্লিকর, বলবদ্ধক, শরীরের বর্ণিনক, বাছু নিন্তু নাশক, জন্য, বিশ্বকারক ও রোচক এবং বিবন্ধ, আগ্লান, পোধ, অর্শ্য, প্রমেহ ও গ্রৈমিক ব্যাধি সমূহে উপকারক। শীতরস সাধু, পকরশ সাধু অপেক্ষা আল্লণ্ডণ বিশিষ্ট, ইহা পৃষ্টিকর ও বলবদ্ধক।

কাঞ্চিক্ষ্।

কান্তিকং কেন্বিভীন্দ্ৰেশ পিবরুচাগ্নবর্ত্তনন্ । বাহিআকি ক্লবহরং অৱস্থাৎ তৃত্তিকৃৎ পরস্থা।

कें जो।

কাঞ্জিক ভেদক, ভাকুবীর্ঘা, উক্ষবীর্য্য, পিত্তকর, কুচিপ্রাদ, অগ্নিবদ্ধ ক, বনি নাশক, প্রানহর, ক্লাভি নাশক, ক্ররগ্ন ও ডুপ্তিজনক।

शनाप्तम् ।

वामा)क्ष९ वाम) (वःमिञ्चाद श्रीवम९ त्रव्य कोलमप् । व्यक्तको त्राव्यत्रायम् विक्रवाचालस्य ४ वट ॥

थाम्याञ्च ।

ধান্যায় ধান্য হইতে প্রস্তাত বলিয়া তৃপ্তিপ্রদ, লঘু ও অগ্নিদাপক ইহা অফুচি, বাতরোগু ও আছাপ্নার্থ প্রয়োক্ষ্য।

একচরারিংশক্তমোহধ্যায়:1

ख्य श्राप्तः।

ত্রিফল।।

नशादिकोस्था दोवार करेनामा। विकशा महिनः। कर्मा वक्क दिक्ता मा यहा है अको हिनः है विक्ता कर्क निस्त्रो (यहकुर्द हहा महा। इक्त्रा) दोवसी क्रका दिवसक्त सानिसी है

विश्ना ।

হরীতকী, আমলকী ও বহেছ। এই তিন্দশ একত্র হইলে ত্রিফলা বলা যার ত্রিফলার অপর নাম ফলত্রিক ও বরা। ত্রিফলা কফ পিন্ত মেহ ও কুঠ নাশ করে, ইহা সর (বারু ও মলা দর প্রবর্তক), চন্দুর হিতকর, অনিদাধ্যি কারক ও বিষম্ভ্র নাশক।

जिक्ट्रकम्।

বিৰোপকুল্যা গৱিচৎ এছং বিকটু কৰা,তে। কটুবিকত বিকটু অ্যুখনং ব্যোগ উচ্যতে ঃ অ্থনং দীপনং যতি খাল ফাল ভুগানয়ান। অনুবেহ কক ভৌল্য বেদ্যলীপদ পীনসান।

ত্রিকটুক।

ন্তঠ, পিপুল ও মরিচ এই তিন মিলিত হইলে ত্রিকটুক বলে। ইবার পর্যার ত্রিকটুক, ত্রিকটু, ত্রাষণ ও ব্যোষ। ত্রিকটু অহি দীপ্তিকারক, উহা খাস, কাস ত্বকের রোগ, গুল্ম, থেহ, কফ, স্থুলতা, মেদ, শ্লীপদ ও পীনস রোগ নষ্ট করে।

ত্তিক্ষাতক চাতৃজ্জ তিকে।
জ্বলেল পএকৈছলৈ ক্ষিপুনার ক্রিলাভুক্ষার বিজ্ঞান্তক লাবকেশর সংখ্যক্ষার ক্রিলাজ্য মুখনজ্জ্য ।
তদ্ ধ্যাং ক্রেনাং ক্রকাং ভীক্ষোক্ষা মুখনজ্জ্য ।
সমু পিভাগ্রি কুম্বাং ক্ষাব্যত বিষাপ্রম্ম ।

ত্রিজাতক ভ চাতুক্রণিতক।

দারুচিনি, এলাইচ ও তেজপত্ত এই তিন জব্য একত্ত মিলিত হইলে উহাকে তিখুণদ্ধি ও ত্রিজাতক কহে, ঐ তিন বস্ততে নাগকেশর সংস্কুত করিলে চাতু-ক্ষাতিক বলা যায়।

তাণ। রেচক, রুফা, ভীক্স উৎ্চ, মুবের চুর্গন্ধ নাশক, লঘু, লিভ অসক, অগ্নিবদ্ধকি, উৎকৃষ্ট বর্ণোৎ পাদক, কফ নাশক, বায়ুনাশক ও বিষয়।

ठलुक्यनम् ।

क्रायनः नक्नायुनः कविषः **स्कूल**म् । रक्तायस्त्रायकेनाः स्थापनः व्यवसम्बद्धस्यस्य ।

ठलूक्रयन ।

करं, रिश्न, ७ पहिल्ला । अब्दा रहेरन काका स्था हैका विकर हरेशासा थे कास्त्रक स्थाप रिश् মূল সংস্কু হইলে চতুর্বণ বলাষায়। ব ব্রিকটুর যে ৩০ণ বলা হইর তে চ চুক্ষণের ৩০ সেই ৩০ণ জানিবে, তবে ইহার ৩৫ণ ভাহা অপেকা প্রবল।

शकारकाल्य, ।

लिक्न निक्तन म्ल हरा हि बक्त नागरेबर । लक्षका दक्त कार्य । यथ लक्ष दक्त क्ष एक एक एक एक एक लक्ष्य कार्य । यथ लक्ष्य कार्य के क्ष्य मध्य । कीरक्षा कार्य कार्य । व्यक्त कार्य कार्य । कार्य कीर्या कार्य । व्यक्त कार्य ।

পিপ্ললী, পিপ্ললীমূল, চই, চিতা ও শুপ্তী এই পঁচ এব্য একত্র মিলিত হইয়া কোল (ভোলা) পরিমিত হইলে । পঞ্চকোল বলায়ায়। পঞ্চকোল কটু, ক্লচিকারক ত'ফু, উন্ধ, উভ্য পাচন, অগ্রিদীপক, কফ বায়ুনালক ও পিত্ত প্রকোপক। পঞ্চকোল সেবন করিলে শুল্ম, প্রাহা, উদ্ব রোগ, আনাহ(মুদ্ধে) ভ শুল্বোগ নষ্ট হয়।

यष् सगम्।

পককোলৎ সমরিচৎ বজ্যব মুখাজ্তম্। পককোল এবং ততু রক্ষ মুক্ষৎ বিবাপব্যু

পঞ্চকালের সহিত মবিচ সংস্ক্র করিলে বড়ুষণ বলাসার। বড় মণ পঞ্চকালের ম্যায় গুণ বিশিষ্ট বিশেষত উহা ক্লম্পুট্টক ও বিষয়াশক।

> कोरमीह्युद्धः •

पुर क्षेत्रियोक्तः स्त्रीयस्त्रो सून्यान विका । स्त्रिक्तरमासंस्त्रोतस्त्रीस्त्रयकः सन्स्त्रा र ছাবনো ষধুর দচ পি নামা স পরিক্টান্তিত। জাননীয়গণং প্রোক্ত ক্ষত্রকৃত্ব বৃণ্ডবো বিষয় র এক র্যভ্রমণ ক্ষত্ব পিতরক ছব। ভূজাং পোষং জরং দাবং রক্তপিবং ব্যপোহতির

অষ্টবর্গ, যষ্টামধু, জীবজ্ঞী, মুদ্পাণী ও মাবপুণী এই সমুদায়কে জীবনীয়গণ কহে। ইহার প্র্যায় জীবন ও মধুর।

তা। জীবনীর পণ ভজ্জনক, পৃষ্টিকারক, শাতল, জরু, গর্ম্প্রদ, ভনে ত্রোৎপাদক ও কফনাশক।

প্ররোগ। তৃষ্ণা, শোষ, ছর, দাহ ও রক্তপিতরোগে প্রয়োজ্য।

ক্ষীরকৃক্ষ প্রথ ব্রুক্সের্যোল ক্ষণং ওরণ ।
না ১৯:বেশপুদরাক্ষও পারীর প্রক্ষ পদাণ।
পরিত্ত ক্ষীরের কুক্ষ ভ্রেমা ব্রুক্স ভারের ক্ষিত্র পারীর স্থানে শিরীরৎ বেডসং পরে ব্যুক্তি শোরং।

ক্ষাবনুক্ষ হিমা বর্গী আনিবোগ এলাপহা।
ক্ষাত্রক হয় সংহায় কিসপাময় নাগনাঃ।
লোগ পিও কফাপ্রান্তনা ভগ্নাক্ষ আক্ষাত্র
ভ্রুত্রক প্রভাগ হিমা এ ছিবিন পোর শিসপ কিং।
ভ্রেত্রক প্রভাগ হিমা এছি ক্ষাত্রভাগ ক্ষাত্রক বিজ্ঞানিক ভিত্র
বিক্তাপ্রান্তিক ভিত্রা ক্ষাত্র ক্ষাত্রক ব্যুত্র

भौत्रका ७ शक्षवस्य ।

পর্যায়। বট, উতুদর, দখথ, পারীয ও প্রথম এই পাঁচটী বুক্লের নাম জীরী-বৃক্ষ। ইংাদের তুক্কে পঞ্চ বহুল কহে।

কেহ কেহ পারীয় স্থানে শিবীয় কলেন কেহ বা বেভস বলেন।

তা। ফীরবৃক্ষ সকল শীতল, বর্ণা, কৃক্ষ, ক্ষার ও গুলা বৃদ্ধক। ইহাদের প্রধারে, যোনিরোগ, এণ, মোদোরোগ বিস্প্, শোথ, পিত্র, কফ ও রক্তদে য নিবারিত হর। পঞ্চৰজল শীকল, এাইী এবং রব, শোগ ও বিস্প্ নাশক ইহাদের পত্র শাক্তল, গ্রাহী, লঘু, কিন্তু, ক্ষার লঘু ও লেখন, এই সকল পান ব্যবহারে কফ, বায়্বক্ত দেখ, বিষ্টত ও আধান উপশ্যিক হয়।

অন্তন্ত্ৰি:

জ্ঞান রুসাগ্রন নাগপুষ্প পিরজ্ব নীলোংগল
নালন নলিনকেশরাবি মধুক্তেড ।
জ্ঞানাদিবলো ভেষ রুজাশিত্র নিবছব ।
বিষোপ্তামনো দ ছা নিছ্য) ভারা তলা।

শো বিগপ্তন, রসোক, নাগেশ্বর, প্রিরুজু, নালোহণল, বেবার মৃশ, পালকেশ্র
ও ঘৃষ্টিমরু ইহাদিগকে অঞ্নাদিগণ কছে।
অঞ্চনাদিগণ রক্তপিত, বিষ ও অন্তর্জাহের
শাস্তিকর।

श्रम् छ मिर्ट।

অনুষ্ঠা যাতকীকুলুৰ সৰজা কটুক মনুক বিজ-পোশিকা রোধনাহররে:ধূপলাপ মদ্দাবৃক্ষ পদ্য-কেলরাপ চেড। এতন্বশ্যা গ্রথা: প্রিছেল্যবিষ্ণব্যের।

আকনাদি, ধাইফুল, বরাক্রান্ডা, শোনা, ষষ্টিমধু, বেলপ্ত ঠ, লোধ, দাবরলোধ, পলাশ, নন্দীবৃক্ষ ও পদ্মকেশর ইহাদিকে অম্বন্ঠাদিগণ কহে। ইহারা প্রকাতীসাবরর শান্তিকর, ক্ষন্ত সংযোজক, পিরুদ্ধ ও বুণ রোপক।

व्यर्कापिः।

অকলিক কর্ম্বন্ধ নাগদ্ধী সমূরক ভাগী রাজে-অপুস্পী কুমন্তে। বলাবেতা তৃল্চিকাল্যলবন্য ভাপলতুষ্ণতেতি। कका विरक्त १८५। (४) व कक्ष्यपुरश्चित्रान्यः । कृषिकुषे क्षणभस्म। विरणवाम् अनुस्थाधनः ॥

আকল বেত আকল, নাটাকরছ, ডহরকরঞ, হাতিওঁড়া, আপান্ধ, বানুন-হাটী, রালা, বিবলান্ধলা, ক্ষেভ্মিকুমাও-বেত ভূ'মকুমাও, বিছাটী, আলবণাব্লুজ্ ও ইন্ধুনী ইহারা অর্কাদিগণ। এই গণোক্ত দ্বন্য সমস্ত কলম, মেদঃ শোষক। কৃমিনাশক, কুই নিবারক ও এণ শোষক।

णाभनकाामिः ।

আৰলকী ষৱীন্তকা পিপপ্লঃশিচএকশেচতি। আমল্যকঃশিহরিত্যের গবং সক্ষত্ত্তাপায়ঃ ৪ চঞ্চোঃ দাপমে। বুষ্যং ককারে।চক্ষনাশমঃ ।

আমলকা, হরীতকা, পিপ্লপী ও চিতা ইহারা আমলক্যাদিগণ। ইহারা সর্ক্ষ-প্রকার অর, অফুচি ও কফের ধৃংস কর, চফের হিত্তজনক, অধিস্কীশক এবং শুক্রপদ্ধিক।

আরম্বাদি:।

আহমণ মদন গোপখোলী কৃটক পাঠা কটকী পাটকা মুর্বেক্তিয়ৰ সপ্তপৰ্ব নিদ্ন কুন্তুলীক স্বাদী-কুন্নুলীক প্রভূচীচিত্রক পাল্পিটা কর্প্তব্য পটোল কিহাত জিলানি সুষ্বী চে'ড। আহম্পাদি'রবেং)ৰ গ্রন্থ ক্লেয়বিষাপ্রহ। নেরকুক্তিয়ারবিদ্যালিক্ত

সেলেল, ম্বনফল, পেরাকুল, কুছচি, আকনাদি, কাটাবেওন, পারুল, মুর্থা, ইপ্রথা, ছাজিয়, দিখ, প্রীকৃত্তি, জীল-বিটো, ওলক, চিজা, মহাক্রেক, শীক্ষাক, ডহরকরঞ্জ, পটোল, চিজাকা জিলা উল্লেইহারিবের নাম আক্রাকারি। কিয়ারী প্লেলা, বিষ, মেহ, কৃষ্ঠ, জ্বর, বমি ও কণু মাশক এবং ব্রশ্পোধক।

डे९ शमाणिः।

উৎপল রফোৎপল কুরুদ সৌগভিক কুবলর পুঙরী কাশি বধুসংগুডি। উৎপলাশিরয়৲ দাইশিষরক বিমাশমঃ। শিপান। বিষত্তপ্রাধ স্কৃষ্টিবৃক্ত্যিত্ব। পশঃ ।

উংপল, রক্তোৎপল, কুম্দ, কহলার, নীলোৎপল, বেভপন্ম ও ঘাটমধু। ইহাদিগের দারা পিপাদা, গাত্রদাহ, রক্তপিত্ত, ক্তভোগ, ছর্দি ও মৃচ্ছবি শান্তি
এবং বিষ নষ্ট হয়।

क्षकाणिः ।

্উৰক নৈত্ৰৰ শিলাজতু কাদীদ্ৰয় হিদ্*নি* ভূখকংকতি।

खेरकाषिः कस्प रक्षिपत्। (मरमाकित्यामनः । समात्रीमक्तावृत्रकृष्ट्वाध्यनामनः ॥

ক্ষারম্ভিকা, নৈদ্ধলবন, শিলাকড়, চুই প্রকার হীরাকন, হিন্দু ও ডুঁভিবা। ইহারা কফল্প, মেনঃশোষক এবং আশ্মরা, শর্করা, মৃত্তকুচ্ছ ও ওল্মরোগের শান্তি-কারক।

এশাদিঃ :

वनावयत्र क्षेत्रारम् शायकत्र गत्र नावम्या वित्रम्यद्वपुष्प ग्राध्यम् श्राप्य अवस्य अवस्य विद्यम्य विद्यालयाः यावस्य अवस्य सम्बद्धाः वृद्धम्य विद्यालयाः व्याद्धानीत् व्यापः स

nalitativ simusini pravite fengare i Malakan an interestativas i প্রেলাইচ, তগরপাছুকা, কুড়, জ্ঞান্দাংশী, গন্ধত্ব, দাক্রচিনি, তেঅপত্র, নাগেখর, প্রিরন্ধু, রেণুক, পদ্মন্ধী, পঞ্জিনী,
গেওঁপো সরলকাঠ, গুড়ত্বক্, চোরকাঁচিকি,
বালা, গুল্ গুলু, ধুনা, শিলারস, কল্প্রেটী, অগুরু, ধুনা, শিলারস, কল্প্রেটী, অগুরু, গন্ধপিড়িঙ্, বেণার
দ্বা, দেবদারে, কুড়্ম, ও পুরার পুলা।
ইহারা বায়ু, কফ ও বিবের শান্তিকারক,
শরীরের বর্ণপ্রসাদক এবং কণ্ডু, পিড়কা
ও কোঠরোগের নির্তিকর।

काटकाना। पिः।

কাৰোলী কীৱকাকোলী শ্লীবকৰ্ষক মুদ্দাণৰী বাৰণণী বেহা মহাবেহাজিল্লক্ষা কৰ্ত্তীপূলী তুমাকারী পল্লক প্রণৌভৱীকর্তি বৃত্তি মুখীকা শ্লীবঙ্যো মধুক্তেডি।

कारकान्यस्त्रस्यः निस्तर्यान्स्यानमः। कोरत्या दुरस्य। दुष्यः स्मारक्षस्त्रस्य स्त्री ॥

কাকোলা, ফারকাকোলা, জাবক, ঝণভক, মুগানি মাধানি, মেদ, মহামেদ, গুলঞ্চ, কাকড়াশৃঙ্গা, বংশলোচন, পদ্ম-কাই, পুণরিষাকাই, ধন্ধি, র্দ্ধি, জাফা, জাবভা ও বৃষ্টিমধু। কাকোনাদিশণ বাহু নিবারক, রক্তপিভের শান্তিকর, জাবনা শক্তি বৃদ্ধকি, পৃষ্টিকর, স্তন্যজনক ও ক্ষেব্ৰ্ধকি।

গুড় চ্যাদিঃ।

প্ৰজুটা নিধ ক্ৰযুৱা চক্ষানি পল্কতেও । *
এখ স্ক্ৰয়ান্ ধ্ৰি প্ৰজুটাছিৰদীপনঃ ।
হলাগাৰোচক্ৰনীপিপাসাধাহনাশনঃ ।

গুলক, নিছ, ধনিরা, চন্দন ও পদ্ম-কার্ড। ইহাদের হারা দর্মে প্রকার অরের শান্তি, অগ্নির্দ্ধি এবং হিকা, অরুচি, বমন, পিপাসা ও গাত্রদাহের নিবারণ হয়।

ত্রপু: দি: ।

অপুনীন ভাষ রক্ষত কৃষ্ণনোহ সুকানি লোহ বলক্ষেতি।

মুণ্ড্রপুর্ণিরভাষ গঞ্জিনিবর, পর:।
শিশাসঃ বিষ হুজোগ পাণ্ড্রহ হর্তবা।

রক্ষ, শীসা, ভামা, রূপা, সোমা, কান্ত লোহ ও মণ্ডুর। এই সকলের দারা বিষ, জিমি, পিপাসা, জ্যোগ, পাণ্ডু ও মেহ নই হয়।

ত্রিকটুকম্।

পিপানী মরিচ শুক্ষরোধি একটুক্ষ্। ভূষ্যবং ক্ষমেয়েছাং ধেষকৃষ্ঠ্যুগ্যয়ন্ত্র নিহন্যাদ্যাপনং এলুপানগাগ্যস্থাতামপি।

পিপুল, মরিচ ও তঠি। ইথার: প্রেমা, মেদ, মেদ, কুষ্ঠ, চর্ম্মরোগ, কল্ম পীন্দ ও অগ্নিমান্দ্য নিবারণ এবং অগ্নির উদ্দীপন করে।

ত্রিফলা।

ষ্ট্রীকক্যামকল্যিকীওকানি ত্রিফলা। ত্রিফলা কফশিবস্থী মেহদুঙ্বিনাশিনী ॥ চফুষ্যা দীশনী চৈচ্য বিষম্মরনাশিনী।

হরী হকী, আমলকী ও বহেড়া। ইগা-দের হার: কফ, পিত্ত, মেহঁ, কুঠ বেষম জ্বর: ও নেত্রদোষ নিত্ত এবং অগ্নি উদীপ্ত হব।

তিবুতাদিঃ।

বিবৃত্তাল্যামান্ত প্রবন্ধী সপ্তলা শক্ষিনী বিবা-বিকা প্রশাস্থাজ্যপান্ত্রী অকুক্সুবর্ণজীবী চিত্রকা কিবিচীকুলা কাল ভিত্তক কম্পালক র্যাক লাউলা পুগ হরতিক্যামলক বিভীতক মীলিমী চতুরক্তিরত পুশাক মহাব্দ্ধ সপ্তচ্ছপার্কজ্যো-ভিত্ততী ১১৩,১২৮৮।গ্রহণবি।

রক্তির্হ, সৃষ্ণতির্হ দ্ভী, উন্দ্রকাণী, চামারক্যা, চোরকাচকি, মেষশৃষী
রাথ লসদা বিদ্ধান্ধক, মন্দাদিজ, স্বর্ণকারী, দ্বিতা, আপান্ধ, কুশ, কাশ, লেখি
ক্মশাগুড়ি, পটোলম্ল, পারুল, ওয়াক
হর্যাকনী, আমলকা, বহুড়ো, মীলর্ক্ষ
সৌধাল, এরও নাটাক্রপ্ত, মন্দাদিজের
আটা, চাতিম, আকল ও লভাফটকী।
ইহারা বিরেচক।

नारशानामिः।

মান্ত্রাংশ ভ্রথে ছাত্র মধুক কপ্তিন করু-ভার কে লাম টোকক পর জগুছমু পিয়াল মধুক রোজনা বলুল সম্বর্গ জিলুকী লাল্লকী রোগেন্ত্র ধ ভলাতক পলালা মন্দ্রীবৃদ্ধণেতি। ন্যুত্র,গানিগণে, এন্যুগ্রাহা ভ্রানাবকর। রক্তপিরত্রে লাল্যেন্ট্রো যোনিলোমকর ৪

বট, গত্তভুপুঃ, ভারথ, পাকুড, মৌল, তামড়া অভ নির্লা, আম, কেওড়া, চোরকাঁচকি, তেজপত্ত, আম, বনলাম, বিহাল, গান্তমধু, কটকী, বেজস, কনমু, কুল, গাব, সম্মন্তা, লোধ, সাবনলোধ, ভেলা, পলাশ ও মশীরুক্ষ। ইহারা ত্রণরোকে উপকারী মলসংগ্রাহক আনিছিলর কে, রক্তপিজ্ঞানিক, বিশ্বাভিক্তর মেন্দ্রের ও বােরিদ্রের নিয়

প্থ প্ৰামুলানি।
ভাৱ বিকটক বৃষ্টাখ্য পৃথক্পৰ্ণো বিশ্বীপঞ্জাচেতি কনীয়ঃ। (ৰাপ্তা পঞ্চলন্।)
ক্ৰায় ভিক্ষপুর কনীয়ঃ পঞ্চুলকন্।
ভাতন্ত্ৰ পিল্লানন বৃষ্ণ বলবৰ্জনন্ত্ৰ
বিজ্ঞানিক টুণ্টুক প টলা কাল্যাণ্যলেট ভ মৃছ্ছ
(বৃহ্ৎপঞ্চন্।)

(प्रयाणक्रणा।)
निक्कित कर्मगांच्या भारक नघुं शिक्षोभनम्।
विवादी गांदिय। इक्षनो स्रष्ट्राह्यमण्यो (क्रिंड विवादी गांदिय। इक्षनो स्रष्ट्राह्यमण्यो (क्रिंड विवादी गांदिय। इक्षनो स्रष्ट्राह्यमण्यो (क्रिंड विवादी गांदिय। (तानिभग्रम् ।) व्यवस्थि किन्छेक रेगद्रीयक मेखांग्रही शृद्धम्य। व्यवस्थि किन्छेक रेगद्रीयक मेखांग्रही शृद्धम्य। व्यवस्थि किन्हे (स्राच्छा । (क्रिके भ्रष्ट्रम्य) व्यवस्थि हिंदि स्राप्ट्रम्य।

্ত্নপঞ্চম্।)
মুব্দোহবিকারজ রজপেরং তথৈব চ।
অঙ্গাল্ড কা: ক্ষাবেন পাল্লেষ বিনাপল্লেই।
এখাং যাভ্যাবাদ্য বঙ্গাপের বিনাপন্ন।
পঞ্চেই ভোষাপ্যনাবিভরে পরিকিটিভেই।

कचेक्शकर्म ।

করম্ব নোক্র, বারী, শতম্পী ও কেলেকর। ইবারা রদ্পির, বি-বিধ্পোথ, শর্কপ্রশার মেহ, শুক্রদোধ ও শ্লেমা নট্ট করে।

७नलकम् न

কুশ, কাশ, নল, উল্ও ক্ষেক্।
ইচারা পিতের, কুজের শংগক সেবন
করিলে মৃত্রনেষ, মৃত্রবিকার ও রক্তবিত্র
নিধারিত হয়।

বল্লীপঞ্সূল।

ভূমিকুমাত, আনস্তম্প, ছরিত্রা, গুলঞ্ ও মেষশৃষ্টা। ইছারা রক্তপিত, ত্রি'বধ লোগ, শৃষ্ট প্রসায় বেছ, তক্রদোষ ও

तृहर ११ वस्त्र ।

বিলু গণিরাটী, সোনা, পারল ও গভোরী। এট সূহং পঞ্চমূল চিক্ত মধুর, কফর, বায়ুণ।ভিকর প্রত্পাক ও অমি বন্ধক।

अत्र**शक्त्रम्**न ।

গোলুব, কটেকারী, রহতী, চাকুলে ও শালবান। ইতারা কবাত, ভিত্ত ও মধুব। ইতাদের ছারা বায়ু ও পিতের শাভি, দেহেব পুঠি ও বলর জ হয়।

शटहालामः।

পটোল চক্ষন সুচক্ষন মুদ্ধা প্রস্কৃতীপাঠাঃ কটুলোলিগনঃ শিষকক'রোচকন'শনঃ। অবোপশমনো ব্যাস্থিকিক বিষাপ্তঃ।

পটোলপত্র, খেতচলন রকচনন,
মৃদ্রা, গুলঞ্চ, আকনাদি ও কট্কা।
ইহারা পিত, কফ, জ্ব, অফুচি, ব্মন,
কতুও বিষ্মাশক এবং এণের হিতকর।

প্রস্কাদিঃ।

প্রমক ছ'ক কট্থল ছ'ছিম রাঝার্ন ক্তক-্লা (২০ল'ন ত্রিলা ছেডি। প্রেরক'দি(রতে য গ্রেছিনিক্সিনাশ্নঃ) মুত্রদে য হতে। হল্যা পিপাদায়ো ক্লচিপ্রকঃ র

ফল্দা, ডাফা, কটফল, দাড়িম, পিহাল, নির্দ্মিফল, দেগুনফল ও ত্রিফলা । ইহারা বার্শাশক, মৃত্তদোৰ নিবারক, হুদা, তৃষ্ণা নাশক ও স্কৃতিপ্রদ।

शिक्षाला मिः।

পিপদানী শিশপানীমূল চবা চিত্ৰক সুক্ষের মান্তি মান্তিক সর্বপ মহানিছক প্রিক্তার্কারে প্রেম্বর পাঠা মান্তক সর্বপ মহানিছক প্রিক্তানী মধুন-সান্তিবিধা বচা বিজ্ঞানি কটুরোহিণী ১৮%। পিপপানা ক্ষিক্তর প্রতিপান্যানিলাকটাং। নিহনাদ্দীপ্রো ক্যান্তলামুল্টাম্পাচনং ৪

পিপুল, পিপুলম্ল, চই, চিত্তামূল, ভক্তী, মরিচ, গল্পিঞ্চিনা, কেশুক, এলা-ইচ, বন্যমানি, ইন্দ্রাব, আকনাদি, ভারা, স্বলি, ঘোড়ানিনের ফল, ভিদু-বামুনহাটী, মুর্বা, আত্তইচ, বচ, বিড়ন্ন ও কট্কী,। ইহারা কলে বায়ু, প্রতি-ল্যান, অক্লচি, ওল্ম ও ভূলরেনের লাজিকারক অধিবদ্ধক ও আমণাচক।

প্রিয়স্থাদিঃ।

প্রিয়ন্ত্রসংখ্য খাতকী পুছাগ রক্তচন্দ্র কৃচন্দ্র সোচরল রলাক্ষ্য কৃষ্টাক তে'ডোগ্রন পালকেশর খোজনবল্লো দীর্ঘনুলা চেডি।

च्चत्रके। थाङकोकुमूरमङ्गापि श्रास्टरकाऽष्टाः विग्रीवरः।

পৰে) প্ৰিয়ন হঠান প্ৰভাগনাৱন শনে। সন্ধানীয়ো হিতোপিকেব্ৰণান কাপি রোপনে।

প্রিরস্ লক্ষাল্, ধাইকুল, পুলাগ-পুস্প, রক্তচন্দন, বকম, মোচরদ, রদাঞ্চন পানা, জ্যোতোহঞ্জন, প্রাকেশর, মঞ্চি। ও শ্যামালতা। ইহারা পক্তৌদার শাজিকর, ক্ষতসংযোজক, পিরুল্ল ও ব্রেরোপক।

भूककातिः।

্ৰুক্ত পলাপ ধ্যতিত্ৰক স্থানতুক পিংপণা বস-তুকা ব্ৰেকা চেডি : মুক্ষকাদির্গর্গে হে)ম মেদোল্লঃ স্বক্রদোদলং । •মেহার্লঃ পাঙ্গোপল্লঃ শক্রাণারিমালম: ।

ঘণ্টাগারল, প্লাশ, ধাওরা, চিতা, মহনা, শিশু, মনসাসিজ ও ত্রিফলা। ইহাদের ছারা থেলোরোগ, শুক্রদোব, মেহ, অর্শঃ, পাণ্যুরাগ, শর্কবা ও অ-শ্রী রোগের শাস্তি হয়।

मुख्का दिः।

যুকা হ'রজা হ'কেহ'রে। হরীতক্যামতাক বিকী-তক কুইবৈষ্টত বহা পাঠা কটুরেছিব) লাজ্ল-ইচাতিবহা জাবিছী ছলাতকানে চিএকস্টেত। এব যুকাদিকো নামা গ্লাং কোয়নিসূদ্নঃ। হোনিদোধহর কুন্)পোধ্নং পাচন্ত্রণ।

মুকা, হরিদ্রা, দারেহরিদ্রা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কুড়, খেতবদ, বচ, আকন'দি, কট্কা, মহাকরঞ্জ, আহেইচ, এল'ইচ, ডেলা ও ডিতা। ইহারা কছ্মু যে'নিলোস নিবারক, স্তন্যশোহক ও আমণাচক।

द्वाताम्।

্রোণ্যাসরহোধ্পালালা কৃট্যটালোকফ্সী কট্ ফলৈপ্রঃলুক স্কুল্টাজ্ঞিনাকদ্থল লাঃ ক্রলী চেডি।

এম কোগাদিকৈ গুলেকা মেদ্য কফছরো প্রা: : যোমিদোম্মত ৪৬১ এবেলা বিম্ববিদাশনঃ ॥

লোধ, সংবৰ লোধ, পালাপ, সোনা, আপোক, বামুনহাটী, কটফল, এলব্দুক, সল্লকী, ভিজিনী, কদস্ব, সাল ও কদলী ইছা মেদপোষক, কদস্ব বেংনিদোষ নিবারক, বিষয় ও ত্রণের বিভক্ত।

माथादिः।

লাক্ষারেবত কৃট্ডাব্যার কট্কল ছবিডাগ্ন নিখসপ্তচ্চ দ্যালত)ফ্রাথ্যাণ: ১৮তি। ক্ষায় ডিক্তন্তু:ফক'পভাতিনালনঃ। ক্ঠকেমিছএনৈচন দুক্তব্য বিলোধনঃঃ

লাক্ষা, সেঁ।দাল, কুড়টা, করবী, কট্ ফল, হরিজা, দাকুহরিদা, নিম্ব, ছাতিম, মালতী ও বলাড়ুমুর। ইহাবা ক্যায় ভিক্ত ও মধুর। ইহারা ক্যায় ও পৈতিক শীড়া সমস্তের উপশম কারক, ক্রিমিয় ছুইুত্রব শোধক ও কুষ্ঠ রোগের শান্তিকর।

वहामिः।

ৰচা যুৱ'তিবিৰ'ভয়া ভল্লখকুৰি ন'গকেপর-ক্ষেতি। হ'রলাস্কেহরিল্লেড্যাস্ হরিল্লাস্থিনে। যধাস্ত্রস্থাস্থাস্থা

बहुत क्रष्ट विक्रा की शब्दे क्रम किटले श्रद्धी । स्वाम क्रिया क्रम क्रम किटले विक्रम क्रम क्रम क्रम क्रम क्रम

ৰচ, মৃতা, আভইচ, হরীতকা, দেব-দাক্ষ ও নাগেশ্ব । ইহাদের দানে স্তন্য সংশোধন, আুমাতিদারের শান্তি এবং বায়ু পিত ও প্রেমার পরিপ্রক্ষর ।

बक्रगा निः।

বক্লণার্থকা শিগ্র মধুশিগ্র ভর্কটো মেবপুলী পু'ওকন জমাল মোরটা'গ্রমছ সৈরীরকছয় নিছী-বসুক ব'সর চিএক শভাবরী যেলুগড়া বৃহতী-ভয়ভেতি।

বক্লণ'ধিৰ্মধ্যে ছে)খ ক্ষক্ষেধ্যে নিবার্থঃ। বিনিছতি লিরংশূল গুলুাড।ঙ্বরিডাং)ন্ ঃ

বরুণরুক্ষ, নীলঝিটী, সজিনা, রক্ত-সজিনা, করন্তী, মেধপুতী, করঞ্জ, নাটা-কর্ম, মুর্বা, গণিরারি, পীত্রবিটী, নীল-বিশ্বী, ক্রেলাছুচা, স্মাঞ্জ, গজলিপ্পনী, চিতা, শতমূলী, বিলু, কুশ, রহতী ও কণ্টকারী। ইহারা মেদ ও কফের দমন এবং শিরঃশূল গুলাও আভাগুরিক বিজ্ঞ-বির শান্তি করে।

विषादीशकाणिः।

বিশ্বিগভা বিশ্বী সহদেবা বিশ্বেরা
শ্ব্ উনু পূলক্শনী শতীবরী সারিবা কৃষ্ণারিবা
জাবক্ষডকো মহাবহা কুষ্টসহা বৃহত্তে পুমর্মবৈরত্তে হ\সপানী বৃশ্চিকাল্যবভী চেভি।
বিশ্বিগিকাদ্যমে গ্রুপ শিভানিলাশহয়।
শোষ্প্রপ্রেলম্পেনিজ্ঞাসকাস্বিমাশনঃ

শালপানি, ভূমিকুয়াও, বেডেলা, গোরহাড;কুলে, গোকুর, চাকুলে, শাত্রন্তী, আনত্তমুল, শামালতা, জীবক, অবভক, মুরানি, মাধানি, সুহতী, কণ্টকারী, পুনর্নবা, এরও, গোষালিধা, বিছুটী ও আলকুলী। ইহাদের স্থারা বায়ু, পিত, শোষ, ওলা, অসমদ, উর্ধাস ও কাদের শান্তি হয়।

বীরতর্বাদি:।

বীরতক সহচরদ্য দর্ভবৃদ্ধাদনী গ্রন্থানক কৃপ কাশান্যতেদকাগ্রিম নারটা বসুক বসির ভল্লুক কুলন্টকেশাবর কপোত্যক্ষাং শহংকী চেভি। বীরতারাপিরিভাগ গ্রে। বাভবিকারমূহ । অপারী শক্রা মুক্তি বিভার ক্লাপহং ।

অর্জ্বন, নালবিণ্টী, পীতবিণ্টী, উলু, পরগাছা (বাদরা), নাগরমূভা, নল, কুশ, কাশ, পাতরকুরা, গণিরারী, মুর্কা, আকল, গজণিপ্রলী, দীর্ঘত্ত শোণা, বিন্টী, নীলোৎপল, ক্রন্ধীশাক ও গোক্ষর। ইহাদের হারা বায়ুজনিত বিকারের শান্তি এবং অশানী, শর্করা, ম্ত্রকৃচ্ছু ও মুত্রা-হাত রোগের উপশ্য হর।

वृश्काशिः।

্বৃহতী কণ্টকারিক। কৃটজকলপাঠ। বধুককে'ড । পাচনীয়ে। বৃহত্যাধিপণিং পিতানিলাপবং । ককারে।চক হলে'ল বৃত্তুক্ত ক্লভাপবং ।

রহতী কণ্টকারী, ইক্সম্বৰ, আকনাদি ও ষষ্টিমধু। ইহারা, বায়ু, পিন্ত, কফ, অরুচি, হালাস ও মৃত্রকৃচ্ছ নিবারণ করে। শ্যামাদিঃ।

শ্যাবাঘছাশ্যাক তৃত্ত্বত শক্তিনী ডিলুক কম্পিল্লক রব্যক্তম্পুক পুএল্রেনী গ্রাক্ষী রাজ্ঞ-তৃত্ব কর্ত্ত্বত্ত্ব গ্রন্থ প্রত্ত্বতাক্ষী সুধাঃ সুবর্ণকারী চেডি

উ কং শ)'ষাধিহিতে)খ গণোৱালু বিখাপছ: । আন ছে'দুয় বিভ্কেদী ওবোদাবর্তনাশন: ॥

অনস্তমূল, শ্যামালতা তেউড়ী, দ্বন্ধী, চোরকাঁচ কি, লোধ, কামলাগুঁড়ি, পটোলমূল, রক্তলোর, ইন্দ্রকানি, রাখালসদা, সোঁদোল, নাটাকরঞ্জ, ভহরকরঞ্জ, গুলঞ্চ, পারুল, বিদ্ধুড়ক মনসংশিক্ষ ও স্বর্ণফীরী।
ইহার। মলভেদক, আনাহ, উদরবোগ ও উদ্বিক্ত পাড়ার শান্তিকারক।

मातियापः।

সারিবা বর্কচন্দন। কৃচন্দন পল্ককাশারীক্ষ মধুকপুন্সাণু,লীরভেতি। সারিবাহিং পিপাসাল্লোর কপিরছরো গবং। পিন্তব্যর প্রশাবনো বিশেষাল্লাহন।শবংঃ

আনত্তমূল, যাপ্তমধু, খেতচন্দন, রক্ত-চন্দন, পদ্মকাষ্ঠ, গান্ধানীফল, মৌলফুল ও বেশারমূল। ইহাদের ঘারা লিপালা, রক্তপিত, পিতজ্ঞর ও দাহ প্রশমিত হর।

मानमात्राप्तिः।

নালনারাজ্যপ থবিরক্তর কাল্ডভ কযুক
ভূজ্ববেষপূরী ভিনিশাল্পন কুচ্পন পিংপাণ।
পিরীবাসন ধ্যাজ্যুন ভাল পাক নজ্যাল পূড়ীভাষকণাগুরুবি কালীয়কভেডি।

সাসসায়াগৈরিছে)য গণঃ কুঠবিলালয়ঃ মেহপাড়্যিয়হয়ঃ ক্ষয়েগোবিলোহণঃ 🖁

ধুনা, পেরাশাল, ধদির, বাবলা, গাব, রক্তলোগ্ন, ভূর্জপত্র, বেবগুলী, তিনিপর্ক্ষ, বেতচন্দন, কেচলন, শিশু, শিরীব, আসমর্ক্ষ, বাতাকরল্প, অক্তর্নুন, তাল, সেওল, করঞ্চ, নাটাকরল্প, সাল, অওক্স ও কালিরাকাল । ইহাদের হারা কুঠ মেহ ও পাতুরোগ প্রশমিত এবং কৃষ্ণ ও মেদ শোষিত হয়।

श्वमाषिः।

সুরসা খেওসুরসা ফরিজ্বকাজ্যক্ত কুন কুন ক্র সুমুখ কাগমান কাসমর্গজ্যক কুন্তক বিজ্ঞা কট-ফল সুরসী নিগু তী কুলাবলোক্ষ ক্রিকা ক্স্তী প্রাচীবলকাক্ষ'চেন বিষমুক্তিকক্ষেত্ত। সুরস্যানির্গবো থেয় কফ্ছম ক্রিনিস্কুনঃ।

প্রতিশারার র শাস কাসরো রণশোধনঃ ।
নাল লেফ লিকা, খেত শেফালিকা,
ক্ষুদ্রপত্র তুলনী, বাবৃইতুলনী, কাক্ত্প; বনবাবৃই, রক্ততুলনী, কাক্ত্লনী, কালকাসলা, আপান্ন, কুলেথাড়া, বিড়ন্থ, কট্ফল, স্বনারক্ষ, নিসিলা, কুক্লীমা, ইল্বুরকানি, বাধুনহাটী, প্রাচীবল্লাক, কাক্মাচী
ও বিষমৃত্তি কুপ (বিষ্ণোড়ি)। ইহাদের ঘারা কফ, ক্রিমি, প্রতিশার, অক্তি,
খাল ও কাল প্রশমিত ও ব্রণ সংশোধিত
হর।

रतिखानिः।

হয়িতা ৰাজহয়িত। কলদা কুটাৰবীয়াৰি বধুসংখাত।

अध्यमनमा सन्। यहात्मन्दमायः

হবিজা, দাক্ষহরিজা, চাকুলে, ইক্রমবঞ্চ যাষ্ট্রমধু। ইহাদের মারা তদ্য বিশোধন, আমাতিলারের শান্তি ও বোষের পরিপাক হর।

পরিশিষ্টম্।

ब्रमाब्रम्दर्गः ।

লোমলভা।

त्नावरजी त्नावण्डा (न'यक्नोडो विज्ञक्षिण (नावरजी बिटर वडी कट्टेंग्डक) इन'ग्रमी ह

সোমলত।।

পর্যার। সোমবরী, সোমলভা, সোম ক্মীরী ও হিজপ্রিয়া।

থ্য । ত্রিদোগ ন শক, কটু, রসায়ন ও তিজ ।

तुक्तम'द्रकः ।

বৃদ্ধশারক আবেখী জ্বালী জ্বালী ক্রিনা। রুলায়নো বৃদ্ধদ রঃ পোপ্রবাত দ্বার্ত জ্ব । কালখাল অর্থরো বল্যং পিশ্চিল এব চ। অল্য বীজাদিক্ৎ প্রাশ্বং মাত্রা ২ মাবকৌ।

বিশ্বভুক।

বৃদ্ধারক, আবেনী, ছগলী ও ছগল'ক্রিকা ইত্যাদি শব্দ বিভড়কের
সংস্কৃত নাম। ইহা রদারন, বাহুন শক,
বলকর ও পিচ্ছিল। লোখ, আম্বাত,
কান, খান ও জর রোগে প্রয়োজ্য-।
ইহার বীজাদি প্রহণীর থাত্তা ২ মাবা।

वाकः दर्शकः।

भात्रीयः (अवस (छमः)।

পারীবেহিন্য পদাশক কলিরভঃ কবংলু। বর্ণভাৰজন্মরালঃ কলেভন সূপার্থকৌ ঃ लांशेरवा बूर्व्यश विश्वेश क्रिक्सिक क्ष्मश्रवः। स्टन्स्ट्र्स, यसूद्रम यूट्न क्वांग्रश्च संवृत्रव्यक्तः॥

অরথ বিশেষ। হিন্দী গজনতসহে।
পর্যার। পারীষ, পলাশ কলিরভ,
কমওলু, গর্মভাত, কলরাল, ভাণিতন
ও সুণার্সকঃ।

তাণ। কুজার, রিশ্ব, ক্রি**নিজনক,** শুক্রবর্ণক, শ্লেমকারক। ইহার ফ্লেশ অমরদ, মূলে মধুর ও কধার এবং ম্ক্রায় সাহ্রদ আছে।

> পিতস্বর্গঃ। হিস্তালঃ।

ৰিভালঃ সুস্তাং ^{মণ্ডাংশ}রোটো সুহস্পলঃ । পিয়প্রেং হিশাগেই/) লিরংপনেংশিরাজ্ঞায় বিভালেং বধুরোচয়ণ্ড কফ্ড পিতহাহনুৎ। প্রস্ভাপৰংরী চ শিলিরো বাজবোৰফুৎ ॥

আৰা জুক্ৰয়ৰাধিকং প্ৰ'ছং জুচোৰাত বাৰকঃ, ৰয়ৰতা ১ কৰিঃ।

হিছাল (হেঁতাল)।

বিস্তাল, তুলতাল, প্ররোট, বুহন্দল, ভ্রিপত্রে, ত্বিগালেবা, শিরাপত্র ও অন্থিরা অভ্যুক ইতাাদি শক্ত ইহার পর্যার। হিস্তাল মধুর ও অল্লাতাদ, কক্ষমক, গিতান'শক, শৈতাকর ও বাজপ্রকোপক ইহার ত্বারা রাহ, প্রম ও ভূচ্চা শ্বারশ হল্প ইহার তৃত্ত অরনাদি প্রহণীর, ভূকের কারো ১ ম বা, স্বর্গের ২ ভোলা।

व्यामानाद्याहेः ।

রষ্ক্রপান)লাখোটা ল পিরক্ষনাপনঃ। বাঙ্গদ ক্রিনিংছতি পাঙ্ডাব্রকাষলাং র অস্যত্তক্ ব্রসাধিকং রাখং ভুচো দ'বা ১ মাবকং ব্রস্য ১ কর্বঃ।

व्याम्रम्थका ।

ইহাকে সংস্কৃত ভাষার রক্ত ও আস্য শাথোট বলে। ইহা কফপিত নাশক, বার্জনক এবং জব, ক্রিমি, পাতু ও কামলা রোগের শান্তিকর। ইহার তৃক্ও ত্বরণাদি গ্রহণীয়, তৃকের মারো সমাদা, ত্বরদের সভোলা।

আবর্ত্ত কী।

আৰম্ভনী হজপুষ্পী পীতকীলা বিৰ'ণিক। । আৰম্ভনী ক্ষ-মান্ত্ৰা শীত। পিৰ্থিসূদ্দী । নাত্ৰা ২ গাৰকঃ ।

> व्यावर्खको (क्लाकनदमनीत्र खनक वन्नी नाम----- य)।

রক্তপুষ্পী, পীত নীলা ও বিষাণিকা এই তাল ইহার অপর নঃম। ইহা কবার ও অল্লাভাদ এবং শিতভুমাত্রা ১ ম বা।

ক।কভিন্দঃ।

কাকেস্থ কুলকং কাকপীলুকং কান্তভিন্দুকঃ। ক্ৰায়ো বধুরোচয়ক কাকেস্থ লেলগো গুরুঃ। বাতলিভাতিলয়নো বাভিন্নাতি মিসুবয়ঃ।

মাক্ডা গাব।

ইহাকে সংফৃত ভাষার কাকেন্দু, কুলক কাকপিলুক ও কাকভিন্দুক বলে ইহা কথার, সাতু, অন্তরস, বাতপিত্তক ব্যাধি শাশক, বদনবিধায়ক ও আভিহুর।

कक्ष्यवर्गः ।

मानपुत्रो।

নাগপুন্সী খেতপুন্সা নাগিনী রাবদূহিকা। নাগিনী রোচনী ভিকা ভীজোভা ক্ষণিভূমুৎ । বিনিহতি বিবাং দুলাং যোনিবোৰ ববি কিনীন্।

• য্যায়। নাগপুস্পা, খেতপুস্পা. নাগিনী, রামত্তিকা।

থা। রোচক, ভিক্তা, তীক্ল উষ্ণা, কফ পিত্ত পুতি বিষ্ণাশক। ইহার হারা শূল, গোনিদোষ বিশি জিনি বোগ নিবারিত হর।

(स्वकाष:।

বেদভাক্ত ধরা দেনী গরী জীবুত ইভালি। বেদভাক্ত কক্তরো মুখাদীনাং । ১৯৯৮ ব

(मठाड़ा।

দেবভাড়, খবা, বেণী, গরী ও জীয়ত ইত্যাদি শক ইহার সংস্কৃত নাম। ইহা কৃষ্পু ও মৃষিকাদির বিষ নাশক। ইহার মূল গ্রহণীর, ম'আ ১ মাবা।

হাস্তভা ।

ছান্ত্ৰী ছান্ত্ৰখন চ লগ্ডী ধূদরপত্রিকা। লগ্ডী কট্টী ভাগোলা চ সন্মিপাত অরাভত্ত ।

হাতীত ড়া।

হত্তিনী, হত্তিত্তী, ততী ও ধুসর পত্তিকা এইতলি ইহার পর্যার। ইহা কটু উষ্ণ ও সন্ধিপাত জ্বরনাশক। ইহার স্বরস প্রহনীয় মাত্রা ১ তোলা। শিরাসমূহের মধ্যে বহুতর শিণা স্কা ।
বহুতর সূল, কতকগুলি শিরা দেহের
গভীরতর প্রদেশে, আর কতকগুলি
বাহা প্রদেশের কিঞিৎ নিম্নেই অবস্থিত।
বাহু ও সক্ষিত্রের অধ্যেভাগস্থ আগভীর
শিরা, অমাংসল প্রদেশস্থ শিবা ও বাাধি
ক্ষীণ ব্যক্তিনিধ্যের অস্কের শিরা সম্গ্রহালক অর্থাৎ চক্ষ্কারা লক্ষিত হইয়।
থাকে। এইরপ শিরা প্রকাশ বলক্ষানের
লক্ষণ জানিবে। স্ট্রাশ ভলে রুংহন ও
বায় প্রশমক ক্রিয়া কর্ত্রবা।

এট ০ সং দিলে ক খ গ্রীশাপার্শন্ত বাহ। প্রক্রান্ডান্ডব কর্পনিরা।

- গ ভানাখাত শিরা।
- म जलिन्स भिना।
- तु दुक्कश्य।
- দ বুক শিরা।
- भ उक्तंत्रकशकि निहा।
- फ द्राराष्ट्राद्रकः निद्रा।
- থ বাহাবতি শিবা।

জ্ঞার নিয়ে উর্জায় মহাশির। ও বস্তিকে অধস্থ মহাশির:।

নবমোহধ্যায়:।

অথ ত্রে;ভাংসি।

ভঙ্ক কেচিছালং শিরাধমনী স্রোভ্যামবিভাগা শিরাবিকার। এব ধ্যন্ট স্থোভাগিল
চেডি । ভরু ন স্থাক্ জন্যান্টের ছি স্রোভাগিল
ধ্যন্ত শিরাভাগ ক্রাণ্ড্র ব্যাহ্যান্ট্রাল্ড পরস্পার স্থিক্তি স্থান্ত্রাপ্রাধ্যান্ত ক্রেপ্ত পরস্পার স্থিক্তি স্থান্ত্রাপ্রাধ্যান্ত ক্রেপ্ত পরস্পার স্থিক্তি স্থান্ত্রাপ্রাধ্যান্ত ক্রেপ্ত ভাসি বিভক্তক্র্যান্ত্রাপ্রাধ্যান্ত্রাপ্রাধ্যান্ত্রাপ্র

কেহ কেহ বলেন শিরা, ধমনী ও खाङः देशारमत खाख्य नाहे, यम्नी **ख** স্রোহঃ শিরার রূপান্তর মাত্র। বিশেষ যুক্তি সন্নত মহে, জ্বোক্তঃ ও वभनी नित्रा दहेरक পृथक्। क्रभरक्र, মূপনিবেশ ८७म ४८ কার্য্যকারিত্বভেদ टिकु हेशारपत्र किनक्कि विक्रित विनिद्धके र्ष। ८करल श्रद्भातं मञ्जिष्, मध्य কত্মক।বিস্থ সুক্ষাভেদা প্রায়ত্ব শাল্ডো সদৃশা কলে বর্ণন হেতু ইছারা মভিন্ন বলিব। অফুভুত হইতে পারে। বাধাৰণ ইহাদের প্রতে**্রক্ষ**ুকার্য। সভিস্ন 779 I

उन्हार मिल्रिक मिल्रिक में विद्या प्रमाणि निर्माण स्थित कर्म कृद्धि विश्व कर्म व स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

ধরাভ্যন্ত্রান্যাবদতে পদার্থান্দেহপোষ্কান্। এইবা), দিড়া আদার রস মাধারজা ডথা। । বিরমার্থের হৃদর মান্যত্তি নির্ভরম্। বলা পুঞ্চিঞ লাববাৎ দেইভ্রিভা্যার্ডেই ।

ত্রেতঃ শম্থ প্রথমা ও শির্রে ন্যাস্ত এক প্রকার নাড়ী বিশেষ, ইহুদ্বের অভ্যন্তরে এক প্রকার জলীর পদার্থ থাকে, ভাহাকে ল্যাকা বলে। ইহা-রাও দেহের প্রায় স্বর্কাহেশ বর্ত্তমান থাকিবা দৈহিক কার্যা নির্কাহে করে। মন্তিক, নাভিব্লক্ষ্য ক্রেক্স মজ্জা, নথ, কণ্ডরা, অন্থি ও উপাচি এই সকল স্থানে লোভোনাড়ী দেখিতে পাওয়া যার না।

যাবতার স্রোভঃ মিলিত হইরা তুটী মহাস্রোতারণে পরিণত হইরাছে। ঐ তুইটী মহাস্রোতঃ জ্বাকুর নিমে শিরা সঙ্গনে (যেখানে শিরাগণ মিলিত হইরা মহাশিরা রূপে পরিণত হইরাছে) মিলিত হইরা তথার আত্ম গর্ভন্ম রুলের নিক্ষেপ করে। ঐ রস শিরাভ্য রক্ষের সহিত, মিলিত, ল্থকোটে উপভ্তিত এবং তথার রক্তাত্ম প্রাপ্ত হইরা নির্ভার দেহ ভ্রমণ করিরা থাকে। ঐ রস প্রথমে দেহ হইছে উৎপন্ন ও পারে রক্তাত্ম প্রাপ্ত হইরা থাকে।

লোজোনাড়ীগণ ধমনীত রক্ত হইতে
দেহ পোধণোপঘোগী পদার্থ আকর্ষণ
করিয়া দেহের বর্দ্ধন করে। ইহারাই
গ্রহণী (ক্ষুডান্তের অংশ বিশেষ)
প্রভৃতি হইতে আহারক্ত রস আকর্ষণ
করিয়া শিরামার্গে হ্রুরে লইয়া যায়।
তল্লাভে দেহের বল, পৃষ্টি ও লাবণ্য
রিদ্ধি হইয়া থাকে।

দশমোহধ্যায়।

অথ স্বারবঃ।

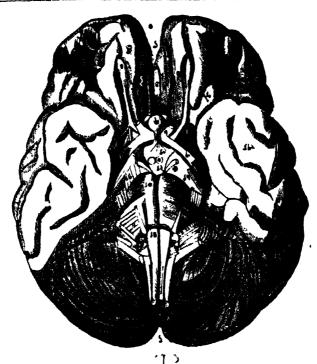
মারবং সূত্রবং স্কান শুকা নিধিল দেহগান।
কারবানি চেডনানাৎ সহা চৈডনা সাধনে ।
সূথদুঃখাববোহে চ প্রসূত্তী চ নিবর্তনে।
ক্রপগন্ধ রসম্পর্শক্তানে চ হেডবং ।
লিখিলার'ল্ড সঞ্চার বিভাগে পৃঠ্যক্তনং।
লিলোগড়ল বেবার্যাঃ লেখাঃ শেষাক্ষ বালিডাং ।
তেনু ডেবু ড ডাবেরু দেহবারেরু বলসাং।

কম্পানাঃ কম্পায়ন্তে সম্ভলুক্ত তৎক্ৰাই ।
দ্বা বিকম্প কেনেন জান কেনে দ্বহা।
ক্ৰো কৰিছ নেবৈকে, জানহেইঃ প্ৰকীৰ্তিতঃ।
ক্ৰোটি গজ্বাত্তমূল্ বসেদাক্তা সুপেলবন্।
সুস্ত্ৰকা সম্ভল নাভিন্নক বিগোপনি ।

न्ना हु ।

লারু দকল স্তের নার স্থা ও ব্যাপিয়া অবস্থিতি করে। চেতন (জীব) দিগের চৈতন্য সম্পাদনে কারণ স্বরুপ। সুখহঃবজ্ঞান, কার্য্যে প্রবৃত্তি, কার্যা হইতে নিবৃত্তি এবং রূপ, গন্ধ, রস, স্পর্শ ও শক্ষরানের প্রতি লাধুদকলই হেছুভূত। লায়্ণণুমস্তিজ্ ও পৃষ্ঠবংশীয় মজ্জ। হইতে সমুদ্রত হই-য়াছে। মন্তিকজাত স্নার্রা শিরোমণলে **७ পृष्ठेमड्यी**रवज्ञा रुख, शन **७** উनज्ञ প্রভৃতিতে থাকে। নানাবির ভাব দেহ প্রাপ্ত হইলে তত্ততা স্নার্রা কম্পিত হইয়া তৎক্ষণাৎ মৃত্তিদকে কম্পিত করে। মন্তিষকর বিকম্পন ভেদে ভিন্ন ভিন্ন ड्याटनव डेमग रहेगा थ:८क। মন্তিষ্কই এইমাত্র জ্ঞানের হেতু। করোটি গহবরের অভ্যন্তরে মন্তিষ্ক অবস্থিত থাকে। ইহা সুন্দর শুভ্রবর্ণ ও ঘূরের নায় অতীব কোমল পদার্থ। ইহা নিয়া শে অগমতল ৩০ উর্ভে ছিগ| ১ সং, চিত্ৰ দেখ। বিভক্ত।

নেত্রে রূপবত!\ বিশ্বপতনাদের বস্ত্রসাঃ। ভাষাওর\ যন্তলুক্স নয়তে তদ্ধি দর্শন্ম । পদার্থানা\ গন্ধবতা\ গন্ধঃবৃনা\ সমাগমাই। নাসান্ধাঃ কুর্মতে ওয়ুহ তদ্মাব\ পরিকার্তিতম্ । তথা রূপবতাভাব গদমারস্কালিতাঃ।



। ৪ চিত্র।

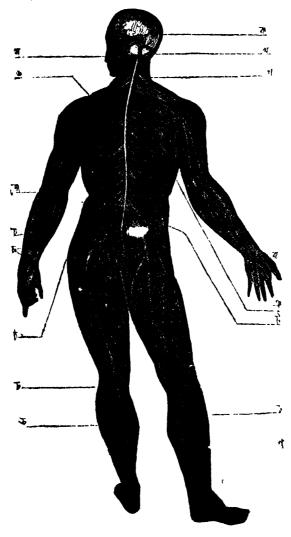
এই ৪ নং চিত্রক্ষেত্রে ১, ২, ৩, ৪, চিহ্ন্ ইত্যাদি হইতে ১৮, ১৯, ২০ চিহ্ন শ্রীস্ত মন্তিদ্কের নিম্নভাগের প্রতি-রূপ। তন্মধ্যে

- ১ ফুদ্র মন্তিষ্ক।
- ০ মন্তিষ্কের অগ্রধণ।
- ৪ প্রাণকারু।
- १ प्रभिन चार्।
- ५ मर्भनवात्र् खरम् ।
- ৯ নেত্রস্পক্ক স্বায় ।
- ১০ দৃষ্টিদ্দি।
- **३२ श्रम्धान्ति माश्रिक टारम्** ।

ক্রিয়াৎ তাৎ সুক্সতে ভত্তি রসমঞ্চাভিনীয়তে ।
লীভোজানি প্রবারাৎ জনসালাৎ জুচি সম্পাৎ।
ভত্তমাং কর্মা কুর্মাতি ভাদুলং স্পার্গনং হি তথ ।
গত্রস্বান্দ্রীভিন্ন জন্যালাবানিগজনা।
ভত্তম্বান্দ্রীভন্যাৎ কর্মাতা মুখ্যমেত্র:।
অব কিং বছনোজেন জীবত্ত্বং স্বান্ধ্রসভবন্ ।
মারুনালো ভবেদ্ ব্যান্ধরণ ভবস্যান্ভাগনন্ ।
পক্ষায়াভানি রোগেরু ভারনং ভবিস্থান ভবিত্ত ।

নেত্রে রূপবান্ পদার্থের প্রতিবিদ্ধ পতিত হটলে নেত্রত আরু সকল মন্তি-মৃককে ভাবান্তর প্রাপ্ত করে, ইহারই নাম দর্শন। তজ্ঞল গন্ধবান্ পদার্থের গন্ধাণ্ নাদিকা সংস্কৃত হইলে ভত্তন্থ আরু সকল ভাল্প কর্ম করে, ভার্য হইলেই আগ कत्रा ट्टेल । त्रमनान् फटनात्र छान् त्रमना সংসূক্ত হটলে তঃত্য স্নার্গণ তালুশ হইলে বারুতে তরক বিশেষ উপস্থিত कर्य करत्र, काश व्वेरण श्वापरवात्र व्वेल । रेन्डा ७ डिवाडी श्रेष्ट खनमुक्त भार्थ সকল ত্বক স্পৃত্ত হটলে সেই রূপ কর্ম বিকম্পিত হটলেই শক্তন জন্ম। করে, তাহা হটলেই স্পর্শজ্ঞান জারিল। অতএব ইন্দ্রিয়জনা জ্ঞান সমূহের প্রতি

এই রূপ দ্রব্য গণের পরস্পর অভিদাত হয়। শেই তরঙ্গ হারা কর্মধান্ত চর্ম্ম অভিহত ও তত্ত্তা সাহ্দাণ মস্তিষ্ক



স্নারুগণ হেতু। গমনাদি কার্য্য বিষয়েও
স্থাবুগণ প্রধান কারণ বলিষা নির্দিষ্ট
ইইখা থাকে। অথবা অধিক বলা বাহুল্য
মাত্র, জাবৈর জীবড় স্নায় ইইতেই
সঞ্জাত। কোন অক্ষের স্নায়্র নাশ
ইইলে সেই হান্ধ সুক্র হয়। এই রূপ
কারণ বিশেষেই প্রসাহাত্যদি পীড়া
জন্মিয়া থাকে।

এই १ मः हिट्य क-मञ्क्ष तृहर मश्चिष्ठ ।

- ধ কুদুমভিষ।
- গ গ্রীবান্ধায়।
- ঘ বদন্র:ধু।
- ঙ প্রগণদক্ষিত্র।
- জ প্রগণন্ধরে।
- চ প্রকোঠির(যু।
- ছ প্রকোষ্ঠ নিয়ন্তা।
- ঝ করতল ছায়।
- ঠ নিতম স্বায় ।
- ঞ পশুকাভান্তর হয়।
- फ कायूग्राहिर स्राप्त्र ।
- ত জায়ভিম্ব স্বায়।
- ণ পদতশ হাসু।
- ট কটীস্থা
- ত উক্লায়ু।

একাদশোহধ্যায়:।

অপ গুহ:।,

পরীরং ত্রিগ্রহং প্রোক্তং করোটি হাপ্যে। পরিরং।
করে টেটা মন্তক্রেরে বিক্ষাপুত্র কুপ্তৃত্রে ।
হৃৎকোঠন্ডে গরে কতি মকুৎ পিতানধাননা।
ক্রোন কচে। ধাননাকঃ ক্ষুদ্রাক্রং পূল্যককন্ ।
প্রীয়া সূক্ষ্যং যুক্তনাড়ী ব্রিপ্তর্বাং তরা।
মতঃ পূর্ব সংক্রিয়ায়ুক্তানাং গ্রন্থ কর্মন্ত্রী ।

গুহা।

শরীর মধ্যে করোট, বজা ও উদর
এই ছিনটী গুহা অর্থাৎ গহরর বর্তমান
আছে। এই হেতু শরীরকে ত্রিগুহ
বলাসার। ইহার মধ্যে উর্জ গুহা
অর্থাৎ বজাে উণ্ডক, মৃপুক্স ও হং
কােষ্ঠ এবং নিয় গুহা অর্থাৎ উদরে
গক্ৎ, পিতাশর, আমাশর, ক্লোম ধমনী
কল ক্ষুদার, স্থার প্লীহা, ব্রুদ্ধর
ন্যান্ত) বর্তমান থাকে। ইহাদের
প্রতাকের গুল ও কর্ম ক্রমশঃ বর্ণিত
১ইতেতে।

मश्राक्षश्री।

্ সুভার্দ্ধ গুরা পুরুষদানাৎ মধ্যমা ময়।
সংকাঠা বর্ণাতে বহুলা নিশাময়ত ভয়ুতঃ ॥
উরোহন্দ্র শহুকোপান্দ্র পশুকা অভিভঃ মিডাঃ।
পার্দ্ধয়োঃ পশুকাঃ মতি পশ্চাহ পুঠকশেরকাঃ ॥
পশ্ধকাদ্যোগ্ধ শুকা শিরসাস্যাভিষ্ঠতে।
ভানেহয়নার্দ্ধা বক্ষরপ্রপানী চ বক্ষরঃ ॥

गराकश ।

উদ্ধি গুহার বিবরণ লাযুগণের বিব-রণের দক্তি ব্যাখ্যাত হটয়াছে। এক্ষণে মধাগুহা অর্থাং বক্ষের বিবরণ বণিত হটতেছে। এই গুহার দাযুগ ভাগে উরো-২চি, পশুকোপাছি ও পশুকাগণ, পার্ছারে পশুকাগণ, পশুচাদ্দাগে পৃষ্ঠকলেককা দকল, উপরিভাগে প্রপম্ম পশুকা ও উদ্ধি পট (বক্ষের উপরিছিত বস্তবং পদার্থ বিশেষ) এবং নিয়ভাগে বক্ষত্তল পেশী বর্ত্তমান পাকে।

পতে গ্রায়া এতদ্যা হৃৎকোঠোঙ্ক ফুপ্ফুদাং। সভাদীয়াৎ অয়াগাঞ্জ জানি গ্রাফর্মনী ঃ

এই ওচায় জংকোষ্ঠ, উণ্ডক ও ফুপ্-ফুদ বর্ত্তমান থাকে। ইহাদের ওণ ও কম্ম ক্রেম্পা: লিখিত হইতেতে।

अर्टकार्यः।

উরোমণাগত কোঠে। স্বনীফল গর্কু লঃ।
রক্ষাধার শুতুর্বত আবরণাা স্মানুতঃ ।
তিহাঁক্ছো ধ্যনীতৃষিঃ ফুপ্তৃস্বয় দীর্যকঃ।
ক্ষাত্তা কুঞ্চন দীলোহসো হৃৎকোঠ ইতি
কার্তিতঃ ঃ

উদ্ধে গর্ভবয়ৎ তদ্য নিম্নত দালি তদ্যুয় ।
উদ্ধেশ কলিবে গর্ভে লিরাসক্ষমকে লিরে
ক্রপ্রেলি বিজ্ঞান কর্মান করিব ক্রিন্তির ।
ক্রমেন্দ্র নামগর্ভাচে ধননী মুলমুখিতন্ ।
ক্রমেন্দ্র নামগর্ভাচে ধননী মুলমুখিতন্ ।
ক্রমেন্দ্র নামগর্ভাচে ধননী মুলমুখিতন্ ।
ক্রমেন্দ্র কর্মান ক্রমেন্দ্র কর্মান ক্রমেন্দ্র ক্রমেন্

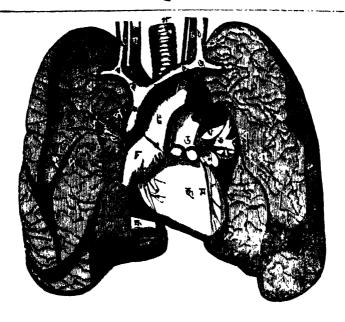
স্ংকোষ্ঠ।

লংকাঠ বংলাগহনতের মধান্তানে তির্ঘাণ ভাবে অবন্ধিল, ইহার আকৃতি লোনা ফলের নায়। ইহা একটা আবরণী হারা আরুছ থাকে। ইহার উপরি ফুপ্ ফুশ হর (এক ফুপ্ ফুশ বামাংশ ও মকিণাংশে ভোদা হিধা) বিরাজমান। লংকাঠই বিভার রক্তের আধার এবং ইহা হইভেই ধমনী উথিত হইরাছে। ইহাতে চারিটা গর্ভ প্রকেট আছে, তুইটা উর্দ্ধে

ও তুটী নিয়ে। পূর্মে উল্লিখিত হই-রাছে, যে যাবজীর শির। মিলিভ হইরা তুটী মহাশিরা রূপে পরিণত হইরাছে, ঐ শিরাদর উদ্ধান্ত দক্ষিণ হৃদ্পর্ভে সমাগত र्वेत्रा भंदीरवद गावकात मरमाय बस्करक তণায় অর্পণ করে। অধঃম্থ বামগর্ড হটকে মূল ধমনী উদ্গত হটয়াছে। मरमाय ब्रक्त वह गर्ड हजूहेरत क्रमायरत মাদিয়া বিশুদ্ধ হইয়া দেহে আলুত্তণ বিতরণ করিয়া জীবকে জীবিত রাখে। জ্ৎকোষ্ঠ সভাবতঃ একবার স্ফীত ও একবার শংকুচিত হইরা থাকে। জীবের ভূমিষ্ঠ হইবার পর আবদি মুক্রা পর্যাস্ত অবিরামে এই ক্রিয়া হইতে থাকে। জং-পিও আকৃষ্ণিত হইবা মাত্র ভত্রস্বারক चार्किरवरण भूमनोगुरल প্রবেশ ও জপা **रहेटड धमनो ममूद लेटल ममूलाब एएट** করিয়া থাকে। ভূৎপিণ্ডের আকৃঞ্ন প্রদর্গ ক্ষণমাত্র নিবৃত্ত হইলে তৎক্ষণাৎ মৃত্যু সংঘটিত হয়, ইহাতে কোন সন্দেহ নাই।

कृ श्कृमः।

ফুপ্লুসম্ব ছিবা ভিজে: ব'ৰ দক্ষিণ ভেষ্ড: ।
পেল্যাৎ বজ্ঞজনৰারাৎ স্বাসহোহণুলীবিকঃ ছ
আবো বিল'লো বছজিঃ কোবৈরিব বরুজন: ।
দুউলোবিত সংস্কৃতি কোবোংলং পরিকার্তিত: ছ
ভক্তনাক্ষিয়া নাড় ভিজ্ঞানুলাং প্রধাবিতা ।
অবং লাবাত্মবভী কৃপ্কনত্ম নাগতা ছ
ভতঃ লাবাত্মবভী কৃপ্কনত্ম নাগতা হ
কোবেরু জুপ্কৃতিক্র স্ব্রুজনাং সর্পদিভাং ছ
নালানুখ স্বাক্ষীং প্রনা খাস্কর্মবা ।
খাসনাড্যা ভরা স্র্রাংগ্রান্ কোবার্ প্রবিলভাবের ছ



৬ চিত্র।

এই ৬ শং চিত্রকোত্রে গ খাসনাড়ী, ইহার ঘাণা ম্থনাদাক্ট বাহাবার, কৃপ্কৃদো প্রবেশ করে।

- ग मृल्यस्नादी।
- ভ আভ্যন্তর কণ্ঠ নিরা।
- জ, ছ. ঝ, থ ইহারা বিশেষ বিশেষ শিরা। এঃ উর্দ্ধ সুল মহাশিরা।
- ढे समनीयृत।
- **ठ উर्जञ्ज एकिंग ज्**रश्चरकाष्ट्रे।
- ড দকিব লুপ্দৃদ ধমনী।
- থ ধামনিক প্রশালী।
- ত বাম ফ্প্লুস ধমনী।
- ल निम्न प्रकित ल्या कार्या है।
- ্ম জ্লগ্ডীর বৃতি।
- ফ নিয়ত্ত মহাশিরা।
- ৭ উদ্বন্ধ কাংপ্রকোষ্ট।
- ल निज्ञञ्च राम क्र्यकाष्ट्रे।

- । कुश्कृत।
- क मृश्यूटभद्र छेक्कंषण।
- দ ক্প্রক্সের মধ্যব ৩। তনিয়ে নিয়ব ৩।

মহাপিরাভ্যাৎ হৃৎকোঠৎ সংপ্রাপ্তং দুউপোনি-ভয়।

নাজীবিশেৰো নিয়ত\ ওবানয়তি কুপ্কৃস্ব । খাসাকুকৌইনিসভাত সংগ্যাত্মধাণ ওকং। নিৰ্দ্দোৰা পোনিতা সুখ্যাৎ সুবোষক সুলো-হিতম্ ॥

चञ्च कर क्षत्रकर कृत्रः श्वादिकर धममीभटेवः। मिद्रचत्रर महात्ररहा (स्वाद प्रिंटिमार खरनर ह

क्ष्क्म।

কৃপ্কৃদ ভূইভাবে বিভক্ত বাম ফুপ্
কুদ ও দক্ষিণ কৃপ্কৃদ। ইহা বক্ষতপন্থ
পেশীর উপর আদীন। ইহার উদ্ধাংশ
স্ক্র ও নিয়াংশ বিস্তৃত। যে ক্রপ
মধুক্রম অধ্বি মোচাকে কোম থাকে,

সেই রূপ ইহাতেও অগণা কোষ বিদ্য-ফ্প্ফ্নই ছুষ্ট শোণিত মান আছে। জিহ্বামূলের নিয়-त्नाभरमद काष्ठे। হইতে উপাতিময়ী একটী নাড়া ক্রমশঃ নিয়াভিমুখে গমন করিয়া অংশভাগে তুইটা শাখায় পরিণত হইরা ছুই ফুপ্ফুস প্র্যান্ত উপন্থিত ও পরিশেষে বছস্ক স্কা শাখা প্রশাখাণ বিভক্ত হইর ফ'.প্-ফুদীর প্রত্যেক কোষে মিলিত তইগছে। বাসক্রেয়া দ্বারা এই বাহাবার, নাসিকা ও মুখ দিয়। খাদ নাড়ীতে প্রবেশ করিয়। প্রচ্যেক কোষে উপস্থিত হয়। উল্লিখিত হট্যাছে যে ঘাবতীয় শিরা মিলিত হইরা তুইটী মহাশিরার পরিণত হ্ইয়া দক্ষিণ জ্নগর্ভে মিলিক হইণাছে, ঐ শিরাম্বর মারা অ'নীত রক্ত নাড়াবিশেষ দ্বারা জন্মত হটতে ফৃণ্ট্রে আনীত এই রক্ত খাদার্ট বাষ্থার 🤌 বিশুদ্ধ, কুখোফ় ও লোহিত বৰ্ণ হটয়া জংকোটে প্রবেশ ও তথা হইতে পমনী मार्ट्स खिकि श्रवल द्वर्ग समुनाग एनश পরিভ্রমণ করিয়া থাকে।

খাসাকৃটোহনিলে হস্রায় সমর্গাজ্যপ্রবান্ ক্তান্।
অক্তগাৎক সমাবায় ফপ্কুসাবর নিঃসরেহ ॥
অসে) খাসফ্রিয়া সা চ কালেন যাবতা যতি।
বারান্ প্রবর্ততে নাড্যাং স্থান সংখ্যা চ যা ভবেহ ॥
ইত্যাহ্যা নিলিখা ভাবাং সূক্ষানে পুরা নয়।।
ব্রিডাং শুগুডেহানী ংহজুং বাচাং প্রবর্তনে ॥

খাদারট বারু ফুপ্ফুনে উপছিত
হইর। তত্তা রককে আত্ম শুভগুণ
বিভরণ ও ভাহার অপুভ গুণ গ্রহণ
করির। ফুপ্ফুদ হইতে নির্গত হইর। যার।
ইহার নাম ধাদক্রিরা। এই খাদক্রিরা
যুত্ত দুমরে যত বার হইর। থাকে এবং

নাড়ীর স্পক্ষন সংখ্যা ইত্যাদি বিষয় সমস্ত স্ত্ৰন্থানে বৰ্ণিত হইয়াছে। এক্ষৰ্ণে ৰাক্য প্ৰবৃত্তির হেতু ক্থিত হইতেছে।

উর্নাৎপঃ খাসনাড্যা হি বাগ্যক্রবিভি কীর্তিভঃ। ভরণান্দি ধর। রক্ত্রেখীসাস্ত্র কলাগবৈঃ ३ निर्मितः कठेरमान ७६ नुत्रहामध्यर्वस्त । ত্ৰোণাহ্যি বিশেষদ্য ত্বে পক্ষে প্ৰকাশকং 🖠 मर्छ। बरमधः समग्रद्धां मिलिङ्गां ह श्रीमान्यः । मकार्ड म्कूरेवरेनच कोवामाक विरमवंडः 🛊 অস্থাদুপরি বাগ্যক্রা**দুপরি**জ্ঞাভিরওঁতে। चन धर्वकारम यो मीनद्रक् १ क्षरपीलस्य । जनवन् राक)यळनः) (स्कुना९ नवराविनाम् । वास्ट (विवास विद्याः सहास् क्षमग्रस्य वर्म् ॥ निष्यां मिन चक्षामा ब्रोतवृष्ट् विकास रहा বিৰ্খ গীওল্নিভিঃ কোন বৃহাতি জন্তবুঃ अयोक्दब्रा ७ क्षप्र १ वामानाः, मूचमः अद्र । আপেন ধ্বনিভিঃ কদ) ন গলভাজা নেইতঃ 🛊 भूटेचेद्रगुष्ठ निश्म)टेन्स्य (क)बटेन्स्य क)विभी श्रदेद्रः। मुशमुत्रमद्रदसुम् (क) म युक्रांख मर्खन्। इ किट्य केडानुम्हारेमात्रस्मानगण्डिहेटः खुत्रः। करके किया को प्रविक्तान श्रामाल । न नद्रो विख्याचार जन्मकाकानार सुन्दर्श्वः। निर्माक (-) पूनी (क) का न रायद्वम् यदा सदा ॥

উল্লেখিত খাদনাড়ীর উদ্ধাংশকে বাগ্যস্ত্র কহে। বাগ্যস্ত্র ককণাছি, ধমনী, রক্ষ্য, পেশী, স্নাযু ও কলা সমূহ হারা নির্দ্রিত। ইহা কর্তদেশের অগ্রাদিকে থাকে। বাগ্যস্ত্রায় একধানি উপান্তির, পক্ষার পক্ষের নারে চুইটী পক্ষ আছে, ঐ পক্ষার পরস্পর মিলিত হইয়া কর্পো- এক পরস্কার (বিশেষতঃ ক্ষাৰ শরীরে) লক্ষিত হব। এই বাগ্যন্তের উপরিভাগে উপজিহবা অবস্থিত আছে, ইহা আহারকালে খালরদ্ধ আছে।দিত করিয়া রাধ্যে, তক্ষনা ভোজা পানীরাদি খাদ-

ब्राप्त अविष्ठ हरेता मात्राचन हरेए शांद्र না (দৈবাৎ ঐ রক্ষে কোন এব্য পভিত হইলে অভান্ত কাসি উপস্থিত হইয়। ভাহাকে নি:দারিত করিয়া দের, ইহা-(कहे विषय नामा करर)। এই वाकामध्यत ममवात्री अर्थार উপामान कात्रग ममस्ख्य व्यवश्वा विटमंघ मश्यदेन कतिहा विविध স্বরের উৎপাদন করা ঘাইতে পারে। শিংহ, ব্যান্ত ও গণার প্রভৃতির ভীমরবে জন্তগণ মৃতিহ ত হইয়া থাকে। বিহ্নম গণের শন্ত্রীত ধ্বনিতে কে না মোহিত रत ? कालक गर्वत प्रवेध र प्रवे क्रम्बरक सरीएक कर्द्र। ক্ৰেন ধানি প্ৰথ করিলে কাহার না নেত্র হইতে অঞ বিগ-निक दत्त १ कामिमी भटनत्र सूर्यम्, ध्यम्क निःमानी, मरकामल अत्रखद्य बन्नार ७ क ना मुद्र ७ आइडे छ्पत इत १

কণ্ঠনাড়ীর ন্যার জিহবা, ওঠ, তালু ও

মস্ত প্রভৃতিও বাগ্যরের অক বলিরা
নীর্ত্তিত হইরা থাকে। কর্গোদ্ভিন স্বর
ইহাদের পরম্পর অভিযাত হারাক, প,
চ, ত ইত্যাদি বর্ণ স্বরূপ হইরা প্রকাশ
পার।

মমুষ্য দিগের বাগ্যন্তের যে রূপ সুশংস্থান ও যে রূপ ভাবে নিশ্বাণ, ইতর প্রাণী-দিগের দে রূপ নহে এই কন্য উহারা মুষ্যু জাতির নাার কৃষা কহিতে পারে না।

क्टेंकः ।

ফুণ্ডুগল্যাবরবাো ছে উর্গতন্ত্র ওছোঃ। উত্তঃ বৈশ্বে বং) ন্ধান্তে বহুতাং ন হি ॥

डेण्क।

চুইটী আবরণী হার। ফুপ্ফুস্ম্রর আরত থাকে, ইহাদের মধ্যক্ষাণে বাল্য-কালে উত্ক বিদামান থাকে। বরো-রন্ধি হইলে শৈশবাব্যার সহিত ইহাও বিলুপ হইর। যার। উত্ক একটী প্র'ন্থবং পদার্থ।

व्यद्धाश्चरा।

গ্রহানাৎ ভিস্বাৎ জ্বেয়া গ্রহাব্যকা বহুকর। । । বহুকজাওসন্তুড়া আনৎ পাকাৰি কর্মবাদ্ । । উর্জ্ব বক্ষরভাষাস্যাঃ পেলী যান্তরহা ক্রিডাই.. লার্মব্যে ভচাভিডঃ পেলাঃ পশ্চাৎ পেলাঃ ক্রকাঃ ।

जारभाखरा।

গুংতিরের মধ্যে অধোগুং। অর্থাৎ উদরগহার বৃহত্তম। ইহাতে অনেক শারীর যন্ত্র আছে। ইহা অগুবৎ গোলা-কার। ইহাই আন পরিপাকাদি ক্রিয়ার ছান। এই গুংার উর্দ্ধে বক্ষত্তলম্ম পেশী অধ্যোদিগে শতিধেশ, পার্ম্বরে ও সম্পূর্ধে উদরীর পেশী এবং পশ্চাদ্দিকে উদরীর পেশী ও কপ্রেকাগণ অবস্থিত। কর্মধানুভা গোণায়েশিত ধ্রম্বরে মন্ত্র ।

উদরবেষ্টনী ঔদরীর যন্ত্রগণকে শর্ম-তেভাতের আরুত করিয়া রক্ষা করে।

वानत्नार्थात्रः ।

অম্বিপাক ক্রিয়া। বস্তু বিশ্বতিসমান কলা পেনীবিনিছিন। অমণাক্ষিয়ার্থা চ পাহনাড়ী একীর্তিন। উদ্ধানশা মুখনাখাস্য আঘাহ্বলো গ্রহণানকঃ ।
কঠাদাখাখাব খাবদ্ধ নাঞ্চিত কথাতে ॥
ততভাষাখাম ভবাব কুজাত্র মুক্তবন্ধ ।
আনাখায়ব সম রভা ভাগঃ প্রথম আক্রিকঃ ।
ততঃ পঞ্চাখায়ব প্রোক্তর প্রকারিভঃ ।
ততঃ পঞ্চাখায়ব প্রোক্তর প্রকারিভঃ ।
ততঃ পঞ্চাখায়ব প্রোক্তর প্রকার পরিধারণাব ॥
সুলাক্রস্যাপার্যাভাগর সরলো গ্রহ সংজ্ঞার ।
আর্কিউৎ মন্দ সর্জ্ঞার বাহ্নিলার্যভায়ন্ধ ।
আর্কিউৎ মন্দ সর্জ্ঞার বাহ্নিলার্যভায়ন্ধ ।
আর্কিউৎ মন্দ সর্জ্ঞানভা চোদর মন্দ্রালার
অধ্যাব মুক্তীভূতা নাড়া চোদর মন্সা ।
কঠাবধাগতি নাড়া ভিত্রা বক্ষরলা ভায়ান্ ।
পেলীৎ যুক্তবন্তী প্রবিক্তের মধ্যেগ্রহান্ধ

্ আন্নপরিপাক ক্রিয়া।

অন্ন পরিপাকার্থ বিংশতি হস্ত পরি-মিত, কলা ও পেশাদ্বারা নিমিতি একটি भाकनाषी मानवरमटह वर्खमान **चार**छ। ইহার উদ্ধাংশকে মুধ ও নিয়াংশকে श्वम रत्न । देशात जिल्ल जिल्ल व्यथ्म, ज्ञन ও ক্রেরা সাধকতা ভেবে ভিন্ন ভিন্ন নামে অভিহিত হইয়া থাকে। সর্কো-দ্বাংশ মুধ, তৎপরে কঠহইতে আমাশর প্রগান্ত অল্লনাড়ী, তৎপরে আমাপর, তৎপরে ক্রান্ত ও পশ্চাৎ ফুলান্ত। আমাশর হইতে আরম্ভ করিয়া ক্ষুদ্রায়ের আদাভাগকে গ্ৰহণী অগ্নাধিষ্ঠান বা माड़ी वरना छ ९ भद्र शकानंत्र, व्यायानंत ও এহণী হইতে আর পরিপাক হইয়া এইস্থানে উপস্থিত হয়। স্পালের অধঃ श्विष्ठ मद्रल चाःलंदक अप वटन. हेर। তহারারে শেষ হইরাছে। ইহার দারা মল সমস্ত বহিনিঃস্ত হইরা যার।

অয়নাড়ী খাসনাড়ীর পশ্চাদ্ধিকে অবস্থিত, চর্বিভ অয় গ্রাসাদি এই স্থানে উপস্থিত হইবা নাত্র এই নাড়ীর খাবীন পেশী হারা তৎক্ষণাৎ আমাশরে প্রেরিজ হর। পাকনাড়ীর উদরন্থ অংশ অভিশর কুণ্ডলারুতি। এই মুধ্যার বিশিষ্ট পাকনাড়া কর্গদেশ হইতে অধোদিকে আদিরা ক্ষন্তব্যহ পেশী ভেদ পূর্বক উদরে প্রবেশ করিয়াছে।

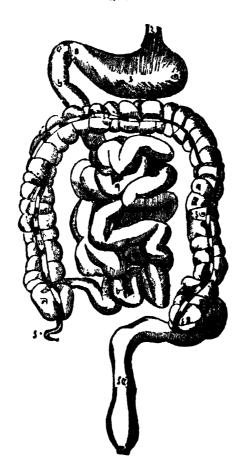
অন্ন মুধাপিতি১ দৰৈণ্চৰ্ত্তিত১ সূথিকা যুত্ত। পিণ্ডাভূত্বভাষনাভূমি প্রাপিন্তম প্রভি ক্ষরাৎ 🛊 चामानाम् बकुत् वक्छन (नाना) व्यवस्थि । ভত্ৰ প্ৰকৃতিভে'হড।ল্লঃ কোহপ)ভো নিঃসরেন্ত্রসঃ 🛊 রুদেনানেন তৎ ক্লিছা ধূর্ণিত। প্রকৃতে র্বলাৎ। ক্ষুড়ান্তান্ত মু হূর্বেন বিপেৎ সজল পক্ষরৎ 🛭 व्यायाणग्राम् यक्षिन्दर कृष्टाळ १ कृष्टमाकृष्टि । च्योगाय क्षत्रया कारमा अद्योक्ति (मस्यादः 🛊 व्यमनाग् कोर्यनवर ७२ क्षरिना अस्वीर कनान्। चांकिरक्व इरमनाज विविध् পরিপচ্চতে । ভবৈৰ যকুতে। নাড্যা পিতকোৰাৎ ভৰ্মমাৎ। পীতভিকঃ পিত্তপো গ্ৰহণীযুপভিঠতি 🛭 च्यापीटक ब्रामाश्रीम ध्यामा कावना महम्। **लिस्टर्याधिमोटेम्डम**्मिकिः लिह्निः विस्तृ । म (करणा कानचे वस्ताक श्रासम्। यकः (मीविक्य)श्रक्तिः विषयाचि निवृद्धव्यः 🛊 खेन्द्र एक्टिन भार्य छम्द्र भस्त कांत्रुछ्यू । উদ্ধে বছঙলকাস্য পেশ্যধনাচ্চ বুক্কঃ 🛊 वकुष्य कार्य। (ज्ञान विष्यप्र) शाक कर्मान : भीवकृष्टाकामा यंदा मधारत दोर्घरण उर ह व्यायानप्राप्ताप्ता नुबक्ता वर्ज्यत्वस्याम् दिसिः मृतः । রলো নাকা বিশেষের কুমাত মুপতিঠতি 🛊 প্লীছাপ)খন) পচনে (হতুমুনিভিন্নীরিডঃ। याबरकार्था सम्बार म वर्केट असंकातुनः । चक्रवारकाश्चलिक्दा व्हिक्ति नवास्त्रः। खे:क्व^र रक्ष्यनस्थाता (भर्म,१४) यान्यक्रमः ॥ (四) 81(月) (1) 11(1 विद्वार्गार्थिव निवित्त**ः (श्रद्रपृष्टि क्**षांत्रपृष्ट् । আবাশয় কলাচারি ধ্বনী ভরপোহবিলাঃ। ग्र**चरक क्षात्रमंश्र त्मेना चळकाष्टित्रमस्**त्रम् ॥ षाङ्के अरमप्र ७६ क्विट्नियक शक्ष्यर ।

দুগাত্র\ প্রবিশেৎ পশ্চাৎ পুরীষ্\ ডাই মহাডে। ডড়ঃ প্রাপ্য গুহ্ কালে সর্বাধা সার্বভিত্র। ডচ্ বাহিনিঃ সরেকোহাতি ডা\ কল্যাণ হেডবে।

মুখার্পিত অন্ন দক্তবারা চর্বিত, লালা-সংযুক্ত ও পিওবৎ হইরা অল নাড়ীতে নীত হইলে উহা তৎক্ষণাৎ আমাশয়ে প্রেরিত হয়। আমাশর মন্ত্রীদর গহররে যকৃৎ ও বক্ষন্তলন্থ পেশীর নিয়ে অবস্থিত। এই সম্বে ভুক্তদ্রা উপস্থিত হইলেই উহ। হইতে এক প্রকার অভিতীত্র অনুরদ নিঃস ত হইরা ঐ ভুক্ত পদার্থের সহিত भिज्ञित रहेत। উश्चारक सीर्ग कविटल থাকে। আমাশ্য গত আন ঐ যদের মাভাবিক শক্তি হারা ক্রেমাগত ঘূর্বিভ তর। আমাশরিক অনুরস ঘৰ্ণৰ হারা ভক্তম্ব্য সকল मात्र कारहा लाश्र रत्र. অর্থাৎ উহার কিয়দংশ ₩ स व এইরপ ष्यवस्थात्र " शांदक । ডুক্ত ন অবস্থার ক্দারে প্রবেশ করে। আমা-भरत्रत्र मक्तिगण কু গুলাকু ডি নাম কাড়ার। ইহা আমাশমের দকিণ হইতে আরম্ভ করিয়া কির্দ্র তিগাণ ভাবে বামে ও নিয়মুখে আসিয়া অভি-শর কুওলীভূত হইয়াছে। ইহার পরি-मिकि गुनापिक ১০॥ १ एक रहेटव, देशक প্রথমভাগ অর্থাৎ তির্ঘাকভাবে অংশাগামী অংশ গ্রহণী বা অগ্নানিষ্ঠান কলা বলিয়া কীর্ত্তিত হয়। তৎপরের অংশকে পকা-भन्न कटर । जुक खना जनमाक् खरार-ভার প্রহণীতে উপস্থিত হইলে অন্ত্র-নিঃস্ত এক প্রক্র রস উহরে সহিত मिखिल एत्र। এই স্থানেই गढ़्य दहेर्ट নাড়ীবিশেষ স্থারা ভদক্ষিত পিততোৰ

হইতে শিত্তরশ আসিরা জ্বনাত্মর সৃহিত मिनिष्ठ इर । निखदम भीकवर्ग 🕶 किका-সাদ। ইহা অল পরিপাক বিষয়ে একটা প্রধান হেতু। এই পিশ্বরসই অগ্নি বলিয়া উক্ত হটরা পাকে। যকুৎ যে কেবল আর পরিপাক বিষয়েই সাহায় করে. এরপ মহে, ইহা খোণিড খোধমের এক প্রধান যার। এই সার উদরের দাবিশ পাৰ্ছে বক্ষন্তল পেশীর নিয়ে ও দক্ষিণ বুক্কের উপরে পশুকারত হইয়া অব-ছিতি করে। ক্লোম নামক আর একটা যন্ত্র হইতে নাড়ীবিশেষ ধারা ভদীর রগ কুদ্রান্তে উপন্থিত হইয়া আলু পরিপাক क श निकार करता अहे गन्न भीशाकृष्ठि, প্লীহা ও ক্সন্তান্ত্রের মধ্যে অবস্থিত, ইহার সম্মুৰে অমাশর বর্ত্তমান। উল্লিখিত যন্ত্র সকলের ন্যার প্লীহাও অল্প প্রিপাকের **(राष्ट्र रिनाश) कणिल रहा। देशा खन्न**न-ব- ও সম্মুধ দিকে বছরদা স্থাকী । টহা উদর গহবরের বামদিকে, ব**জভল** পেশীর নিয়ে ও বামবুরুকের উপর পর্ত -কাবুত হুইয়া অবস্থিতি করে। দ্রবা পান করিলে আমাশরিক কলাছিত ধমনীগণ কর্ত্তক উহার প্রায় সমুদার ভাগ ভৎক্ষণাৎ আকৃষ্ট হটুয়া রক্ষের সহিত মিপ্রিত হর, অবশিষ্টাংশ অক্সম্ভ ধমনীগণ-कर्जक चाक्र हे इहेश थाटक।

ভূক অনু এই রূপে পরিণক ছইন। খেতবর্ণ দ্রব পদার্থ রূপে পরিণত হন। ঐ দ্রবের দেহরক্ষণোপদোনী সারাংশ স্থোতোনাড়ী সমূহ ছারা আকৃষ্ট ছইরা শিরাপথে ক্রেমশং স্থাংকাটে উপস্থিত হইরারঞ্চ রূপে পরিণত ছইনা দেহের রক্ষা ও পোষণ করে। অন্নদ্রবের সার-বিহীন পদ্ধবৎ অংশ স্থলাস্থে প্রবেশ করে। পরে উহা স্থাসময়ে গুদ অর্থাৎ ঝসু নিয়াত্র দিয়া পুরীষরপে নির্গত হইরা থাকে।



१ हिख ।

এই ৭ শং চিত্রে ২ চিক্-প্রস্নাসীর শেষাংশ, অনু নাড়ী মুধ হইতে আরম্ভ করিয়া এই স্থানে আমাশরে মিলিত হইরাছে।

১।২।০।৪ এই চিক্ গর্জ, অমুপ্রস্থ ভাবে ন পাঁচ এই আকৃতি বিশিষ্ট মন্ত্র আমা-শর (পাকস্থলী)। অন্তর, মুধহইতে প্রশাদীদির। এই স্থানে প্রভিত হর। ৫।৬ চিহ্নাছিত, অধোমুধ গামিনী নাড়ী গ্রহণী, এই স্থানে সুন্দ্র নাড়ী বিশেষ পথে ফকুং হউতে পিন্দ্র সামির। আমাশ্রাগত অবের সহিত মিলিড হর।

বাভাগাচ চিক্লান্ধিত বৃহৎ নাড়ী ক্ষুদ্রান্ত,
তন্মধে বাভ চিক্লিত অংশের নাম
গ্রহণী। গ্রহণীব পরবর্তী কিরদংশ
প্রকাশর। এই স্থানে বইকে ক্ষুদ্রান্ত
আভিন কুণ্ডলাকৃতি হইরা অবস্থিত
আহে। ভুক দ্রবা আমাশর বইজে
সম্দার ক্ষুদ্রান্ত পরিষ্টেন ধরিরা এবং
বিবিধ পাচক রসের সহিত মিশ্রিত ও
ক্ষুদ্রীর্ণ হইরা থাকে। ক্ষুদ্রান্তের নিম্বর্তী কোন কোন অংশ কারণ বিশেষে
কোষ্টিতে প্রবেশ করে। ইহারই
নাম অন্তর্জি পীড়া।

নাৰ অন্ত্ৰাক্ত পাড়া কলান্ত,
ইহার মধ্যে না১০ চিক্লের দিকের
অর্গাৎ দক্ষিণ পার্দের অংশকে উর্দ্ধন গানী ফুলান্ত ও ১০৷১৪ চিক্লের দিকের
অর্গাৎ বাম পার্শের অংশকে অধ্যেগামী ফুলান্ত্র করে। এই উভবের
মধ্যে ক্ষুত্র:নৃত্রের উর্দ্ধন্ত অনুপ্রস্থা ক্ষুত্র:নৃত্রের উর্দ্ধন্ত অনুপ্রস্থা ক্ষুত্র:নৃত্রের বিশেষকঃ
অধ্যাদা পীড়ার ক্ষুত্র:নৃত্রে, বিশেষকঃ
অধ্যাদামী ক্ষুত্র ক্ষান্ত করে, বেদনা ও
উহা হইতে রক্ষাদি নিক্ষেত হইর।
থাকে।

১৫—চিহ্নিত নিমাভিম্প অন্তাংশকে ওদ
বা অজুনিমান্ত বলে। ইহার স্পনিমাংশ ওহা ভার রূপে পরিণত হইরাছে,
প্রবাহিকাদি রোগে এই ভানেও
কভাদি হইরা থাকে। ও ইহারই
পাত্তে অশেহিভ্যুর কবিয়া থাকে।

এই নিয়াভিমুধ অন্ত ও তাহার উদ্ধিদ্দ দুলান্ত্রাংশ মলাশর শক্ষের বাচ্য। তাধো-গামী অংশ (গুল) পুরীণ নির্গমক।

षद्यः कुर्णे जिद्यो शिखर्यद्या (काश्रप्रस्थनः। विक्रित विविधमा लक्ष्मप्तर महामि क्रीबाग्नर ह व्यवद्यादमा ब्रोपः भित्या नामाज्ञित्याश्यमाविकाम्। খাসরভাৎ নলোরভা ঞাভিজ্ঞা সূথাৎ বিশেৎ র निकृत्का, श्रीकका मा मर्माना पामनाविकाम् । কিলা প্রয়াতি পশ্চাক্ত পাকনাকী ভতোহভিডঃ । कि कपूर्व पूर्ण ए द्वा लिखा अमृद्ध बकुछ। আখ্যরজু প্রবিষ্ঠাৎ চেম্বর্ম কালৈ বিনিঃ সরেও 🛊 ष्टिओग्रम**् क**न्धना कल्पन क्षत्रुट र्गमार । অভে: নৈবাভিত্মরণৎ স্রোয়ং পান মুকর্মনি 🖠 चन्न रेव श्रानिन'९ श्राना देखि व्यक्तिरवर्णहः। **उद्या विधिमा (गर) महाया धानवर्कनम् ॥** আর্থ রুসোহরুবজ্ঞ মাৎসময়ম্পি কাভ্যু। (मरम्'ठम्बम्भयः) घर बण्डा घर संच्यारयतः ह ह च्चा रामगरकोटकाश्चा भरमाञ्चमनि *(*डाड)एड । हराहररयु निर्धानाः अक्षांभ्हांच नयुद्धनाः ॥ অমপান বিধিণত ভংকালে চোচিডা ফিয়া। কুতা কল্বিকৃতি বৎসাঃ স্ত্রস্থানে পুরা ময়া।

কি অন্তত কৌশলেই অন্ন পরিপঞ্চ হইয়া জীবুগবের জীবন রক্ষা করিতেছে, ইহাতে জনদীপরের কি আশ্রেদ মহিমাই প্রকাশিত হটকেছে 🖟 অমুগ্রাস দারা পিষ্ট, লালাক্লিল ও পিড়াড়াত হটরা খাদ রক্ষ ও নাদিকার পশ্চাচ্চিত্র অভি-ক্রম করিবা অল নাড়ীতে উপভিত্ত হয়. जार्यक छेटारम्ब मर्गा खर्यमा करत मा। এই কার্যা অতি ফুকৌশলে সম্পাদিত হয়। क्य वं भन्न निर्माणकार समर्व अवस्मा खा ছিদ্ৰ উপজিহ্ব। অর্থাৎ আগজিব স্বারা অরুদ্ধ रत, किस्ता कि कि श श²610 स्था अवर यह नाडी किथिर উर्द्ध ७ यदा याहेत्म. ইহাতে নাদিকার পশ্চাৎস্থ ছিত্র 🛭 ক্লছ হয় ৷ অভএৰ নিৰ্বিদ্ধে প্ৰাধঃকরণ কাৰ্যা

শশ্স হয়। অন্নাদির কণা মাত্র যদি দৈবাৎ প্রথম ছিল্লে পভিত হর, ভাষা হইলে আপনা হইছেই তৎক্ষণাৎ কাসি উপস্থিত হইরা উহাকে নিঃসারিত করিয়া দের, ইহাকে চলিত কথার বিষম পাগা বলে। উহা নিগতি না হইলে খাস রুদ্ধ হইরা প্রাণ নাপের সন্তাবনা।

আর দিনীর ছিল্লে প্রবিষ্ট হইলে হাঁচি উপন্থিত হইর। উহাকে নিঃনারিত করে। অসএব পান ও ভাহার কার্য। আঠিশর ত্রিত ভাবে নির্মাহিত করা ক্যাচ উচিত নর।

অন্নই প্রাণিগণের প্রাণ, ইহা বেদে উক্ত হইরাছে, অতএব সেই অন্ন বিধি পূর্বাক সেগনীর। দোষ বর্জ্জিত ও বলবদ্ধ ক অন্ন ভোজন করা উচিত। অন্ন হইতেই রক্ত, অন্ন হইতেই রক্ত, অন্ন হইতেই রদাংস, অন্ন হইতেই মাংস, অন্ন হইতেই মাজা এবং অন্ন হইতেই প্রক্তা উৎপন্ন হয়। অন্নই বল, অন্নই ওক্তা এবং অন্নই মনা বলিয়া উক্ত হইরা থাকে। চরাচরন্ম যবতীর প্রদা অন্ন হইতেই সমুস্ত হইরাছে।

আন পান বিষয়ক বিধি ও তৎকালিক কর্ত্তব্য ক্রিয়া ইত্যাদি সমূদায় বিষয় স্ত্র-স্থানে বর্ণিত হইয়াছে।

২৭ পৃ.১১পংক্তিতে যে যন্ত্র ক্লোম বলিরা উল্লিখিত হইল, আঁনেক প্রছে ভাহা তিল নামে উক্ত হইরা থাকে। ঐ যন্ত্রে ভিলবৎ বিস্তর বিন্দু বিন্দু চিহ্ন আছে, অভএব তিল নামেই উহার আধ্যা হওরা সুসন্ধত হয়। আর অভি প্রাচীন গ্রন্থে কোন্ বস্ত্র ক্রোম বলিরা উক্ত ইইরাছে, তাহও হঠাং বলা যার না। হরত বক্ষাছে কোন বস্ত্রাংশ তত্তদ্ গ্রন্থ কার দিপের ক্রোম শব্দের বাচ্য। যে সকল গ্রন্থের কথা এপর্যান্ত উল্লিখিক ইইল তং সম্পারে যে যস্ত্রকে ক্রোমবলা হইরাছে, ইংরাজীতে তাহাকে প্যান্ত্রিরস্বলে। কিন্তু ভিল্পক্ষ ঐ যন্ত্রের প্রকৃত বাচক বলিরা বোধ হয়। এই ফ্লে আমরা শাদ্ধির সংহিতার করেকটী প্রোক নিমে উদ্ধৃত করিরা তাহার অনুবাদ করি-তেছি। মধা

शृक्षरवरकाशिकाकारमा म'होनावकाशिकार । वहा विकास स्थाप्तः स्थाप्तः स्थापे ह्याक्षेत्रः । रक्षवानग्रः नाष्ट्रहान क्यांवावानग्रेक्ष्यः । केक्षवश्चाप्या मारकर्यायकारम रावस्थितः ॥ करमार्थात्र हिन् रक्षप्तः अवधानग्रेक्षः । वर्षानग्रेक्षक्षाम् यस्त्रिक्षानग्रेक्षः ॥ । स्रोवद्रक्षानग्रेक्षः ।

বক্ষ: ছলে শ্লেমাশর অর্থাৎ ফুপ নুদ্দ, ইহাতেই শ্লেমা দক্ষিত হইরা কাদির দারা নির্গত হর । ইহার নিম্নে আমাশব নাভির উপরে অধ্যাশর, উদরের বাম দিকে অবস্থিত, ইহার উপরি ভাগে তিল্যন্ত । তর্মিম প্রনাশয় । তাহার নিমে মলাশয় । তাহার নিমে মলাশয় । তাহার নিমে বন্তি বা ম্ত্রাশয় । উরঃ অর্থাৎ হুৎকেটে জাব-রক্তাশয় । কেহমধ্যে এই দাত্টী আশয়, ক্রীদিনের অতি্রিক্ত আর তিন্টী আশয়, জ্রাদিনের অতি্রিক্ত আর তিন্টী আশয় আছে, যধা ধরা অর্থাৎ ক্রয়রু বা গ্রভাশয় এবং ক্রময়র বা ক্র্যাশয় ।

এই স্থান নির্দেশে সংস্কৃত তিলশস্থ ও ইংরাজী প্যান ক্রিরান্শন্ধ এক পদার্থের বাচকু বিলিয়া প্রমাণ হইতেছে।



৮ চিত্ৰ ৷

এই ৮ সং চিত্রে, য,স যর্থ। পা আমাশবের (পাকস্থলীর) মধ্যেহংশ। পি পিতাশর।

- ত আমাশরের অবংশ্ব ছিব।
- च शहरीत चरनित्मम ।
- क डेमद्र अविष्ठे ध्यनीयकः।
- কা কোম বাতিল সমু।
- क क्राम मुद्धाः।
- ভ ক্লোমদেহ।
- ন ক্লে:মপুচ্ছ।
- म श्लीदाः
- व बामाभरवत्र देश हिम ।
- গ্গ डेन्द्र वटकारावशतक (वक्क खनाइ)-

পেশীর ছুই স্তস্ত ।

চ মূল পিতপ্ৰশালী।

नी नीर बाछ।

जरत्रामरभारशायः।

मृद्धगङ्गानि ।

বৃক্তো হো ব্ৰমাজ্যে হৈ তথা বন্ধিত যুৱৰে।
জ্যোনীযান যজাৰ চজুবে পান্ধিত হুৱৰে।
পিছাবীজ নিজো বৃক্তো বকুৎপ্লীছোৱৰঃ ছিডো।
পাতাপুদ্ধ বেজনাঃ কটিবেশগডো ঘডো।
গুছুতি হোৰ সুনিজা কেনাজ্য মান্ধাণ নহা।
গুছুতি হোৰ সুনিজা কেনাজ্য মান্ধাণ বজাহ ।
সংঘাষাঃ সন্যগাণ হলালা গোনভালাগঃ।
সংঘাষাঃ সন্যগাণ লা পোনছভানিশ্য হৈ তথ ।
বৃক্তাক্লিংসুতে নাজ্যে) বক্তিপুঠনখো গড়ে।
বৃক্ত সভিত বুৱালি বক্তিনানয়তঃ শনৈঃ ॥

मृत्यम् ।

ত্ই সুকক, তৃই মৃত্তনাড়ী, বন্ধি ও উপছ (মেনু ও গোনি) রক্ষু এই গুলি মৃত্ত্যন্থ নামে খাতে। পুক্তক সংসের আকার শিমবীজ্ঞের ন্যার, ইহারা উভর কটিছেশে সকুৎ ও প্লীহার নিম্নে উদরবেউনীর পশ্চাতে অবস্থিত। বুকুছ স্প্রোত্তা-নাড়ী সমূহ ধমনীভ রক্ত হইতে সদোষ জলীরাংশ আক্ষ্ শ্ ক্রিরা শইরা রক্তকে নির্দোষ করে। ঐ সদোষ জলারাংশ
মূত্রনামে অভিহিত হইরা থাকে। বুক,
ফুপ্ফুস্ও চর্পাইহারারক্তের অসারাংশ গ্রহণ
করিরা সর্নদা তাহাকে বিশুদ্ধ করিছেছে।
বুক্ষর হইতে চুইটা নাটা নিঃস্ত হইরা
বস্তির পশ্চাদ্দিকে নিয়াংশে মিলিভ
হইরাছে। ইহারা বুক্ষয় মৃত্রকোষ হইছে
শনৈ শনৈ: বস্তিতে মৃত্র আন্রন্ন করে।

यश्चिः ।

কলাপেশ্যাত্মিকা বন্তি গ্রহণ পুরতং কিতা।
পশ্চাদৌপান্দ্রকাক্ষ্যেপ বুরাপর ইতি ক্ষৃতা র
বঙ্কের্ম মুখা রক্ষ্যা নাজ্যে সাংবদ্ধ হৈ ক্ষৃতা র
অপরাভিনিবভা চ বভিঃ খানেহবভিঠতে র
জীয়ু যোনিধরা চাপি গুলস্য পুরতঃ হিতা।
তয়ে পার্ভা বভি বিপেনোহয়মুগীরতঃ র
বজ্যে সাংকুচিডা নিমা মুখা রক্ত্রেব সাংমুত্য ।
উপান্ধকেন বুরাস্য বহিনিঃসর্বাম হি র
আগারে সভিতা বুরুমভিষার মহা ভবেহ।
তব্লেশজিক রক্ত্রেব রাহ্না নিঃসরেন্ বহিঃ র
বিস্তিঃ।

ৰন্তি ভাৰ্থাৎ মৃত্রাশর ও কল। স্বারা নিম্মিত। ইহা ৰজু ও ঔপস্থিকান্থির নিয় দ্বের সম্বাহ্য পশ্চাতে অবস্থিত। ইহা মাংসময়ী একটা রক্ষারা নাভিতে সংবন্ধ এবং আর কভিশর রক্ষারা বন হইরা সভানে আবিছিত থংকে। जीदमदर अकु निम्रा-মৃত্তের সম্মুখে যে।নি ও জরারু বিদ্যমান এবং ইহাদের শশুবে বস্তি বর্তমান থাকে। বভিন্ন নিমুশ্ব সংকৃতিত এবং উহা উপস্থিক রক্ষের দহিত দংঘুক্ত থাকে যুত্রাশরে অভিরিক্ত পরিমাণে যুত্র সঞ্চিত হইলে ওপছিক মন্দ্রীয়া বহিনি গ্রুত दरेश थाटक।

ইতিপুর্ব্বে বন্ধিদেশকেও উদর গর্হ্ব রের অন্তর্গক বলিরা বর্ণনা করা হই-রাছে, উদর বেষ্টনী সম্বন্ধে ধরিলে ইহাকে উক্ত গহ্বরের অন্তর্গত বলাগার না। কিন্তু অন্থ্যাদি সম্বন্ধে উদ্ধ ও বন্ধি এক গহ্ব-রের অন্তর্গত বলা ঘাইতে পারে।

कन्दन सियम्।

স্নীবজোতলৈ হেতুর্থ যদৃতে তলা সংস্কৃতিঃ।
ইজিয়ং স্কনাব্যা তদুপদ্দেশত কর্যাতে ।
উৎপত্তো স্নীবসংখন্য ছারং নান্যক্ষি বিদ্যুত্ত।
বলাদ্ বিহানে তৎসঙ্গে স্নীবোৎপত্তিঃ বিদী-

যক্ত\ বিভিন্ন নিৰ্মাণ মহো ধানা বিভৰ্কিণী। ধ)াজু ধ)াজুৰ রছ'ল বিভিন্ত\ নিপুণেন ভং ॥ অহো যন্ত্ৰ) শক্তি\ ভা\ কো বংৰং শক্তিমানু কেলি।

नवार्त सामांकि नियादीय हथ्खरेकेत वि छन्छन्य यम्। लेकः। अभवःभान् भारेनदिव रजीयुवीः। जुक)वि कवत्या निका वर्गा मुख मानगाः 🛭 বিভাষানক সভান উৎসাহঃ করুবা ক্ষা। ना विमासिना मासिका रेमबी हार विवास छ । ভবিজ্ঞিরভবং জীবা নিভাগ ভুগুডি বং সূর্বস্। বিচেডনা ইব ৰগাঁৎ ভদ্য নাজাপনা ভূবি 🛭 वनामग्राक बुनद्या फुलाः क्षामाव रामिनः। কুটারুখ: খ্রিডাশ্চ সর্বে তেন জিডা ধুবৰ্ 🖁 भूमा<ामा निविधा (बाटक रवीवनकाः **विद्यव**र्ग । अव्यक्ति वर्षाः कारपट शूर्वः मृ ७० । भारको छन्दिकार दहल विद्यादह ह महकालि। म (इसान नक्कन) का ना।म् म विक्रमीचनः । कीरक्षशह ब्रक्शबं । नावि ग्रन्थानमात्र ह । वेश्यवरक्षत्र वातः विविचर विश्वकर्मना ह व्यक्तियंतीयभीयभ (हम मा) यमा यमीयमी । देशनामण मिनद्रा श्रप्तर शहनी करत् ॥

> আলে:চ্য ভাষ৲ নিধিল৲ ওছীয়৲ উন্নীলভাকা ননু যুচ জীবাং।

অপান্য সংক্ষে বংগ হৈ সভাৎ শক্তিৎ ওবেভয়বহিত্যপত্তিঃ ঃ

त्य दे खित जीवत्य कावियदा व्यक् এवर यदाकिरतरक कादाव नःशंत रव, **छाद्यारक कमरम स्मय वर्ष्य । समानस्मिरवर्ष** অপর নাম উপস্থ। জননেন্দ্রের বাতি द्रारक छोटराय्याख्य ज्या डेयाय नारे । জননোপ্রব দক্ষ, প্রতিজ্ঞাপূর্মক পরিকাাগ कविरम कौरवार्शिख लिश्किक रहेगा এই সম্ভের নির্দ্ধণ আতি বিভিন্ন, ইহা কি অপূর্দ কৌণলেই 'নৰ্শ্বিদ হই याटक, इटान जाम शाहाम मनुपारमन श्व স্পর সম্বন্ধ ও ক্রিয়াবিশেষ কারিত্ব শ'কে खनिक्तिनोत्र। हैश्रहे में किए उक्ता ५ व के देशन व्यवन ४९ मुग्न मान्स वर्षेत्र। धान বন্ধ বানরের না'ষ নিরস্তব নুজা কবি टक्ट इंडाइट अखादन कानम अवाद. क (र्चा ६ मात्र, प्रमा, भाषि प्राचिना, चास्त्रिका छ रेगवी चदन मण्डल निग्र विश्वास कविटल्टा की वर्गन निव्रज्ञ विटन-তন হইয়া এড দি স্থিয়ে সম্ভূত লগীয় সুখ সদৃশ যে অপূর্ম তুর্ণয়োগ করে, পৃথিবীতে ভাষার উপমা নাই। বনবাদী ঋণিরা, প্রাসাদ বাদী ভূথাপথৰ এবং কুটীর বাদী দঙিত্র সমূহ, সকলেই এডছি-হবে পরাজিত। যাবভীর কন্তদিগের ষৌধনম্ব পৃংক্তাতি ও যৌধনম্ব স্ত্রী জাতি নিরস্তর এই স্থাবের স্পৃহ। করে। ইব্রিষ্ট মৃহতী শাস্তির ও মহানুবিদ্রো-হের হেতৃভূত। জীবপ্রবাহ রক্ষা শান্তি সংস্থাপৰাৰ্থ বিশ্বকৰ্ত্তা এই ইঞ্জিয়ের এবস্থ অমুক্ত শ'স্ক্রে প্রধান করিয়াছেন। यति हेदात जेवन धारण 😻 जानका मक्कित्र स्वरंग हत्र, छ।ट। ट्टेल बहे

আনন্দ বাম ধরণী আরকালেই মক্ন ভূমি সদৃশ হইরা যাব।

হে মৃঢ় জীবগণ ! জদলেক্সির সম্মীর
নিবিল ভাব আলোচনা করিরা, চিরলক্ষিত সন্দেহ নিরাকৃত ও বোধনেত্র
উন্নীলিত করিরা অচিন্ডা শক্তি সম্পদ্ধ
জগদাপরের গড়া ও শক্তি নিরীক্ষণ কর।
আধারাকার ভেবেন পৌ\ন্তঃ কৈন ইভি বিধা।
বিশেষত উপদ্ধান চেডনাবানিব নিডঃ ।
পিখো৷ বেড়ে৷ বাস্পাতক নেছন পোকনেকনী।
পুঞ্লবৈদ্ধিয় নাধানি ধ্বন্ধে পথ্যে চ সাধনন্ ।
তথ্য বচ্নান্যে: সন্যাক্তমে ভ্রাপ্তরাঃ ।
তথ্য বচ্নান্যে: সন্যাক্তমে গ্রুপ্রাপ্তরাঃ ।

আগার এবং আকার ভেদে উপস্থ হিবিব, পুরুষাধারে পৌণস্ব ও স্ত্রী আধারে বৈশ উপ্ত অংকিত। উপস্থ স্ব 5েতন। বিশিষ্টের নাব প্রজীয়মান হয়। শিশু, ১েটু, যাঙ্গ, লিঙ্গু, মেচন, শেফ, (म्), भुक्त, छेशक ७ माधन अहै গুলি পুংজননে'শ্রুমের নাম। শে;নি, উপ্ত ৬গ ৩০ আহর এই গুলি क्को जनस्मिटात मध्या डेशक करवत कायः मानन महाप्त मुक्ताम (भूरकाविटक) এবং ভিত্তক,য প্রভৃতিও (খ্রীজাভিতে) वरे छेखत्र विश् कन्दन न्यत्र श्रम राहा। कन्दन 'सुर्पत्र 334 ক্রমশঃ इडेटर एक ।

> অথ পুংজননে স্তায়।পি। মেচু ভূ'ম।

ববোপান্দ্র স্বাযোগার্থিনী 'বলিছে উক্ত। ঐপন্মিকে অবস্তুত্তার পশ্চার বান্ধি প্রয়াসর। র দুচা প্রয়িশিকা পাঙ্গ সংযোগ্য বস্তিক্ষতার। বুজন্মোকোহরজন্মক দা বৈদ্যা কৃষিক্ষতাকে ১

स्युष्ट्रिय ।

বে স্থানে উপস্থিক অস্থিদর উপাস্থি বোলে পরস্পর মিলিত ইইরাছে, ভাহার নিয়ে ও পশ্চান্তাগে ঋজু নিয়ায়ের উপরি অব্যাহিত দৃচ ও পাতৃবর্ণ গ্রন্থিবং পদার্থকে মেদু ভূমি করে। ইহা বস্তি-গ্রাবাকে ও অভাস্তরস্থ মূত্র স্লোভঃকে বেষ্টন করিয়া থাকে।

कना प्रका चय्रम्।

त्यपुकृषि जमीरक रह क्यांत्रशिवकरण । बाह्यसम्बाद्यान्तरीय रहा श्रिष्टक रक क्यांत्रिरक ॥

কলারিকা হয়।

মেতু ভূমির নিকটে মটর কলারের
ন্যার আকৃতি বিশিষ্ট ভূটটী গুটিকাবৎ
পদার্থ আছে। ইহারা আয়ুর হালের
দহিত ক্রেমশ: হাসপ্রাপ্ত হইতে থাকে।
ইহা দিগকে কলাযিকা বলে।

(महुः ।

মেচুক্ৰ সমারত্য দীতা প্ৰারসাধনা।
উপন্তিন্ত্র সমারত্য দীতা প্ৰারসাধনা।
সংস্কাল চে ক্ষেত্র সমাওবাতে ।
বুলাল্যমূপনাল্যে কোবিকেন চ চার্মনা।
সংস্কাল বিভিন্তাপে পরং মুর্ছনি কেনলম্ ।
আবুরো ম চ সংসক্তর্মিপ্পায় চার্মনা।
পদ্যাধান্ত পিল্লা মুকং বা কং প্রকাশতে ।
করা প্রস্কালারং নিজমূকং সচেতনম্।
করা প্রস্কালারং নিজমূকং সচেতনম্।
করাপ্র বং করা পৃতিনিংজনের জারবার্না।
করাপ্র বং করা পৃতিনিংজনের জারবার্না।
করাপ্র বং করাপ্র বিভান বিভানের বিভানি বার্নিকের ।
বিভানে বার্নিকের জ্যান্ত্র বিভানি বার্নিকের ।
বিভানি বার্নিকের স্থানিক বিভানি বার্নিকর ।
বার্নিকের বার্নিকর স্থানিক বিভানিকর ব

त्यष् ।

উপস্থাছিল্বরের সমীপে মেটু ভূমি হইতে মেঢ় উদগত হইয়াছে। ইহাই সক্ষ সাধন ইতিহো ইহা মূল ভাগ হইতে উপস্থাছিদ্বরের ও অওকোষের আবরক চর্ম ছার৷ সংসক্ত 😘 বেষ্টিকু रहेता थारक। मुक्तारम की हुन्द्र साहा (करन चांत्रुक शांदक, शश्मक सहिया की মুওবেপ্টক চর্পু প্রস্তুগজিংক আনিশে লিম্মুও প্রকাশিত হইরা পড়ে। লিক্ষমুভের আকার মোচার নাাষ এবং উহা সচেভনবৎ। শিশ্বমুক্তের পশ্চাতে লিপ্সরিৎ বা লিক্ষ্যাবা। এই স্থানে নিরস্তর একপ্রকার দৃগক বিশিষ্ট ক্ষারণস্মী রস নিঃক্রত হটয়া থাকে। লিক্সগ্রাবার পশ্চাতে চর্ম্ম শংলক্ত অংশ লিম্বগাত্ত। তদনস্তর লিক্ষুল। মৃত্রসোভঃ বস্তিগ্রীবা হটতে লিক্সের অভ্যন্তর দিয়া আশিয়া लिक्ष्मत्र मूर्ण भिष वहेत्राटहा र्थावद्याय लिक्न भिषिल । अ अरखद नाव **ट**टर्स । मृद्य বক্লাকার পাকে। দৃঢ় ও লিভুন্দাকৃতি হয়।

ष्ठ उद्दय्।

রেন্ডঃ সুত্রনাবন্ধ কোষপর্কেছব ডিছরে।
রেন্ডঃ ফাব্রুলল এক্যান্ড চাত বর্তু সৃষ্ ।
ক্ষরেল্য করেন্ট্রাল এক্যান্ড চাত বর্তু সৃষ্ ।
ক্ষরেল্য করেন্ট্রাল এক্যান্ড চাত বর্তু সৃষ্ ।
ক্ষরেল্য ক্রেন্ট্রালয় কোষদায়াকি ভদ্রুল্য ।
ক্ষরেল্য ক্রেন্ড্রালয় কিন্তুল্য কোষদায়াকি ভদ্রুল্য ।
কার্য রৈন্ড সক্ষ সূত্র বাবাত ১ কিন্তুল্য পরাছ ।
কোরো রৈন্ড সক্ষে সূত্রে ব্রেন্ড ম্বাল্য করা ।
করেন্ট্রাল্যকরো রক্তা স্ক্রেন্ড ক্রিভিন্তন ।
করেন্ট্রাল্যকরো রক্তা স্ক্রেন্ড ক্রিভিন্তন ।
করেন্ট্রাল্যকরো ক্রেন্ড ক্রিভিন্তন ।

স্তর্গ ৯৫ জরবা করে করা জিব তে বিধা। ভক্ষ জন্ধনাকে পুশ্বসাহত মুখলশ নমু । উপ্তাতে জনা সূত্র পশ্চাশ্ভাগ ব্রাভয়ো। নিয়তশ স্বস্থান্তে ব্রামানুশ্ব নির্ভিতে ।

का शहर ।

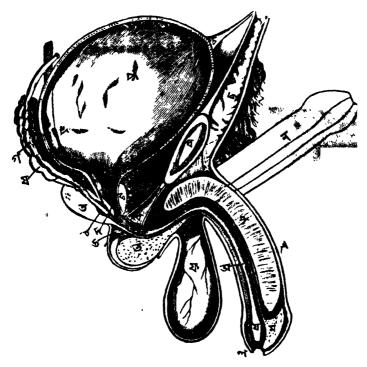
অওবর রেড:সূত্র হারা আবছ থাকিয়া কোষগর্ভে অবস্থিতি कदम । হহারা-সতের নাার বর্ত লাকার। मिट्यंत्र द्वाता वीदी ऋतिक इहेता बाटक। গভাবভার ইহারা উদর গহবরে বেষ্ট্রনীর পশ্চাতে অবস্থিত থাকে, ভূমিট হুইবার পূর্বের কোষে অবভরণ করে। বামদিকের অওটী অধার অও অপেকা। কিঞিৎ বুহৎ এবং বাম খেডঃস্তের रिवर्ष। विका ८२७ कि कि ९ व्यक्ति निस्म বুলির। থাকে। ইহাদের আবরক কোষ উপর্যাপুরি সংস্থিত চুট্টী স্তর ছারা নির্দ্দিক, এই কোষ মধ্যে রেভঃস্তা ছরের নিয়াংশ ও অওম্বর অবস্থিতি করে। ঐ ন্তর হুরের মধ্যে আভান্তরিক ন্তর সংখ্যে-চন গুণদযুক্ত ও রক্তবর্ণ, বাচ্য স্তর চর্ম্মর, এই স্তবে কছকওলি লোম থাকে, অন্তঃ-ন্তর এক খানি তিরম্বরণী অর্থাৎ পর্দার ন্যার পদার্থ দ্বারা দুই ভাগে বিভব্ন হটর। ছুইটা পর্ভে পরিণত হয়। এই গর্ভ দ্বরে রেতঃসূত্র দ্বর উদর অওয়র থাকে। হইছে অভহয়ের পশ্চাদ্ভাগ প্রাস্ विकुष्ठ थाटक । हेरावा धमनी ४० वाबू প্রভৃতি দ্বারা বিশ্বিত।

वीक्दकादवी ।

ব'ভিযুল প্রণান্তংশ্বৌ বীজকে'বৌ মূনাৎনা ভৌ। বীজৎ ধারণভো পর্জন্মনে যুখ কারণমূর এক্টাল্লা ভ্রন্থ ১)মাৎ শুক্রা প্রতিশেষক। তেনাৰু পৰিয়ালৈ বেডা থকা বহু চাতে ।
নাড্যা থকালবাহিব্যা কগৰাপত। বৈ বতঃ ।
কপাছিকেন হড়েন বহিনিপুৰনাৰ সংগ্ৰহ ।
বাংলালয়ং পাছং সাজং থকা প্ৰাৰ্কন্ত পৰ্য ।
কাৰণ বাংলালয়ং কলা সংগ্ৰহ থকা প্ৰাৰ্কন্ত প্ৰাৰ্থ ।
কাৰণ বাংলালয়ং কলা প্ৰাৰ্থ কলা বিভাগ প্ৰাৰ্থ ।
বিভাগ বংগালয়ং কলা বাংলালয় লা বিভাগ কলা নিধুবন কুৰ্যাৰ প্ৰিৰ্থ না বিভাগ কলা নিধুবন কুৰ্যাৰ প্ৰিৰ্থ না বিভাগ কলা নিধুবন কুৰ্যাৰ প্ৰিৰ্থ না বিভাগ কলা নিধুবন কুৰ্যাৰ প্ৰাৰ্থ কলা কলা কলোঃ ।
বভা সাজিত কলাৰ কাৰ্যাতি বিনিপ্ৰতঃ ।

वीक्रकावचन ।

বতিমূল ও ঋজু নিয়াজের বীজকোষ্ম্ম অণ্ডিত। ইহারা গর্ভোৎ-পতির হেতৃভূত বাজ এ বীক্ষ খন, শুল্ল ও বিশেষ গছাযুক্ত थक थकौद फद्रम भमार्थ, हेश **रह ८**५फम व्यन्दाता गारा । वीक, त्रकः 📽 🧡 👺 প্রভূতি নামে আখনত হয়। ঐ বীহ্য রতিকালে শুক্র প্রবাহিনী মাড়ী ছারা অতে আদিয়া তথা হইছে উপত্তিক মন্ত্ৰ দারা নিগত চইয়া থাকে। এই 😙📭 আহারজাত প্রধান সার পদার্থ, ইহাই বল রক্ষা 😉 জীবন ধারণের ছেডুজুজ, ইহার অভিক্রে মৃত্যু নিশ্চিত। আভএব জীবনকাঙ্কী ব্যক্তি নিতা শর্ক প্রয়য়ে ইহার সঞ্চয় ও কোর্থ মৃত্বান ছইবেন। বীর্ষা অধিক পরিমাণে শঞ্চিত হইলে পুরুষের অভান্ত রমণীকৃষ্ণা উপস্থিত হর। এই সময় স্থাশাস্ত্র বিচার প্রকাক প্রিয়ন্তমা নারীর সহিত রভিকশ্মে প্রয়ুত্ত হওয়া উচিত। বাবার পরিত্যালে মেহ, মেহে।-বুদ্ধি ও মেহের শিথিলতা উপস্থিত হইয়া অভএব ভাষ প্রবৃত্তির অভি নিগ্ৰহ হিডক্তৰত নতে 🗠



२ हिजा।

এই ৯ সং চিত্রে ক বস্তি বা মৃত্রাশয়।

ধ ঔপস্থিক।স্থিস্থি

ভ,ট মেদু ভূমি।

फ कनाहिका।

क वायदकाय।

.च বীককোৰ, শুক্রোশর।

७,७ १६८७ ल भर्याञ्च स्थाः।

मु निष्मुः।

य निष्मितिर रा निष्धीता।

न जमश्मक जन्म।

প শিক্ষপাত্ত।

ष विद्या कादशादम् ।

च সূত্র জ্রোভ: ।

ठ दिल्लामाड़ी , खद्मवाहिमीः

থ মূত্রনাড়ী রক্ষু।

ছ তৃদ্।

ন শৃপাকা বাবহারের অবছে।, লিক্স এই রূপে আরম্ভ ও ঝজু ক'রর। উহার রক্ষ্যধোশশাকা প্রবিষ্ট করিকে হর।

व्यव द्वीक्यत्विद्यानि ।

७ भव विस्ति (१) हे । ७ भ विष्क हत्र १ स्वति । ७ भ विषक । यामिष्क क्वी (स्व ह कवादित्य ह स्वत्र सुर्विच वादित्य)। विषदकारयो अ (७ च्टक) । स्वत्यो ८ हसीस्व स्वत्या वाही वा १ क्विटक। दूरैयः ह

ন্ত্রীলোকের জননেন্দ্রির।

ভগমণি, ভণোষ্ঠহর, ভগপক্ষর, ভগশিক, যোনি, কলারিকাহর, জরার, ডিখবাহিনীছর, ডিখকোবছর, ডিখ সকল ও জনহর এই গুলি জীদিগের জ্বননে-জ্রির। ইহাদের প্রভ্যেকের বিবরণ ক্রমশঃ লিখিত হইতেছে।

্ ক্রিয়াল ক্রম্পিঃ।

ক্রিকি ক্রেন্ট্রিক্ট্রের্কির ক্রিকিনি ক্রিডের।
ক্রিক্ট্রেকির ক্রিকিন ক্রিকিনিক্টর ক্রিকিনিকিনিক ক্রিকিনিকিনিক ক্রিকিনিকিনিক ক্রিকিনিকিনিক ক্রিকিনিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিকিনিক ক্রিকিনিক নিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক ক্রিকিনিক

ভগমণি।

উপস্থিক। ছিছরের সম্পুরে তুক্ ও বদাছার। নির্মিত, উচ্চ, গোলাকার স্কোমল স্থানকে জগমণি করে। ত্রী গণ বাল্যকাল স্থানকে মকরির। গৌবন দীমার পদার্পন করিলে ইহর (ভগ-মণির') গাত্তের চতুর্দিকে লোম উদ্ভুত হুইরা থাকে।

क्रवीरकी।

ভগবিষয়সংবেটো তগোঠো পীনটো মধেঃ।
মুলাধারাপ্রদীনানং মিত বাবকুতন্তবন্ত বুবৈঃ।
পুংসাং কোবছর মিত কাতন্ত্তিতে বুবৈঃ।
বহিশ্চক্ষরত চাতঃ কলাবন্ যৌবনে পুনঃ।
লোখতিবিয়তে ভায়ুধরাসভাগনি সংযুতন্।

ভগে। ঠদর।

ভগবিবর সংকেইক সুল অসহরকে ভগেতি কছে।, ইছারা ভগমণি হইকে আরম্ভ কবিরা মুলাধাবের (ওহা ও উপচ্ছের মধাবন্তী স্থানকে মূলাধার কহে) অগ্রসীমা পর্যান্ত বিস্তৃত। ভগোত্তহর পৃংজ্ঞাভিত অতকোষ স্করণ। ইহাদের বহির্দেশ চন্দ্রালা এবং আভান্তর প্রবেশ কশাঘার। নির্নিছ। ইহারা যৌথনে লোম সমূহ ছারা আরুজ হইর। থাকে। ইহাদের আভাজেরে বিস্তর স্থায়, ধমনী ও প্রস্থিতাতে।

खन गटको ।

भन्तामञ्जलक्षा क्रक्य क्रमायत्था मृदकावदणो । भिन्नवृक्षमञ्ज भरको 'क्रकि'ध्रम्य मनागरको ॥

ভগপক্ষার।

ভংগাঠদরের আভ্যন্তর দিকে উর্জ্বি ভাগে কণা নির্মিত সুকোমল অঙ্গর্মকে ভগশক্ষ বলে। ইহার। ভগলিক্ষ হইতে আরম্ভ করিষা উভয পার্থে কিঞ্ছিৎ দূর নিয়া পর্যান্ত বিস্তৃতে থাকে।

खनिष्मम् ।

खरन'केरण कर्क्तगरकः श्राट्सन इत्युक्तानसः । ८६७२२ वीर्यरक्षक च्युक्तिक मिठि खाल्यु । कर्मानकः यना गुरुतार स्वकृत श्रकृतिस्ता सक्यु ।

(91) n m

ভগোটখনের উর্দ্ধ দ্বির প্রায় ছুই অঙ্গুলি নিয়ে দ্বীঘাক্তি চৈতন্য বিশিষ্ট অঞ্চ বিশেষকে ভগলিক করে। ইয়া আগবি প্রকারে পুংকাতির মেন্ত্রে ন্যায়।

नामिठसः।

অধ্ভাদ্ যোনিরজুন্য ভবুকজার্ক দখিত। ভৌগরে প্রায়ণ্য লাগিচজো নারীযুদ্শকে ঃ

मामित्य ।

যোশিরজুের নিরভাগে আর্ছ চন্তা-কৃতি, গাভণা পর্দার ন্যার গরার্থকে লামি চল্ল কৰে। ইহা কুমাীকালেই প্রায় দেখিতে পাওগা বার।

কলারিকা হরম্। যোশরকু মুখ্যতঃ জীবাৎ পুরৎকলারিকে।• কলারিকাছর।

পুরুষ্ত্রাভিতে যে রূপ কলারিকাছর অব্থিত থাকে স্ত্রীজাতিতে গোনিরজ্বে উত্তরাদকে দেই রূপ উহার। অবস্থিত করে।

যে।বিঃ।

যোনিঃ কলাৰয়ী নাড়ী যভিগতে বাবস্থিত। । এদস্য পুৰুতঃ পশ্চাৰা ভাষার কোৰণা । আৰ্ডিনী ডগৌঠাত জরারুৎ সমুপ্তিতা । অধ্যাৰ্ভিনত স্মুখ্ৎ যোনেরবস্তিষ্ ।

যোৰি ৷

ঘোনি একটা কলা নিম্মিত নাড়া বিশেষ। বস্তিগহবরে থকু নিয়াজের সম্মুখে ও মুরাধারের পশ্চাতে অবস্থিত এবং ভগোষ্ঠ হইতে জনায় পর্যান্ত বিস্তৃত ইহা অতীব কোমলা ও আবর্তমরী। মুত্র রক্ষের্ণনিয়ে যানির মুধ অবস্থিত।

क्यात्रः ।

এব বুৱাপরাক্যকো জয়ারুপর্কবিশির্ব । জয়ারুপার্কে নাড্যো ছে ভিছনাড্যো একীর্ডিডে । ভিছকোব্যুক্তিকং নয়তো পর্কারণব্ । জয়ারুকোবং নায়াধাং জাতর্কাং বভাষতঃ ।

व्यवाद् ।

বস্তু নিমাত্র ও সূত্রাশরের ব্বো করারু অংছিত। এই স্থানেই ক্রণ

নঞ্চ ও বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইরা ধবা নমরে ভূমিষ্ঠ হয়। অধার্ম পার্বে ছইটা ডিম্বনাড়ী অবস্থিত বাকিয়া ডিম্ব কোব্যুর হইকে পর্ভোৎণান্তির হেডুভূত ডিম্ব বহন করিবা আনে।

ऋभो ।

ন্তনৌ (ছ) সংখ্যা সাজাং কিয়াক পুরুষে ভবা।
তারুবো তু কিয়াং পীনো ভবেভাঞাতিযোগনৌ ঃ
প্রান্ত কায়ান্ত্রীয়ায়া বাবং বঙীযুরোই ছিডঃ।
আকক্ষক কৃতভানা বর্জনুরো সুকোবলো ঃ
আতে বর্জনো বর্জে সাচাঞালি পয়বিনো।
স্থানো এসুবায়া বৃদ্ধানা ব্যাভচ্চ ভৌ ঃ
ক্রময়োরুভগো জেলো বাবং কিভিয়াবন্তরঃ।
চুচুকং ক্রমুবং সাাধ্ দুজনাজিভিয়াস্বরঃ

ন্তন্ত্র।

र्यानिकतात्र अञ्चित नात छन्छ জননে স্ত্রির বলিয়া অভিহিত হইয়া পাকে ইহার। সংখ্যার সুইটী। স্ত্রী, পুরুষ উভর জাতিতেই তান আছে, কিন্তু পুরুষ জাতিতে ইহারা চিরকাল ক্লাবস্থাতেই ষৌৰনাৰস্থাতে ন্ত্ৰীজাতিতে वादक । ইহার৷ প্রীনোল্লত ও অতি মনোহর উপরে তৃতীর मर्थन हरेश वाका হইতে নিয় ৰষ্ঠ পশুকা পর্যান্ত এবং উরোহন্তি হইতে (বগল) প্রান্ত বিভূত ইহারা অন্ধর্ভাকার 😘 অতি মুকোমন। গর্ভাবস্থার অপেকাক্ত বৃহৎ ও চুঙ বিশিষ্ট হয়। প্রস্থা জীর তনহয় ব্লিয়া পড়ে, বৃদ্ধাবন্দার ইহারা ওকাইরা যার। দক্ষিণ স্তন অংশক। বাষটা কিছু বৃহৎ। -सनाक्षण वृक्ष्यः स्थानस्य हुरूक रा

जीवनदमस्त्रवानि ।

তানর্ভ বলে। ইহা বহু চুখনাড়ীর হারা বাতি।

अन्त्राधातः ।

भाजूनचाष्ट्रदर्शास्त्रो बुनायात सकोविकः। वर्त्वास्त्राभितिक्रभुवा समामानाभ वर्ता करवर ॥

म्लाशन ।

গুহারার ও উপত্রের মধ্যস্থিত অহকে মূলাধার করে। রিরংস্ ব্যক্তি-দিগেরু অন্যান। ইন্দ্রিরাক্তের ন্যার ইহা-রও হর্ব অর্থাৎ উত্তেজন ছইরা থাকে।



১০ চিত্ৰ।

এই ১० नः हृद्धि । असम्बि

- न खरशहें।
- ধ ভগণক।
- इ छश्निक।
- छ दशनि रा द्वीखित्र दिवत्र ।
- नान बदाबुदा नर्छन्याः

- য ডিছকোৰ।
- हे मृख माफी।
- ছ বস্তিবা মৃত্রাশর।
- न बङ्गियः ।
- ঠ উপস্থিত।ত্বি সৃদ্ধি।
- व धर्मकत्रक्रा

ক কটিছ ক্রিক্স কলেক কা।

চ,চ,চ ত্রিকালিক উর্জাংশ।

ব ত্রিকালিক নিয়ংশ।

ব,ব কলাকত নিয়াল

ठकूर्फः नार्थायः।

সাধা দুকি।

ত্বচায়ৰ খিলং কারং সংগ্ৰেছ রিখক মন।
নাথোপ লবসংখাত লক্ষিত সংগ্ৰেছিত ॥
ন্তব্যস্থানত বিশ্ব জন কান্তব্য কলাতে।
ন্তব্যস্থানত বিশ্ব কান্তব্য কলাতে।
নাম বিশিলা জাতা কৈ শচপিতি চমনাতে॥
ভোগানিসালি সংক্ষা গ্ৰেছিল। চলিন্নাং।
বৈশিক্ষা লগে কান্তব্য সম্পাদ হৈ পুন্ন ॥
্থিক ।

জান্দির 'রক্ছার। সমূদ্য দেহ
আবৃত্ত ক'রয়া সাই করিয়ালেন, জন্মনা
দেহ বালা উপদ্ব সমূহ হইতে রক্ষা
পাইযা পাকে। তৃইটী তার উপস্থাপরি
সংক্ষিত হইয়া ওক নামে অভিহিত
হয়। জয়বার উপরিল তারের, নাম শ্রী
ও অভান্তবন্ধ তারের নাম অল্পত্ত।
তৃক্লপাশে দিখের আধার। কোন কোন
পাভিতের মতে উপস্থাপরি বিভাগ দিকেটী
ভারের সংখাতে ওক্লিমিভি। ওক্লারা
জাপবায় প্রভ্তিব শোচন, জেল নিগম ও
দৈহিক উল্লাব রক্ষা হইয়া থাকে।

शक्रतहमा २ था य

ন্দাণ গাড়ে ২৭ দি কুম: । ক্তাদান্তিৰ প্ৰবুতি বিবংশম্। যদা বাল্যদন্তিক্ষম ভাক্লন্য যাতি বোবিভঃ। কাৰ্যক্ষ দ'নলো ভাবভদ্য ভালাৎ বিবর্ততে । শুনৌ পীনোরতৌ স্যাভাৎ যোনিক পরিবর্ত্তে।
সহস্তবাধ লোমানি বাস্তিদ্রেল স্মন্তভঃ ই
করারু কে মাই উত্তস্ত্রং পৌণিতক প্রবর্ততে।
তদার্থাৎ রক্ষণেত পুস্পানারা চ গাঁহাতে ই
মাস মাস প্রবাস করা পাশোণিত স্মিভম্ ।
লাক্ষারস নিভং বাশি তদদেশ্বং বিনিন্দিশেং ।
ভিস্লাভারস নিভং বাশি তদদেশ্বং বিনিন্দিশেং ।
অভেছিন,গাঁ রক্ষা স্থানিং ক্ষানীয়ার দোষসদ্

জর্থানামশোকালা প্রাক্তশন্ত প্রবর্থানত জন্ম কর্মান কর্মানুর্ভি কর্মান্ত প্রকাশিত কর্মানুর্ভিত ক

गर्ड।२०५ क्याः।

হা ভার প্রস্তুর

রমণীর বালকাবস্থা অতিক্রম করির।
চৌবনে পদার্পন করিলে তাঁহালিবের
লানীপ্রিক ও মানানক ভাবের অনেক
পরিত্ত সংঘটিত হইখা থাকে। এই
লম্ম প্রনম্ব পীনে ব্লত, ঘোনি বিবৃদ্ধ ও
বিভিদ্নেশে সমস্তাং লোম সমূহ সমূভ্ত
হয়। জ্যাসুকোষ হইকে পাতলা ও
স্কল্প বলে। মাসে মাসে এক
এক বাব করিবা শশরক বা লাক্ষাকল
ভূল্য শোকিত নি:ক্ষত হইরা থাকে। ঐ

क्रिश्वर्राक्षेत्र प्राप्त ब्रिष्ट । अ'क মাদাস্তর ভিন, চারি বা পাঁচ দিবদ ছায়ী ब्रक्टाय एवं, हेराब जनावा रहेटल ঐ द्रकः भेरत्य विश्वती कः भिरत। द्रांत्रामाक विक्किति क्री मिरतब श्राप्त हामन दर्गत বয়দের পর হটকে রচ. প্রবৃত্তির আছে ও প্রথম বংগ্রের পর লোপ চটাত দেবা মাষ্ট্র জাতুর জানুরের প্রথম হাইজে মেণ্ডল দিবস এমান্ড সময় ঝাড় কাল रिलिश को र्जिक हम अनर ही कालहे अई গ্রহণ গোগা। কিন্তু স্থা দিগের প্রকৃতি **उउटम अ**क् कर्रालव, सुरुद्रेश कर्ड शुरुत ্যোগ। ক'লে≰ও ভানাথা হটর। থাকে । বঁদিবভোগ আহীক হুইকো গে কণ পল্ল মুদ্র হটয়। থকে, সেই রূপ শ্রহ্রাল অফৌন ভটকে নারী'দলের করাষু সংবুত শুকুকালে রম্পীরা প্রুণ হটয়া সংয়: मद्रशुद्धाः (७ लाभिनी वहेरा बाटकन । अ ममघडे लाइड उधिकाम फंजिरव धदः धे काटलत ब्राहितिया शानमार्विनीः अङ् ভিন্ন जान। मगदम्ब भुकाव मक्रदक्षरेक रे क সংন্র নারে নিরর্থক। উপস্কু কপে বিশাস্ত যোনি, হুফুনিড ও হুস্ত গোই नार्दे प्रिट्यः डेशपूक धन मल्लम् श्रृक्काह्युव সহিতে উপযুক্ত রভিজেয়। ভার্সীকল व्यमितिमी इडेसा शास्त्र । 🚜

जनकर **क्रांक**

क्षेत्र क्षया गोव बन् वाद नियंद्य अन्तिः । क्षेत्राख्यमे हे लडमा छवट्या देशवट्यान रटका ॥ वद्यात्रिकार गुणियो । रह्य बिड्यस्मस्यानिय कुनाम् अक्षात्रा दाःशियोगा । इस्ती । इस्तव शूम स्

য়াভদ্যোৎ ক্লয়াৎ ধৃংখাৰ্ডাৎ পোকবিক্সীকৃত ডিয়াৰ্ ख्याना दिशाकास १ अवदार स इददल अवादि ।

रवागामा भूरभः मृत्र्य समुद्रक्ष
कारक त्रवना विश्वमा जीवना ।

भरको यथा अ पृथि वीक्रमुखः ।

स्थिक बोदार सम्बद्ध हु वर्रभाव ।

मनाक्रूटक यथा (क्षट्ड क्षाप्तिटक स्वादिटक)

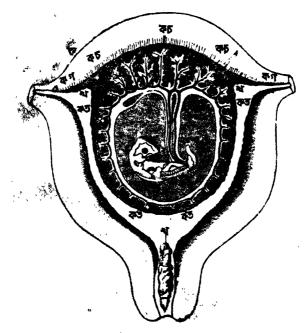
नमान्कृत्वे पत्ता (कार्य कार्यमदक समिद्धिक 🕽 🤌 केश्वर कारण सकर दोक्षककृतः शामिष्ठ५ करवर इं ভল: এটাৰ বির্থিত হৈছে৷ যোলো স্বাপিন্দ্ 🚉 'श्रद्ध महिम्मनगटम घटका स'म। **क्रम्म मुम्म ।** १४०) भूरतोदार का'लंडर नाया। यह र **दिलक्षि हरदम**[४] ७८७। ७४ मध्य य ७ ७३ सम् ४३५ अटस्ट्र 🚡 🍾 रुकीकृत्र शकास रङः **क**न्नाञ्च विवरत्नक्रमो <u>।</u> ेहिंदैः कानद्रन। एटड छ व मृक्तिरकाकः विवस्थनम् 🚛 🛁 कारमा रिल्यु नरण कोत्रा स्नाटक श्राखालाका विकासिक्री বর্ম)দিনিডে সংস্থাস্তত্রস্করতা **রবের** 🏗 जिलकार लडडा माछ भूभा विश्वक्<mark>षाद्वर ।</mark> मानकराषा चे १ हमा युक्तिडाक्यर यश्क्ष्यम् ॥ मामक्षा कु गर्छम्। भरवर्ष मुख्या स् सुर्श्या कि **७**डः यद्याःमन्त्रग्रहः शृष्टि**डन्डि मध्डम् ।** भ्यत्वराज निष्यष्टः, ऋतः वर्षः । ५ दक्ष्णनश्चरः । मलास्य व मिनेयसर महत्त्वर आयुष्टिक सुनम् । काम भी म करवस शहसं समू कियानविक्ति। करण मार्काक हरदया अन में मार्गि कांग्रहक ह कुष्ण दू'यहा अभित्र म'माध्य मिना धरमाद् । फ्रमा ७७८ सहस्रम् चरार्च मनीरम् अञ्चरक समारे ॥

রা দিনের উদরে য রবে জবৈরজনানিরত হাতার পরিবৃদ্ধি ও কারে ভারর পরের পরের জবিরজনান কানাবেশস্থার ক্ষিনী নিজ্য বার্তির কানাবেশস্থার ক্ষিনী নিজ্য বার্তির কানাবেশস্থার ক্ষিনী নিজ্য বার্তির কানাবেশস্থার ক্ষিনী বার্তির বার্তির প্রথ রমর কারবেন। কানা রার্ত্তির প্রথ রমর কারবেন। কানা রার্ত্তির অব্যানী ব্রথ রমর করবের দান উপ্রক্ত কার্তানার বার্তির অবজারী ব্রথ রমর করবের দান উপ্রক্ত কার্তানার ব্রথ প্রথ, উপ্র

নাৰ আহিলে নিবিক্ত বীৰ্য্য সফল হয়।
নামাস প্ৰকাটে কটি, ভোগানিকে, উপায়ুক্ত
আৰু স্থানিক নিৰ্দেশি
বীক্ষ্যান কহিল। পালন কহিলে যেমন
কাছা ঘটতে অনুন উৎপন্ন হন্ত; সেই
ক্ষা অনোৰ গোনিকে গোগাবিদানে
আনোৰ শুক্ত আহিছ ঘটলে উহ। গৰ্জ
ক্ষাপে প্ৰিণ্ড ঘটনা বাকে।

তি জির। হারা পুরুষের বীর্যা
শব্দিত হটর। অভিবেশে প্রথমতঃ নারীর
শক্ষারতে প্রথেশ করে। অনস্তর তথা
হটতে ডিয়াশরে গমন করিয়া রূপান্তর
প্রাপ্তর । অনস্তর ডিয়াও ও একটা কাবরনী হারা আবৃত হটর। নিরন্তর বৃদ্ধি
গাইতে গাকে। জাব প্রথমতঃ নারীর
শ্বরার্তে বিশ্বু ভুলা হটয়া অবিছিতি

করে। মালাভে কুলের আঁটির নাায় ও তৎপরে চতুরজাকার হয়। ত্রিপ-कारक देश दिचलिक महेरबद्ध माहर হইরা থাকে। তুই মালের পরে মুখ-মণল রচিত হয় কিন্তু চক্ষু: বৃত্তিত থাকে। তিন মাসে জ্রেণের সমুদার অন্ধ প্রত্যক ক্টতর হর ইহার পর ষষ্ঠ মাস পর্যন্ত ক্রেমাগত বুদ্ধি হটতে পাকে এবং এই স্বরেই শিশু উদর মধ্যে স্পান্দিত হয়: **ज्य मारमय शय किएमें। १ शक्ति वय अवर**् नश्रम मारम हक्कः रकः छि। छाष्ट्रेम मारमः জা দির্বাক্ রূপে অবস্থিতি প্রাপ্ত হয়। नवम मारम मछक व्यव्हापितक ७ हत्रवहत উর্দ্ধে করিরা নিঃসরবে'রাখ হর। करण चिक्त यह मान नह मिन गर्ड বাস করিরা দশম মাসে প্রকৃতি বলে ভূপত্তিত হইর। থাকে।



ा कि**य**ा